

The Gospel of David

Bishop Thomas Valpy French

Injil-i-Daud

انجیل داؤد
بشپ تھامس والپی فرینچ



1877

Injil-i-Daud

The Gospel of David

By

Bishop Thomas Valpy French

A treatise on the messianic prophesies of Pslams,

With special refrence to Muslim's Objections.

इंजील-ए-दाऊद

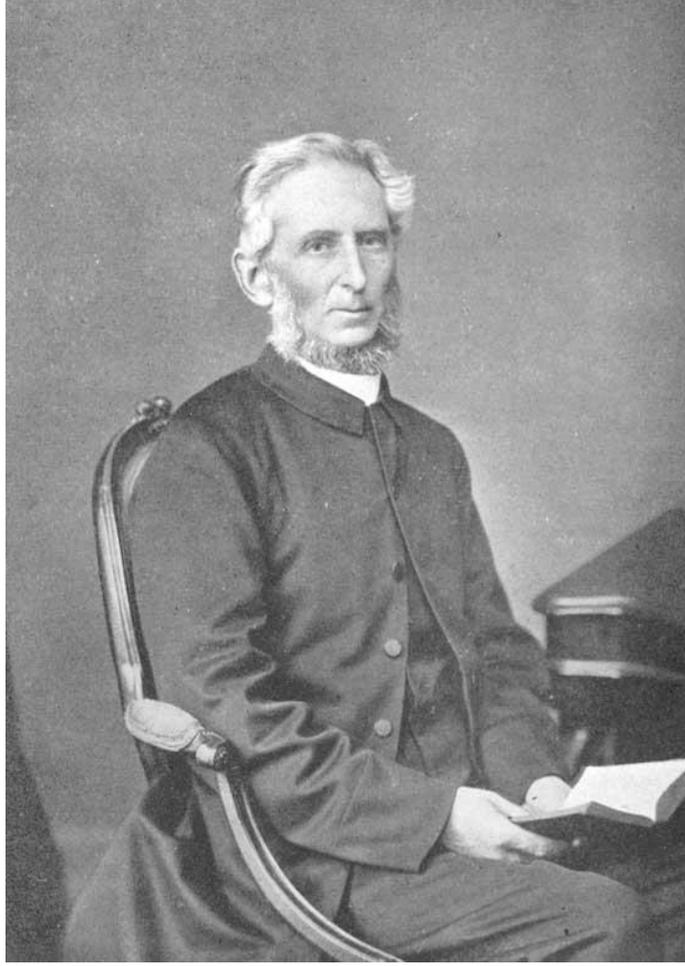
मुसन्निफ़

लार्ड बिशप फ्रेंच साहब

पंजाब रिलीजस बुक सोसाइटी की तरफ़ से शाएअ हुई

और लूदयाना मिशन प्रेस में पादरी वेरी साहब के एहतिमाम से छपी

1877 ई.



Bishop Thomas Valpy French

(1 January 1825 – 14 May 1891)

फ़हरिस्त-ए-मज़ामीन

अबवाब	मज़ामीन	सफ़ा नंबर
	दीबाचा	
बाब अव्वल	दरबयान आंका जुम्ला कलाम-ईलाही दर मसीह मुन्तहा मेशोद व गोया अनाजील अस्त	
बाब दोम	दरबयान आँ इस्तिलाहात ज़बूर कि बर नजात व ह्यात बख़श खुदावंद मसीह साफ़ व दलालत मेकिनंद	
बाब सोम	दरबयान हकीकत गुनाह व कबीह व मज़मूम बोदनश	
बाब चहारुम	दरबयान आँ मुखलिस आलमीन व सुल्तान अल-सलातीन कि अज़-नस्ल दाऊदी मुजस्सम शदनी बोद	
बाब पंजुम	दरबयान आँ मज़मून कि बादशाहत मज़कूर कि इजराइश अज़-जानिब दाऊद बसूए खुदावंद मसीह अस्त बगाएत शरफ़ व जलाल ख़्वाहिद रसीद व तामुद्धते दरिहालत ख़्वारी व ज़िल्लत व किल्लत ख़्वाहिद कर्द	
बाब शश्म	दरबयान पेशीनगोई हाय मज़ामीर शरीफ़ दरबाब बर्खास्तन खुदावंद मसीह अज़ मुर्दगान व सऊद कर्दनश अज़-हमगी आसमानहा	
बाब हफ़्तुम	दरबयान आँ मअनी कि बादशाहत रब तआला फ़िलहाल दर आलम-ए-शुहूद कुदाम अस्त वचा सूरत मे बंददो दर आलिम मुस्तक़बिल चह हाल व कुदाम सौ ख़्वाहिद शद	
बाब हशतम	दरबयान आँ मज़ामीर कि बाख़तसास तमाम बर मलकूत रब तआला व खुदावंद मसीह शहादत साफ़ व सरीह दर याफ़ताह मेशोद	

बाब नह्य	दरबयान आँ अलामतहा कि द रोकत आकिबत यानी द र वक्त इखतताम व तकमील सलतनत हकतआला पदीद व नमूदार खोह हिंद	
बाब दहुम	दरबाब फ़जाइल शराअ व खुसूसुन दर जवाब आँ मसअला कि चह तौर आँ शराअ काबिल मित्रोकियत अस्त व बकदाम हैसियत व एतबार मित्रोकतीश अली अलद्वाम मुहाल व अज़िकयास इस्त	
बाब याज़ दहुम	दर बाअज़ अम्साल व इबारात व मज़ामीन कलाम-उल्लाह व खुसूसुन दर बाअज़ हवास व खवास कि दर कुतुब ईलाही सोए रब तआला इतलाक कर्दा शूदा इंदिका अज़ आंहा निज़द बाअज़ मात्रजान नुक़स व कसूर दर शान ओ तआला मे आयद	
बाब द व अज़ दहुम	दरबाब नस्ख व तहरीफ़	
बाब सीज़ दहुम	दरबाब आँ शहादत कि इज्मा आममा मोमिनीन व मुज्ताहिद अंश कि खुलफ़ा रुसल अंद बर मोतबरी व सेहत व वसाकत कुतुब मुक़द्दसा अज़ आमाल व अक़वाल व तस्नीफ़ात खुद दर पेश रायदा अंद	
बाब चहार दहुम	दरबयान बाअज़ अक़साम (मुख्तलिफ़ किस्में) व अन्वा इल्हाम रब्बानी कि बर मुसन्नफ़ान कुतुब मुक़द्दसा यानी रुसल व अम्बिया बमकतज़ाए मज़ामीन व मक़ासिद अहकाम व अक़वाल ईलाही नाज़िल शुद नद	
बाब पानज़ दहुम	दरबाब बाअज़ वज़नी नक़लियात कि मुस्तल्ज़िम व मुस्तिदल बर उलहुय्यत व माअ्बूदियत खुदावंद मसीह मेबा शनिद	

इन्जील दाऊद

दीबाचा	8
बाब अटवल	15
दरबयान आंका जुम्ला कलाम ईलाही दर मसीह मुन्तहा मीशूद व गोया मजमुआ अनाजील अस्त	15
बाब दोम	27
दरबयान आँ इस्तिलाहात-ए-जबूर कि बर नजात व ह्यात बख्श खुदावंद मसीह साफ़ व सरीह दलालत मेकिनंद	27
बाब सोम	46
दरबयान हकीकत गुनाह व कबीह व	46
मज्मूम बोदनश	46
बाब चहारुम	63
दरबयान-आँ मुख्लिस आलमीन व सुल्तान-उल-सलातीन कि अज़ नस्ल दाऊदी मुज्जस्सम शदनी बोद	63
बाब पंजुम	78
दरबयानआँ मज्मून कि बादशाहत मज्कूर कि इजराईश अज्जानिब दाऊद बसूए खुदावंद मसीह अस्त बगायत शर्फ़ व जलाल ख्वाहिद रसीद व ताम्मुद्धते दर हालत ख्वारी व जिल्लत व किल्लत ख्वाहिद कर्द	78
बाब शश्म	125
दर बयान पेशगोई हाय मजामीर शरीफ़ दरबाब बर्खास्तन खुदावंद मसीह अज़ मुर्द-गान व सऊद करदनश अज़ हमगी आस्मानहा	125
बाब हफ्तुम	163
दरबयान आँ मअनी कि बादशाहत रब तआला फ़िलहाल दर आलम शुहूद कुदाम अस्त वचा सूरत में बंदद व दरआलिम मुस्तक़बिल चह हाल व कदाम सूर्तश ख्वाहिदशद	163

बाब हशतम.....	173
दर बयान आँ मज़ामीर कि बइख्तसास तमाम बर मलकूत रब तआला व खुदावन्द मसीह शहादत साफ़ व सरीह दर याफ़ताह मेशोद.....	173
बाब नहुम	198
दरबाब आँ अलामतहा कि दरवक्त आकिबत यानी दर वक्त इख्तताम व तक्मील सल्तनत हक-तआला पदीद व नमूदार ख्वाहिंदशद.....	198
बाब दहुम.....	210
दरबाब फ़ज़ाइल शराअ व खुसूसुन दर जवाब आँ मसअला कि चहतौर आन शराअ काबिल मत्रोकियत अस्त व बकदाम हैसियत व एतबार मत्रोकीतिश अली अलदवाम मुहाल व बईद अज़िकयास अस्त	210
बाब याज़ दहुम	223
दर बाअज़ अम्साल व इबारात व मज़ामीन कलाम-उल्लाह व खुसूसुन दर बाअज़ हवास व खवास कि दर कुतुब ईलाही सोए रब तआला इतलाक़ कर्दा शूदा इंदि कि अज़ आंहा निज़द बाअज़ मुअतरज़ान नुक्स व कसूर दर शान ओ तआला मे आयद	223
बाब दो अज़ दहुम.....	241
दरबाब नुस्ख व तहरीफ़	241
बाब सीज़ दहुम	264
दरबाब आँ शहादत कि इज्माअ अम्मा मोमिनीन व मुज्त्हिद अंश कि खलिफ़ा व रसुल अंदबर मोअतबरी व सेहत व वसाक़त कुतुब मुकदसा अज़ आमाल व अक्वाल व तस्नीफ़ात खुद दर पेश गुज़र अनीदह अंद	264
बाब चहार दहुम	302
दरबयान बाअज़ अक्साम व अन्वाअ इल्हाम रब्बानी कि बर मुसन्नफ़ान कुतुब मुकदसा यानी रुसल व अन्बया बमक़तज़ाए मज़ामीन व मकासिद अहकाम वाक़वाल ईलाही नाज़िल शदनद.....	302
बाब पानज़ दहुम	318
दरबाब बाअज़ वज़नी नक़लियात कि मुस्तलज़म व मस्तिदल बर उलुहियत व माअबूदियत खुदावन्द मसीह मेबाशन्द.....	318

दीबाचा

हजार हजार शुक्र है उस कादिर-ए-मुतलक खुदा के लिए जिसने अपने हकीकी दोस्तों और खवासों (खवास की जमा, बड़े लोग, हम-सोहबत) को ये मर्तबा और शर्फ मर्हमत (रहम, मेहरबानी) व इनायत फ़रमाया है कि उनका बदन भी मासिवाए रूह के रूह-ए-हक़ की जाये सुकूनत और खुदा की इबादत-गाह हो। और इस इबादतखाना ईलाही में बाकी तमाम आज्ञा का इमाम और मुक़तिदा (पेशवा) ज़बान होती है कि बिला-नागा दुआ व सवाल और हम्द व सताइश का नज़राना इन्सान के शफ़तीन से सादिर हो कर रब तआला के हुज़ूर में गुज़राना जाये। बमूजब फ़रमाने दाऊद नबी के कि “मेरी दुआ तेरे हुज़ूर बख़ूर की मानिंद हो और मेरा हाथ उठाना शाम की कुर्बानी की मानिंद। (जबूर 141:2) पस कलीसियाए आमा ख्वाह यहूदीयों की हो, ख्वाह मसीहीयों की इस इकरार पर मुतफ़िक़ है कि हम्दो सताइश का कर्ज़ बाल-गरज़ अदा करने में गो (हर-चंद, अगरचे, बिल-फ़र्ज़) इमाम इल्ला-ईमा (الائمه) हज़रत दाऊद हैं। बआनकदर कि अगर कोई शख्स इस उम्दा और फ़रिशतगाना खिदमत का नमूना और निशान ढूँढे तो मज़ामीर दाऊद में उस का मतलब और मुराद बख़ूबी बर आए। हाँ बल्कि साकिनान आस्मान और ज़मीन की इबादत इसी मज़ामीर दाऊद में मुवाफ़िक़त और मुराफ़िक़त (बाहमी मेल-जोल) और खुश इत्तिफ़ाकी से मिलती है और आप दाऊद भी कब्ल अज़-वफ़ात और मुंतक़िल होने इस आलम-ए-फ़ानी से इस बात की खास तक़रीर करता है कि हक़-तआला की रूह के इल्हाम से मैं इस ओहदे पर वक़फ़ और मुतईन किया गया हूँ। समुएल की किताब में यूं मर्कूम है :-

“दाऊद की आखिरी बातें ये हैं, दाऊद बिन यस्सी कहता है, यानी ये उस शख्स का कलाम है जो सर्फ़राज़ किया गया और याक़ूब के ख़ुदा का ममसोह और इस्राईल का शीरीन नग़मा साज़ है। ख़ुदावंद की रूह ने मेरी माअर्फ़त कलाम किया और उस का सुखन (कलाम, शेअर, बात) मेरी ज़बान पर था। (2 समुएल 23:1-2)

एक उम्दा मशहूर मुअल्लिम ने मज़ामीर अफ़ज़ल दाऊद का इज्मालन ये बयान कहा कि :-

एक भी इल्म ज़रूर नहीं जिसे खल्क-उल्लाह मज़ामीर दाऊद से नहीं निकाल सकती। जो हयात ख़ुदा में कोताह उम्र और तिफ़ल (बच्चे) हैं, वह भी इस किताब के अंदर इल्म ईलाही की इब्तिदा और मुक़द्दमात को बाआसानी तमाम हासिल कर सकते हैं और जो ख़ुदा की राह में कुछ आगे चल निकले हैं, उन को बड़ी तरक्की और तक़वियत दस्तयाब होती है। हाँ बल्कि वो भी जो औरों की निस्बत मूसल (पहुंचाने वाला) बकमाल हैं, यहां बड़ी पुख्तगी और इस्तिक़ामत के वसाइल पाते हैं। अगर तुम पहलवानों का हौसला या हिम्मत आला तलब करो और ऐसी अदालत और रास्ती जो बगावत तमाम पहुंची हो और मिज़ाज संजीदा और मोतदिल और मियानारवी और तमाम वक़्त की दानाई और बेरेब व बेरिया तौबा-कारी और सुबूरी (सब्र) का इस्तिक़रार (क्रायम होना, करार पकड़ना) तो मज़ामीर दाऊद से ये सब फ़ज़ाइल मतूबा और औसाफ़ मर्ग़ोबह ग़ायत व निहायत तक मिल सकते हैं। अगर हम

और आप खुदा के इसरार गायबा की तरफ़ तवज्जा कर के ख्वाह उस के हैबतनाक क़हर का ज़िक्र करें, ख्वाह उस की तसल्ली बख़्श रहमत का बयान करें या उस के फ़ज़ल और उल्फ़त के हुस्न व जमाल का ऐलान हो। या इस जहान में परवरदिगार के अफ़आल का तजस्सुस और तफ़हस (जुस्तजू) हो, ख्वाह मौऊद (वाअदा की हुई) मीरास का जो उस जहान में मुक़द्दस लोगों के लिए तैयार है। हाँ बल्कि सब ख़ुरमी और ख़ैरीयत जिस क़द्र इल्म और अमल और क़ब्ज़े के अंदर आ सकतीं, सबकी सब उस मंबा और माअ्दिन (कान) आस्मानी से बेशक हासिल हो सकती हैं। जितने अमराज़ और ग़मोम वहमूम (अफ़सुर्दगी, रंज) से आदम ज़ाद आजिज़ हैं, इतने ही मरहम और मुआलिजे इस ख़ज़ाना-ए-नफ़ाइस (नफीसा की जमा, नफ़ीस चीज़ें) में से बाआसानी मिल सकते हैं।□

एक मुअल्लिम साहब अज़्ज़ व वक्रार ने किताब मज़ामीर की पेशीनगोइयों की बाबत यूं फ़रमाया है कि :-

□जानना चाहिए कि दाऊद के ज़बूरो में बाअज़ थोड़ी (कुछ) ऐसी पेशीनगोइयां हैं कि बिलावास्ता मसीह की तरफ़ मंसूब हो सकती हैं। बग़ैर अज़ आँ कि ख़ुदावंद मसीह पर इतलाक़ करें तो बिल्कुल और सरासर बेमतलब और बेमाअनी गोया पोस्त बेमग़ज़ हैं। पर वाज़ेह हो कि और बहुत ज़बूरो में ऐसा हाल है कि वो मज़मून अद्वल

और मज़मून सानी भी रखते हैं, यानी मज़मून हकीकी ओर आली।□

इस अम्र मज़कूर का जो हमने बयान किया अस्ल और खास मतलब ये है कि अम्बिया, औलिया और सलातीन ज़माना-ए-सलफ़ अपने मुरातिब और मनाज़िल और उम्र के अहम तरीन अहवाल और अमाल में खुसूसुन अपनी औकात पस्ती और बुलंदी में तसावीर और तशाबुह (मुशाबहत, मुताबिकत) की राह से उस आने वाले की तरफ़ इशारा करते थे कि वो खानदान ईलाही का सर है और ओलूल-अज़म (आली हौसला) पैगम्बर और काहिन हकीकी और बादशाह जावदानी होगा। इस अम्र में वो शख्स बाइस हैरत और ताज्जुब का ना पाएगा, जो गौर और ताम्मुल करेगा कि जिस रूह के इल्हाम से ज़बूर तस्नीफ़ किए गए उसी ने अहवाल मज़कूर-फिया (ऐसी बात जिस पर एतराज़ हो) की, पेश-बीनी और पेश इंतिज़ामी फ़रमाई और बलिहाज़ इस मज़मून इल्हामी और रुहानी के कुतुब ईलाही कुल आलम के बाकी मक़्ूबात से इस क़द्र मुतफ़रि़क हैं जिस क़द्र माजरे और वाक़ियात मुंदरजा-फिया बाकी हर किस्म के वाक़ियात से मुम्ताज़ हैं और उन के मुसन्निफ़ भी बाकी सब मुसन्निफ़ों पर सबक़त और तफ़सील रखते हैं। और इस अम्र यानी मज़मून अव्वल और सानी के किसी नबुव्वत पर इतलाक़ करने की एक ये शर्त है कि वो आयात मुताअद्दह (متحدّه) के शुमार में हो, जो बाहम सिलसिला बन्दी से करीन (नज्दीक, मुल्हि़क़) और मुकारिन (क़रीब) हों और सब एक ही हद-ए-नज़र और मंज़र में मुन्तहा (इंतिहा को पहुंचा हुआ, मुकम्मल) हों। चुनान्चे कलाम-उल्लाह से बखूबी साफ़ मालूम होता है कि अम्बिया की पेशीनगोइयों में जो तदाबीर बयान होती हैं वो ऐसी कुलिइयतन ڪَلِيْبَةٌ (पूरे तौर पर) हैं कि जिनके अजज़ा खुश मुरतिब और मुनज़्ज़म हैं, जैसे कि मीनाकारी में संग

रंगीन और जवाहरात सुर्ख व सब्ज मिलते हैं। इसी तरह जिन मजामीर दाऊद में दाऊद के अहवाल और अफ़आल मज़कूर हैं, उन के लफ़्ज़ी और ज़ाहिरी मअनी में दाऊद ही नज़र आता है, मगर हकीकी माअनों से खुद मसीह ही मुराद है। मसलन जब दाऊद अपना हाल बताता है कि मैं मुफ़्त मक़हूर (जिस पर गुस्सा हो, जिस पर क़हर हो) और मज़्लूम हूँ और मौरिद लान तअन हूँ और जिन जुर्मों का मैं अस्लन और हरगिज़ मुर्तक़िब ना था, उनका मुजरिम ठहरा और मैं उन के सबब सज़ा भी उठाता हूँ जिनका तसव्वुर तक भी मकरूह जानता हूँ और हर-चंद कि मेरी जान तंगियों और तल्ख़ियों और रंजूरियों (बीमारीयों) में ग़र्क़ होती है, तो भी इस मेरे तवक्कुल और तवक्कअ में जो खुदा पर है ज़रा भी ख़लल नहीं आता और ना मैं अपना तयक्कन (تَيَكُّن यकीन) कलाम ईलाही से छोड़ता हूँ। बल्कि सिर्फ़ इसी के मुख्तलिफ़ लज़ाइज़ और नफ़ाइस से मेरी तसल्ली है और कि, किस तरह बिलानागा गुस्सावर और कीना ख्वाह और ग़नीम मेरे दरपे होकर धावा करते हैं। यहां तक कि मैं सितम और तअद्दी (जुल्म, सितम) से क़दरे भी आराम और तख़फ़ीफ़ (आफ़ाका) नहीं पाता। (जिन सितमगरों के शुमार में मसम्माई दोएग और अबी सलौम व अखीतफ़ल मशहूर व मारूफ़ हैं) और ख़िलाफ़ उम्मीद व क़यास उन की ख़िफ़त (खजालत, नदामत) और अपनी सर-बुलंदी और मलकूती (बादशाही, सल्तनत) जलाली की पेशगोईयां फ़रमाता है तो इनमे और इन्ही की मानिंद दीगर उमूरात के आईना में दाऊद हकीकी यानी खुदावंद मसीह की हकीकत-ए-हाल मुनाकिस होती है। यानी मसीह का इल्म व अंदोह (रंजोगम) और अपने बाप की इन्क्रियाद (ताबे होना, मुतीअ होना) और फ़र्माबरदारी करना और अपने क़ातिलों की बे-इंसाफ़ी और ख़ियानत और उन दोनों के अंजाम और आक़िबत की पेशीनगोई, इन में मुतज़म्मिन (مُتَضَمِّن مُंदरज, शामिल) है कि वो

गनीम तो रुस्वा और पशेमान (शर्मिदा) और आप तख्त नशीन और मुतजल्ला (आशकारा) होगा।

फिर ऐसे ज़बूर भी होते हैं जिनके मज़ामीन और ही तरह के हैं कि गोया आस्मान खुल गया। खुदा तआला अपने मज़लूमों की दस्तगीरी और पुश्त पनाही के लिए उतरा है। गोया बाद-ए-समूम (बहुत गर्म हुआ) और जलजल उल-अर्ज़ और बर्क व रअद और अब्रे सियाह बादशाह आला के मरकिबूं (मुरक्कब, वो शए जिस पर सवार हों, सवारी) को घर लेते हैं और सरकोह (पहाड़ की चोटी) से दुखान (धूवां, भाप) अज़ीम उठते हैं। सख्त-सख्त कोह सख्ता (जला हुआ, जाज़िब) गदाखता (पिघला हुआ) होते हैं। दरया-ए-अज़ीम मौजजन और जुंबां (हिलता हुआ, लर्जा) होते हैं। कीना वर और गनीमों के मंसूबे खस व खाशाक (कूड़ा करकट) की मानिंद उड़ाए जाते हैं। मसीह का पेशदवां और मुशाबेह खास यानी दाऊद तख्त आला पर जलूस फ़र्मा कर हद्द सलतनत को बढ़ाता है। अल्लाह के इबादतखाने कूबनी (तैयार, बनी हुई) और मामूर करने की तज्वीज़ करता है और शहर यरूशलीम बादशाह अज़ीम की हुजूरी से रौनक पज़ीर और सब क्रौमों और कबीलों में मारूफ़ हो जाता है।

पस इन सब अहवाल का ताल्लुक और इतिफ़ाक़ खुदावंद मसीह के बअस व सऊद और मलकूत के साथ इस दीबाचे के अंदर बयान व अयाँ करना क्या जरूरी है। इंशा अल्लाह तआला ज़ेल में इनको मुफ़स्सिल बयान करेंगे। इल्ला इज्मालन (लेकिन मुख्तसरन) हम यहां पर इतना कह सकते हैं कि हज़रत दाऊद के ज़बूरो में खुदा तआला आप ही ऐसा साफ़ व सरीह और करीब और जिंदा नज़र आता है कि हमने गोया बचश्म खुद उस का मुशाहिदा किया है और अपने दुख और रंज व अज़ाब का ऐसा ईलाज और मुआलिजा पाया कि गोया मोहलिक साँप के ज़हर से हम फ़ज़ल ईलाही से शिफ़ायाब हो गए और

ज़ईफ़ी से तक़वियत और तारीकी से रोशनी पाई। खुदा हम पर फ़ज़ल बख़्शे कि हम इन बातों पर बख़ूबी दिल लगा कर अच्छी तरह उन को फ़हम में लाएं। मसीह के वसीले से आमीन !

बाब अय्वल

दरबयान आंका जुम्ला कलाम ईलाही दर मसीह मुन्तहा मीशूद व गोया मजमुआ अनाजील अस्त

(در بیان آنکه جمله کلام الہی در مسیح منتهی میشود و گویا مجموعہ اناجیل است)

बाअज़ अशखास नाख्वान्दा और सफ़ाहत (कमीना पन, हमाक़त) वालों का ये ख़ामखयाल है कि दीन ईस्वी के रसाइल अक़ाइद और शारहीन (शारह की जमा, खोल कर बयान करने वाला, शरह लिखने वाला) की किताबों में जितनी बातें तहरीर और तस्तीर (क़लमबंद, सतर बंदी करना, लिखना) होती हैं। मसलन ख़ुदावंद मसीह के मुजस्सम होने की बाबत और आदमज़ाद के एवज़ हज़ार-हा रंज उठाने और शैतान से मुम्तहिन होने और मूरिद-ए-मज़ाह (जिसका मज़ाक़ उड़ाया जाये) और मस्ख़रा पन की बाबत और मज़्लूम और मतरूक होने और आलम अर्वाह के दुरूद (सलवात, रहमत, शाबाश, इस्तिग़फ़ार, तारीफ़, दुआ-सलाम) करने की बाबत और मुर्दों से जी उठने और सब आसमानों से बाला-ए-तर सऊद करने और ख़ुदा तआला के दस्त-रास्त पर नशिस्त करने के हक़ में जितनी बातें बसराहत (खुल्लम खुला) तमाम लिखी हुई हैं, ये सब और इन्ही की मानिंद मसीह की उम्र के बाकी उमूर वाक़ये सिर्फ़ इंजील ही में मज़कूर और मुबय्यन (बयान किया गया) हैं। अज़आनरो कि हज़रत दाऊद, यसअयाह, हज़िक्रीएल, दानीईल, ज़करीयाह और माबिका (बक़ीया) अम्बिया इन वाक़ियात आइंदा के इल्म व फ़हम से महरूम थे और इस क़दीमी अहद व मीसाक़ से जिसके ज़रीये से ख़ुदा तआला सब कायनात पस्त व बाला पर

अपने फ़ज़ल और हिक़मत गूना-गों (तरह तरह की) को मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर होना, खुलना) और नमूदार करना चाहता था, बिल्कुल नावाक़िफ़ और बे-इत्तिला थे? हालाँकि कुल अस्थाब माअफ़त और फ़हमीदा पर ज़ाहिर व आशकारा है कि बमुश्किल एक अम्र इन वाक़ियात से मिलेगा। जो हज़रत मूसा की तौरैत में मुशाबहात से बयाँ व अयाँ नहीं होता। और बाअद-अज़-ज़मान मूसा, नबियों और पैग़म्बरों के सहाइफ़ सगीर व कबीर में ना बतौर कलिमात मिजाज़ी और तशबीहात के बल्कि बसफ़ाई व सलामत तमाम ये सब अहवाल इस क़द्र मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर होना, खुलना) और मुब्ययन होते चले आते थे कि अहले ईमान के लिए जो पुश्त दर पुश्त नूर और तारीकी के सख़्त जंग व जदाल पर सिपाह गिरी में मसरूफ़ और मुतय्यन थे। वो पेशीनगोईयां उन शख्सों की दिल जमई के लिए नजात व सलामती का मुकर्रर (करार किया गया, बिलाशुब्हा, यकीनन) वसीला और खस्ता और शिकस्ता-दिलों का मुआलिजा (معالجہ) थीं।

इसी तरह हज़रत सुलेमान के इस मशहूर क़ौल का सबूत हो गया कि “सादिक़ों की राह नूर सहर की मानिंद है जिसकी रोशनी दोपहर तक बढ़ती ही जाती है।” (अम्साल 4:18) हाँ बल्कि फ़ील-तहक़ीक़ कुल कलाम-उल्लाह एक इंजील है और वो सब वाक़ेआत मुंदरजा-फिया (जूदर्ज किए गए हैं) जिन का बयान जाहिल लोग और बेतमीज़ महज़ किस्सा और फ़साना जानते हैं, उन की मिसाल मानिंद खेत के हैं जिसमें ख़ुदा तआला ने बज़रीये अपने अम्बिया के अपनी आइंदा बादशाहत का तुख़्म बोया है। चुनान्चे ख़ुदा की ममलकत सिर्फ़ आलम-ए-ग़ैब ही में करार नहीं पकड़ती, बल्कि आलम-ए-शुहूद और ज़हूर में भी और उस का इश्तिहार सिर्फ़ ख़ुदा-तआला के कलिमात और अक़वाल से नहीं, बल्कि उस के अफ़आल और उस की रिआयत और

परवरदिगारी से भी जो आँजहानी ममलकत और सियासत में और बाकी मुहिम्मात आलम के इंतिजाम में नज़र आती है, गोश गुज़ार होता है। अज़-आनरो कि इन्सान के जिस्म में हड्डियां गोशत, खून और खाल से मुलब्स होती हैं। इसी तरह खुदा का इल्म उस के अमल और फ़ेअल में अयाँ व नुमायाँ होता है और जाहिरी सूरत कुबूल करता है और मुफीद मसाइल से साबित और दिल पज़ीर और दिलकश भी हो जाता है। जिस सबब से हज़रत दाऊद बारहा ताकीद और ताईद से खुदा के मुक़द्दसों को ये फ़र्ज बताते हैं कि ना सिर्फ़ खुदा के अक्वाल मुबारक का तज़िकरा करें, बल्कि उस के अफ़आल और अजाइब का भी। जिनके वकूअ पर ख़त्म वसूक (यक़ीन) और एतबार कुतुब इल्हामिया मौक़ूफ़ है और जिनकी तरफ़ हज़ार-हा इशारात कुतुब कदीम से कुतुब अख़ीर तक नक़ल किए गए हैं। हाँ बल्कि मुहम्मदी भी मजबूरन और बे-अख़्तियारी से आप ही इकरार करेंगे कि जितने क्रिसस उन के फ़ुर्क़ान में मन्कूल या इशारतन और कनायतन मज़कूर हैं, वो सब अहदे अतीक़ के क्रिस्सा जात पर कायम और मुन्हसिर हैं। ग़ैर-अज़ (अलावा-अज़ीं, बजुज़ उस के) आंका अदयान यहूद के बे सर-व-पा (जिसका कोई सर पैर ना हो, झूट) फ़सानों से मुंतख़ब हुए। हासिल कलाम कुल कलाम-उल्लाह गोया मजमुआ-ए-अनाजील बल्कि मसीह में मुन्तहा होकर एक इंजील है।

चुनान्चे हज़रत मूसा की किताब खुदा-ए-तआला की हिकमत बेपायाँ (बेहद) और रूहुल-कुद्दुस की तौफ़ीक़ और उस की पेश-दानी से एक ऐसा मिरात (शीशा) है जिसमें हर फ़र्द मोमिन ने अपने नफ़्स का ऐब और सतर बातिनी और मौरूसी तबाह हाली और मौरूसी हाजतों का अक्स देखा और उन हाजतों के रफ़ा करने के मुकर्ररी ईलाज और तदारुक़ की थोड़ी बहुत पेश फ़हमी और समझ हासिल की और बीनाई पाई। और अम्बिया की ख़ास रौनक और उन

के क्रिस्सों का उम्दा नफ़ा ये नहीं है कि अच्छी नसीहतों और नमूनों से हक़ जो यूं को फ़ज़ाइल की तर्गीब और रज़ाइल से इबरत नुमाई और मुमानिअत कुल्ली करते हैं, बल्कि ये कि वो सब खुदा के मलकूत के पेश दवां और पेशगो हैं और इस खाना-ए-ईलाही की जो खुद मसीह है एक बुनियाद हैं। बमूजब इस नविशते के कि “और (तुम) रसूलों और नबियों की नीव पर जिसके कोने के सिरे का पत्थर खुद मसीह यस्ूअ है तामीर किए गए हो। उसी में हर एक इमारत मिल-मिला कर खुदावंद में एक पाक मुकद्दस बनता जाता है।□ (इफ़िसियों 2:20, 21) फिर पतरस रसूल भी इस अस्ल का शाहिद (गवाह) है। “उस के यानी आदमीयों के रद्द किये हुए पर खुदा के चुने हुए और क्रीमती ज़िंदा पत्थर (खुदावंद यस्ूअ मसीह) के पास आकर, तुम भी ज़िंदा पत्थरों की तरह रुहानी घर बुनते जाते हो।□ (1-पतरस 2:4, 5)

और बमूजब इस इब्तिदाई तफ़्सीर के आप जान लें कि वो हम्दो सताइश जो मज़ामीर दाऊद का गोया नफ़्स और ऐन जान है, वो आम हम्दो सताइश नहीं है। पर इस हम्दो सताइश का मर्कज़ और मदार वो औसाफ़ ईलाही हैं जो गुमराहों के रूजू कराने में और ख़ताकारों के तस्दीक़ करने में और शिकस्ता-हाल लोगों के नजात व सलामत के वारिस करने में खुदावंद मसीह के ज़रीये और तुफ़ैल से ज़ाहिर हुए हैं। चुनान्चे मुकाशफ़ा की किताब में मर्कूम है कि, □यस्ूअ की गवाही नबुव्वत की रूह है।□ (मुकाशफ़ा 19:10) यानी गोया कुतुब अम्बिया के बाकी मुतालिब और मक्रासिद इन का जिस्म है और मसीह की गवाही उन की रूह है।

इस रिसाले की इब्तिदा में मुसन्निफ़ का ये इरादा है कि बाकी कुतुब मंज़िला के दलाईल ख़ुसूसुन मज़ामीर दाऊदी की शहादत (गवाही) को जो खुदावंद मसीह के मनाज़िल और मुरातिब पर और उस की अल्लूवियत (علويت)

बुलंदी, रिफअत) और ज़िल्लत दोनों पर हज़रत दाऊद की तरफ़ से दी गई है, अलहैदा (अलग) कर के उस की कैफ़ीयत बिल-तख़सीस और बाल-तहक़ीक़ इंशा-अल्लाह बयान करे। यकीन है कि खुदावंद ने बार-हा इस शहादत (गवाही) को अपनी तरफ़ आइद और मंसूब किया और अपने महरमान इसरार (महरम-ए-असरार, पोशीदा बातों का जानने वाला) में जैसे हज़रत मूसा और हज़रत इब्राहिम को वैसे ही हज़रत दाऊद को भी शुमार किया। मसलन जब खुदावंद मसीह मुबारक ने यहूद के रईसों और अस्हाब शराअ और फ़कीहों के रूबरू अपनी ज़ात और सिफ़ात ईलाही पर दावा करना मुनासिब जाना और उस को कुतुब ईलाही से साबित करना मुनासिब समझा (क्योंकि उस की उम्र मुबारक के हर एक अहवाल का एक मियाद और वक़्त मुईन था जिसमें इन उमूर मज़कूर का इज़हार करना ज़रूरी था) तो बतस्दीक़ और बताईद इस दावे के (ज़बूर 110:1) को नक़ल कर के हज़रत दाऊद की गवाही से उन मोतरिज़ों को खजल और लाजवाब किया।

और फिर दूसरे वक़्त का ज़िक्र है जब खुदावंद पहली बार ईद-ए-फ़सह की रसूमात अदा करने के लिए बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ तशरीफ़ फ़र्मा हुआ था और कोह-ए-ज़ैतून की चढ़ाई पर पहुंचा था। जिसकी चोटी से यरूशलेम की सब इमारतें और खुसूसुन हैकल मुक़द्दस की रौनक और उस की ज़ेब व ज़ीनत व जमाल यकलख़त नज़र आया तो ये अम्र उस वक़्त वाक़ेअ हुआ कि यहूदीयों की कुल जमाअत बे-इख़्तियार गोया रूहुल-कुद्दुस की तहरीक नागहानी से जोश व जुंबिश ज़दा होकर तमाम देखे और सुने हुए अजाइबात के सबब बड़ी बुलंद आवाज़ से शादमानी और शुक्रगुजारी के गीत गाने लगी। और मअन (साथ) मज़ामीर दाऊद से बाअज़ ऐसी पेश गोईयां यकदिली से ज़बान पर लाई कि जो उस ज़माने की अहले उम्मत के हरकत दिली के ज़ाहिर और आशकारा

करने के लिए खुदा की इरादत क़दीमी से मुकर्रर हो गई थीं यानी (ज़बूर 118:25-26) आयात से उन्होंने ये मज़मून नक़ल किया कि “इब्न-ए-दाऊद को होशाना।□ मुबारक है वो जो खुदावंद के नाम पर आता है। आलम-ए-बाला पर हो शाना।□ (मती 21:9) इस माजरे से साबित है कि इस क़ौम यहूद में जो खुदा के वाअदे और मीसाक़ के खास वारिस बर्गुजीदा थे, ये उम्मीदावर इंतिज़ारी ब-यक़ीन तमाम ज़मान बाद ज़मान उतरी चली आती थी कि दाऊद की पज़मुर्दा अस्ल से एक ज़माख़ (نسخ) यानी एक अस्ल जदीद और ताज़ा फूट कर शगुफ़ता होगी। और फिर पेश-अज़-आंका खुदावंद मसीह ने हज़रत आला के तख़्त जलाल की तरफ़ सऊद फ़रमाया।

एक मर्तबा कुल अहदे अतीक़ को तीन जुजों में मुनक़सिम कर के और सब नबियों की पेशीनगोईयां अपने में इन्हिसार कर के यूं फ़रमाया कि “ये मेरी वो बातें हैं जो मैंने तुमसे उस वक़्त कही थीं जब तुम्हारे साथ था, कि ज़रूर है कि जितनी बातें मूसा की तौरैत और नबियों के सहीफ़ों और ज़बूर में मेरी बाबत लिखी हैं पूरी हों।□ (लूका 24:44) तो अब मुसन्निक़ का ये इरादा है कि इन तीन बुजुर्ग और मोअतबर गवाहों में से दोनों की गवाही पर महज़ इशारतन व किनायतन लिहाज़ कर के ज़बूरों के नक़ली दलाईल को बातशरीह हता-उल-वसीअ पेश करे। जिस मुसद्वर ईलाही यानी रूहुल-कुद्दुस ने अम्बिया सलफ़ के ज़रीये से इस तस्वीर को खींचा, वही मुदब्बिर भी था, जिसने अपनी हिक्मत बेपायाँ से उस मुतसव्वर एलिया (ख़याल किया गया) के अहवाल और अफ़आल का ऐसा इंतिज़ाम और बंदोबस्त किया कि उन में नक़शा क़दीमी की पूरी मुताबिक़त और मुवाफ़िक़त हो। चुनान्चे अगर हम कुतुब सलासा की गवाही तीन हिस्सों में तक़्सीम करें तो हर एक फ़र्द में साफ़ मुताबिक़त पाई जाएगी। इन तीनों ख़िदमतों और ओहदों से

जिनको खुदावंद ने अपने जिम्में ले लिया था, ज़बूरों की गवाही में बाला इख्तिसास (खुसूसीयत रखना) बादशाहत की पेशीनगोई और तौरैत की गवाही में कहानत की ओर शहादत अम्बिया में नबुव्वत की।

पस इन तीनों में से शहादत ज़बूर को हमने अलैहदा (अलग) किया, इस से मुराद है कि मसीह की कुदरत व फ़ीरोज़ी (कामयाबी, रतगारी, फ़ीरोज़े के रंग का सब्ज) और जलाल शाहाना पर जिससे बसबब नादानी और कोताह अंदेशी के अक्सर मुहम्मदी नावाक़िफ़ हैं, खास ग़ौर और मुलाहिजा करने वालों को इस किताब की तरफ़ मुतवज्जा करूँ। हर-चंद कि इन्ही ज़बूरों में खुदावंद की कहानत और नबुव्वत के ख़वास और फ़जाइल के बाअज़ साफ़ और मौजूं दलाईल नज़र आते हैं और यकीन है कि ये सब तीन ओहदे और मुरातिब उस अज़ली वाअदे और मीसाक़ में दर्ज हैं, जिसे खुदाए कादिर-ए-मुतलक़ ने हज़रत आदम की अहद शिकनी और नाफरमानी के वक़्त से लेकर मसीह के तवल्लुद जिस्मी (जिस्मी पैदाइश) तक बज़रीये अम्बिया के आदमज़ाद के साथ कायम फ़रमाया था। और सब तदाबीर और तजावीज़ ईलाही दरबाब नजात व सलामत आदमज़ाद का मदार और मर्कज़ यही था। बानकदर कि जो शख़्स इस अस्तल मबदए (शुरू होने की जगह) तदबीर ईलाही से चूक गया हो, तो वो कलाम ईलाही की सैर करने में ऐसा कोताह शनास और ख़ूर्दा बीन है, जैसे दशत में कूर चश्म (अंधा) बेराह और ग़म-गशता आवारागर्दी करता हो। करीब है कि रसूलों और नबियों के आली कलिमात ऐसे आदमीयों के लिए वाहीयात और मुहिम्मात ग़ैर इन्हिलाल (किसी मुरक्कब शैय के अनासिर तर्कीबी का अलग होना) की सूरत दिखाएं। चुनान्चे इस हम्दो सताइश के अंदर जो मज़ामीर दाऊद में बकस्रत व फ़रावानी मिल सकती है, ऐसे कौन से अस्मा व सिफ़ात ईलाही हैं जिनका उतना वक्र (बड़ाई, रुत्बा) होता है, जितना उन सिफ़तों का

जो बवकालत और बवसातत खुदावंद मसीह के आदमजाद की सलामती के लिए जाहिर व आशकारा हो गईं। और इसी तरह तकरीबन हर वाज़ व नसीहत और कलाम इबरत आमैज़ अम्बिया की यही मुराद और अंजाम नज़र आता है। और क्रौम यहूद के हर एक अब्र आफ़त और जोरू जफ़ा में उसी आफ़ताब शिफ़ा की उम्मीद से सब अम्बिया अपने चराग़ रौशन कर के हर एक खुदातरस और तालिब-ए-हक़ की दस्तगीरी और खुदावंद की तरफ़ राहनुमाई फ़रमाया करते थे।

और अला-हाजा-उल-क़यास (इसी क़ियास पर) मुबादी (मब्दा की जमा, बुनियादी बातें) मज़कूर से ये नतीजा साफ़ व सरीह निकलता है कि वो क़दीमी व सीक़ह और वाअदा जिससे हज़रत खलील-उल्लाह मुशरफ़ थे, गैर मुम्किन है कि हज़रत दाऊद की बिअसत और जलूस के बाद मंसूख़ हो गया हो। हाँ अगर बिलफ़र्ज़ मुम्किन था कि एक मज़मून कलिमात और अक्वाल ईलाही से नस्ख़ हो सकता है, तो बहर-ए-हाल मुमानिअत खास तर्दीद और नस्ख़ तौरैत की इस बुरहान क़वी और रासिख़ से साबित होती है कि हज़रत दाऊद बिलानागा ब बलागत (फ़सीह कलाम) तमाम तौरैत का नाम लेकर उस के औसाफ़ और फ़जाइल की तारीफ़ करते थे। और तारीकिन और गाफिलीन को मौरिद ग़ज़ब व इताब बताते थे। और जितनी खल्कत उस की तालिब हकीकी और ताबे हैं, उन को फ़ज़ल और बरकत और माअर्फ़त ईलाही का वारिस बताते थे।

अगर कोई शख्स किसी बात के दलाईल और मसाइल को देखना चाहता है तो वो शख्स इंशा अल्लाह (19 और 119 ज़बूरों) से पूरी तसल्ली और इतिफ़ाअ (बुलंदी) शक पाएगा। और मज़ामीर दाऊद के और बेशुमार मुतालिब इन्ही माअनों से हैं और जिस तरह हज़रत दाऊद तौरैत मूसवी की तहसीन व तारीफ़ करते हैं, उसी तरह उस अहदो व सीक़ह सलफ़े-ईलाही का जो तौरैत में

मबय्यन है, बतौर इशारा और तक्ररीर मुसफ़्फ़ा (साफ़) के शाहिद भी हैं। मसलन (ज़बूर 74 की 20 वीं आयत) में हज़रत मौसूफ़ बारी तआला से यूं सवाल करते हैं कि “(ऐ खुदावंद तू) अपने अहद का ख़याल फ़र्मा क्योंकि ज़मीन के तारीक मुक़ाम जुल्म के मस्कनों से भरे हैं।” और फिर (ज़बूर 50 आयत 5 और 6) में यूं मर्कूम है “कि मेरे मुक़ददसों को मेरे हुज़ूर जमा करो जिन्हों ने कुर्बानी के ज़रीये से मेरे साथ अहद बाँधा है। और आस्मान उस की सदाक़त का बयान करेंगे क्योंकि खुदा आप ही इन्साफ़ करने वाला है।”

शायद कोई मोअतरिज़ बतरीक मुनाज़रा के कहे कि मेरी दानिस्त और फ़हमीदा में आयात मज़कूर में वो अहद सलफ़ नहीं है जो हक़-तआला ने खलील-उल्लाह को मर्हमत व अता फ़रमाया है। बल्कि अहदे जदीद है, जो इस पहले के मंसूख होने के बाद हज़रत दाऊद के साथ मुन्अकिद था।

तो अय्वलन जवाब सरीह और क़तई ये है कि अहद मज़कूर हज़रत दाऊद के साथ मख़सूस ब ज़बाइह व कुर्बानी है जो अहद मूसवी की अलामतें बिल-तख़सीस थीं। चुनान्चे इस में मर्कूम है कि “जिन्हों ने कुर्बानी के ज़रीये से मेरे साथ अहद बाँधा है” फ़क़त।

सानियन इस एतराज़ का ये जवाब है कि इस अहद साबिक इब्राहीम पर एक ये शर्त साबित है कि इताअत उन अहकाम और हिफ़ाज़त उन उमूर की हो जो तौरैत मुबारक में मुतज़म्मिन (मुंदरज) थे। बआनक़दर कि जिसने उनका इम्तिसाल (हुक़म मानना) ना किया, बल्कि उन से गाफ़िल रहा, वो शख़्स और वो उम्मत इस मीसाक़ के लुत्फ़ और बरक़त मौऊद से साक़ित और महरूम होने वाले थे। बमूजब इस शहादत हज़रत दाऊद के “लेकिन खुदावंद की शफ़क़त उस से डरने वालों पर अज़ल से अबद तक और उस की सदाक़त नस्ल दर नस्ल है। यानी उन पर जो

उस के अहद पर कायम रहते हैं और उस के क़वानीन पर अमल करना याद रखते हैं। (ज़बूर 103:17,18) यानी उन अशखास पर जो अहकाम तौरैत से उम्दन व क़सदन मुतजाविज़ नहीं होते।

सालिसन जवाब इस एतराज़ का ये है कि हज़रत दाऊद बारहा इस अहद क़दीमी के अबद-उल-आबाद तक ग़ैर मुतग़य्यर (बदला हुआ) और ग़ैर-फ़ानी होने पर शाहिद (गवाह) हैं। देखो इस अहद की अबदीयत किया ही सरीहन और मुकर्रन मशहूद (जाहिर) है। उस ने अपने अहद को हमेशा याद रखा। यानी उस कलाम को जो उस ने हज़ार पुशतों के लिए फ़रमाया। उसी अहद को जो उस ने अब्रहाम से बाँधा और उस क़िस्म को जो उस ने इज़हाक़ से खाई और उसी को उस ने याक़ूब के लिए आइन यानी इस्राईल के लिए अबदी अहद ठहराया। (ज़बूर 105:8-10) पस अबदीयत इस अहद की और अस्नाद और इस्तिक़्रार इस अहद व मीसाक़ पर मुस्तल्ज़िम (लाज़िम) बाईं अम्र है कि अस्ल मीसाक़ इब्राहीमी और मीसाक़ दाऊदी फ़िल-हक़ीक़त दो नहीं, बल्कि एक ही है। अगरचे उन के लफ़्ज़ों और सूरतों में ज़रा सा फ़र्क़ भी मालूम हो, मगर उनका अस्ल मज़मून मुत्तहिद-उल-माअनी है और दोनों का अंजाम मसीह है और दोनों में उस खुदावंद की विलादत जिस्मिया, वफ़ात और बिअसत व सऊद से इशारा है। और इन दलाईल नक़्िलया के बमूजब मुस्लिम हक़ीकी और रोशन ज़मीर के लिए मुस्तहील (मुहाल हीलाजो) है कि वसीक़ा मौऊद हज़रत दाऊद और इब्राहिम को मंसूख़ और रद्द ना जाने बआनक़दर कि उन के उसूल का ग़ौर व मुलाहिज़ा और मुद्दत इला-एहकाम का इन्क़ियाद अपने ऊपर लाज़िम ना जाने।

खुलासा कलाम ये है कि कुल जमाअत अम्बिया इस अहद कदीम इब्राहीमी के वारिस और शाहिद हाल हैं और ये भी यकीन है कि सब मोमिनीन और अहले ईमान जो पाक अम्बिया की रिफ़ाक़त में कायम व दाइम रहते हैं, सब इस अहद की रिफ़ाक़त में बफ़ज़ल ईलाही खुदावंद मसीह की खातिर शामिल होते हैं। चुनान्चे दीन ईलाही के दो फ़राइज़ और ज़रूरी हैं। अच्चल, ये कि खुदा तआला की किब्रियाई को बिलाशुब्हा मंज़ूर करें। दुवम, खुदा की मर्जी मारूफ़ और मशहूद पर कुर्बान हो जाएं। क्या ही सआदत-मंद और मुबारक है। वो ईमानदार जो आप ही इस रिफ़ाक़त में शरीक हो कर और रूहुल-कुद्दुस के ख़त्म (मुहर) अंदरूनी से मख़तूम (मुहर शुदा) हो कर हज़रत दाऊद को गोया अपना इमाम जान कर बतौर मुक्त्तदी के वो इकरार कर सकता है जिसे उस मुबारक ने करीब-उल-इंतिकाल जोश दिली से किया था कि :-

□उस ने (खुदा तआला) ने मेरे साथ एक दाइमी अहद जिसकी सब बातें मुईन और पाएदार हैं बाँधा है क्योंकि यही मेरी सारी नजात और सारी मुराद है।□ (2 समुएल 23:5)

राबिअन काबिल-ए-गौर व लिहाज़ है कि ज़करीयाह अबू अल-यहया (युहन्ना इस्तिबागी का बाप) उस हम्द व सताइश के गीत में जो खुदावंद मसीह के तवल्लुद (पैदा होने) के वक़्त रूह के इल्हाम से फ़रमाया था, साफ़ ताकीद इस बात की करता है कि इस अम्र वाक़ेअ यानी तवल्लुद मसीह में अहद इब्राहीमी और मीसाक़-ए-दाऊदी पूरा और ईफ़ा (वफ़ा करना) हो गया। और दोनों मीसाक़ों का इत्तिसाल और इत्तिफ़ाक़ खुदावंद मसीह में आकर हुआ। और ये भी कि वो फ़ैज़ और फ़ज़ल-ए-ईलाही जिनका मजमा और मुन्तहा खुद मसीह ही था, सिर्फ़

वही बरकात और इनाम थे जो सब अम्बिया खसूसुन हजरत इब्राहिम और दाऊद पर मौऊद हो गए थे। गोया महज़ तामील उस इल्म की थी जो मुकद्दसीन सलफ़ को मर्हमत फ़रमाया गया। जैसे लूका की इंजील के पहले बाब में लिखा है कि “खुदावंद इस्राईल के खुदा की हम्द हो क्योंकि उस ने अपनी उम्मत पर तवज्जूह कर के उसे छुटकारा दिया। और अपने खादिम दाऊद के घराने में हमारे लिए नजात का सींग निकाला। जैसा उस ने अपने पाक नबियों की जबानी कहा था जो कि दुनिया के शुरू से होते आए हैं। यानी हमको हमारे दुश्मनों से और सब कीना रखने वालों के हाथ से नजात बख़्शी। ताकि हमारे बाप दादा पर रहम करे और अपने पाक अहद को याद फ़रमाए। यानी उस किस्म को जो उस ने हमारे बाप अब्रहाम से खाई थी।” (लूका 1:68-73) और इसी सबब से मत्ती अपनी इंजील में मसीह के नसब नामे की फ़हरिस्त के शुरू में ये लिखता है कि “यसूअ मसीह इब्न-ए-दाऊद इब्न-ए-अब्रहाम।” (मत्ती 1:1) गोया तमाम मतलब इन दोनों लफ़्ज़ों पर मौक़ुफ़ है।

बाब दोम

दरबयान आँ इस्तिलाहात-ए-ज़बूर कि बर नजात व ह्यात बख़श खुदावंद मसीह साफ़ व सरीह दलालत मेकिनंद

در بیان آل اصطلاحات زبور کہ بر نجات و حیات بخش

خداوند مسیح صاف و صریح دلالت میکنند

पहले बाब से तशरीहन मालूम हो गया कि मज़ामीर दाऊद उसी अहद कदीमी की बुनियाद पर जिसके हज़रत इब्राहिम और उस की औलाद हकीकी वारिस हैं, मबनी और मुन्हसिर है कि वो अहद व मीसाक शराअ मूसवी की रस्मों और सुन्नतों के साथ रासिख रिशतों और राब्तों से वाबस्ता था और उस के मुकररी ईदों और ओहदों और क़वाइद खिदमत व इबादत में सराहतन मशहूर और मुशारु इलैह¹ (مُشَارُ إِلَهِ) था। ताआंकदर कि जितने साय उस में पाए जाते हैं, उनका बदन हकीकी ऐन मसीह है। और मुरादों और मक्सूदों की तक्मील और ततमीम (मुकम्मल करना) मसीह के अफ़आल और उम्र के अहवाल में नज़र आती है। पर बिल-फ़अल तौरैत और इंजील के बाहमी इत्तिफ़ाक और इत्तिसाल (मिलाप) से क़त-ए-नज़र कर के हमारा ये इरादा है कि ग़ौर से लिहाज़ करें और तालिबान हक़ व नजात को मुतवज्जा करें। ज़बूर

¹(مُ-شَارُ-زُن-ر-إِلَهِ) वह जिस की तरफ इशारा किया गया हो। मज्कुरुल सदर

दाऊदी की उन इस्तिलाहात पर जिनमें सराहतन इस आइंदा नजात और हयात-बख्श खुदावंद मसीह की तरफ़ इशारा है और जो उस के कमालात के मज़हर और मुअररफ़ भी हैं। मसलन जब हज़रत दाऊद चाहते थे कि इज्मालन इन बरकतों और नेअमतों का मजमा जो मसीह की आमद से दस्तयाब होने वाला था, पेश करें तो वो उन्हें दो लफ़्ज़ों में मुन्तहा और मुजतमा करते हैं। यानी सदाकत और सलामत में। और बिलाशुब्हा इस आइंदा मुनज्जी आलम (दुनिया को नजात देने वाले) के नाम व निशान में से इन्ही दोनों को इख्तियार करना निहायत वाजिब और मुस्तहसिन (पसंदीदा, बेहतर) था।

अज़ां जिहत (इस सबब से) कि इन्सान की हालत उनके बग़ैर सख़्त-तर और तल्ख़-तर थी और दोनों में बाकी सब बरकतों का गोया तुख़्म और जुबदह (किसी चीज़ का बेहतरीन हिस्सा) मब्दा मुतजम्मिन (शामिल) है। और इन दोनों फ़वाइद का ज़िक्र मुकररर सहकररर (बार-बार कई मर्तबा) कलाम में दाखिल है, मगर हरगिज़ इन का ज़िक्र बई तौर व तरीक़े नहीं है, जिससे जाहिर हो कि उन हर दो की तहसील पैग़म्बर-ए-ज़माने की शफ़क़त और सिफ़ारिश पर मौकूफ़ है। मगर इन का ताल्लुक़ और ईलहाक़ तक्ररीबन हमेशा उस अहद सलफ़ के साथ है जो जन्नत-ए-अदन के वाअदे से शुरू हो कर और मीसाक़ इब्राहीमी में तस्दीक़ और तबसीत (तबस्सुत, फैलाओ, फ़राखी) पाकर और सहफ़ अम्बिया में और भी तशरीह और तरक्की और कुशादगी हासिल कर के आखिर को नस्ल मौऊद यानी मसीह में ईफ़ा को पहुंचा। इस अम्र के सबूत में हम बाअज़ आयात को सहीफ़ा-ए-ज़बूर से निकाल कर पेश करते हैं जो काबिल मुलाहिज़ा व गौर हैं।

अव्वलन (ज़बूर 71 की 15 वीं आयत) में पाक नबी यूं फ़रमाता है “मेरे मुंह से तेरी सदाक़त का और तेरी नजात का बयान दिन-भर करूँगा।” (अस्ल

जबान इब्रानी में लफ़्ज़ सदक़ात ((سَدَقَاتُ)) और “तशूआत” ((تَشْوَاهَاتُ)) है क्योंकि मुझे उनका शुमार मालूम नहीं। जानना चाहिए कि लफ़्ज़ “तशूआत” उस मुसद्दिर से मुश्तक़ है जिससे लफ़्ज़ मुबारक “यसूअ” निकला है। पस इस आयत के करीने और सियाक़-ए-कलाम से आशकारा है कि हज़रत दाऊद अपने गनीमों और कीनावरों के फ़न फ़रेब से जुल्म और लान-तअन उठा कर बाकी सब उम्मीदों और इलाजों से मायूस हो कर सब दोस्तों से जुदा हो जाते हैं और अस्मा और सिफ़ात ईलाही के तज़िक़रा और हदो-हिसाब की तरफ़ रुजू होते हैं। चुनान्चे सिर्फ़ इसी से इत्मीनान और दिल-जमई पाते हैं। मगर खुसूसुन इन्हीं दो सिफ़तों की याद करते हैं कि गोया मीसाक़ फ़ज़ल के सब क़वाइद इन्हीं के अहाते के अंदर मुक़य्यद और मुन्हसिर हैं। और वो मर्द-ए-ख़ुदा इसी ज़बूर में अपने अज़म-बिल-जज़म (पक्का इरादे) का मअरूज़ (अर्ज़, गुज़ारिश) खल्क-अल्लाह के रूबरू करता है कि मैं अपनी कुहन साली (बुढापा) और दराज़ी उम्र में अपने अहलेजबान से इस सलामत और सदाक़त की तशरीह और अशहाद (शहादत देना) करने में मशगूल हूँ ताकि पुश्त दर पुश्त वो शहादत (गवाही) मुतवातिर अज़िमना खलफ़ के हवाला की जाये।

सानियन फ़जाइल व फ़वाइद मज़कूर (ज़बूर 72) के जान व क़ल्ब (दिल) हैं। गोया इसी कुतुब और मदार कलाम की तरफ़ बाकी सब मअनी रुजू लाते हैं और उन्हीं दो लफ़्ज़ों पर मसीह की बुनियाद कायम बताई जाती है और उस की मुमलकत सब आँजहानी मुमलकतों से इस जिहत से मुम्ताज़ है कि उस के फ़ैज़ फ़रावान से वो जो उन्हें बरकात मौसूफ़ा के तालिब और मुहताज हैं सैर व आसूदा होंगे। (ज़बूर 72 की 3,4 आयात) में यूं मर्कूम है कि, “इन लोगों के लिए पहाड़ों से सलामती के और पहाड़ीयों से सदाक़त के फल पैदा होंगे। वह उन लोगों के गरीबों की अदालत करेगा। वो मुहताजों की औलाद को

बचाएगा और ज़ालिम को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा। अस्ल ज़बान यानी इब्रानी में उनका यस्अ होगा। इन से और इन की मानिंद और आयतों से मसलन (ज़बूर 80) से साफ़ मालूम होता है कि फ़ज़ाइल मज़कूर ना अह्ले इल्म व फ़ज़ल और ना इस जहान के कबीरून और फ़ख़र करने वालों के साथ, बल्कि मिस्कीनों और मज़लूमों और शिकस्ता-दिलों के साथ मख़सूस हैं। और हर कौम और कबीले का हर शख्स उन में शामिल है जिस का मिज़ाज खुदावंद के इस कौल शफ़क़त आमेज़ और मुबारक के मुवाफ़िक़ है। **मुबारक वो हैं जो दिल के गरीब हैं।” (मत्ती 5:3) और “रास्तबाज़ी के भूके और प्यासे हैं क्योंकि वो आसूदा होंगे।” (मत्ती 5:6)**

सालसन (ज़बूर 85 आयत 4) और आखिरी आयतों में ना सिर्फ़ ताकीद मज़ीद अल्फ़ाज़ से वो दोनों औसाफ़ मज़कूर सतूदा (जिसकी तारीफ़ की जाये) और महमूदा हैं, बल्कि कई एक बख़्शिशों का शुक्राना भी है। जिनका ख़ास ताल्लुक़ मुनज्जी आलिमीन (कायनात को नजात देने वाले) के साथ मुतअद्दिद नक्ली दलाईल से साबित होता है। यानी लफ़ज़ “तस्दीक़” यानी “सिदक़” मुकर्रर (बार दीगर) और “यशअ” यानी “नजात” मुकर्रर सहकर्रर और तीन और इस्तिलाहात भी हैं यानी “शालोम” बमाअनी “सुलह व सलामत”, “हिसिद” बमाअनी “रहमत व शफ़क़त” और “इमित” बमाअनी “अमानत। ये सलासा अल्फ़ाज़ करीन-ए-कलाम में दाख़िल हैं और जो लोग ज़बान इब्रानी से वाकिफ़ हैं अगर सिर्फ़ बैक नज़र इस ज़बूर पर नज़र करें तो साफ़ मालूम हो जाएगा कि ये तमाम ज़बूर यस्अ मुबारक के इस्म मुबारक से मुअत्तर है। और उन सिफ़ात और तजल्लियात ईलाही से जो नजात की तदबीरों में कशफ़ व नुमायां हैं, अजीब तौर पर खुशबू-दार है। और अगर कदरे और भी गौर व मुलाहिज़ा करें तो साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि इस ज़बूर में ना सिर्फ़ हज़रत दाऊद के

जमाने के किसी अम्र वाकई की तरफ़ इशारा है, बल्कि ज़्यादा वुसअत और कुशादगी और वज़न व वक्रार की तरफ़ इशारा है जो एक ही क़ौम, मुल्क और जमाने की हदों से मुतजाविज़ है। यानी इस सर् ग़ैब की तरफ़ जिसका मुफ़स्सिल हाल (इफ़िसियों दूसरे बाब) में है। और यक़ीन है कि अगर बिलाताअस्सुब इनाद के ज़बूर की उन पिछली आयतों को हज़रत बीबी मर्यम और ज़करीयाह के उन गीतों के साथ मुकाबला करेंगे जो लूका की इंजील के पहले बाब में मज़कूर हैं, तो गोया बे-इख़्तियार इकरार करेंगे कि बिलाशुब्हा एक ही नजात व सलामत और एक ही नजातदिहंदा है जिसकी तरफ़ इन तीनों ज़बूरों में इशारा है। मसलन जो सवाल इस (ज़बूर 85 आयत 6) में है यानी “क्या तू हमको फिर जिंदा ना करेगा ताकि तेरे लोग तुझमें शादमान हों?” तो इस सवाल का हकीकी जवाब ज़करीयाह के गीत की पहली दो आयतों में पाया जाता है कि “खुदावंद इस्राईल के खुदा की हम्द हो क्योंकि उस ने अपनी उम्मत पर तवज्जा कर के उसे छुटकारा दिया। और अपने खादिम दाऊद के घराने में हमारे लिए नजात का सींग निकाला।” (लूका 1:68,69) और वो साहब ये भी इकरार करेंगे कि वह दुआ और सवाल जो (ज़बूर 80 की 7 वीं आयत) में पढा जाता है यानी “ऐ लशकरो के खुदा ! हमको बहाल कर और अपना चेहरा चमका तो हम बच जाएँगे।” इस का जवाब हज़रत ज़करीयाह की इन आयतों में पाया जाता है कि “जैसा उस ने अपने पाक नबियों की जबानी कहा था जो कि दुनिया के शुरू से होते आए हैं। यानी हमको हमारे दुश्मनों से और सब कीना रखने वालों के हाथ से नजात बख़शी।” (लूका 1:70,71)

इसी तरह वो सिफ़ात करीम और अस्मा जलील जो इस (ज़बूर 85 की 9 वीं,10 वीं आयतों) में मज़कूर हैं और उन के इज़हार के करीब होने की

बशारत बकमाल तयक्कुन की जाती है, यानी सुलह व सलामत व निजात व सदाकत व जलाल। ये सब इसी वक़्त ज़हूर व शुहूद में आने वाली थीं और अपने नूर ईलाही की शआएं इसी वक़्त दूर करीब तक मुंतशिर करने वाली थीं। जब ज़करीयाह मुक़द्दस रूह के इल्हाम की तौफ़ीक़ से ये हम्द व सताइश की बातें अपनी ज़बान पर लाया कि “ये हमारे ख़ुदा की ऐन रहमत से होगा जिसके सबब से आलम-ए-बाला का आफ़ताब हम पर तलूअ करेगा। ताकि उन को जो अंधेरे और मौत के साये में बैठे हैं रोशनी बख़्शे और हमारे क़दमों को सलामती की राह पर डाले।” (लूक़ा 1:78,79)

ऐसे नक़ली दलाईल से यक़ीन है कि अहद-ए-नजात और मीसाक़ हयात के इश्तिहार देने में एक बड़ा हिस्सा कलां और बख़राह गिरां हज़रत दाऊद को सपुर्द और मर्हमत हुआ। और कौन सा हिस्सा खल्क-उल्लाह के लिए इस आलम-ए-फ़ानी में इस से बढ़कर हो सकता है कि उस की तमाम उम्र तश्बीह और तस्वीर की राह से ख़ुदावंद मसीह की सल्तनत के फ़राइज़ का इज़हार और इश्तिहार करे। इलावा बरीं वो ख़ुदा तआला के बाअज़ कमालात बुजुर्ग और जलाली को जो मसीह के मुजस्सम होने के वक़्त मिन वर्राए (مِنْ وَرَاءِ) हिजाब शुहूद (पर्दा में हाज़िर होना) में आ गए। उन्हें अपने ख़ास विरसा के लिए हासिल कर के उन के इफ़ान व तअरूफ़ (शनाख़्त करना, जताना) से मुशर्रफ़ हो (इज़्जत बख़शना) और नबियों की पाक जमाअत में निहायत आली रुत्बा तक सर्फ़राज़ हो। यहां तक कि और नामी गिरामी नबियों ने अपने चराग़ों और मशालों का इक्त्तबास किया। इस बात की उम्दा मिसाल हज़रत यसअयाह हैं, जिसे बाअज़ मुफ़स्सिरों ने बसबब सराहत इन पेश ख़बरियों के जिन्हें उस मुक़द्दस ने ख़ुदावंद मसीह के ज़हूर की बाबत तहरीर फ़रमाई, इंजीलों के शुमार में दाख़िल किया है। चुनान्चे (यसअयाह बाब 45 आयात 22,24,25)

में औसाफ मज़कूर की बाबत यूं लिखा है कि “ऐ इंतिहाई ज़मीन के सब रहने वालो तुम मेरी तरफ़ मुतवज्जा हो और नजात पाओ।” (यसअयाह 45:22) “मैंरे हक़ में हर एक कहेगा कि यकीनन खुदावंद ही मैं रास्तबाज़ी और तवानाई है।” (यसअयाह 45:24) [इस्राईल की कुल नस्ल खुदावंद में सादिक़ ठहरेगी।] (यसअयाह 45:25) और फिर (ज़बूर 96) में हज़रत दाऊद ना सिर्फ़ अस्मा और सिफ़ात मज़कूर की बशारत देते हैं, यानी ना सिर्फ़ खुदा तआला की सदाक़त और अमानत की ताज़ीम करते हैं, बल्कि उम्मत यहूद और कुल आलम की क्रौमों और क़बीलों से बहस्ब फ़र्ज़ रिसालत ललकार कर दावे करते हैं कि तुम सब लोग इस शाह जलील के दबदबे और किब्रियाई (अज़मत) के ख़ौफ़ के मारे खाकसारी से उस की परस्तिश करो और उस की नजात की खबरें शहरह-ए-आफ़ाक़ करो। और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि इस मौके पर और मुक़ामों की तरह ये भी बयान करता है कि इस नजात व सलामत में खुदा तआला की अदालत भी रौनक अफ़ज़ा (जलवा फ़रमा) और मुतजल्ला (مُتَجَلَّلًا) हो जाती है।

हाँ ऐ साहिबो कलाम-उल्लाह की भारी से भारी तालीमों में ये भी बाल-जरूर शामिल है कि जिस वक़्त रब तआला अपनी रहमत और फ़ज़ल को ज़हूर में लाता है तो इन्साफ़ और अदालत भी फ़ौरन शुहूद में आते हैं। क्योंकि बारी तआला इस तौर पर रहीम और फ़ैज़ और लुत्फ़ फ़र्मा नहीं हो सकता कि आदिल और सादिक़ुल-क़ौल होने से बाज़ आए, यानी उस के एक खास इस्म व सिफ़त की रौनक और जलाल इस वज़अ से बढ़कर नहीं हो सकती कि सानी में खलल आ जाए। और ना एक की ऐसी तफ़ज़ील (फ़ज़ीलत देना) जायज़ है जिससे दूसरे की तज़लील (बेइज़ज़ती) हो जाये। देखो इस ज़बूर में ये तीन बड़ी सिफ़तें क्या ही अजीब तौर पर बाहम पैवस्ता हैं और हर एक इन में से ऐसी

पाक और सरीह (साफ़) मालूम होती है कि गोया हर वाहिद बाकी सबकी हिमायत और हिरासत का ज़मादार है। अज़ां वजह(इस वजह से) कि रहमत और फ़ज़ल का वअज़ और बशारत और सदाक़त और अदालत की मुनादी भी है और इन दोनों की जुदाई व तलाक़ क़यासन भी मतरूक (तर्क किया गया) और मंसूख़ है।

चुनान्चे सबूत व वसूक़ (यक़ीन) इस बात का खुदावंद मसीह के मस्लूब होने ओर सलीब बर्दारी और अज़ाब कुशी में ऐसा साफ़ और सरीह नज़र आता है कि, और किसी दलील से नहीं हो सकता। और नबी और रसूल इस बात पर निहायत ताकीद करते हैं कि खुदा की पर्वर्दिगारी और उस की रिआयत कलीसिया के हक़ में और अदालत और रहमत अज़-इब्तदा ता-इंतिहा (शुरू से आखरी तक) दस्त-ब-दस्त पैवस्ता चली जाती है। और दोनों का मेल व इत्तिफ़ाक़ मुहब्बत से है। हाँ बिलाशुब्हा इस सलीब बर्दारी और जफ़ाक़शी और मौरिद क़हर होने में एक सर-ए-ग़ैब है जो आलिमों और फ़ाज़िलों से अक्सर मख़्फ़ी (छिपी) है, लेकिन मिस्कीनों पर फ़ाश हो जाता है। यानी खुदावंद मसीह जिस वक़्त अपनी सलीब पर से मुज्दाहयात व सलामत खल्क दूर दराज़ तक फैलाता है तो अदालत की राह से भी आदमज़ाद की हक़ीक़त-ए-हाल की तमीज़ और तफ़ासुल करता है। और उस अदालत को जिसका अख़ीर और इख़्तताम अख़ीर उल-अय्याम में होगा, शुरू कर के इसी इंजील की हर रोज़ की मुनादी और वाक़ियात आलम की रिआयत में बढ़ाता और बरकरार करता है।

हासिल कलाम ये है कि वो मुजदह इंजील जो इसी बाब में दरपेश होता है, काबिल-ए-ग़ौर व लिहाज़ है और उस राज़ की तरफ़ इशारा कई एक और मौज़ू मुक़ामात में मिलता है, मसलन मसीह खुद मोअतरज़ान (एतराज़ करने वाले) यहूद के रू-बरू फ़रमाता है कि “**मैं दुनिया में अदालत के लिए आया हूँ**

ताकि जो नहीं देखते वो देखें और जो देखते हैं वो अंधे हो जाएं।” (युहन्ना 9:39) और इस बात पर (मुकाशफ़ा बाब 14 की 6,7 वीं आयात) मुत्फ़िक़ हैं “फ़िर मैंने एक और फ़रिश्ते को आस्मान के बीच में उड़ते देखा जिसके पास ज़मीन के रहने वालों की हर कौम और क़बीला और अहले ज़बान और उम्मत के सुनाने के लिए अबदी खुशख़बरी थी। और उस ने बड़ी आवाज़ से कहा कि खुदा से डरो और उस की तम्ज़ीद करो क्योंकि उस की अदालत का वक़्त आ पहुंचा है।□ इस ज़बूर के मज़मून में एक और बात काबिले लिहाज़ है जो इस राज़ का वज़न और मदार है कि ना कोई फ़रिश्ता और नबी, बल्कि खुदावंद आप ही तशरीफ़ फ़र्मा हो कर अपनी नजात और सलामत व सदाक़त का इन्किशाफ़ करेगा। (ज़बूर 96:12-13) में लिखा है कि “मैदान और जो कुछ उस में है बाग़-बाग़ हों, तब जंगल के सब दरख़्त खुशी से गाने लगेंगे, खुदावंद के हुज़ूर, क्योंकि वो आ रहा है, वो ज़मीन की अदालत करने को आ रहा है, वो सदाक़त से जहान की और अपनी सच्चाई से क़ौमों की अदालत करेगा।□ और खुदावंद मसीह की जितनी निशानीयां और पेश-गोईयां अहदे अतीक़ में हैं, उनका जो ऐन क़ल्ब (दिल) और कुतुब और वो रिश्ता और राबिता है जिससे वो बाहम मुंतज़िम और मरबूत हैं। खुदावंद खुदा ही की इमदाद से उस की हुज़ूरी का वाअदा है यानी ये कि वो आने वाला और मौऊद नजात का बख़शने वाला कोई दुनियवी बादशाह या नबी नहीं है, बल्कि खुदावंद बईना और बनफ़िसही अपनी सूरत जलाल वाली और नूरानी दिखाएगा, पर तो भी उस की कुदरत हलीम आमैज़ और फ़ज़ल पज़ीर होगी। चुनान्चे यसअयाह इंजीली की बाअज़-बाअज़ आयतों से अज़हर-मिन-अश्शम्स (रोज़-ए-रौशन की तरह अयाँ) है, यानी (यसअयाह बाब 40 आयात 5,9,11) में यूँ बयान हुआ है कि “खुदावंद का जलाल आश्कारा होगा और तमाम बशर (इंसान) उस को देखेगा क्योंकि खुदावंद ने अपने मुँह से फ़रमाया है।□ (यसअयाह 40:5) □ऐ

सियोन को खुशखबरी सुनाने वाली ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जा और ऐ यरूशलेम को बशारत देने वाली ज़ोर से अपनी आवाज़ बुलंद कर! खूब पुकार और मत डर। यहूदाह की बस्तियों से कह ! देखो अपना खुदा ! देखो खुदावंद खुदा बड़ी कुदरत के साथ आएगा और उस का बाजू उस के लिए सलतनत करेगा। देखो उस का सिला उस के साथ है और उस का अज़र उस के सामने। वो चौपान की मानिंद अपना गल्ला चराएगा। वो बर्रों को अपने बाजूओं में जमा करेगा और अपनी बगल में लेकर चलेगा और उन को जो दूध पिलाती हैं आहिस्ता-आहिस्ता ले जाएगा।” (यसअयाह 40:9-11) मलाकी और जकरीयाह नबी इस अजीब और नादिर क़ौल पर तशरीहन और तकरीरन शाहिद हैं। चुनान्चे उस अक्वल क्रियामत और अदालत की बाबत जो मसीह की ऐन पहली आमद है, हज़रत मलाकी ने अपनी किताब में यूं फ़रमाया है, “खुदावंद जिसके तुम तालिब हो नागहाँ अपनी हैकल में आ मौजूद होगा, हाँ अहद का रसूल जिसके तुम आर्ज़मंद हो आएगा रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है।” (मलाकी 3:1) फिर क्रियामत और अदालत अखीर के हक़ में जो मसीह की आमद सानी से मुराद है, हज़रत जकरीयाह बयान करते हैं कि, “क्योंकि खुदावंद मेरा खुदा आएगा और सब कुद्दुसी तेरे साथ। और उस रोज़ रोशनी ना होगी और अजराम-ए-फ़लक छिप जाएँगे।” (जकरीयाह 14:5,6)

ऐ साहिबो ये मज़ामीन निहायत आली और वज़नी और दिल तराश हैं और शाहदान ईलाही इस गवाही में बहुत इतिफ़ाक़ रखते हैं। मसलन आखिर-उल-अम्बिया हज़रत यहयाह (युहन्ना) बिन जकरीयाह ने मसीह की आमद और सदूर अक्वल की इस खासीयत और कलिमात सलामत का नतीजा बड़ी कुदरत और बलागत से बयान किया है। मसलन (मत्ती 3:10-11) में जिसका दिल चाहे देख सकता है। यानी “और अब दरख्तों की जड़ पर कुलहाड़ा रखा

हुआ है, पस जो दरख्त अच्छा फल नहीं लाता वो काटा और आग में डाला जाता है। पर आप लोगों के लिए एक और शाहिद (गवाह) दरकार है जिसने शहादत बातिनी पाई हो। इन आली माअनों का ना सिर्फ मसामा बल्कि मुशाहिद भी होता है। जिस कश्फ अंदरूनी के हक में पतरस रसूल ने यहूद के सदर मजलिस दीनयात के रूबरू ये गवाही उम्दा काबिल-ए-गौर फरमाई है। रसूलों के (आमाल 5:32) में यूं लिखा है “और हम इन बातों के गवाह हैं और रूह-उल-कुदुस भी जिसे खुदा ने उन्हें बखशा है जो उस का हुकम मानते हैं।”

पस ऐ साहिबो जितने तालिबान हकीकत हो इस बात पर यकीन करो कि बनी-आदम में से जो कोई शख्स हो, कि खुदा तआला का कलाम हकीकी यानी तौरैत और जबर और अम्बिया और इंजील उस को दस्तयाब होता है, तो लाबुद (यकीनन, बेशक) और बाल-जरूर वो कलाम उस को नहीं छोड़ता और उस से दर गुजर नहीं करता। गौर अज़ आंका उस की हालत हकीकी और अंदरूनी की आजमाईश ना करे कि वो खुदा के रूबरू और उस की दरगाह में कैसा है। अगर शायद वो शख्स खुदा की इस मुलाकात से जो कलाम के बगौर व लिहाज़ पढ़ने से होती है, खौफ व तरस करे और इस बशीर और नज़ीरो नासेह (नसीहत) से मुँह ना फेरे, तो कलाम फिर भी उसे फिरौ-गुजाशत (दरगुजर भूल) ना करेगा। जब तक कि इस अंदरूनी हालत पर नूर ईलाही की शआओं को फैला कर ऐसी साफ़ रोशनी ना डालेगा कि वो हज़रत अय्यूब का वो मशहूर इकरार ज़बान पर ला कर जो तौबा कारी की बाबत है, इकरार ना कर ले “मैंने तेरी खबर कान से सुनी थी पर अब मेरी आँख तुझे देखती है इसलिए मुझे अपने आपसे नफ़रत है और मैं खाक और राख में तौबा करता हूँ।” (अय्यूब 42:5,6) वही मेल और इत्तिफ़ाक, सलामत व अदालत (ज़बूर 98) का भी अस्ल मज़मून है। इस से ये ताअलीम मिलती है कि जितनी सिफ़ात कहरीयह

और जमालिया कलाम-उल्लाह में मारूफ हैं, मसलन कुदरत और कुदूसियत और रहमत और सदाकत और जलाल शाहाना और शफकत पिदराना सब इस इज्जिमा अदालत व सलामत में जाहिर व नुमायां होती हैं। बल्कि इस ज़बूर से मिन कुल अल-वजूह मालूम होता है कि सब कौमों और कबीलों के आगे इन सिफ़्तों की रौनक इस तरह से मूतआली (बुलंद) व मुतजल्ला (रोशन) होगी कि कुल आलम की जितनी कायनात है, वो सब गोया ख़ुश सरवदियों (सरूद, गीत, राग) का एक ताइफ़ा (गिरोह, जमाअत) बनेगी, जिसकी हज़ार-हा आवाज़ों से हम्द और शुक्रगुजारी बिलानागा दरगाह आला में गुजरानी जाएगी। हर दो मज़ामीर बाला में ये बात माक़बिल (जो पहले हो) है कि इस इत्तिसाल अदालत व नजात में ख़ुदा तआला के मुख्तलिफ़ कमालात का इज्जिमाअ देखकर गैर कौमों के बुतपरस्त, ख़ुदातरस और मुतीअ व मनक़ाद (फ़र्माबरदार) होंगे। और कुदरत और किब्रियाई और हुस्न व जमाल ईलाही के मुक़र्रीर (इक़रारी) हो कर अपने-अपने बुतलान और वाहीयात को तर्क करेंगे।

मगर दोनों ज़बूरों में इस बात पर ताकीद है कि ये सब अजीब वाक़ियात ख़ुद बादशाह की हुजूरी के बग़ैर जाहिर ना होंगे। इसी सबब से हर दो ज़बूर मुसम्ममा (مسئله) बज़बूर हादिस हैं। (यानी नए गीत) जो कोई चाहे कि इस सर नामा के रम्ज़ व राज़ का शनासा हो तो उस को लाज़िम है कि इन दो ज़बूरों को (मुकाशफ़ा की किताब के 5 और 14 बाब से) मुक़ाबला करे, जिनसे साफ़ मालूम होगा कि वस्फ़ हदासत (नयापन, शुरू) का जो मख़सूस है। इन ज़बूरों के साथ तो इस मुराद से है कि उनमें ईलची-गिरी की राह से नजात का इश्तिहार और इज़हार है। और इस नजात में ना सलामत जुजई (कुछ, बहुत थोड़ी सी चीज़) और चंद रोज़ा से इशारा है, बल्कि इस नजात कुल और कामिल और जावेद से जिस पर इब्न-ए-आदम के ज़रीया से हर आदमज़ाद

बफ़ज़ल ईलाही मुद्दई हो सकता है। और जिसे अपना हक और मीरास और उम्दा से उम्दा मुगतनमात (मुगतनमा की जमा, गनीमत चीज़ें) जानता है, “और वो ये नया गीत गाने लगे कि तू ही इस किताब को लेने और उस की मोहरें खोलने के लायक है क्योंकि तूने ज़ब्ह हो कर अपने खून से हर एक कबीले और अहले ज़बान और उम्मत और क्रौम में से खुदा के वास्ते लोगों को खरीद लिया। और उन को हमारे खुदा के लिए एक बादशाही और काहिन बना दिया और वो ज़मीन पर बादशाही करते हैं।” (मुकाशफ़ा 5:9-10)

मुकाशफ़ा के मन्कूल बाला से साबित होता है कि अर्वाह मुतक़द्दिमें (मुतक़द्दिम की जमा, अगले ज़माने के) की ज़बानों पर जो दुनिया के शर से खलास किए गए हैं, इस नए गीत से कोई शीरीं और लज़ीज़ तर नहीं आता। अज़-बस कि (चूँकि) इस जहान के मुग़न्नियों (मुग़न्नी की जमा, गवय्या) के हुनर और हिक्मत से सीखा नहीं जाता। मगर इस्तिदाद (सलाहियत) इस नए गीत की मसीह के हर पैरों हकीकी को फ़ील-फ़ौर मिलती है। जिस दिन से गोया नबियों और रसूलों और बाकी मशाइख़ ईलाही का मुरीद हो कर इस क्रौल रसूल का बदल व जान इकरार करना सीखे “लेकिन खुदा ना करे कि मैं किसी चीज़ पर फ़ख़्र करूँ सिवा अपने खुदावंद यसूअ मसीह की सलीब के जिस दुनिया मेरे एतबार से मस्लूब हुई और मैं दुनिया के एतबार से।” (ग़लतीयों 6:14)

यक़ीन है कि जिसके सीने के अंदर इस नए गीत का मज़्मून ना सिर्फ़ बनफ़िसही बल्कि बईही नक्श होगा। वो बाआसानी तमाम इस बात का मउतरफ़ होगा कि जिस तरह सेना पहाड़ यानी कोहे तूर के ब्याबान के खेमा इबादत की कुर्बान-गाह पर (जो तख़्त फ़ज़ल भी कहलाता है) अल्लाह का नूर बनी-इस्राईल के लिए नाज़िल होता था। अज़ आनरो कि वही खुदा की हुजूरी और

मुलाक्रात का जाये इज़हार मुकर्रर था। इसी तरह कुल जमाअत आम्मा के लिए ख्वाह यहूदी हों, ख्वाह गैर क्रौम, मसीह की सलीब मुबारक एक वही मर्कज़ है जिसमें रब तआला के कमालात और नूरानी तजल्लियात मिलतीं और वाबस्ता होती हैं। हाँ इसी सलीब में ये औसाफ़ कामिल तौर पर अहले बीनाई और बसारत रुहानी पर अयाँ व नुमायां होते चले आते हैं। चुनान्चे इसी सलीब पर से खुदावंद गोया अपने हाथ खोल कर एक से मौत और दूसरे से हयात बख़शता है। अज़ आनरो कि नफ़्स और दुनिया और अफ़आल शैतानी के मौत को और हयात ईलाही को बफ़याज़ी तमाम बख़शता है।

ऐ साहिबो हम इस अपने सफ़र की मंज़िल पर ज़रा मुक़ीम हो कर दुआ उस दोस्त जानिसार से करें कि [ऐ खुदावंद हमारे लिए अपने दोनों हाथों को खोल कर और वो मौत और हयात हमें दे और हमें ये फ़ज़ल इनायत कर कि मसीह की इस मुहब्बत को जो सुनने से बाहर है, जानें, ताकि हम खुदा की सारी भर पूरी तक भर जाएं।” आमीन

एक और बात उन मज़ामीर बाला से काबिल-ए-गौर निकलती है कि खुदा तआला का फ़रमान और इर्शाद बताकीद और बताईद इस अम्र पर है कि इस नए गीत के मज़मून का शुन्वा (सुनने वाला) और शनासा (जानने वाला) हो जाये। हाँ बल्कि इस नजात के हर एक वारिस पर फ़र्ज़ भी है कि इस सलामत और अदालत की दिल तराश ख़बरें ताबमक़दूर रुबअ मस्कून² (تابع قدور) (رُبع مسكون) में मुंतशिर करे। बरअक्स इस के लज्जा (शर्म, हया) दरेग में कितने अशखास हैं मुसम्मा बमुस्लिमीन व मशाइखीन व मुर्शदीन जो सिर्फ़ इसी बात पर जद्दो जहद करते हैं कि इस इर्शाद को मर्दूद और मंसूख़ ठहराएँ और उस लानत के मौरिद हो जाते हैं जो खुदावंद रहीम व हलीम ने भी अपने हम-अस्र

² दुनिया का चौथा हिस्सा जो खुशकी पर है और आबाद है।

फ़रीसीयों पर पढ़ी कि ऐसे शरअ के आलिमो तुम पर अफ़सोस ! कि तुमने माअर्फ़त की कुंजी छीन ली। तुम आप भी दाख़िल ना हुए और दाख़िल होने वालों को भी रोका। (लूका 11:52) और बिल-इत्तिफ़ाक़ उन दो ज़बूरो के (ज़बूर 111) का फ़हवा-ए-कलाम (गुफ़्तगु का अंदाज़) यही है, बल्कि हम ये कह सकते हैं कि वो तीन ज़बूर ज़रूफ़ की मानिंद इस अहद के आसारों और यादगारों से लबरेज़ हैं। चुनान्चे दो आयतों में इस अहद व मीसाक की अबदीयत व मुदावमत की शहादत दी जाती है।

अज़-आनरो कि खुदाए कादिर-ए-मुतलक के हुज़ूर में उस की याददाश्त ता अबद रहती है और उस की तदबीर व रिआयत से वो अहद अहले ईमान से फ़रामोश और मंसूख़ हरगिज़ नहीं होने पाता। और ताअलीम इस ज़बूर की ये भी है कि खुदा के बाअज़ औसाफ़ व कमालात इस अहद के ईफ़ा होने से अबद-उल-आबाद तक मुतजल्ली रहते हैं। और अगर शायद ये सवाल करो कि इस अहद के क्रियाम और इजरा का उम्दा मूजिब और बाइस कौन है तो इस ज़बूर में इस सवाल का जवाब आपसे आप मिल जाता है कि नजात और फ़िद्या उस पाक और मख़सूस का जिसे रब तआला ने आदमज़ाद में से इख़्तियार कर लिया। सो इस अहद के क्रियाम का उम्दा और अक्वल बाईस है। “उस ने अपने लोगों के लिए फ़िद्या दिया, उस ने अपना अहद हमेशा के लिए ठहराया है। उस का नाम कुद्दुस और मुहीब है।” (ज़बूर111:9) और ये तल्कीन भी मिलती है कि खुदा के नादिर मोअजज़ात इस अहद के उमूर में इस सूरत और वज़ाअ से आशकारा हो गए कि उन की तमीज़ और गौर करने वालों में पाक ख़ौफ़ और हैबत पैदा होती है और इस का अमल में लाना उम्दा से उम्दा अफ़ज़ल दानाई है।

मजामीर दाऊद की पेश-गोइयों में (ज़बूर 118) बड़े बुजुर्ग रुत्बे और वज़न का है और निहायत इल्तिफ़ात व फ़िक्र के क़ाबिल है। देखो मुसन्निफ़ ज़बूर बरूज़ कुल मजलिस मोमिनीन के अपने अमल व आदत के मूजिब उस रंज व ईज़ा व सितम का जिसे मुफ़सिदों और मुतकब्बिरों की तरफ़ से बल्कि सब क्रौम और मुल्क की तरफ़ से उठाया था, बयान करता और अज़ जानिब इन्सान अपनी पूरी नाउम्मीदी और ला ईलाजी का मक्कर होकर अपनी इआनत और कुमक के लिए सिर्फ़ खुदा ही के नाम में अपना क़िलअ और जाएपनाह मांगता और लेता है। मगर खुसूसुन इस यक़ीन को बे-ख़ौफ़ी और ख़ातिर जमुई का मूजिब जानता है कि सदाक़त के दरवाज़े इस के लिए खुल गए हैं और ये कि खुदावंद दुआ व सवाल कुबूल करके उस का नजात व सलामत बख़्श हो गया “सदाक़त के फाटकों को मेरे लिए खोल दो, मैं उन से दाख़िल हो कर खुदावंद का शुक्र करूँगा। मैं तेरा शुक्र करूँगा क्योंकि तू ने मुझे जवाब दिया और खुद मेरी नजात बना।” (ज़बूर 118:19,21 आयात) यानी इन्ही दो औसाफ़ पर अपनी उम्मीद की क़वी और मज़बूत बिना डालता है और इस तयक्कुन की वसाक़त (मज़बूती) से अपना क़दम नहीं उठाता कि जब खुदा सादिक़ है तो अपने अहद व मीसाक़ का क़ौल तोड़ना उस की ऐन ज़ात से बईद है। वो अपनी ज़ात का इन्कार नहीं कर सकता और जब कि नजात व सलामत बख़्श होना उस की शान है, तू शैतान और इन्सान के किसी मज़्लूम को जो फ़र्याद ख़वाँ हो बे इमदाद और बे तदारुक (सज़ा के बग़ैर, मुरम्मत के बग़ैर) छोड़ना ख़िलाफ़-ए-क़ियास है और अम्र मुहाल।

(ज़बूर 130) का मुतकल्लिम भी आपको एक ऐसा ही मज़्लूम और ज़ेर-ए-बार जान कर अपनी जान खुदा के हुज़ूर में डालता है। चुनान्चे अपनी जान ही का डालना हकीक़ी दुआ व सवाल की शर्त बल्कि ऐन अस्ल है। पस ख़ालिस

फ़र्याद खवाँ का हाल उस खराज गीर की मानिंद है जिसकी खाकसारी और शिकस्ता दिली की तारीफ़ (लूका 18 बाब) में है। यानी खुदा तआला के रूबरू जो महज़ रास्त और पाक और आदिल है। बसबब खजालत और पशेमानी के खड़ा होने की भी जुरत नहीं रखता, और जिस तरह इस खराज-गीर ने आपको हर तरह के आमाल हुसना और सवाब और लियाकत से बरहना जान कर अर्ज़ की कि कुर्बानी और कफ़ारा के तवस्सुत से मेरी दुआ और दरख्वास्त कुबूल हो। इसी तरह इस ज़बूर का फ़रियाद-कुनाँ बाकी सब उम्मीद और तवक्को से दस्त-बरदार हो कर उन्हें ईलाही नामों और अफ़आलों पर जो मीसाक फ़ज़ल के अंदर शुहूद में आए हैं, तकिया लगाता है। कि गोया इस अहद के अहाते के बैरून कहीं कुछ पनाह और अमन व अमान नहीं देखता।

अब गौर करना चाहिए कि इस ज़बूर मज़कूर में कैसा साफ़ ईमा और इशारा खुदावंद यस्ूअ मसीह की तरफ़ है। अज़ानरो कि जिस तरह सड़कों के बीच एक निशान नसब होता है, जिससे मुसाफ़िरो को बखूबी मालूम हो कि कौन सा रास्ता अमृतसर और कौन सा मुल्तान वगैरह को जाता है। इसी तरह ये अल्फ़ाज़ ज़ेल माअरूफ़ जहां-जहां मिलते हैं, वहां निशान के तौर पर मसीह की तरफ़ रूजू कराते हैं और दिलों को उधर माइल करते हैं। पस ये लफ़ज़ इस्नीन (दो) यानी अक्वल “सलेहा” (लूका 18:4) में जिसके मअनी हफ़तादी मुतर्जिमें यहूद यूनानी ज़बान में “तकफ़ीर या कफ़ारा” बताते हैं और “फ़िया” सातवीं और आठवीं आयतों में बाइतफ़ाक उस गवाही के जो (ज़बूर 130:3-4) में मिलती है कि “अगर तू बदकारी को हिसाब में लाए तो ऐ खुदावंद! कौन कायम रह सकेगा? पर मग़फ़िरत तेरे हाथ में है (यानी कफ़ारा फ़ी अस्ल अलमतन) ताकि लोग तुझसे डरें।” देखो इन दो आयतों में गुनाह की महसूबी और गौर महसूबी की हालतें क्या ही सरीहन मतमीज़ा (जुदा) होती हैं और

बाहम मुकाबला की जाती हैं और वह नामहसूबी की हालत अदब और खुदातरसी का मूजिब बताई जाती है।

पस पूछता हूँ कि अजरूए तौरैत मूसवी कौन सा फ़िद्या और कफ़ारा गैर अज़ मसीह मुकर्रर हो गया और इस कफ़ारे का पता निशान बजुज़ कुतुब समावी कहाँ मिलेगा। शायद आप ये ख़ाम तसव्वुर करते हैं कि फ़िद्या और कफ़ारे का क्रियाम एक ख़ास क्रौम और ज़माने के लिए मुनासिब और मुफ़ीद था, मगर हर क्रौम और ज़माने पर लाज़िम और मुक़तज़ी नहीं था। या अगर आप अज़राह-ए-इन्साफ़ और इन्क्रियाद इस अम्र के काइल और मुक्कर हो कि लाबुद सभी पर हर वक़्त बजुज़ शामिल होने फ़िद्या और कुर्बानी के गुनाह की कैद और हब्स (बंद, घुटन) से रहा और खल्लास होना मुहाल है तो मेरी अज़ ये है कि बग़ैर मसीह के कौन दूसरा इस फ़िद्या और कफ़ारे के मुकर्रर होने पर मुद्दई था। या शायद अगर मुद्दई भी होता तो कौन दूसरा शख्स इस अपने दावे को नसुस और बराहें क़तई से साबित कर सकता है। उस के सिवाए जिस पर हज़रत दानीईल ने (दानीईल 9:24-26) में शहादत दी कि वही मसीह पेशवा हो कर मुन्क़ते (यानी आलम-ए-शुहूद में मुन्क़ते होगा) और इसी मुद्दत में शरारत खत्म होगी और ख़ताकारियों का आखिर हो जाएगा और बदकारियों का कफ़ारा दिया जाएगा और अबदी रास्तबाज़ी कायम की जाएगी और उस पर जो ज़्यादा कुद्स है मसह किया जाएगा। यानी ततिम्मा एहसान और तक्फ़ीर ख़ता का सदाक़त जावेद दाखिल करने की मीयाद मसीह के इन्क्रिता (कट जाना) की मीयाद भी होगी। अगर आप बनज़र इन्साफ़ और बतौफ़िक़ रूहुल-कुद्दुस इस मज़मून पर ग़ौर करेंगे तो उम्मीद क़वी है कि ऐसा नूर इफ़ान और आतिश-ए-मोहब्बत दिल में नुमायां होगी कि ख़बाइस दुनिया की तुग़्यानी

और अन्फ़ास नफ़स की बाद-ए-समूम और वसाविस शैतानी के तूफ़ानों से हरगिज़ ना बुझेगी।

बाब सोम

दरबयान हक्रीकत गुनाह व कबीह व

मज़मूम बोदनश

در بیان حقیقت گناه و قبیح و مذموم بودنش

हर साहब तमीज़ पर ये अम्र ब-हिदायत अक़ल रोशन है कि इल्म नजात बगैर अज़ शऊर शर् ख़ता बेमतलब व बेबुनियाद है। चुनान्चे बिला-तशनगी (प्यास) के कोई शख्स जो (नदी सोता) की तरफ़ आब-जो (नदी, चशमा) नहीं होता। हाँ अगर रुजू भी लाए तो कुछ तफ़रीह और तस्कीन नहीं पाता। बमूजब इस मुबतदा (इब्तिदा) के जितने अम्बिया पर आइंदा मुनज्जी अल-आलमीन की ख़बरें कसत और सफ़ाई से उतरी थीं, उन्हीं के ज़रीये से गुनाह की कैफ़ीयत और हक्रीकत-ए-हाल ऐसी फ़ाश और अयाँ हो गई कि उन्होंने उस की क़बाहत को बिफर-अस्त तमाम पर्दा चाक कर के ऐसा उरयां (नंगा) किया कि हैरत और खौफ़ ख़ताकारों के कुलूब में पैदा हुआ। चुनान्चे दाऊद मा-हज़ा (इलावा बरीं, साथ उस के) कि ख़ुदा तआला की उल्फ़त और रहमत व शफ़क़त का निहायत वाज़ेह व लायह (कोई वाज़ेह चीज़) करने वाला था। तो भी उस ने निहायत इबरत नुमा और दिल तराश अल्फ़ाज़ से आदम ज़ाद की शरारत और ज़लालत और ख़ुबस का हिजाब खोल कर उसे ख़ुदा की कमाल रास्तबाज़ी और नूर शरईया के मुक़ाबिल दिखाया। ताकि वो ख़ताकार क़हर ईलाही के दरयाए

मोहलिक पर से सफ़ीना (कशती) नजात व लामत पर चढ़ कर मखलिसी हासिल करें।

और यकीन है कि जिस क़द्र तक कलाम ईलाही की मलामातों और इब्रतों और सरज़निशो से हमने अपनी तमीज़ और शऊर बातिनी के मिरात (शीशा, दर्पण) से जंग साफ़ किया है, उसी क़द्र हम दरगाह ईलाही में मुल्ज़िम और खताकार और कहहार आदिल के इताब और ग़ज़ब जावेद के मुस्तहिक़ ठहरते हैं। और इस मुनज्जी आलमीन की दावत की शफ़क़त आमैज़ आवाज़ शीरीं तर मालूम होती है, जो (यसअयाह 1:18) में पढी जाती है। “अब खुदावंद फ़रमाता है आओ हम बाहम हुज्जत करें। अगरचे तुम्हारे गुनाह क़िरमिज़ी (सुर्ख) हों वो बर्फ़ की मानिंद सफ़ैद हो जाएंगे और हर-चंद वो अरगवानी (निहायत सुरख) हों तो भी उन की मानिंद उजले होंगे।□ और जो साहब अदल व फ़कर ज़बूरों और अम्बियाओं की कुतुब समावी को गौर व लिहाज़ से पढ़ने में कायम रहता है, बतौफ़ीक़ रूह हक़ के। उस ने मालूम किया होगा कि मतलब और मक्सद उन सहफ़ ईलाही का ये है कि इन्सान अपनी लाइलाजी और नाचारी की हक़ीक़त-ए-हाल दर्याफ़्त कर के बीख व बुन (जड़ और बुनियाद) से क्या ही ज़िशत (बुरा, बद-शक़ल) और ज़बून है। और वो रजा (आसरा, उम्मीद) और भरोसा जो अपनी खास रास्ती और अस्ल सलाहीयत और फ़ज़ाइल तबइयह (फ़ितरी खूबियां) पर रखता है, क्या ही बातिल और अबस और बे-बुनियाद है। अपने नफ़्स की सब उम्मीदों से मुतनफ़िफ़र (नफरत करने वाले) और मुनहरिफ़ (सरकश, बागी) हो कर सिर्फ़ खुदा ही की दस्त-गीरी को कुबूल करे। और उस की मुतय्यन जाएपनाह में अमन व अमान से पोशीदा रहे।

पस तस्दीक़ इस अम्र की बीसों बल्कि सैकड़ों आयतों से हासिल है, जिन्हें हज़रत दाऊद ने बल्कि और ज़बूर नवीसों ने भी सिर्फ़ अपने ही हम-अस्र और हम वतनों के लिए नहीं बल्कि हर ज़माने के क़ौम व क़बीले के लिए ज़बान ज़द (मशहूर, मारूफ़) तहरीर किया है। चुनान्चे रोमीयों के ख़त के तीसरे बाब में मज़ामीर दाऊद से इस के सबूत में बाअज़ मुबय्यन और मुस्तकीम आयतों को इन्तिख़्वाब कर के तमाम आदमज़ाद की शरारत और ज़लालत आम्मा को रोशन किया है। ता आँ कि (वहां तक कि) वो सब मायूसी और तबाह हाली में ग़र्क़ और निहायत बे-तदारुक़ और आप ही से बे वसीला हो कर अपनी चश्म नाबीना को इस मुनव्वर आलम और आफ़ताब सदाक़त यानी मसीह की तरफ़ रुजू करें। और नंग व ज़इफ़ और तही-दस्ती और ख़स्ता-हाली इसी मख़लिसी बख़्श रब्बानी के रूबरू दिखा कर इतने फ़ज़ल को हासिल करें जिससे मसीह के साथ मज़बह पर जिंदा कुर्बानियां और नज़राना होने की इजाज़त और इस्तिदाद (सलाहियत) पायें। और ख़िज़ाँ-ए-लुत्फ़ व मुहब्बत से अज़रा-ए-दूर अंदेशी और गदाई कुछ बख़िशश और इनाम अता फ़रमाया जाये। देखो रोमीयों के इस बाब माअरूफ़ में रसूल ने कितनी-कितनी आयतों को बयान किया है, ताकि मालूम हो कि ना सिर्फ़ खूनी और चोर और जिनाकार और ज़ालिम और नशा बाज़ और क्रिस्म क्रिस्म के मुजरिम और मकरूह अन्नास (लोग) वग़ैरह खुदा की दरगाह में आसी और मुल्ज़िम ठहरते हैं, बल्कि बिला-इस्तिस्ना सब आदमज़ाद मौरिद क़हर और हयात ईलाही से महरूम और कातेअ अल-शराअ (शरा तोड़ने वाले) और राह-ए-रास्त से ज़ाल (गुमराह, भटका हुआ) और शयातीन के ज़रखरीद और असीर (क़ैदी) और गुनाहों के ज़ेर-ए-बार हैं।

सुनो यह तबाह हाली और ज़िल्लत आम्मा व कुल्लिया हज़रत दाऊद के कलाम मंज़िला में गोया दो धारी तल्वार के सख्त कातिल गुज़ारों के मुवाफ़िक क्या ही मज़बूत बातों में बयान होती है, ताकि सब कारी उन आयतों से इस मरज़ुल-मौत के सरायत मोहलिक का शऊर पाकर तबीब हक़ीकी के पास रवां दवां (भागता हुआ) हो कर शिफ़ा से मुस्तफ़ीज़ हो जाएं। रोमीयों के खत में यूं लिखा है “कोई रास्तबाज़ नहीं एक भी नहीं, कोई समझदार नहीं, कोई खुदा का तालिब नहीं, सब गुमराह हैं और सब के सब निकम्मे बन गए। कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं, उनका गला खुली हुई क़ब्र है। उन्होंने अपनी ज़बानों से फ़रेब दिया। उन के होंटों में साँपों का ज़हर है। उनका मुँह लानत और कड़वाहट से भरा है। उन के क़दम खून बहाने के लिए तेज़ रो हैं। उन की राहों में तबाही और बदहाली है। और वो सलामती की राह से वाक़िफ़ ना हुए। उन की आँखों में खुदा का ख़ौफ़ नहीं।” (रोमीयों 3:10-18)

हज़रत सुलेमान इब्ने दाऊद की मिसालों में एक मक़ूला महमूद है कि “जो ज़ख़्म दोस्त के हाथ से लगे पर वफ़ा हैं लेकिन दुश्मन के बो से बा इफ़रात हैं।” (अम्साल 27:6) और यक़ीन है कि जो शख़्स कलाम ईलाही के तेग (तल्वार) गुज़ारों से घायल निकला। वो दिलो-जान से इक़रार करेगा कि वो दोस्त वफ़ादार था जिसने ज़र्ब कारी से मेरे नफ़्स और शैतान को मारते-मारते खाक में पटक दिया। और इस खाइन (खियानत करने वाला) और खुफ़ीया मुफ़सिद को जो मेरे खुदा के खिलाफ़ था, पर्दा कश किया और उस के फ़न व फ़रेब के पेचों को हल व बातिल किया। इस अम्र में दोनों ओहदों के अकाइद दीनी और मज़हबी ग़ैर क़ौमों के मज़हबों से निहायत मुतफ़रि़क़ हैं। इन सभी में ये ऐब और क़बाहत लाहक़ है कि गुनाह पर पर्दा डाल कर हज़ार-

हा उज़्र ख्वाहीयाँ और बहाना जोईआं बना कर, बल्कि उस पर ज़ेब व ज़ीनत देकर उस के इल्ज़ाम को मुखफ़फ़ करते हैं और आफ़त या किस्मत या ज़ब्र या ज़रूरत बशरियह पर महमूल (लादा गया) करते हैं। जिससे ख़ता हक़ीकी और ख़ुदा-ए-हक़ीकी की फ़हमीदा और पहचान में ख़लल वाक़ेअ होता है।

बरअक्स इस कलाम ईलाही के साफ़ आईने में हर शख्स अपने क़ल्ब (दिल) और बातिन की गंदी और स्याह सूरत को देखकर ख़ुदा के मुकाबिल मुल्ज़िम और परेशान खड़ा रहता है। और उस की शराअ का क़माल रास्ती और सफ़ाई से लर्ज़ा और तरसाँ हो कर गाह-गाह (कभी कभी) इस क़द्र आतिश अज़ाब व इताब में आपको मुब्तला जानता है कि गोया जहन्नम से बाहर वो क़हर ईलाही का अज़ाब ऐन दोज़ख ही है। मिस्ल और नमूना इस ताअलीम का (ज़बूर 32) में देखना चाहिए। जिसमें अगरचे गुनाह के महू (फ़ना, मिटा) नेस्त होने के लिए इकरार दिली और ज़बानी और हक़ीकी तौबा शर्त हो। लेकिन तो भी इस गुनाह की बख़िश अपने इकरार व शिकस्ता दिली की बुनियाद पर कायम नहीं है और ना किसी इन्सानी ज़ईफ़ बुनियाद पर मब्नी है, बल्कि ख़ुदा के इस एन फ़ज़ल और फ़ैज़ पर जिससे गुनाह पोशिश कफ़ारा से महजूब (हिजाब किया हुआ, पोशीदा) है। और उस कफ़ारा की खातिर ना मेहसूब है।

अज़-आनरू कि वो ख़ताकार रास्ती और सदाक़त ईलाही के जामा से मुलब्बस हो कर अल्लाह की दरगाह में हर ऐब व दाग़ के इल्ज़ाम से मुबरा व मुनज़ज़ा ठहरा है। और गुनाह के ज़ुल्म व ज़फ़ा से ख़लास (आज़ाद) हो कर कुशादगी और आज़ादी से बतौफ़िक़ रूहुल-कुद्दुस के अहक़ाम ईलाही की राह में रोज़-बरोज़ तरक्की पाता चला जाता है। शायद तुम पूछो कि कौन से हिजाब से वो गुनाह महजूब है, तो बिलाशुब्हा ये हिजाब उस कफ़ारे ही पर सादिक़ आता है जिसकी सब कुर्बानियां और कफ़ारा जात मूसवी निशानीयां थीं और

जिसकी तरफ़ इशारा (ज़बूर 65:3) में पाया जाता है। “हमारी ख़ताओं का कफ़ारा तू ही देगा।” इस (ज़बूर 32) मज़कूर की तफ़सीर रोमीयों के ख़त के (रोमीयों 4: 1-2) में तफ़सील वार पाई जाती है जिस मुक़ाम से गुनाह के ना महसूब होने का राज़ ऐसी क़वी और क़तई दलीलों से साबित हो गया कि लाखों ख़ुदा के बंदे वहां से मग़फ़िरत और कफ़ारा गुनाह की कैफ़ीयत हाल सीख कर उस के तयक्कुन के इत्माम (कमाल, तक़मील) से मुस्तफ़ीज़ हो गए और फ़र्जदीयत और रूह आज़ादगी के दर्जा तक सफ़राज़ और मुम्ताज़ हो गए।

गुनाह और तौबा की बाबत ये एक और भी उम्दा वज़नी ताअलीम मज़ामीर दाऊद से हर ख़ुदातरस शख़्स को हासिल हो गई और दिल पर नक़श होने के काबिल है। यानी ये कि शिकस्ता दिल की मुरम्मत और बहाली और दिली ख़ुबस व नजासत का तस्फ़ीया (फ़ैसला, वाज़ेह करना) सिर्फ़ ख़ुदा के रूह हक़ की शनाख़्त और सनअत है। चुनान्चे नव-मख़्लूक करने की राह से इन्क़िलाब क़ल्ब (दिल) बख़शना सिर्फ़ इसी का कारख़ाना है। चुनान्चे (ज़बूर 51:10-12) में बयान है कि “ऐ ख़ुदा मेरे अंदर पाक दिल पैदा कर और मेरे बातिन में अज सर-ए-नौ मुस्तक़ीम रूह डाल। मुझे अपने हुज़ूर से ख़ारिज ना कर और अपनी पाक रूह को मुझसे जुदा ना कर। अपनी नजात की शादमानी मुझे फिर इनायत कर और मुस्तइद रूह से मुझे सँभाल।” और (ज़बूर 19) के अंदर हज़रत दाऊद इसी नई ख़ल्कत का बाइस और आला-ए-मुईन तौरैत की तदरीस को बताता है। चुनान्चे वो मर्द-ए-ख़ुदा इस मौक़े पर तौरैत की ताअलीम के फ़वाइद में ये उम्दा फ़ायदा बताता है कि गुनाह ख़ुफ़ीया ख़्वाह ज़ातीया और जौहरिया हो, ख़्वाह अमली हो तौरैत की इब्रतों और नसीहतों से अलानिया जाहिर हो कर करीहा (काबिल-ए-नफ़रत) कबीह मालूम होता है। और इस शर की अस्ल बे-हिजाब और नुमायां होने से ख़ौफ़ भी पैदा होता है। और बमुज्जरद

खुदा की हिमायत और दस्तगीरी पर भरोसा करने के एक ईलाज शाफ़ी बाकी छोड़ा गया है। “नीज़ उन से (यानी कलिमात ईलाही) से तेरे बन्दे को आगाही मिलती है। उन को मानने का अज़्र बड़ा है। कौन अपनी भूल चूक को जान सकता है? तू मुझे पोशीदा ऐबों से पाक कर, तू अपने बंदे को बेबाकी के गुनाहों से भी बाज़ रख, वो मुझ पर ग़ालिब ना आएँ तो मैं कामिल होंगा। और बड़े गुनाह से बचा रहूँगा।” (ज़बूर 19:11-13)

कुतुब समावी की इस अम्र पर मुतफ़िक़ गवाही है कि वो तुख़्म जो हयात जदीद और खल्कत सानी की अस्ल है, सो यही खुदा का कलाम है। चुनान्चे (ज़बूर 119:93,150) में यूँ मन्कूल है कि “मैं तेरे क़वानीन को कभी ना भूलूँगा, क्योंकि तू ने उन ही के वसीले से मुझे जिंदा किया है।” (ज़बूर 119:93) जिस बात में पूरी मुताबिक़त इस क़ौल तम्सीली खुदावंद मसीह के साथ है। (मत्ती 13:37-38) में यूँ लिखा है कि “उस ने जवाब में कहा कि अच्छे बीज का बोने वाला इब्न-ए-आदम है। और खेत दुनिया है और अच्छे बीज बादशाही के फ़र्ज़द और कड़वे दाने उस शरीर के फ़र्ज़द हैं।” फिर ये और भी नसीहत-आमेज़ ताअलीम व तल्कीन हज़रत दाऊद के नविशतों से मिलती है कि वो अपने गुनाहों की कुछ तसगीर और तख़्फ़ीफ़ और तलईन (नर्मी) नहीं करता, उस को बग़फ़लत व ग़लती व लग़िज़श वग़ैरह के मुसम्मय्या (मौसूम करना, नाम रखना) नहीं करता। मगर उस के मंबा और चशमा को अस्ल तबीयत और सर रिश्ता बताता है। और ना उनको इन्सान की मीज़ान काज़िब और तराजू-ए-दगाबाज़ पर तौलता है, पर खुदा तआला के तराजू-ए-रास्त और सादिक़ पर तौल कर उसे निहायत गिरां व संजीदा कहता है। देखो (ज़बूर 143:2, ज़बूर 119:96) में इस मीज़ान हकीकी की तक्मील और वक़अत और सेहत तमाम पर कैसी साफ़ दलील और शहादत दी जाती है “और अपने

बंदे को अदालत में ना ला क्योंकि तेरी नज़र में कोई आदमी रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता।” (ज़बूर 143:2) “मैंने देखा कि हर कमाल की इंतिहा है लेकिन तेरा हुक्म निहायत वसीअ है।” (ज़बूर 119:96) और इस मीज़ान ईलाही की वक़अत के सिवाए चशम ईलाही की तेज़ बीनी और वक़अत बसारत और नज़ारा-ए-हकीकत की हैरत अंगेज़ सफ़ाई फ़साहत से बयान करता है कि उस के वजूद जाहिरी और बातिनी के ज़र्रात और निकाल और दकाइक (अच्छी बुरी बात के वह पहलु जो गौर करने से समझ कर आएँ, दकीका की जमा, बारीकियां) और अमाइक (उमुक से बमाअनी गहराई) इस हमा बीन और हमा दान खालिक व मालिक के आगे हर वक़्त और हर जा सब नंगे और बेपर्दा खुले रहते हैं। जिस जिहत से वो आपको गायत तक सरासीमा और परेशान खातिर दिखाई देता है और अज़म-बिल्-जज़म (पक्का इरादे) व कसद मुसम्मम और हर एक शुरू शरारत और शरीर से कीनावरी और अदावत कुल्लिया का अपने खुदा के हुज़ूर में क़ौल करार देता है। और ऐन सिद्क दिल और ख़लूस खातिर की ये अलामत जाहिर करता है कि अपनी ही तमीज़ से तफ़्तीश बातिनी के हासिलात काफ़ी व वाफ़ी ना जान कर अपने खुदा से अर्ज़ करता है। अज़जू-फिक्र हकीकी की राह से कि “ऐ खुदा तू मुझे जांच और मेरे दिल को पहचान। मुझे आजमा और मेरे खयालों को जान ले और देख कि मुझमें कोई बुरी रविश तो नहीं और मुझको अबदी राह में ले चल।” (ज़बूर 139:23-24)

पस ये ताअलीम शाज़ व नादिर है। सिर्फ़ उन्हीं नबियों में जो रूह वही से मुस्तफ़ीज़ हुए, मुशर्क है और उन्हीं के साथ मख़सूस है और ये भी यकीन है कि जिन जिन अशखास को इस तबाह हाली जातीया और जौहरिया की बेशऊरी और नाफ़हमी है तो नजात ईलाही की तदबीर और वसाइल मुअय्यना

अच्छी तरह समझने और पहचानने की काबिलीयत हकीकी और दाइमी नहीं हो सकती। अज़ां जिहत (इस सबब से) कि मन तदाबीर बाला एक ये भी तदबीर है कि हज़रत इल्यास (एलियाह) और हज़रत युहन्ना मुसम्मा बह बपतिस्मा दहिंदा की वो मुनादी दिल तराश और क़ल्ब (दिल) शिकन जिससे गाफ़िलों और सुस्त दिलों के लिए तंबीया और तर्गीब तौबाकारी की तरफ़ है। सो खुदावंद की बशारत फ़ज़ल की पेशरवी और पेशक़दमी करती है। जिस अम्र का बयान इंशा-अल्लाह आगे बमजीद तफ़सील होगा। बिल-फ़अल इस बात के सबूत में सलाह है कि बाअज़ खयालात और ताअलीमात इंतिख़्राब करूँ, उन हक़ायक़ मुख़्तलिफ़ा और मुताद्दह में से जो गुनाह के बाब में हज़रत दाऊद के जबूरों में मस्तूर हैं।

अव्वलन बाअज़ जबूर गोया सूरतन व तशबिहन मर्सियों की मानिंद हैं, जिनमें कुल आदमज़ाद की ज़िल्लत और ज़बूनी और हमाक़त और खुसूसुन इस जहान के मनाज़िल और मुरातिब वालों और शरीफ़ों और नाम वालों की खुदी और नफ़स पर्वरी और हुब्ब दुनिया और वुहूश (वहश की जमा, जंगली जानवर) मिज़ाजी इस तरह मअयूब (ऐब वाला) और मकरूह होती हैं कि बह बदाहत अक़ल सूरत और हकीक़त-ए-हाल से साफ़ मालूम व ज़ाहिर है कि अपने या अपने क़बाइल और नाते रिश्ते वालों के लिए ऐसा कफ़फ़ारा मयस्सर करना जो ख़ता के एवज़ गुज़राना जाये और जो तस्दीक़ और तक़ब्बुल का बाइस और विरसा हयात-ए-अबदी पर दावे करने का सही मूजिब हो, बिल्कुल मुहाल है और ऐसी सब उम्मीदें बे-बुनियाद और बेअस्ल हैं। बसबब इस बात के कि जान इन्सान की निहायत बेश-बहा और गिरां कीमत है और इस का फ़िया बे-हिसाब। “उन में से कोई किसी तरह अपने भाई का फ़िया नहीं दे सकता ना खुदा को इस का मुआवज़ा दे सकता है। क्योंकि उनकी जान का

फ़िद्या गिराँ-बहा है वो अबद तक अदा ना होगा।” (ज़बूर 49:8,9) पस अस्ल मज़्मून इस ज़बूर का साफ़ है कि कुल आदम ज़ाद बुतलान और ख़ता के ज़िंदाँ (कैदखाना) में इस कद्र मुक़य्यद (कैद) हैं कि कलिद (कुनजी) उम्मीद से इस ज़िंदान का हल अक़फ़ाल करना (ताला का खोलना) ख़िलाफ़-ए-क्रियास और ख़िलाफ़ तजुर्बा है। तो आदम ज़ाद का हाल ये है कि सवाब व फ़ख़्र के अहाते से अबद-उल-आबाद तक महरूम व मायूस होकर अहात-ए-फ़ज़ल और आजिज़ी को ग़नीमत जान कर उस में मुदाख़िलत होने की मारुज़ ब-मिन्नत करे। यही चारा व ईलाज है, वाहिद व मुजर्रिद बाक़ी रहा। चुनान्चे इसी ज़बूर की 15 वीं आयत में लिखा है “लेकिन ख़ुदा मेरी जान को पाताल के इख़्तियार से छुड़ा लेगा क्योंकि वही मुझे कुबूल करेगा।” यानी ख़ुदा आप ही फ़िद्या और कफ़़ारा मयस्सर करता है। और फिर भी पूछना वाजिब है कि वो फ़िद्या और कफ़़ारा जो आदम की नस्ल मुजर्रद से ना हो सका और ख़ुदा की क़ज़ा और ऐन फ़ज़ल से मुक़द्दर और मुक़र्रर था, सो कौन है। वो कफ़़ारा और फ़िद्या क़दीम जिस पर नबियों और रसूलों की पूरी मुवाफ़िक़त और मुराफ़िक़त (इतिहाद, बाहमी मेल-जोल) थी। बमूजब इस क़ौल ईलाही के जो रसूलों के आमाल में है “इस शख़्स (ख़ुदावंद यसूअ मसीह) की सब नबी गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर ईमान लाएगा उस के नाम से गुनाहों की माफ़ी हासिल करेगा।” (आमाल 10:44)

बिलाशुब्हा उन सब और उन की मानिंद और सब नक़ली दलीलों को बनज़र अदल व तमीज़ देखने से सिर्फ़ एक ही नतीजा निकलता है कि जब चारों अतराफ़ के मद्द-ए-नज़र महज़ घने-घने बादलों और ज़ुलमात की झूमती हुई स्याही है, तो आलम-ए-बाला और दरगाह-ए-ख़ुदा पर से एक सितारा-ए-सुबह यानी फ़ज़ल ईलाही का अहदो मीसाक़ सलफ़ अपनी शआओ का फ़र्हत

अंगेज़ नूर तलूअ करता है। उसी सितारे की तरफ़ वो खुदा का बंदा निगाह कर के सवाल करता है कि, “अपने अहद का ख़्याल फ़र्मा क्योंकि ज़मीन के तारीक मुक़ाम जुल्म के मस्कनों से भरे हैं मज़्लूम शर्मिदा हो कर ना लोटे।” (ज़बूर 74:20) और इस अपने सवाल का जवाब (ज़बूर 89:34-35) से पकड़ता है कि “मैं अपने अहद को ना तोड़ूँगा और अपने मुँह की बात ना बदलूँगा। मैं एक-बार अपनी कुदूसी की क्रसम खा चुका हूँ। मैं दाऊद से झूट ना बोलूँगा। फिर (ज़बूर 75:3) मैं लिखा है कि, “ज़मीन और उस के सब बाशिंदे गुदाज़ हो गए हैं। मैं ने उस के सतूनों को क्रायम कर दिया है।”

सानियन कैफ़ीयत और हकीकत गुनाह की बाबत ये ताअलीम ज़बूरी के मबदइ अहवाल से है कि ना सिर्फ़ वो क्रौम जो हद शराअ और कैद सुन्नत से खारिज है, बल्कि खास अहले शराअ और अहले सुन्नत भी दरगाह-ए-खुदा में मुल्जिम और कहर रब्बानी के मुस्तहिक हैं। बावजूद इस बात के कि अहले सुन्नत इस ताअलीम दिल-शिकन को निहायत मकरूह जानते थे। यहां तक कि उस की बर्दाशत के काबिल ना थे। ताहम जैसा कुतुब अम्बिया-ए-सलफ़, वैसा ही ज़बूरी में सख्त तरीन सरज़निशें और इताब और चश्मनुमाई की बातें उन अहले शराअ के साथ जो मुसम्मा बुशहर अमीन और खुदा के फ़र्जद अज़ीज़ और नुखसत जादे (पहलूटे) थे, मख्सूस पाई जाती हैं। मसलन (ज़बूर 90) में जिसके सरनामे से ऐसा मालूम होता है कि मुहक्किकीन यहूद ने इस का मुसन्निफ़ हज़रत मूसा जो बताया है। वो मर्द-ए-खुदा एक मर्ज-ए-मोह्लिक और आफ़त शदीद का इशारतन बयान करता है जिसके सदमे से हर उम्र और हर रुत्बे के हज़ार-हा यहूद जैसे मर्ग ज़ार (सब्ज़ा-ज़ार) के फूल बाद-ए-समूम के मुक़ाबिल नागहाँ पज़मुर्दा गिरते हैं। वैसे ही मलक-उल-मौत के नफ़ख (फूंकना) कातिल से मैदान में मरे पड़े थे। फिर इस सख्त आफ़त में कहर

उस बादशाह और मुंसिफ़ तआला की साफ़ अलामात पहचानने की तल्ख और तुरश नदामत की बातों में अपने और अपनी क्रौमों के गुनाहों का मक्कर (इक्रार) है और गोया अपने जिगर का खून बून्द बून्द बहाता है। (जबूर 90:7-12) में यूं लिखा है, “क्योंकि हम तेरे क्रहर से फ़ना हो गए और तेरे ग़ज़ब से परेशान हुए। तू ने हमारी बदकिर्दारी को अपने सामने रखा और हमारे पोशीदा गुनाहों को अपने चेहरे की रोशनी में। क्योंकि हमारे तमाम दिन तेरे क्रहर में गुज़रे। हमारी उम्र ख़याल की तरह जाती रहती है। हमारी उम्र की मियाद सत्तर बरस है या कुव्वत हो तो अस्सी बरस। तेरे क्रहर की शिद्दत को कौन जानता है और तेरे खौफ़ के मुताबिक़ तेरे ग़ज़ब को? हमको अपने दिन गिनना सिखा। ऐसा कि हम दाना दिल हासिल करें।” इस कलाम में वो मर्द-ए-ख़ुदा इतना बईद है, इस ख़्वाहिश से कि अपनी स्याही पर रोगन लगाकर और शर् मौरूसी और अमली से चश्मपोशी करके कि वो ऐन इसी बात पर मारुज़ व मिन्नत करता है कि जिस क्रहर से हम आफ़त ज़दाह और ज़हमत आलूद हैं, उस की किब्रियाई और हैबत नाकी की मिक्दार को जानें। ता आँ कि (वहां तक कि) चंद रोज़ इन्सानी उम्र के खुशक वीरान दशत से बदस्त तौबा कारी व ईमानदारी फ़हमीदा और हिक्मत की फ़स्ल काटें।

क्राबिल-ए-गौर व लिहाज़ है कि कैसी आजिज़ी और इन्किसारी से इस बर्गुज़ीदा क्रौम के लिए जो ख़वास मिन्नास कहलाते थे, इस्तिग़फ़ार करता है। बाअदअजां कुल बनी-आदम ज़ाद की हालत आम्मा की तरफ़ इशारा और ईमा कर के पुशत दर पुशत के तसलसुल के फ़ना व ज़वाल से और खुसूसुन उन की इबरत नुमाई से जो नागहानी ज़रब-उल-मौत से अजल गिरफ़ता हो गए थे। ये नतीजा हासिल करता है कि ख़ुदा-ए-रास्त और कादिर ने उन की

बद फ़ालियों बल्कि दिल की गुमराहियों को जो मख़्फ़ी (छिपी) थीं, अपने चेहरे के जलवा-ए-बुराक़ और अब्यज़ (उजला, सफ़ैद) के रूबरू रखा था।

आख़िर को दस्त-बस्त और सर बह गिरेबान हो कर खुदा-ए-तआला के फ़ज़ल व रहम की दरख़्वास्त करता है और इस कादिर-ए-मुतलक़ के अफ़आलों और आमालों का कश्फ़ राज़ मांग कर सिर्फ़ इन्हीं की खातिर अपने अम्लों की कबूलीयत और मंजूरी का साइल होता है। और बिलाशुब्हा ऐन इंजील और ईमान-ए-इंजीली की अस्ल रौनक यही है कि अपने सवाब और जाये तफ़ख़्खर को हीच जान कर और अपनी अस्ल नस्ल की और अपने इल्म व अमल की तफ़ज़ीलात को नाक़िस और मअयूब (एब वाला) जान कर अपनी उम्मीद का इकरार और अपने कमाल और भरोसे का मूजिब व बाइस सिर्फ़ खुदा ही के अमल से दस्तयाब करें।

सालसन जानना चाहिए कि इस किताब समावी में ना सिर्फ़ खास कौम और बर्गुज़ीदा उम्मत यहूद की शर् व ज़लालत से मअयूब (एब वाला) और मज़मूम होती है, बल्कि उसी उम्मत बर्गुज़ीदा के दर्मियान जो शख्स हक़ और अदालत की मीज़ान के मुवक्किल हो गए थे। और मिस्कीनों और मज़लूमों की दाद रस्सी उन के ओहदे का ज़िम्मा थी, उनका बयान भी (ज़बूर 82) में है कि वो जुलमात में आवारा गुमराह फिरते रहते हैं और क़िस्म-क़िस्म की बेवफ़ाई और ख़ियानत और ज़मानासाज़ी के सबब खुदा से मर्दूद और उस के इताब व इक्राब (सज़ा, अज़ाब) व इंतिक़ाम के सज़ावार ठहरते हैं। और हर चंद रुक्न आलम और इमादा अल-दौला (भरोसे की दौलत) और असातीन (उस्तवाना की जमा, सतून, खंबा) अल-मुल्क वगैरह की रौनक व ख़िताब से बहरावर रहीं। बल्कि रब-उल-आलमीन के वकील और काइम मक़ाम होने के सबब ईलाहों के ख़िताब से मुजय्यन और मुशर्रफ़ हो गए हैं और उन की

मजलिस शरफ़ में गोया पेशवा और मीर मजलिस खुदा-ए-तआला आप ही है। ताहम वो अरकान दौलत आप ही मुतज़लज़ल हो गए हैं।

बआनकदर कि काज़ी व मुफ़्ती व मंसफ़ व बाक़ी मुस्नद नशीन रूदारी और किज़ब (झूट) और रिश्तखोरी से मुतनफ़िफ़र (नफरत करने वाले) नहीं हैं। चुनान्चे मुल्कगीरी और रब्त व इंतिज़ाम बिलाद (बलदा की जमा, शहर) में खलल आ गया है। चुनान्चे जब अशराफ़ों और खवासों का अहवाल इस कद्र बदतर हो गया है तो बतरीक़ उला रईयत व अवाम मुज्तरिब व परेशान हो गए। और गोया ज़मीन के अस्फ़ल की बुनियादें दरहम-बरहम हो गईं। और जिस हाल में कि हक़ और अदल करीब है कि ज़ालिमों के गिनाइम और लूट का माल हो जाएं तो क्या ईलाज इस हाल में बाक़ी है, मगर वही सवाल व दुआ कि पाक नबी और उस के हम दिल रफ़ीकों की ज़बान से निकला है। (ज़बूर 82:5-8) में यूं मर्कूम है, “वो ना तो कुछ जानते हैं ना समझते हैं। वो अंधेरे में इधर-उधर चलते हैं। ज़मीन की सब बुनियादें हिल गईं हैं। मैंने कहा था कि तुम आला हो और तुम सब हक़ तआला के फ़र्ज़द हो। तो भी तुम आदमीयों की तरह मरोगे और उम्मा में से किसी की तरह गिर जाओगे। ऐ खुदा ! उठ ज़मीन की अदालत कर। क्योंकि तू ही सब क्रौमों का मालिक होगा।□

जवाब इस सवाल का साफ़ व सरीह (ज़बूर 75:1-2) में मयस्सर होता है, □जब मेरा मुईन वक़्त आएगा तो मैं रास्ती से अदालत करूँगा।□ पस हम सवाल करते हैं कि ज़मीन की अदालतें करने वाला और उसे अपने कब्ज़े और मीरास में लाने वाला कौन है, मगर वो जो आप ही कलिमतुल्लाह (كلمته الله) हो कर अपनी बाबत तयक्कुन और इख़्तियार ईलाही से फ़रमाता है, “क्योंकि बाप किसी की अदालत भी नहीं करता बल्कि उस ने अदालत का सारा काम

बेटे के सपुर्द किया है। ताकि सब लोग बेटे की इज़्जत करें जिस तरह बाप की इज़्जत करते हैं। जो बेटे की इज़्जत नहीं करता वो बाप की जिसने उसे भेजा इज़्जत नहीं करता।” (युहन्ना 5:22,23)

राबिअन इस फ़साद और ज़लालत आम्मा व कुल्लीयह की इस से कौन कवा (قوى) और अकमल दलील हो सकती कि पाक नबी आप ही को और ज़मनन अपने सब हम वज़नों और हम रुत्बों यानी अम्बिया और रसूलों को भी इस शिकस्ता और तबाह हाली में शामिल-ए-हाल बताता है। और तमाम आजिज़ी और ग़मख़वारी से बहज़ूर खुदा-ए-तआला अंदरूनी ख़ुबस और गंदगी का मक्कर होता है। और इस अहले जहल की पूरी मुमानिअत और मराफ़ात (निगरानी) करता है कि जिसकी राय और दानिस्त में अम्बिया व औलिया शरीफ़ गुनाह की हर सूरत की क़बाहत से मुबर्रा व मासूम हैं। हालाँकि गुनाह से तज़किया (पाकी, सफ़ाई) और तबरीयता का कोई नबी या पैग़म्बर किसी सहीफ़े मुक़द्दस में हरगिज़ दाई नहीं होता है। किसी की ज़बान पर ये कब्रों फ़ख़्र ख़्वाब तक भी नहीं आया। चुनान्चे ये रुत्बा बरियत (रिहाई, बेक़सूर होना) और मासूमियत का कलिमतुल्लाह (كلمته الله) यानी ख़ुदावंद मसीह के साथ मख़सूस जिस्म और रूह में है। इस अम्र में नबी मुबारक की गवाही पर कदरे लिहाज़ करना चाहिए कि “देख ! मैंने बदी में सूरत पकड़ी और मैं गुनाह की हालत में माँ के पेट में पड़ा। देख तू बातिन की सच्चाई को पसंद करता है और बातिन ही में मुझे दानाई सिखाएगा। जोफ़े से मुझे साफ़ कर तो पाक होऊंगा मुझे धो और मैं बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ैद होंगा। ऐ ख़ुदा, मेरे अंदर पाक-दिल पैदा कर और मेरे बातिन में अज सर-ए-नौ मुस्तक़ीम रूह डाल।” (ज़बूर 51:5-7,10)

इन आयात बाला से वाज़ेह व लाईह है कि पाक हज़रत ये बात काफ़ी व वाफ़ी नहीं जानता कि नुक्स कलील और लज़िश सगीर का मक्कर और मुस्तग़फ़िर हो और राह-ए-हक़ के तजावुजात को ज़ोफ़ बशरीयह पर या शयातीन के बुग़ज़ व मक्र पर इतलाक़ करे और ना ये कहता है कि इतिफ़ाक़न या सहवन या करहन व जबरन में इस जुर्म का मुर्तक़िब हो गया था। बल्कि इस गुनाह की बीख व बुन (जड़ और बुनियाद) तक जो मौरूसी हैं, खोद खोद कर इस ज़िया-ए-शम्स-उल्लाह के मुकाबिल खारिज व उरयां करता था ताकि ना शाख़ ब शाख़ पर हत्ता-उल-मक़दूर अस्ल व बीख़ तौरात ज़बानी की कुल्हाड़ी से उसे काट डाले। इसी तरह वो आमाल बढ़ू करीहा (काबिल-ए-नफ़रत) जो इस अस्ल से मुश्तक़ और नशव व नुमा हो गए हैं, बिलादिरेग़ मग़्लूब और जेर पा करे। और निहायत बईद है ऐसे क्रियास से कि कलमा-ए-इस्तिग़फ़ार पढ़ना बमुक़ाम कमाल सिद्क़ दिली और खुदा-ए-तआला की रहमत और कफ़फ़ारा मुक़र्ररा की काफ़ी व मक्बूल ठहरेगा।

बरअक्स इस बात के तमाम आजिज़ी और मिन्नत से दरख्वास्त और इक्तिज़ा (ख्वाहिश करना, तकाज़ा) करता है, शिकस्ता दिली और रूह जदीद का और बातिन रास्त का और इस यकीन में तमाम कायम व मुस्तकर (ठहरने की जगह, ठिकाना) है कि ये सब फ़वाइद व गनाइम (लूट का माल, माल-ए-गनीमत) सिर्फ़ रूह हक़ के तोवस्सुल (वसीले) से और उस की हुज़ूरी और हुलुल³ से हासिल हो सकते हैं। और बदल व जान इस बात का काइल भी है कि जितने रंजों और तक्लीफों में मुब्तला हो गया हूँ, उन में हर वाहिद का मैं निहायत मुस्तहिक़ और सज़ावार हूँ। तो ऐ खुदा रास्त है, मैं और मेरी कौम

³ यह अरबी इस्म मज्कुरह है, इस के माअनी हैं एक चीज़ का दूसरी चीज़ में इस तरह दाखिल होना की दोनों में तमीज़ न हो सके।

खताकार हैं। कस्रत गुनाह से कस्रत शदायद (शदीदा की जमा, तकलीफें) बढ़कर नहीं। लिहाजा इन सब अकली और नकली दलीलों से जाहिर व रोशन है कि मजामीर दाऊदी के अस्ल मज्मून और मफहूम में ये भी दाखिल है कि जमी-उन्नास अवाम व खवास हक-तआला के हुजूर में गुनाहों के जिंदान में महबूस (असीर, कैदी, मुकय्यद) और गुनाह में मौलूद (पैदा, जना हुआ) भी हैं। और अमल व आदत से भी इब्नाअ (इब्न की जमा, बेटे) कहर व गजब हैं और इस तआला के फ़ज़ल व लुत्फ़ से आजिज़ और खुसूसुन इस अहद कदीमी से जो फ़ज़ल ईलाही का गंज (खजाना) मस्तूर (पोशीदा) और मुतय्यन है, बगायत तमाम हाजतमंद हैं। वो बारी तआला हम सभों पर इनायत करे कि उस की शराअ के तल्ख़ प्याले को पीने से हमें कुछ उज़्र ना हो, बल्कि रजामंदी और खुशनुदी हो, ताकि तल्ख़ी के बाद उस के फ़ज़ल के शीरीं प्याले के पीने के लायक और मुस्तहिक़ गिने जाएं, आमीन।

बाब चहारुम

दरबयान-आँ मुख़िलस आलमीन व सुल्तान- उल-सलातीन कि अज़ नस्ल दाऊदी मुज्जस्सम शदनी बोद

در بیان آل مخلص عالمین و سلطان السلاطین کہ از نسل داؤدی مجسم شدنی بود

जितने अस्हाब कलाम-उल्लाह के बसिद्क दिल ख्वानिंदे (खवांदा, पढा लिखा, हर्फ-शनास) हैं, उन्हें याद होगा कि हज़रत दाऊद ने बाअदअजां (इस के बाद) कि बाहर के जंग व जदाल व यल्गारों से और अंदर के फ़ित्ते व फ़साद से मोहलत व फ़रागत पा कर तख्त मौऊद इस्राईल पर क्रियाम व करार पकड़ा, तो इस मर्द-ए-ख़ुदा के दिल में ये इशतियाक और आरजू पैदा हुई कि ख़ुदावंद अपने ख़ुदा की इबादत आम्मा के लिए और उन रसूमात और फ़राइज़ के जो ख़ुदा-तरस लोगों पर लाज़िम हैं बजा लाने और अदा करने के लिए एक ऐसा घर तामीर करे जिसका जमाल व रौनक व जीबाइश कुल आलम में मारूफ़ व महमूद व सतूदह हो। और ये भी कि वो हैकल याददाश्त व शहादत

का वसीला और शुक्राने की अलामत हो, जिसके ज़रीये से इस्राईल पुश्त दर पुश्त इस बात का इकरार और एतराफ़ करेंगे ईफ़ा-ए-अहद और इफ़ाज़त करम व फ़ज़ल बेक्रियास से हम अपने खुदा के निहायत एहसानमंद और मर्हूने मिन्नत हैं। और हर-चंद कि वो मुराद बादशाह करीम-उल-शान की बिल-फ़अल बर ना आने पाई और इस मुक़द्दस की बिना डालनी पाक हज़रत दाऊद को ममनू थी। यानी उस की दरख्वास्त व सवाल का हर्फ़ व ज़ाहिर मंज़ूर ना था, पर तो भी इस सवाल के मअनी बफ़याज़ी व इज़दियादी (इज़दियाद बमाअनी ज्यादा होना) तमाम कुबूल हो गए।

अज़-आनरो कि उस की नस्ल में से एक शहज़ादा का तव्वुलुद (पैदाइश) और उस की मलकूत (बादशाही) की मुदावमत (क्रियाम) और बरकरारी और उस की शान की अज़मत व अलवियत का कौल व करार तख़्त एज़द तआला से सादिर हुआ कि वो वलद दाऊद खुदा के घर में मुशर्रफ़ होगा और वो बजाय जंगी औज़ारों और खूँ-रेज़ी और आलमगीरी की सुलह और हुलुम व मुहब्बत का झंडा खड़ा करके दूर व करीब की मुमलकतों को अपनी तरफ़ रुजूअ करके उन्हें मुल्क में मिला लेगा। जैसे (2 समुएल बाब 7 की 12,13,14 आयात और ज़बूर 72 की 9,10,11 आयात) से साबित व मालूम होता है। “और जब तेरे दिन पूरे हो जाएँगे और तू अपने बाप दादा के साथ सो जायेगा तो मैं तेरे बाद तेरी नस्ल को जो तेरे सुल्ब से होगी खड़ा कर के उस की सल्तनत को क्रायम करूँगा। वही मेरे नाम का एक घर बनाएगा और मैं उस की सल्तनत का तख़्त हमेशा के लिए क्रायम करूँगा। और मैं उस का बाप होंगा और वो मेरा बेटा होगा.....। (2 समुएल 7:12-14) उस की सल्तनत समुंद्र से समुंद्र तक और दरियाई-ए-फुरात से ज़मीन की इंतिहा तक होगी। ब्याबान के रहने वाले उस के आगे झुकेंगे और उस के दुश्मन खाक चार्टेंगे। तरसीस के और जज़ीरों के बादशाह नज़रें गुज़रानेंगे। सबा और सीबा के बादशाह हदिए लाएँगे।

बल्कि सब बादशाह उस के सामने सरगूँ होंगे। कुल कौमें उस की मुतीअ (फर्माबरदार) होंगी।” (ज़बूर 72:8-11)

इस अम्र में अगर शायद कोई साहब ज़हन व तमीज़ कहे कि लाबुद् (यक्रीनन, बेशक) एक मिस्ताक़ उम्दा इस पेश खबरी का हज़रत सुलेमान है, तो हम भी बसरो चशम उस की राय पर हैं। पर अगर शायद वो ये और भी कहे कि इस वाअदे की कुल कैफ़ीयत हम लफ़ज़ व हम-मअनी हज़रत सुलेमान से पूरी मुवाफ़िक़त व मुताबक़त रखती हैं। ग़ैर अज़ां कोई दूसरा मिस्ताक़ लाज़िम व ज़रूर नहीं या अगर मुक्तज़ा-ए-अदल (तक्राज़ा करने वाला) व इन्साफ़ से मुन्हरिफ़ हो कर खुदावंद मसीह के सिवाए किसी दूसरे को इस वाअदे का उम्दा मिस्ताक़ जाने मआज़ अल्लाह (खुदा की पनाह, अल्लाह महफूज़ रखे ! तौबा तौबा !) हाशा व कल्ला (खुदा ना करे, हरगिज़ नहीं) कि हम उस की राय से मुत्फ़िक़ हो जाएं।

अव्वलन इस सबब से कि इब्रानियों के ख़त के मुसन्निफ़ इल्हामी ने माअरूफ़न इस वाअदे के ऐन तलफ़फ़ुज़ को खुदावंद मसीह पर महमूल किया है। “क्योंकि फ़रिश्तों में से उस ने कब किसी से कहा कि तू मेरा बेटा है, आज तू मुझसे पैदा हुआ? और फिर ये कि मैं उस का बाप हूँगा और वो मेरा बेटा होगा? और जब पहलौंठे को दुनिया में फिर लाता है तो कहता है कि खुदा के सब फ़रिश्ते उसे सज्दा करें।” (इब्रानियों 1:5,6)

सानियन खुदावंद ही की शहादत (गवाही) संजीदा और दिल-सोज़ जो अपने इख़्तताम मुकाशफ़ा में यानी कलाम-उल्लाह की आखिरी आयात में अपनी शान-ए-हक़ीकी के हक़ में फ़रमाई, यानी मुकाशफ़ा की किताब में यूं फ़रमाया कि, “मैं दाऊद की अस्ल व नस्ल और सुबह का चमकता हुआ सितारा हूँ।” (मुकाशफ़ा 22:16) जो बाकी सबब और मूजिब ग़ैर अज़ मसीह किसी दूसरे मिस्ताक़ आला के मानेअ हैं, वो सब के सब (ज़बूर 89) की

तफ़सीर में ज़ेल में पेश किए जाएंगे। चुनान्चे इस शहनशाह के तव्वुलुद और उस की सलतनत के खवास और अलामात हर-चंद कि समुएल की दूसरी किताब में इज्मालन मस्तूर हुई हैं, पर इस (ज़बूर 89) में तफ़सील व बिसातत से नुमायां व माअरूफ़ होती हैं। चुनान्चे मशहूर है कि तस्वीर कलां (बड़ा, वसीअ) में तस्वीर खुर्द (छोटा) की निस्बत अलामात क्रियाफ़ा (शनाख़्त, समझ, अंदाज़ा) ज़्यादा ब-आसानी और ब-सफ़ाई उम्दा पहचानी जाती हैं। इसी तरह (ज़बूर 89) के इशारात और इबारात को हज़रत समुएल की नबुव्वत बाला के साथ मुक्राबला करने से मालूम व मफ़हूम होगा कि वो नबुव्वत अगरचे बलिहाज़ सतह व सूरत हर्फ़ ज़ाहिरी के जूज्यन इब्ने दाऊद सुलेमान की तरफ़ बकमाल वजूब आइद होती हैं। लेकिन ताहम जो अस्थाब तमीज़ उस की कुल्लियत और बतन पर ज़रा गौर करें और यहूद व नसारा की जमाअत आम्मा की गवाही मुत्तफ़िक़ पर इल्तिफ़ात करें तो यक़ीन होगा कि कुल्लियतन मज़्मून इस नबुव्वत का हज़रत सुलेमान की निस्बत एक अफ़ज़ल और बुजुर्ग तर शख़्स का मुस्तलज़ीम (कोई काम अपने ऊपर लाज़िम करने वाला) है और बनिस्बत आँजहानी बादशाहों के अकमल औसाफ़ का मुक्त्तज़ी है।

हाँ साहिबो यक़ीन है कि इस नबुव्वत के खेत में एक गंज दफ़ीना (क्रीमती ख़जाना) बेश क़द्र मख़फ़ी (छिपी) है और ज़ाहिरी हर्फ़ में एक राज़ो रम्ज़ है, जिससे खुद मसीह ही का मक़ूला मुत्तफ़िक़ है कि यहां सुलेमान से एक बुजुर्ग तर मौजूद है। सोचना चाहीए कि अम्बिया-ए-क़दीम इस मज़्मून की निस्बत किसी दूसरे मज़्मून के बयान में ज़्यादा फ़साहत व बलागत से नहीं बोलते। अज़-आनरू कि इस अस्ल व नस्ल दाऊदी अज़ीमुशान की इंतिज़ारी को कम हिम्मत व दिल-गीर की ऐन तसल्ली व तश्फ़ी का बाइस बताते हैं। मसलन हज़रत यर्मियाह उन्हीं अय्याम के इज़हार और इश्तिहार की राह से यूं फ़रमाते हैं कि “देख वो दिन आते हैं खुदावंद फ़रमाता है कि मैं

दाऊद के लिए एक सादिक़ शाख पैदा करूँगा और उस की बादशाही मुल्क में इक्बालमंदी और अदालत और सदाक़त के साथ होगी। उस के अय्याम में यहूदाह नजात पाएगा और इस्राईल सलामती से सुकूनत करेगा और उस का नाम ये रखा जाएगा खुदावंद हमारी सदाक़त।” (यर्मियाह 23:5,6) और फिर हज़िक्रीएल नबी भी यूं रक़म तराज़ है कि, “और मैं उन के लिए एक चौपान (चरवाहा) मुकर्रर करूँगा और वो उन को चराएगा यानी मेरा बंदा दाऊद वो उन को चराएगा और वही उनका चौपान होगा, और मैं खुदावंद उनका खुदा हूँगा और मेरा बंदा उन के दर्मियान फ़रमां-रवा होगा। मेरे खुदावंद ने यूं फ़रमाया है।□ (हज़िक्रीएल 34:23-24)

एक और बात ग़ौर व लिहाज़ के काबिल है कि जितनी पेशीनगोईयां हज़रत दाऊद पर नाज़िल व सादिर हुई थीं कि उन से मुराद वो वलद मौऊद था जिसकी सल्तनत तमाम आलम में मुन्तशिर (मशहूर) होने वाली थी। उन नबूव्वतों का मजमूआ दाऊद की यकीनों रहमतों या दाऊद के लुत्फ़ हाय अमीन से (अस्ल ज़बान यानी इब्रानी में हसदी दावेद हीनमानीम **حسدى داوید حیمنائیم**) से खिताब किया गया है। ये इबारत ख़ास इस्तिलाही है और उस वाअदे और मीसाक़ से मुक़य्यद (क़ैद) है जिसका मिस्ताक़ वो अस्ल व नस्ल मौऊद है यानी खुदावंद मसीह।

इस इबारत का मंशा साफ़ व सरीह है कि बाल-इख़्तसास ये दो औसाफ़ खुदा-ए-कादिर-ए-मुतलक़ के यानी लुत्फ़ व रहमत व अमानत इस वाअदे के ईफ़ा और इत्माम के गोया ज़िम्मेदार हैं और इस अम्र में बतौर ज़मानत के मुक़य्यद हैं, ता आंक़द्र कि अगर अहद व मीसाक़ के ईफ़ा में कुछ नुक़स या कसूर पड़ेगा तो रब तआला के उन औसाफ़ में ज़रूर ख़लल आएगा। और ये अम्र काबिल-ए-ग़ौर है कि कुल कुतुब मुक़द्दसा में कोई दूसरा मीसाक़ मारुफ़ नहीं है कि जिसकी दवाम और अबदीयत पर अस्माअ और ओसाफ़ पाक़ खुदा के मरहून हैं। बजुज़ इस मीसाक़ के जिसके वादों का मजमा और माख़ज़ और

मदार मजामीन तव्वुलुद जिस्मी इस इब्ने इब्राहिम और इब्ने दाऊद का है, जिसमें ये दो सिफ़ात ईलाही गोया जिस्म इन्सानी में सूरत-पजीर हो गए हैं। और वो इबारत इस्तिलाही फ़ील-तहकीक़ सात मर्तबा इस ज़बूर में पढ़ी जाती है। ये बात उन को साफ़ मालूम होगी जो अस्ल मतन से वाकिफ़ हैं। हर-चंद कि तर्जुमें के लफ़्ज़ों में ये क़वी और वज़नी दलील मफ़कूद (नहीं) है।

ये मुतालिब अगरचे सफ़ाहत (कमीना पन, हमाक़त) वालों को ज़रा दकीक़ (नाज़ुक, मुश्किल) और बारीक़ मालूम हों तो भी हकीक़त में बहुत मुफ़ीद और मुतय्यन (मज़बूत, संजीदा) हैं। क्योंकि उनका इल्म कलाम ईलाही की बहुत पेश ख़बरियों के तौर व तरीक़ का मज़हर और कश्शाफ़-उल-मुश्कलात है और अस्हाब ईमान और अहले फ़िरासत के लिए ज़मीर ईलाही का हिजाब कश है। जो साहब इस मिज़ाज का होतो देखे कि इस ज़बूर की पहली दो आयतों में ये दो सिफ़ात किस तरह महमूद और सतूदा हैं और फिर पांचवीं आयत में वो दोनों तो नहीं, लेकिन एक इन दोनों में से यानी “हसद□ (ḥṣḍ) और इस के साथ एक और भी सिफ़त इलहाक़ की जाती है, यानी “पीला□ (ḥḥ) जिससे मुराद है वो सिफ़त ईलाही जिससे ख़वारिक़ आदत (ख़िलाफ़ आदत बातें) और उस तआला की माहीयत (असलियत) व कमालात के ग़ैर-मामूली और नादिर ज़ाहरात और ख़ुसूसुन ख़ुदा के लुत्फ़ और रहमत व हिक्मत के वो ज़हूर हैरत-अंगेज़ जिनका हासिल ख़ल्क-उल्लाह की नजात व सलामत है, सादिर होते हैं।

और काबिल-ए-ग़ौर व लिहाज़ है कि इस नाम से ख़ुदावंद मसीह बाल-इख़्तसास मुखातब (यसअयाह 9:6) में है कि सल्तनत उस के कंधे पर होगी और उस का नाम “अजीब” इब्रानी ज़बान में “पीला□ (ḥḥ)⁴ और फिर इस के बाद “मुशीर” फिर “ख़ुदा-ए-कादिर” और फिर “सलामती का शहज़ादा□ पस

⁴ इब्रानी बाइबल में यह लफ़ज़ यसअयाह बाब 6 की 5 वीं आयत में मज़कूर है।

इस (ज़बूर 89:5) से जो मानिंद दीबाचा व मुकद्दमा के है। ज़बूर खवाँ इस अम्र से मुत्लअ (बाखबर) हो जाते हैं कि मज़्मून इस ज़बूर का इस वज़न व वकार का है कि साकिनान बहिश्त भी साकिनान ज़मीन के साथ इस सरोद पुर सरवर में रफीक हैं और कि उस इब्ने दाऊद और शहनशाह मौऊद की हुक्मरानी मामूली सूरत पर नहीं। पर वो अलामत व वाक्रियात जो उस के पसोपेश (आगे पीछे) होंगे, ऐसे इसरार व गैब और खवारिक आदात भी होंगे कि जिनसे लुत्फ और कुदरत ईलाही आशकारा बेनज़ीर और बेमिसाल वज़अ से होंगे। “ऐ खुदावंद! आस्मान तेरे अजाइब की तारीफ़ करेगा। मुकद्दसों के मजमा में तेरी वफ़ादारी की तारीफ़ होगी।” (ज़बूर 89:5)

हासिल कलाम :- मज़्मून और मफ़हूम इस ज़बूर का कोई दूसरा नहीं है, मगर वो सलामत जलील (बुलंद) व जमील जो हज़रत इब्राहिम और दाऊद की ज़ुरियत मौऊद पर सादिर हो कर ग़ैर क्रौमों का नूर और बनी-इस्राइल का शर्फ व रौनक होने के लिए मुकर्रर था। इसी (ज़बूर 89:15) में ऐसे बादशाह की तश्बीह और तम्सील नज़र आती है कि वो हशमत शहंशाहाना से अपनी रईयत के बाअज़ असीरों (कैदियों) को ज़ालिमों के कब्ज़े से छुड़ाने के लिए अपने महल से नहज़त (कूच, रुखसत) फ़रमाता है और उस कुचे में इस के पेश रवां और पेश दवां सिद्क व अदल और रहमत व लुत्फ और अमानत व वफ़ा हैं। और उन के मुँह से गोया तुरई⁵ की सी आवाज़ से मख़िलसी और रिहाई का इश्तिहार आता है। इस बुलंद आवाज़ के सुनने वालों और पहचानने वालों के लिए मुबारकबादी भी होती है। अज़ां जिहत कि वो सब दिन-भर बादशाह अज़ीमुश्शान के चेहरे के नूर में चलते हैं और उस की कुदरत व सदाक़त उन की विरासत अज़ीज़ व फ़ख़्र का बाइस है। “सदाक़त और अदल

⁵ यह लफज़ तुरई, तुरही, तुरी (تُرِّي، تُرِي، تُرِي) तीनों तरह से ठीक है, इस के माअनी बीगल (بِغْل) और तुर्म (تُرم) एक क्रिस्म का बाजा है, यह मुँह बजाने का वह आला है जिस से फ़ौज में क़वाईद का हुक्म सुनाया जाता है।

तेरे तख्त की बुनियाद हैं, शफ़क़त और वफ़ादारी तेरे आगे-आगे चलती हैं। मुबारक है वो क्रौम जो खुशी की ललकार को पहचानती है। वो ऐ खुदावंद! जो तेरे चेहरे के नूर में चलते हैं। वो दिन-भर तेरे नाम से खुशी मनाते हैं और तेरी सदाक़त से सर्फ़राज़ होते हैं।” (ज़बूर 89:14-16)

वो खुश आवाज़ी तुरई मज़कूर अस्ल ज़बान यानी इब्रानी में वो “तरवाह (תְּרוּאָה)”⁶ है, जिसे बनी-इसाईल बमूजब शराअ मूसवी के पचास-पचास बरस के बाद शुन्वा हो कर जितने उन के भाईयों से गुलाम व ज़र खरीद हो गए थे उसी दम आज़ादगी और हुरियत की हालत में दाखिल हो जाते थे और जितनों ने जागीर और जायदाद गैर अज़ अस्ल मालिक किसी दूसरे के हाथ फ़रोख्त की थी, उसी “तरूआह” (تَرْوَاه) के सुनते ही अपने तसरूफ़ व तसल्लुत में कर लेते थे। तो जानना चाहिए कि ये लफ़ज़ “तरूआह” (تَرْوَاه) उन इस्तिलाहात में से है जिनमें इशारा साफ़ व मशहूर इस बशारत इंजील से और इस पूरी रिहाई और आज़ादगी मुज्दा बख़्श से है, जो शैतान व गुनाह के जकड़ बंदों व मज़्लूमों को उस खुदावंद मुखलिस मस्लूब के ज़रीये से हासिल व वासिल है। जिसका एक बयान दिल सोज़ो फ़र्हत अंदोज़ यसअयाह नबी की किताब में से पढ़ने और हिफ़ज़ करने के लायक़ मिलता है कि :-

“उस के पांव पहाड़ों पर क्या ही खुशनुमा हैं जो खुश-ख़बरी लाता है और सलामती की मुनादी करता है और ख़ैरीयत की ख़बर और नजात का इश्तिहार देता है। जो सियोन से कहता है तेरा खुदा सल्तनत करता है।” (यसअयाह 52:7)

एक और मुफ़ीद और भारी ताअलीम भी इस ज़बूर से मिलती है कि अगरचे हज़रत सुलेमान की जिस हैसियत से वो शाह सुलह व सलामत था,

6 इब्रानी बाइबल में यह लफ़ज़ 89 की 16 वीं आयत में मज़कूर।

बड़ी मुताबिकत और मुशाबहत खुदावंद मसीह के साथ थी और अहद इब्राहीमी और दाऊदी की नामात और बरकात का एक वारिस हकीकी, बिलाशुब्हा वो भी था तो भी इस अहद का नुजूल ब खुसूसीयत उसी पर ना था, बल्कि उस के बाप दाऊद पर था और अक्वल वारिस और बहरावर इस वसीयत फ़ज़ल का बाद अज़ खुदावंद मसीह जो अक्वल से आखिर तक उस का दर्मयानी और अस्ल व हकीकी मज़मून था, हज़रत दाऊद ही ठहरा, ना उस का वल्द हज़रत सुलेमान। चुनान्चे खुदावंद मसीह ब इस्म दाऊद मुखातब है, लेकिन ब इस्म सुलेमान हरगिज़ नहीं। मसलन होसीअ की किताब में इस की साफ़ दलील है कि, “इस के बाद बनी-इस्त्राइल रुजू लाएँगे और खुदावंद अपने खुदा को और अपने बादशाह दाऊद को ढूँढ़ेंगे और आखिरी दिनों में डरते हुए खुदावंद और उस की मेहरबानी के तालिब होंगे।” (होसीअ 3:5) और बमूजब इस कौल के जिब्राईल फ़रिशते ने हज़रत मर्यम को ना सिर्फ़ तख़्त सुलेमान पर बल्कि तख़्त दाऊद पर मसीह के जलूस करने के बारे में मुत्ला अ (बाख़बर) किया, ¶वो बुजुर्ग होगा और खुदा तआला का बेटा कहलाएगा और खुदावंद खुदा उस के बाप दाऊद का तख़्त उसे देगा ओर वह याक़ूब के घराने पर अबद तक बादशाही करेगा और उस की बादशाही का आखिर ना होगा।¶ (लूका 1:32,33) और फ़रिशता करीम व जलील के पैग़ाम में अनक़रीब (ज़बूर 89:20,21) बलफ़ज़ मन्कूल हैं कि “मेरा बंदा दाऊद मुझे मिल गया है। अपने मुक़द्दस तेल से मैं ने उसे मस्ह किया है।¶ “उस की नस्ल हमेशा कायम रहेगी और उस का तख़्त आफ़ताब की मानिंद मेरे हुज़ूर कायम रहेगा। वो हमेशा चांद की तरह और आस्मान के सच्चे गवाह की मानिंद कायम रहेगा।” (ज़बूर 89:36,37 आयात) अला हज़-उल-क़यास (इसी क़ियास पर) खुदा की दरगाह में फ़र्ज़न्दियत और नख़्सत ज़ादगी (पहलौठा होने) का रुत्बा और रौनक बाद अज़ मसीह जिसके बग़ैर फ़र्ज़न्दियत हकीकी के शर्फ़ से खुदा के घर में मुशरफ़ होना नामुम्किन है, हज़रत दाऊद का विसा ख़ास है और लियाक़त और इस्तिदाद (सलाहियत) इस मीरास की उसी को बख़शी गई है, ना हज़रत

सुलेमान को। पर तो भी इस एतबार से नस्ल मौऊद बतौर मुशाबहत के वही था तो फर्जन्दियत का दर्जा उस को मिला और मर्हमत हुआ पर नुखसत जादगी का दर्जा बाद अज़ मसीह सिर्फ हज़रत दाऊद को। चुनान्चे इसी (ज़बूर 89:26 ,27) में ये राज साफ़ मुबय्यन है कि “वो मुझे पुकार कर कहेगा तू मेरा बाप मेरा खुदा और मेरी नजात की चट्टान है और मैं उस को पहलौठा बनाऊँगा और दुनिया का शहनशाह।” इन आयात बाला से मालूम होता है कि ये ज़बूर निहायत अज़ीम वज़न और रुत्बे का है और रम्ज़ों और इसरारों से भरा है और यकीन है कि इस वाअदे और वसीके दाऊदी की कैफ़ीयत में मसीह की तशबीहात मुसप्फा और मुतअद्दा रोशन ज़मीरों को नज़र आती हैं।

अव्वलन : सबूत इस अम्र का ये है कि दाऊद मसीह भी कहलाता है और मसीह भी बारहा दाऊद कहलाता है।

सानियन : ये कि आगाज़ और इब्तिदा इस अम्र का दाऊद भी है और मसीह भी। मसीह तो असालतन और हकीकतन और दाऊद मिजाज़न व रआरीयतन यानी अज़राह शिरकत फ़ज़लियह और इसी तरह से।

सालसन : नुखसत ज़ादा ज़ातीया और जौहरिया मसीह है, लेकिन तताबक़न व तशबिहन हज़रत दाऊद है।

राबिअन : अला-हज़-उल-राए (बाला राए है कि) हज़रत दाऊद अपने मुल्क की सरहदों को तवील व बसीत करने में और बहर से बहर तक अपनी हुक्मरानी के इंतिशार और तरक्की करने में इस सुल्तान-उल-सलातीन का निशान है। जिसका जलाल तमाम आलम में दरयाए अज़ीम की मानिंद फैलेगा और जिसने अपनी ही शान-ए-ईलाही की बाबत दस्त रास्त तआला पर सऊद करते वक़्त ये शहादत फ़रमाई कि सारी कुदरत आस्मान और ज़मीन पर मुझे दे गई। चुनान्चे वो सल्तनत कुशादा व फ़राख़ जो हज़रत सुलेमान को दस्तयाब हो गई तो वो इन फ़ौजों की फ़ुतूहात पर मुन्हसिर थी, जिनका सर लश्कर

खुद दाऊद ही था और गाह-गाह (कभी-कभी) अम्मा आजमूदा जंग जिन्हों ने अपने जान व माल को इस के तख्त के क्रियाम और अजरा-ए-अहकाम पर निसार किया था।

खामसन : एक और बड़े अम्र में निशान और मिस्ल खुदावंद मसीह की हजरत दाऊद में नजर आती है कि इस्तिक़लाल व इस्तिक़ामत वसीक़ा फ़ज़ल इस अस्ल व नस्ल के लिए बेक़ैद और बे-शर्त और बाल-ईस्तिक़लाल ना थी। बसबब इस के कि दाऊद की औलाद और ज़ुरियत का इस अहद व मीसाक़ से उदूल कर के इनाम मौऊदाह से महरूम होना मुम्किन था, पर तो भी नुस्ख होना इस वाअदे का नामुम्किन था। बसबब इस लुत्फ़ व रहमत यकीन और अमीन के जो मुजरिद हजरत दाऊद ही के दस्त में इस अहद के ईफ़ा और तत्मीम के लिए बतरीक़ ज़मानत व क़बालत दी गई। जिसका हासिल व नतीजा ये था कि हर-चंद इस मीसाक़ के पूरा करने के लिए कुछ ताखीर व मोहलत हो सकती थी, पर तो भी मुतल्लिक़न नुस्ख व रद्द ना हो सका। अगर होता तो उन सिफ़ात ईलाही में खलल वाक़ेअ होता, पर ये बइत्फ़ाक हुक्माअ व अम्बिया मुहाल है। इसी तरह खुदावंद मसीह की नस्ल हकीकी में से मोअतबर तरीन अहकर (बंदा, बाअज़ लोग इन्किसार से अपनी बाबत ये लफ़ज़ इस्तिमाल करते हैं) को जो ब रूह व जान व बदन अज़राह हयात जदीद खुदावंद से वाबस्ता है, पूरी बे-खौफ़ी से इस अम्र का यकीन हो सकता है कि मसीह जो अल्लाह का इब्ने वहीद और महबूब है। मेरे लिए और उस की नस्ल की सब औलाद के लिए इस अहद के इस्तिक़रार (करार पकड़ना, कायम होना) का ज़ामिन है। अज़ां क़द्र कि इन्हिलाल (किसी मुरक्कब शैय के अनासिर तर्कीबी का अलग-अलग होना) इस रिश्ता-ए-उल्फ़त व राबिता रहमत का मुनाफ़ी (खिलाफ) व खिलाफ़ यकीन व क्रियास है। **“लेकिन मैं अपनी शफ़क्कत उस पर से हटा ना लूँगा और अपनी वफ़ादारी को बातिल होने ना दूँगा।”** (जबूर 89:33)

बावजूद इन सब दलीलों के अगर शायद कोई मोअतरिज़ अज़-राह जिदियत (मुतअस्सिब होना) इस राय पर मुस्तक़िल हो कि ये पेशगोईयां माअरूफ़ किसी दूसरे की तरफ़ आइद व इत्लाक़ नहीं हो सकतीं, मगर हज़रत दाऊद और सुलेमान पर, तो उम्मीद क़वी है कि (यसअयाह 55:2) पढ़ कर इस (ज़बूर 89) के मिस्ताक़ हक़ीक़ी यानी मसीह का क़ाइल हो जाएगा। चुनान्चे वो पाक नबी यसअयाह जिसका ज़माना तख़्मीनन (250) बरस बाद हज़रत सुलेमान के था, उन नेअमात मौऊद ब दाऊद को ना माज़ीयह (गुजरा हुआ) में गिनता है, बल्कि उमूर मुस्तक़बला में, जैसे लिखा कि, “कान लगाओ और मेरे पास आओ, सुनो और तुम्हारी जान जिंदा रहेगी और मैं तुमको अबदी अहद यानी दाऊद की सच्ची नेअमतेँ बख़्शुंगा।” फिर अगर वो मोअतरिज़ कोई और मअनी बना कर कहे कि मिस्ताक़ इस आयत के मुहम्मद ﷺ हैं, फिर भी उम्मीद है कि पोलुस की तफ़्सीर इल्हामी पर ग़ौर व तामिल कर के बिला-तास्सुब हाँ, बल्कि शुक्रगुजारी से इकरार करेगा कि लाबुद (बेशक) इस अहद की बरकात व इनाम मौऊद का ज़ामिन फ़क़त ख़ुदावंद मसीह ही है।” और उस के इस तरह मुर्दों में से जिलाने की बाबत कि फिर कभी ना मरे उस ने यूँ कहा कि “मैं दाऊद की पाक और सच्ची नेअमतेँ तुम्हें दूंगा।” (आमाल 13:34)

दो तीन और मूजिब हैं उस कामिल इतिफ़ाक़ के जो अहले कुतुब अर्बा यानी अहले तौरैत व ज़बूर व अम्बिया व इंजील में पाया जाता है कि ग़ैर-अज़ मसीह कोई दूसरा मिस्ताक़ इस अम्र का नहीं हो सकता। एक ये है कि इस “तरूआह” (الترؤة) यानी इस इश्तिहार ख़लासी के जो नताइज और हासिलात (ज़बूर 89:17,18) आयतों में बयान हुए हैं, वो सब बग़ैर ज़ाहिरी मुबालगा के, हाँ बल्कि बग़ैर क़बाहत कुफ़ के किसी दूसरे की तरफ़ मंसूब नहीं हो सकते। मगर आदम-ए-सानी की तरफ़ जिसकी आँजहानी उम्र के अहवाल चार इंजीलों के बीच गोया नूरानी हुरूफ़ में मुसत्विर और मुबय्यन होते हैं।

साहिबो सुनो कि इस इश्तिहार और मुज्दे के शुन्वा और शनासाओं को किन-किन बरकतों की तहसील इन आयात में मौजूद है कि “वो दिन-भर तेरे नाम से खुशी मनाते हैं और तेरी सदाकत से सफ़राज़ होते हैं, क्योंकि उनकी कुव्वत की शान तू ही है और तेरे करम से हमारा सींग बुलंद होगा।” (ज़बूर 89:16,17) दूसरा मूजिब इस यकीन मुतफ़िक़ का कि इस ज़बूर का मदार कलाम मसीह पर सादिक़ आता है, किसी दूसरे पर नहीं। सो ये है कि ज़बूर के दीबाचा और मुक़द्दमा से साफ़ मालूम होता है कि नादिर और बे मामूली और आँजहानी वारदात मुहिम तरीन वाक़ियात का बयान होने वाला है और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि इस ज़ामिन अहद की कुदरत व जलाल और कुव्वत व हुकूमत जावेद और बाकी कमालात ज़ाहिरन इन्सान से ज़ाइद और फ़ाइक़ हैं, मसलन (ज़बूर 89:20)⁷ में लिखा है (बमूजब अस्ल इब्रानी मतन के) कि “मैंने ऐसे जब्बार को इश्तियार किया है जो इम्दाद और कुमक देने के मुसावी यानी बराबर है।□ पस गौर के काबिल है कि इब्रानी में “एल-जब्बार□ यानी (אל-גבור) “खुदाए जब्बार” (यसअयाह 9:2) में मसीह के खिताबों पर मुश्तमिल है। और फिर ये सिफ़त भी कि इसी के सबब से अहद के उदूल करने वालों के लिए ग़ैर-अज़-अअताब व क़हर चंद रोज़ा (क़त-ए-नज़र अज़ नस्ख अहद) खलल व जुंबिश भी उस में दाख़िल नहीं हो सकती, तो कमाल दर्जा तक किस दूसरे पर आइद और सादिक़ हो सकती है और ज़मानत के इतने बार-ए-गराँ पर कादिर कौन है? मगर वो जिस पर युहन्ना रसूल ये शहादत अपने पहले ख़त के दूसरे बाब की पहली दो आयात में देता है कि, □अगर कोई गुनाह करे तो बाप के पास हमारा एक मददगार मौजूद है यानी यसूअ मसीह रास्तबाज़। और वही हमारे गुनाहों का कफ़ारा है और ना सिर्फ़ हमारे ही गुनाहों का बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का भी।□

7 यह उर्दू प्रोटेस्टेंट बाइबल में ज़बूर 89 की 19 वीं आयत है जिसमें लिखा है कि, □.....मैंने एक ज़बरदस्त को मददगार बनाया है।□

हासिल कलाम इस ज़बूर में खुत्बा ना सिर्फ हज़रत दाऊद व सुलेमान के नाम से पढ़ा जाता है, बल्कि उस बादशाह मुबारक के नाम से जो उन दोनों का मुनज्जी (नजात देने वाला) और खुदावंद है और ये भी है कि वो उम्दा नेअमतेँ और बरकतेँ जो उन दो नबियों और उनकी औलादों का बख़राह और विरसा जलाली होने वाला था, ना उन दो के इंतिकाल से मंसूख और मफ़कूद हो गया, बल्कि आख़िर-उल-अय्याम तक हर वाहिद मोमिन और अहले यक्रीन के लिए जिसका यक्रीन और इंतिज़ार मसीह की तरफ़ माइल और मुतवज्जा है। वो वाअदा नजात का कलिमतुल्लाह (كَلِمَةُ اللَّهِ) की सिका (मोअतबर, मोअतमद) ज़मानत से और खुदा तआला की किस्म हरीम से क्रियाम आलम से कायम तर और नय्यर आस्मानी से रोशन तर और अज़हर, हाँ बल्कि रब तआला के फ़ज़ल व लुत्फ़ व अमानत का इफ़ाज़ा (फ़ैज़ पहुंचाना) अबद-उल-आबाद तक इस अहद पर मब्नी और मुन्हसिर है। और साकिनान बहिश्त (बहिश्त में रहने वाले) में से जो खुदा तआला के अकरब-उल-मुकर्रबिन हैं, हिक्मत और शफ़क़त और कुदरत ईलाही के बुरहानों में भी बुरहान ग़ालबा और बालिगा जान कर इस मज़्मून आला की बिलानागा सना-ख़वानी और सताइश करेंगे। और बतरीक़ ऊला लाज़िम व वाजिब है कि साकिनान ज़मीन (ज़मीन पर रहने वाले) इस अपने बिरादर नख़सत ज़ादा की शुक्रगुजारी करें। जो इन्सान अक्वल और आदम-ए-सानी इस मुराद से बन गया कि खल्क़त जदीद का आप ही बीख़ और अस्ल हो कर आदमज़ाद के लिए सब कमालात का मंबा और नमूना भी हो। ताकि वो सब उस की हयात और सिफ़ात और हसनात में शरीक़ हो कर गोया मुर्दों में से नव ज़ादे हो जाएं और फ़र्ज़न्दियत हक़ीक़ी के दर्जे तक और उस के हुक्क़ तक सर्फ़राज़ हो जाएं। बमूजब कौल मती पोलुस रसूल के जो इब्रानियों के ख़त में है कि, “पस जिस सूरत में कि लड़के ख़ून और गोशत में शरीक़ हैं तो वो खुद भी उन की तरह उन में शरीक़ हुए ताकि मौत के वसीले से उस को जिसे मौत पर कुदरत हासिल थी यानी

इब्लीस को तबाह कर दे। और जो उम्र-भर मौत के डर से गुलामी में गिरफ़्तार रहे उन्हें छुड़ा ले।” (इब्रानियों 2:14,15)

बाब पंजुम

दरबयानआँ मज़्मून कि बादशाहत मज़्कूर कि
 इजराईश अज़्जानिब दाऊद बसूए खुदावंद मसीह
 अस्त बगायत शर्फ व जलाल ख्वाहिद रसीद व
 ताम्मुद्धते दर हालत ख्वारी व ज़िल्लत व
 क़िल्लत ख्वाहिद कर्द

در بیان آل مضمون که بادشاهت مذکور که اجرائیش از جانب داؤد بسوئے خداوند مسیح است بغایت

شرف و جلال خواهد رسید و تا مدت در حالت خواری و ذلت و قلت و ردو خواهد کرد

अगर कोई साहब तमीज़ व बीनाई कुतुब दाऊदी में जद्दो जहद से तजस्सुस करे तो सैंकड़ों इशारों से इस अम्म की इतिला पाएगा कि अगरचे अंजाम और मंज़िल-ए-मक्सूद इस राह का जिस सबील से खुदावंद मसीह अपनों को हिदायत करता है, खुदा तआला की मुशाहदत और रिफ़ाक़त और मुकद्दसों के साथ क्रियामत नूरानी और जलाली है। पर तो भी दर अस्ना राह ख्वारी व ज़िल्लत व आजिज़ी और किस्म-किस्म की तकलीफ़ात व शदाइद मिलते हैं। जैसे ग़रीब-उल-वतन और मुसाफ़िरों के लिए जो जहांदीद और आलम पैमा हैं कोहे-ए-सअब (दुशवार, तकलीफ़देह) गुज़ार और ब्याबान सुन्सान और वादी अमीक और करख़त और कातज़ान (कातेज़, काटने वाला, जमा कुताज़) सबील और ग़ैर-वतनों से ज़ुल्म और ताद्दी और हज़ार-हा खौफ़ व

खतरे के बाइस हैं और ना सिर्फ वकूअ और दुरूद उन तंगियों और तकलीफों की शहादत अम्बिया से मुसद्दिक व मुसबत है। पर ताअलीमात ज़बूरी से मालूम होता है कि ये दो बातें जिनकी सूरत मुतनाकिज़ है, यानी मसीह का बादशाह होना भी और मौरिद अहानत व हकारत होना भी, इस क़द्र आपस में पूरा इत्तिफ़ाक़ और पूरी वाबस्तगी रखती हैं कि वो दोनों लाज़िम व मल्ज़ूम के तौर पर आपस में मुताल्लिक़ हैं। और जज़ाँ (آء) राह जिसमें सलीब और सलीब बर्दारी है, कोई दूसरी राह मसीह के शाहाना ताजोतख़्त तक नहीं पहुंचाती। हाँ बल्कि यक़ीन है कि इस राह में अजीब और नादिर इज्तिमा शर्फ़ बशर्म है। और इज्तिमा ज़िल्लत व क़िल्लत ब चश्मत व अज़मत और फ़ुतूहात बादशाही ब ज़ेर बारी व इन्क़िसारी। और जो शख्स मोअतरिज़ ऐसा जानता है कि इन दो हालतों से दो शख्स मुराद हैं, एक शख्स की दो सूरतें नहीं। तो वो इन्क़ियाद हक़ से बिल्कुल चूक गया है और रिफ़ाक़त अम्बिया के हुकूक़ को नहीं पहचानता।

चुनाचे ज़बूर और अम्बिया भी और इंजील ऐसे यसूअ मसीह की शहादत पर मुत्तफ़िक़ हैं जिसने अज़ल से और अस्ल ज़ात व वजूद से दर्जे और हक़ माबूदियत (ख़ुदा मालिक) का रखकर हालत उबूदीयत (बंदगी, इबादत) और बंदगी की कुबूल फ़रमाई। और बाअज़-बाअज़ मुक़ामों में हवादिस (हादसा की जमा, वाक़ियात) इन्सानियत और अवारिज़ (आरिज़ा की जमा, पेश आने वाली चीज़ें) मकान व ज़मान से मुबर्रा और मअर्रा (पाक, आज़ाद) बताया जाता है। और बाअज़ और मुख़्तलिफ़ मुक़ामों में ज़रूरीयात और हाजात और अमराज़ और सख़्त-सख़्त तजारिब (तजुर्बा की जमा) आदमज़ाद से मुल्ब्विस (मकरू ऐब छिपाने वाला) हो कर हमको मर्द अलम और आश्नाए ग़म नज़र आता है।

हर-चंद ना कोई कुव्वत मुद्रिका⁸ (قوتِ مُدْرِكَه) आँजहानी और ना कोई तमीज़ जहनी और फिरासत इन्सानी अक्ल के नूर मुजरिद से इस राज की फ़हमीदा तक पहुंच सके और हर दोनों यहूद के करामत परस्त और अहले यूनान के हिक्मत परस्त इस करामत और हिक्मत नादिर ईलाही के काबिल-ए-फ़हम नहीं हो सके।

चुनान्चे युहन्ना रसूल से इस मक्ला के नए-नए सबूत पदीद (वाज़ेह, साफ़) होते चले आए हैं कि एक शख्स भी बग़ैर तौफ़ीक़ रूहुल-कुद्दुस यसूअ मसीह को खुदावंद नहीं कह सकता। पर तो भी खुदा के फ़ज़ल व हिदायत पर इस बंदे का पूरा भरोसा और यकीनी उम्मीद है कि जो कोई शख्स बअजज़ व अदल व तमीज़ रुहानी कलाम-उल्लाह की सैर व मुतालाआ करता है और माअर्फ़त और हकीकत ईलाही को ना जुजीयतन (टुकड़ों में) बल्कि गोया उस का कुल साँचा और कालिब और सूरत साबित को सीखना चाहता है तो वो इंशा-अल्लाह बख़ूश दिली व शुक्रगुजारी इकरार करेगा कि इस इज्जिमा शरफ़ व शर्म और किल्लत व किब्र और ज़िल्लत व अल्वियत का सिर्फ़ वही ऐन इज्जिमा है। जिसका वाअदा औलिया अक्वलीन यानी आदम व हव्वा जन्नत-ए-अदन में से इस वीराना तन्हा तारीक़ आलम में गोया अपना दोस्त वाहिद और यगाना नूर रजा अपने साथ-साथ ले गए। यानी इज्जिमा कलिमतुल्लाह (كلمته الله) ब यसूअ इब्ने दाऊद ना अज़ां तौर कि इख़्तिलात (मेल-जोल) खालिक़ बह मख़्लूक़ हो गया। या ये कि ज़ात-ए-पाक व हरीम ईलाही में कुछ नुक़्स दाख़िल हो गया। फिर ये खुदा का ऐन सर्र हिक्मत और उस की मर्ज़ी और मुहब्बत के सर्र ग़ैब का सबसे उम्दा इश्तिहार और इज़हार है। अज़ आनरो

⁸ قوتِ مُدْرِكَه की तानियत, वह कुव्वत जिस से इंसान अशिया की हकीकत दर्याफ़्त कर सके यानी अक्ल और ज़हन।

कि जिस जिस शख्स में ईमान और एकान (यकीन) इस राज का पैदा होता है और वो शख्स आप अपने अमल व आदत व सीरत को कुर्बान करता है। तो वो मसीह के साथ चस्पीदा (चिपका हुआ) हो कर और उस के नूर व हयात में रवां हो कर खुदा तआला की रिफ़ाक़त जावेद की लियाक़त व इस्तिदाद (सलाहियत) का वारिस हो जाता है।

साहिबो चाहीए कि आप और हम दोनों इस मुज्दा हयात व निजात पर हमदो सताइश और शुक्रगुजारी करें कि हक़ तआला का कलिमा-ए-वहीद और इब्ने महबूब-ए-आलम बाला और तख़्त आला पर से इस हमारे अदना और हकीर तरीन ज़ात तक सरनिगूँ और पस्त हो गया। और दार-उल-मुल्क जलाल आलमीन में से इस ज़शत व ज़बून सराय ज़मीन में उतरा ताकि आदमज़ाद को अपना बिरादर अज़ीज़ बना कर उन्हें अपना रिश्तेदार करीब बल्कि अपने कुनार (आगोश, गोद) लुत्फ़ में ले लिया करे। और फ़र्ज़न्दियत के इस दर्जे में जो फ़रिश्तों की शान व नज़िलत से आली तर है, सफ़राज़ करे। और ये कौल ना सिर्फ़ रसूलों और नबियों की तारीफ़ों से साबित व मुबर्हन है, बल्कि इस मर्द ग़म व अलम की जिसकी कैफ़ीयत व हकीक़त ज़बूरों के मफ़हूमात आजम में से है ग़म ज़दगी और अंदोह गेन (रंजीदा, मग़मूम) की नादिर और बे मिसाल सूरत से अयाँ व नुमायां होता है। यानी उन दुखों की हिदत व शिदत से जो इस पर वारिद होने वाले थे और उन की वुसअत बेहद हिसाब से बाअज़ इन दुखों की खसुसीआत और अजाइबात से जिनकी निस्बत किसी इब्न-ए-आदम का दुख उस के दुखों के बराबर और मुताबिक़ ना था।

चुनान्चे कामिल इन्सान होने को वाजिब था कि ग़म व अलम और क़हर ईलाही के दरयाए बेपायाँ के अंदर अपनी बर्दाशत और सुबूरी (सब्र) से अपने कमाल की तस्दीक़ करे और उन रंजूरीयों और तक्लीफ़ों को जो जुज़्अन-

जुज्अन उस के बदन मिजाज़ी यानी मुकद्दसों की जमाअत आम्मा पर वारिद होने वाले थे, आप ही अपने सर पर तहम्मूल करे। हाँ आप ही ने उन्हें ब-तस्क्रील उठाया ताकि वो सब उन्हें ब तख्फ़ीफ़ (कमी, हल्का करना) उठाएं। अज़ां जहत कि जैसा जलाल और शर्फ़ व शान में अफ़ज़ल था, इसी तरह शदाइद और तक्लीफ़ात में भी सबक़त और फ़ौक़ियत ले जाता है और रज़ा व क़ज़ा ईलाही से लज़ूम व इक्तज़ा-ए-कमाल इस अम्र और हुक्म में था कि वो काहिन अल-कुहनह (کاهن الكهنه) कुह्ना, पुराना) और रसूल-उल-रस्ल इम्तहानों में तजूर्बाकार और ग़म आजमूदा हो कर खल्क-उल्लाह के हम दर्द और ग़म व अलम में उनके रफ़ीक़ होने के काबिल ठहरे। और जो शख्स इस पेशवाए नजात के दुख-दर्द पर तानाज़नी करता है तो वो अपनी जहालत से नहीं जानता कि अपने दुखों और अंदोहों पर मस्खरा पन करता है, जिन्हें इस इन्सान अव्वल ने गोया मज्मअ ज़ात जिन्स इन्सानी को आप ही में मुन्तहा कर के बतौर वकालत और ख़िलाफ़त के उठाया था। जिस राज़ पर इशारतन दलील देता है, वो सीना बंद जिससे काहिन यहूद बमूजब रसूम और अहकाम तौरैत अपनी ख़िदमत व ख़िलाफ़त के फ़राइज़ बजा लाते वक़्त मुतलबस हो कर खुदा के हुज़ूर में कायम रहता था कि इस सीना बंद का क़ल्ब (दिल) गोया बारह जवाहर का गुलदस्ता बतौर मीनाकारी (चांदी सोने पर मुरस्सा साज़ी नगीने का काम बारीकी) के था। और हर एक जोहर पर एक फ़िर्का यहूद का नाम इस वज़अ से मुनक्क़श था कि वो काहिन उन्हीं पर नज़र कर के इन बारह फ़िर्कों की हाजतों से गाफ़िल और फ़रामोश ना हो सके, ना उनके लिए सिफ़ारिश करने से ज़बान बंद हो सके। चुनान्चे जो इस ब्याबान के बीच कलीसिया का हादी व मुहाफ़िज़ था, उस के हक़ में यसअयाह नबी ने फ़रमाया है कि “उन की तमाम मुसीबतों में वो मुसीबतज़दा हुआ और उस के हुज़ूर के फ़रिश्ते ने उन को बचाया।” (यसअयाह 63:9) और इस रमज़ को पोलुस रसूल

ने इब्रानियों के खत में और भी फ़ाश और ज़ाहिर कर के फ़रमाया है कि “पस उस को सब बातों में अपने भाईयों की मानिंद बनना लाज़िम हुआ ताकि उम्मत के गुनाहों का कफ़ारा देने के वास्ते इन बातों में जो खुदा से इलाका रखती हैं एक रहम-दिल और दियानतदार सरदार काहिन बने।” (इब्रानियों 2:17)

पस इस अम्र में एक राज़ और भी ग़ौर के लायक है कि अगरचे अज़-मुक़द्दसीन हर वाहिद थोड़ी बहुत रिफ़ाक़त और इतिफ़ाक़ की सूरत और हक़ीक़त से मुशर्रफ़ हो कर मसीह के उस अलम व अंदोह के साथ जो ज़बूरो में माअरूफ़ है, शरीक हो। तो भी बिलाशुब्हा हज़रत दाऊद मसीह के हम सूरत होने के शर्फ़ और रौनक में उनसे ज़्यादा फ़ौक़ियत ले जाता है। चुनान्चे इस पाक हज़रत की उम्र के वाक़ियात में इतनी इज्मा मेहनत व तल्खी और इतनी कस्रत शदाइद और तक्लीफ़ात इसाइर इस के लिए मक्दूर व मुकर्रर थे कि ग़ैर अज़ खुदावंद मसीह किसी दूसरे के हाल में सरजद ना हुए। अज़बस कि (चूँकि) इस मर्द-ए-खुदा ने इस क़द्र अपनी कुल उम्र तंगियों और तक्लीफ़ों में काटी कि जिस वक़्त से भेड़ों की चरागाहों से मुर्खस (रुखस्त, रवाना) हो कर बनी-इस्राईल की शहनशाही और पेशवाई पर मसह किया गया। बमुश्किल उस की तमाम उम्र में एक भी ऐसे बरस का ज़िक्र होता है जिसमें उस ने आराम पाया हो, बल्कि यक़ीन है कि दुखों का सेलाब और तुग़यान मौज बाद मौज के बिला-तफ़ावत व फ़रागत इस सद्मा-ए-शदाइद से इस के सर पर चढ़ आया कि गोया खुदा के क़हर के तीरों का वही तन्हा हदफ़ व निशान किया गया था। और बाकी नबियों में मुम्ताज़ और सर्फ़राज़ था, इस तनासुब और तताबुक में जिसे मसीह के ज़ख्मों और अलम व अंदोह के साथ अपने मुख्तलिफ़ अहवाल में दिखाया करता था। खुसूसुन इस अम्र में कि अपने मुल्क मौऊद को तसर्रुफ़

में लेने ना पाया। ग़ैर अज़ आंका जंग व जिदाल की सख्त मुतवातिर आजमाईशें उठाएं और तंग-दस्ती और तानाज़नी और ज़हमत और अज़ीयत की तल्खी से लबरेज़ प्याले को नविश कर के खाली किया।

और फिर उस मिसलियत (मुशाबहत) के सबब से जो दाऊद को मसीह के साथ थी, वो मर्द-ए-खुदा ज़बूरों में “यखीद□ (याखीद) और उस की जान “यखीदाह□ (Y'ahū!)⁹ इब्रानी में कही जाती है, जैसे (ज़बूर 22:20) में लिखा हुआ है कि “मेरी जान को तल्वार से बचा, मेरी जान को कुत्ते के क्राबू से।□ मगर कारियाँ कलाम को मालूम होगा कि पैदाइश की किताब से लेकर अखीर इंजील तक वो लफ़ज़ “यखीद” (याखीद) यानी वाहिद और मुखतस के माअनों से खुदावंद मसीह की उलूहियत इशारतन व किनायतन महमूल है।

अव्वलन : इसलिए कि अल्लाह तआला की वहदानियत में मसीह की इब्नीयत का एक ऐसा सर् ग़ैब है और इस पाक महमूद के इन उसूल वजूदी में से है जिनकी मिसाल व नज़ीर कायनात व मस्नूआत के बीच नायाब है। अज़ां जिहत कि वो इब्ने वहीद व फ़रीद है और आलम-ए-शुहूद के हर क्रिस्म की इब्नीयत से बईदो बाला है, तो वहदानीयत ईलाही में “अब□ (أَب) और “इब्न□ (ابن) इस कद्र यक-जान बाहम पैवस्ता और वाबस्ता और रिश्ता-ए-मुहब्बत व यगानगत से बाहम मरबूत हैं कि इस आलम-ए-फ़ानी में जो मुहब्बत और दिल-चस्पीदगी की अकमल और अहसुन सूरतें हो सकती हैं। सो इस ऐन मुहब्बत के महज़ साया जात और अम्साल कुदूरत आमेज़ हैं। और कलाम रब्बानी के क्रिस्सों में सिर्फ एक मिसाल शाज़ोनादीर इस रिश्ते और उक़द-ए-लाअनीहल (जो हल ना हो सके, पेचीदा) की दी जाती है। जिनकी

⁹ यह लफ़ज़ इब्रानी बाइबल में ज़बूर 20 की 21 वीं आयत में मुन्दर्ज़ है।

यगानगत में “अब” (أَب) और “इब्न” (ابْن) कबल अज़ आफरीनश (पैदाईश) आलम उल्फ़त के राबते में दिल बस्ता और मुतवस्सिल (मिला हुआ) है।

वो मिसाल नादिर वाजीब हज़रत इब्राहिम की उल्फ़त उस के इब्ने इस्हाक़ की तरफ़ है जो बलकब इब्ने वहीद मुलक्कब है। अज़ां जिहत कि उस की माँ हज़रत इब्राहिम की औरतों में से हर्हा (पथरीली ज़मीन, बाँझ) थी। उस ने पीरज़न हो कर बतौर करामत के इस लड़के को जना और काबिले लिहाज़ है कि पैदाइश की किताब के बाब 22 में तीन मर्तबा ये लफ़ज़ यखीद (याखीद) बमाअनी वाहिद इस्हाक़ इब्ने इब्राहिम पर आइद होता है। मसलन दूसरी आयत में लिखा कि “तब उस ने कहा कि तू अपने बेटे इज़्हाक़ को जो तेरा इकलौता है और जिसे तू प्यार करता है, सोख़्तनी कुर्बानी के तौर पर चढ़ा।” और फिर 16 वीं आयत में लिखा है कि “ख़ुदावंद फ़रमाता है चूँकि तू ने ये काम किया कि अपने बेटे को भी जो तेरा इकलौता है दरेग़ ना रखा।”

इस माजरे की तरफ़ इशारा कर के इस कुर्बान अज़ीमुश्शान का ज़िक्र जो अखीर-उल-अय्याम में हुआ, पोलुस ने रूह इल्हाम की कशिश से इस तरह किया “जिसने अपने बेटे ही को दरेग़ ना किया बल्कि हम सबकी खातिर उसे हवाले कर दिया वो उस के साथ और सब चीज़ें भी हमें किस तरह ना बख़्शेगा।” (रोमीयों 8:32) ये बात लाइक-ए-दीद और काबिल-ए-गौर है कि इस उल्फ़त बेनज़ीर और वस्ल लासानी की जिसके रिश्ते राबते से अज़ अय्याम अज़ल “अब” (أَب) और “इब्न” (ابْن) ज़ात और मर्ज़ी और अमल में वाबस्ता रहे, क्या ही साफ़ और दिल-सोज़ तारीफ़ ख़ुदावंद ही के कलिमात से मिलती है। खासकर हज़रत युहन्ना की इन्जील में जिस रसूल की रूहानियत और दक्राइक़ (अच्छी बुरी बात के वह पहलु जो गौर करने से समझ में आएँ) रुहानी की तेज़ बीनी बसारत की तम्सील दी जाती है। मसलन (युहन्ना

15:9,10:14, 15, 17:24) में लिखा है कि “जैसे बाप ने मुझसे मुहब्बत रखी वैसे ही मैं ने तुमसे मुहब्बत रखी तुम मेरी मुहब्बत में कायम रहो।” (युहन्ना 9:15) □अच्छा चरवाहा मैं हूँ, जिस तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं और मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ।” (युहन्ना 10:14,15) तू ने बनाए आलम से पेशतर मुझसे मुहब्बत रखी।” (युहन्ना 17:24)

सानियन : उस लफ़्ज “यखीद” से खुदावंद मुसम्मा है, बसबब उस के दुखों व ज़हमतों की बे नज़ीरी व तन्हाई के। चुनान्चे जिस तरह वो अपने रुत्बे और मंजिलत में तन्हा और वकालत और फ़अलियत और इख्तताम नजात में तन्हा और ग़ैर-रफ़ीक़ था। इसी तरह जिस मुदत-ए-मदीद तक वो ग़म आजमूदा और क़हर ईलाही का बुर्दबार था तो इस अलम व अंदोह में उस की तन्हाई और ला-शरीकी के बराबर व मानिंद कोई तन्हाई नहीं हो सकती थी। चुनान्चे बज़बान यसअयाह नबी खुदावंद फ़रमाता है कि “मैंने तन-ए-तन्हा अंगूर हौज़ में रौंदे और लोगों में से मेरे साथ कोई ना था।□ (यसअयाह 63:3) और लाबुद इस दरिया-ए-ग़म से पायाबी तक वाक्लिफ़ और आगाह होने की एक शर्त और ज़ाबता ये था कि सिर्फ़ दोस्तों और रफ़ीकों में से अकरब-उल-मुकर्रिबिन से जुदा व अलैहदा (अलग) ना हो, पर दिली कुदूरत के इस अब्र-ए-सियाह से भी मुज़ल्ल (साया डालने वाला) हो जो रब तआला की वजह से महरूम और उस के हुज़ूर से मतरूक होने से पैदा होता है। अर्ज़ी जिहत कि ऐन तन्हाई और मजर्दी और मुहाजरत यही है और लज्जा (शर्म, ग़ैरत) अलम व रंज का उमुक़ अमीक़ तरीन यही है कि तबस्सुम पिदराना इब्ने वहीद महबूब की तरफ़ से पस अज़ निक्काब क़हर महजूब हो गया।

और अगर वो काहिन अजीम इस तल्ख आजमाईश में तजुर्बेकार ना होता तो किस तरह दर्द-मंदी के काबिल होता कि आप ही इस अम्र में काज़ी हो जाओ कि ये कैसी मतरुकियत है। जो शायद कोई शख्स माँ बाप और खानदान और तिबार (घराना, क़ौम) और दोस्त व रफ़ीक़ से मतरूक हो, पर खुदा की रिफ़ाक़त और मस्लिहत में रहे। सिर्फ़ ऐसी सूरत की मतरुकियत से वाक़िफ़ हो कर कौन काहिन आदमज़ाद के मतरूकों से कह सकता है कि मैं ही तुम्हारे ग़मों को पहचानता हूँ। हाँ बल्कि बाल-इख़्तसास तमाम उस की अंदोहगीनी और ग़मगीनी का सर और निहायत यही तन्हाई थी और इसी बात में हमने कामिल नमूना पाया, उस इम्तिसाल (हुक्म मानना) और इन्क़ियाद (फ़र्माबरदार) का जिससे वो अपने बाप की क़ज़ा व रज़ा पर राज़ी व खुश था। चुनान्चे बतौर रम्ज़ व मिसाल के हज़रत ख़लील-उल्लाह कायम ईमान के इस के इब्ने अज़ीज़ इस्हाक़ के खुशी से ज़बीहा होने के बयान में दुबारा मर्कूम है कि “सो वो दोनों आगे चलते गए।” (पैदाइश 22:8)

पस हमारे खुदावंद के ग़म और रंज की वो मुतअद्दिद और अजीब सूरतें जो ज़बूरों में मारूफ़ हैं कौन कलमा-ए-अयाँ व नुमायां कर सकता है। देखो वो गल्ला अज़ीज़ और मर्गूब जिसकी रिहाई के लिए आँ अज़ीज़-उल-शान आलम-ए-बाला से उतरा था और जिसकी रिआयत और निगहदाशत में शब व रोज़ सिर्फ़ अवक़ात किया करता था। गोया इस अपने चौपान को नफ़रती और मकरूह जान कर उस को रूगर्दान और बर्गशता बताता है। पर ज़रा सोच और गौर इस बात में चाहीए कि जिन अहवाल का अब बयान होता है, उनकी सूरत ऐन ख़िलाफ़ है। इस ज़ात जलवा-गर और नूरानी से जिससे मुतलबस हो कर अय्याम अज़ल से सिना-ए-पिदर में नशिस्त बक़याम व दवाम फ़रमाता था। पर ये इस पस्ती और ख़वारी व आजिज़ी की सूरत नज़र आती है जिसका

मुतहम्मिल (बर्दाश्त करने वाला) हो कर अपने लुत्फ़ बे-हिसाब से जिस्म इन्सानी में साकिन हो गया। और जाम-ए-फ़ुक्र व गदाई और लबाद-ए-इताअत व उबूदीयत पहन कर हर एक अपने हकीकी पैरों के लिए ये कायदा और हुक्म वसीयतन छोड़ गया है कि “और जो कोई अपनी सलीब ना उठाए और मेरे पीछे ना चले वो मेरे लायक नहीं, जो कोई अपनी जान बचाता है उसे खोएगा और जो कोई मेरी खातिर अपनी जान खोता है उसे बचाएगा।” (मत्ती 10:38, 39) और इस खुदावंद मुबारक के आसार क़दम पर जो ख़ुर्द बीनी और बारीकबीनी से नज़र करेगा, सो मालूम कर लेगा कि हर दो बातों में यानी फ़ुक्र व दूरवेशी और इताअत व बंदगी में वो यगाना और कुल्लीयह होने को आया।

अज़ आनरो कि एक ही माहूद अस्ल व नस्ल हज़रत दाऊद का गाह-गाह मसनद-ए-अदालत व शहनशाही जलाल पुर तख़्त नशीन नज़र आता है। और कभी बंदगी और फ़रमाँबर्दारी की राह में हुलुम और सुबूरी में हमें अपने हमराह ले चलता है। अब खुदावंद मसीह की अजुज़ व फ़रमाँबिरादरी की नसीहत-आमेज़ निशानीयों पर लिहाज़ कर के सलाह है कि ज़रा तफ़्सील वार और तशखीस से बयान करें कि रूहुल-कुद्दुस ने बज़बान दाऊद मसीह के दुख और आज़ार की कैफ़ीयत और खुसूसीयत की कैसी ख़बरें दी हैं। और तफ़्तीश व तहकीक़ भी करें कि ताबज़हूर किन-किन मक़ासिद व मुतालिब से ये सब उमूरात वाक़ई खुदा तआला के दफ़्तर क़ज़ा व क़द्र में मुतज़म्मिन हो गए तो इस तशखीस में एक अलामत बसलाहियत सभों पर ज़ाहिर है कि इस ग़म व रंज की जाये उरूज व सदूर ना उतना नफ़्स व जिस्म बल्कि क़ल्ब (दिल) और दिल ही था। चुनान्चे सूरी (माअनवी की ज़िद ज़ाहिरी) और नफ़्सी दुख

के सबब रुहानी गमख्वारी ज़्यादा-तर दिल तराश और सीना शिकन है और ज़्यादा तबाही और ज़वाल का बाइस है।

सालसन : ज़बूरों के मवाज़े मुख्तलिफ़ से ये भी साबित है कि रूह और कल्ब-ए-इंसानी जितने बोझों और तकलीफों के ज़ेर-ए-बार हो सकते हैं, उनमें से किसी की इतनी सकालत (बोझल होना, भारीपन) नहीं जिस कद्र उस गम की जो गुनाह की याद और शऊर से पैदा होता है। चुनान्चे हज़रत सुलेमान फ़रमाते हैं कि “बाक़ी सब बोझों और ज़ोफ़ की बर्दाश्त हौसला मंदों से हो सकती है, लेकिन शिकस्ता-दिल की बर्दाश्त के कौन क़ाबिल है।” (अम्साल 18:14) पस इन सब ज़बूरों में जिनमें दिली क़बाहत और कुदूरत और शिकस्तगी का बयान है, एक शख्स इस कद्र गमज़दा और अन्दूहगीन (रंजीदा) खुदा के हुज़ूर में मुतकल्लिम और गोया दिखाई देता है कि उस का नाला और गिरयह ये सुनने से गुमान ग़ालिब और यक़ीनी पैदा होता है कि ये शख्स या तो बाक़ी सब आदमज़ाद से बेहतर या सबसे बदतर होगा। चुनान्चे वो इकरार करता है कि “मेरे गुनाह ने तोदाह-तोदाह बन कर मुझे यूँ दबा डाला है। जैसा कि वहां क़ब्र पर मन-मन भर का पत्थर ऐसा लगा है जो सरकाने के लायक़ नहीं और मिसाल इस बाद-ए-मुख़ालिफ़ की एक दरयाए मुतलातिम है, जिसकी मौज पै-दरपै बड़े जोर व जफ़ा से उस की जान पर सदमा मार रही है।

ताआंकद्र कि क़अर (बड़ा घड़ा, गहराई) बे पायाब में यारेगे-रवां (उड़ने वाली रेत, सेराब) के अंदर ग़र्क़ होने वाला है, गोया उस ने जान से भी हाथ धो लिए। हाँ बल्कि नाज़रीन उसे खुदा का मकरूह व मतरूक जान कर और अंगुशतनुमा कर के ठट्ठों में उड़ाते हैं। और दूर-दूर गोया किसी आफ़त व बला से गुरेज़ां होते हैं। इसी मुवाफ़िक़ इस गमखार और बारबुर्दार की हालत जिसकी जान के अंदर सख़्त मुसीबत और ज़हमत घुस गई हो और अंबार ख़ता उसे

घेर लेता है और खुदा के हाथ ने छुवा और मज़रूब (ज़रब खाया हुआ) किया है। सो तफ़्सील वार (ज़बूर 38,69,88) में बयान होती है, यानी गुनाह के मुहीत से महसूर हो कर और मुजरिम-उल-मज़्र में ठहर कर और गुबार बरसर हो कर सिर्फ़ खुदा ही की रहमत में पनाह लेता है।

ये तीन ज़बूर उन सात मशहूर ज़बूरों के गुलदस्ता में हैं, जिन्हें हजार-हा बरसों से पुश्त दर पुश्त जितने शख्स खस्ता व शिकस्ता व तौबा-कार हो गए और अपनी ज़बान पर लाए हैं और उन्ही की इबारत के वसीले अपने अंदरूनी गम व रन्ज की तारीफ़ और इज़हार करते हैं। बतौर मिसाल बाअज़ इन आयात से हम नक़ल करते हैं, “तेरे क्रहर के सबब से मेरे जिस्म में सेहत नहीं और मेरे गुनाह के बाइस मेरी हड्डीयों को आराम नहीं, क्योंकि मेरी बदी मेरे सर से गुज़र गई और वो बड़े बोझ की मानिंद मेरे लिए निहायत भारी है, मैं पुर दर्द और बहुत झुका हुआ हूँ, मैं दिन-भर मातम करता फिरता हूँ।” (ज़बूर 38:3-8) फिर (ज़बूर 88) में यूँ लिखा है, “तू ने मुझे गहराओ में, अँधेरी जगह में, पाताल की तह में रखा है, मुझ पर तेरा क्रहर भारी है, तू ने अपनी सब मौजों से मुझे दुख दिया है, तू ने मेरे जान पहचानों को मुझसे दूर कर दिया, तू ने मुझे उन के नज़्दीक घिनौना बना दिया, मैं बंद हूँ और निकल नहीं सकता, मेरी आँखें दुख से धुँदला चली।” (ज़बूर 88:6-9) “पर ऐ खुदावंद! मैंने तो तेरी दुहाई दी है और सुबह को मेरी दुआ तेरे हज़ूर पहुँचेगी। ऐ खुदावंद तू क्यों मेरी जान को तर्क करता है? तू अपना चेहरा मुझसे क्यों छुपाता है?” (ज़बूर 88:13,14) “तूने दोस्त व अहबाब को मुझसे दूर किया और मेरे जान पहचानों को अंधेरे में डाल दिया है।” (ज़बूर 88:18)

पस अगर कोई शख्स कम सोच और बे समझ इन ज़बूरों की बाअज़ बाअज़ इबारतें अलैहदा (अलग) कर के ताकीद से फ़र्माए कि बिलाशुब्हा ये

जबूर सिर्फ ऐसे लोगों के साथ मुनासबत रखती हैं, जो शरारत और बदफ़ेअली में सब बनी-आदम ज़ाद से बढ़कर हैं और गुनाह के ख़ुबस और गंदगी तमाम में मुस्तग़र्क़ हैं। तो उन की इस राय पर कुछ जाये ताज्जुब व तहीर नहीं, क्योंकि लाबुद ये राज़ इन्सान की अक़ल और तमीज़ मुजरिद से बाला है और इल्म ईलाही के काशिफ़-उल-इसरार सिर्फ़ ख़ुदा के रूह हक़ के कलिमात हैं। सिर्फ़ ऐसे शख्स से हम इस राज़ की बाबत अर्ज़ करते हैं कि ऐ साहब अगर आप ज़रा भी सोच समझ रखोगे और बारीकबीनी की गर्बाल (छलनी) में लफ़ज़ छानकर निकालोगे तो मालूम हो जाएगा कि वो मुजरिम जो इन ज़बूरो में मारूफ़ है, सिर्फ़ शरीरों और ज़बूनों और नेकी के कीनावरों की दानिस्त में मुजरिम ठहरा, पर ख़ुदा तआला और ख़ुदा तरसों के नज़दीक गुनाह से मुबर्आ व मुअर्रा है। और उस के दुश्मन और गनीम ख़ुदा के मुखालिफ़ हैं और हर सूरत की सलाहियत और फ़ज़ीलत से ख़ुसूसीयत रखते हैं। और वो सब इस गमज़दा को ना किसी बदी के सबब, बल्कि ऐन नेकी और कुदुसियत के सबब मअयूब (ऐब वाला) व मकरूह जानते हैं। और हर-चंद कि ख़ुदा के ग़ज़ब के तेज़ो तल्ख़ तीरों से छिद जाता है और अपने ज़ख़्मों की हरारत व सोज़ो गुदाज़ से कुछ खिफ़फ़त व फ़रागत नहीं पाता तो भी उस तआला को अपने दिल की सफ़ाई और पूरी तहारत के लिए शाहिद कर लिया है। और बे-ख़ौफ़ी से उस तआला के हुज़ूर कहता है, “जो नेकी के बदले बदी करते हैं वो भी मेरे मुखालिफ़ हैं क्योंकि मैं नेकी की पैरवी करता हूँ।” (जबूर 38:20)

देखो इस बाब में क्या ही अजीब और हैरत-अंगेज़ राज़ हमें नज़र आता है कि एक ही शख्स निहायत दर्जे तक ख़ुदा तआला के ज़ेर क़हर है और बेश अज़ बर्दाश्त गुनाह के अंबार तले दबा भी जाता है और तो भी पूरे तौर पर सीना की हिजाब-कशी कर के अपने दिली इसरार को इस नाज़िर व रास्त व

आदिल के हुज़ूर में इन्किशाफ़ करने से उज़्र नहीं करता। अज़ां-जिहत कि अपने अंदरून का यकीनी शऊर रखता है कि मैं महज़ खैर व खूब का तलब करने वाला हूँ। और खुदा ही के लिए अहले शर व खिलाफ़ से ईज़ा व अज़ियत उठाने से बाज़ नहीं आता, तो इस हासिल नतीजे से कौन चारा व ईलाज बाक़ी है कि वह बेहतर भी और बदतर भी सब आदमज़ाद में से हो, इस इज्तिमा-ए-नक़ीज़ैन को कौन साहब हिक्मत महज़ अक़ल ही के ज़ोर से हल कर सकता है और इस मुश्किल के सख़्त कुफ़ुल को किस कलीद अक़ल से खोल सकता है। और (ज़बूर 69) के राज़ इतनी ही दुशवार और जिगर तराश सर गरदानी के बाईस हैं।

चुनान्चे इस ज़बूर का मुत्कल्लिम भी एक गमज़दा और ख़ताकार और रुस्वा और मज़मूम खुदा के रूबरू अपनी तबाह हाली को दिखाता है और आयत 5 में अपने आप को मुल्ज़िम ठहरा कर गुनाहगारों के शुमार में महसूब होने का मुकर है। और बावजूद मुत्हम्मिल (बर्दाशत करने वाला) होने इस इल्ज़ाम और इकरार खतीयत के इस अम्र पर मुद्दई है कि खुदा की कमाल रिफ़ाक़त और उस की मर्ज़ी के ऐन इत्तिफ़ाक़ और तसावी (बराबरी) में रहता है। अज़ आनरो कि खुदा के दोस्त व दुश्मन मेरे भी हैं और मेरी मज़म्मत व मदह दरअस्ल उसी की है। हाँ बल्कि जो कुछ शैय खुदा के घर की शान व शौकत के मुखिल व मुज़िर है तो उस का दिल उस की तरफ़ गीवरी की हरारत से जल जाता है, तो फिर भी वो मसअला पेश आता है कि ये इज्तिमा खैर व शर कौन व अजबीयत और-और मुम्किनियत रखता है।

चुनान्चे जो अहले शरारत से भी मुजरिम ठहरा तो इस रास्त व पाक तआला के आस्ताने में कब पाक, बेऐब और बे गुनाह ठहरेगा। ऐसे राज़ और मुश्किल का इत्तिफ़ा और इन्हिलाल ना तो उलूयात समावी से और ना

सिफ़लियात ज़मीनी से हो सकता है। इस कुफ़ुल की पेचिश सिर्फ़ एक ही किलीद से हल हो सकती है जो कारियाँ अनाजील (अनाजील को पढ़ने वाले) को हासिल व मौजूद है। जिससे मालूम होता है कि वही शख्स जो राफ़ेअ और कातेअ-उल-ख़ता और ख़ुदा की तरफ़ से रहमत अता करने आया। उस ने आप ख़वारों और ख़ताकारों में गिना जाना, हतक-ए-इज़्जत और कुदुसियत और तहारत अपनी कुदुसियत असलीया व ज़ातीया का ना जाना, जिस राज़ व ईमा व इशारा से पतरस रसूल अपने पहले ख़त में फ़रमाता है, “वो आप हमारे गुनाहों को अपने बदन पर लिए हुए सलीब पर चढ़ गया ताकि हम गुनाहों के एतबार से मर कर रास्तबाज़ी के एतबार से जिँ और उसी के मार खाने से तुमने शिफ़ा पाई।” (1 पतरस 2:24) तो मिस्ताक़ इन सब आयात बाला मज़कूर ज़बूरों का वो ख़ुदावंद मुबारक है, जो फ़ी ज़ात रूह और बदन में गुनाह की हर सूरत व रंग व बू से मुबर्रा था। सिर्फ़ उस परवरदिगार और मुदब्बिर नजात की रिआयत हिक्मत आमेज़ के बमूजब अपने ही सर पर आदमज़ाद के बेहद और बेशुमार गुनाहों का तहम्मूल किया। आयात मज़कूर से लाइह है।

अव्वलन : ये कि इस आलम-ए-फ़ानी के हर ज़माने के इंदूहगीन और गमख़वारों में ज़ाइद और फ़ाइक़ गमज़दा वही है, जिसके अहवाल इन मज़ामीर बाला में सूरत पज़ीर हैं।

सानियन : ये कि इस गमख़वारी में ख़ुदावंद मसीह हर वज़अ की रिफ़ाक़त और सोहबत से पूरी मुहाजरत और तजरूद रखते हैं। चुनान्चे ये तन्हाई और यतीमी उस के दर्द व अलम की शर्त व ज़ाब्ता ज़रूरी थी और सिर्फ़ हज़रत यूसुफ़ के अहवाल में एक बईद और धुँदली सी मुशाबहत उस हिज़्रत और तजरूद की पाई जाती है।

सालसन : ये कि खुदावंद ने सिर्फ वही दुख और रंज उठाया जो रब तआला के इरादे मुकर्रर और रजामंदी से मुईन और मुकद्दर था। और खुदावंद मुबारक आप मर्जी पिदराना से पूरा इत्तिफाक और मुराफिकत रखता है। और उस ने बसर व चश्म और इस बारबुर्दारी से अपना नफ़स नज़राना और कुर्बान किया। जिस इकाब व अज़ाब के गुनाहगार व खताकार मुस्तहिक थे, उस को आप बतौर मुतवस्सित (दरमयानी) व एवज़ी बन कर उठाया।

राबिअन : हालाँकि कुल मख्लूक़ात में गुनाह का इतना अंबारगिरां किसी पर हरगिज़ नहीं लदा था जिस कद्र खुदावंद मसीह के सर पर फ़राहम हुआ। तो भी ये अम्र अज़हर मिन अशशम्स और हज़ार-हा दलाईल से साबित और मंसूस (जाहिर किया गया) है कि वो आप हर दाग व गुनाह के साये से भी मुबर्रा था। और बराबर दोनों बातों पर दावा करता है कि मैं मजमा खत्यात का मुतहम्मिल (बर्दाश्त करने वाला) भी हूँ और ब एतबार जात व वजूद के गुनाह की कोई मज़म्मत, बल्कि एहतिमाल मुझे मस नहीं करता।

साहिबो यक्रीन करना चाहिए कि मज़ामीर दाऊद की किताब में गोया एक ही बहर मरवारीद (मोती, गौहर) और माअदन अल-मास (हीरे की कान) है, यानी रुहानी दौलत का पंजगंज (खज़ाना) है। अगर कोई तालिब इफ़ान इस माअदन से खुदवाई करे इस बहर में गोता बाज़ी करे तो हज़ार-हा जवाहर बेश कद्र फ़राहम करके इकरार करेगा कि मेरी जद्दो-जहद अबस व बातिल ना हुई बल्कि इस मजमा सौगात के तजस्सुस करने ये उम्दा और खातिर-ख्वाह अम्र मिला कि एक बिरादर और दोस्त अज़ीज़ है। जो आप ही ज़ोफ़ और ज़हमत और मिस्कीनी और हाजतमंदी और मौत और बाक़ी शराइत बशरीयह से तजुर्बा कार हो कर शिकस्ता-दिलों और ग़म-ज़दों पर तरस खाने के काबिल है और हर-चंद कि गुनाह से खाली थे। ताहम गुनाहगारों के मुक़ाम पर कायम हो कर

दर्द मंदी की राह से उनकी मुलाकात और रिफ़ाक़त तक झुका है। और आप आलम-ए-सिफ़ली में ना सदर मुक़ाम में नशिस्त का दावा किया, बल्कि पस्त नशीनों में पस्त तरीन हो कर और उनके अज़ाब और दुख के दरया-ए-मवाज (मौजें मारने वाला, तूफ़ान खेज़) में वरूद (पहुंचना, उतरना, होना) कर के उन की सब रंज़ूरियों और दर्दों को जान लिया। और जैसा हकीम और तबीब मरीज़ों और ज़ख़्म आलूदों के दर्मियान आकर उन के खुबस व सरायत मर्ज़ और खून और पीप ज़हर-आमेज़ आप तो नहीं लेता, मगर ले जाता है। इसी तरह खुदावंद ने गुनाह और इस की खुबस व लानत व उफ़ूनत को आप तो नहीं लिया, पर ले गया। इसी तरह खुद मलऊन तो ना था, पर लानत को उठाया। जैसे आफ़ताब अपनी शुआओं से और हुआ अपनी तासीर से खुबस व न जासत को बुखारात कर के काफ़ूर कर देते हैं, पर आप मौरिद खुबस व नजासत नहीं हैं।

इसी सबब से वह इन तीन ज़बूरों में मुतकल्लिम हो कर जो मुजरिम और लईन तर और कबीह तर (बुरा, बदसूरत, कबाहत वाला) मिनन्नास हैं, उनके शुरू जुर्म व लअन इस कद्र अपने नफ़स की तरफ़ महसूब करता है कि गोया आप ही उन्हीं में शुमार हो गया। और उन के करीब रिफ़ाक़त में आकर उन के दरिया-ए-ग़म और रुस्वाई और क़हर ईलाही के उमुक़ में से गोया होता है और गोया अपनी ज़बान से उनके वास्ते कलमा-ए-इस्तिग़फ़ार बनाता है और उनके लिए आजिज़ी और तौबा-कारी का नमूना बनता है। चुनान्चे खुदावंद के अय्याम जिस्मियत में अहले ख़िलाफ़ ने इस पर ये मलामत की थी कि ये शख़्स गुनाहगारों को कुबूल करता है और उनके साथ खाता पीता है। चुनान्चे लूका की इंजील में बयान है कि “उस की दावत करने वाला फ़रीसी ये देखकर अपने जी में कहने लगा कि अगर ये शख़्स नबी होता तो जानता कि जो उसे छूती है वो कौन और कैसी औरत है क्योंकि बद चलन है।” (लूका 7:39) जैसे

अब भी अहले मुहम्मद ﷺ मसलन साहब इस्तिफ़सार फ़ुहश आमेज़ एहतिमालों और फ़िस्क अंगेज़ खलिशों को अपने दिल में जगह देकर हर-चंद कि साफ़ व सरीह शिकायत करने से उनको भी उज़्र है, ताहम इस चशमह-ए-कुदुसियत में अपने तसुव्वरों के मेल डालने की ज़ुरत करते हैं। और इस पर जो कामिल सफ़ाई और ख़ैर और सलाहीयत का नमूना है, अपनी फ़साहत की कफ-ए-दस्त (हाथ की हथेली) से छींट देकर उसे आलूदा करने की उम्मीद रखते हैं। खुदा फ़ज़ल कर के इन नादानों और अपनी नजात और फ़ज़ल ईलाही के खिलाफ़ करने वालों की रूह तन्वीर से ऐसी रोशन करे कि चश्म तमीज़ की साफ़ बीनाई पाकर इस राज़ की फ़हमीदा लें, जिसकी यसअयाह नबी ने कश्फ़ कुशाई की है कि, [वो ख़ताकारों के साथ शुमार किया गया तो भी उस ने बहुतों के गुनाह उठा लिए और ख़ताकारों की शफ़ाअत की।” (यसअयाह 53:12) तो इस फ़हम में करार और क्रियाम पाकर हरगिज़ उनके ख़्वाब व ख़्याल में ऐसा तसव्वुर खिलाफ़-ए-क्रियास ना आएगा कि “खोए हुआँ का दूढने वाला।” (लूका 19:10) आप ही खो गया। पर इंशा-अल्लाह वो आप अपनी गुमराही और आवारगी पर से बाहम फ़राहम हो कर और अपनी जान के गल्लाबान और निगहदार हकीकी के पास रुजू लाकर इस्तिराहत (सुख, चैन) और इत्मीनान खातिर हासिल करेंगे।

बाअज़ बेख़र्द और बे-तमीज़ों का मूजिब एतराज़ ये है कि वो गमज़दा और अंदोह गीन जो कि ब तज़रूद व तन्हाई व यतीमी तमाम अस्हाब नजात की लानत और अज़ाब का मुतहम्मिल (बर्दाश्त करने वाला) है ब-तौर नियाज़ी मंदी व तज़र्रे व ज़ारी ज़बूरों में खुदा तआला से मिन्नत करता है कि इस अलम व अंदोह व दर्द दुख व मज़म्मत से खुलासा किया जाये और फ़रागत व तख़फ़ीफ़ पाए और इस दरगाह आला में नाला व गिर्ये व फ़र्याद करता है।

पस वो ये सवाल करते हैं कि इस हाल से क्या सबूत तुम्हारी तकरीर का है कि उस हज़रत ने बड़ी रजामंदी और खुशनुदी से अपनी गर्दन इस जोए और गम के बोझ तले दबाई और कि वो सुबूरी और बराशत और तहम्मूल का कामिल नमूना था। दर हालीका ताब व बेताबी और अर्क रेज़ि और फ़र्याद और इस्तिआनत (मदद माँगना) से जोफ़ व अजुज और बेसब्री की अलामतें बकौल व फ़ेअल कस्रत से नज़र आए। चुनान्चे (ज़बूर 22:11,19) इस पर दाल हैं कि “मुझसे दूर ना रह क्योंकि मुसीबत करीब है। इसलिए कि कोई मददगार नहीं।” (ज़बूर 22:11,19) ¶लेकिन तू ऐ खुदावंद दूर ना रह, ऐ मेरे चारासाज़ ! मेरी मदद के लिए जल्दी कर।” (ज़बूर 22:19) और फिर (ज़बूर 88:13,14) आयात का मज़मून उस के ठीक मुतफ़िक़ है। “पर ऐ खुदावंद मैंने तो तेरी दुहाई दी है और सुबह को मेरी दुआ तेरे हज़ूर पहुँचेगी। ऐ खुदावंद तू क्यों मेरी जान को तर्क करता है? तू अपना चेहरा मुझसे क्यों छुपाता है?¶

और इसी तरह खुदावंद मसीह के और मसीही दीन के मुखालिफ़ों ने जाये तारूज़ (मुजाहमत, रोकना) व ताख़ज़ (अंधेरा) पाया इस ज़ारी व फ़र्याद और अशक रेज़ी में जो खुदावंद की जानिब से ज़ैतून के बाग़ में बर्पा और वाक़ेअ हुई कि सन ईस्वी की दूसरी सदी से आज तक बराबर अहले खिलाफ़ के लिए तानाज़नी और मज़ाह का बाइस और मौका होता चला आया है। बाअज़ कारियाँ इस रिसाले पर पोशीदा ना होगा कि इस मुक़ाम पर उस गिर्ये व ज़ारी से इशारा है जिसका मुफ़स्सिल बयान सलासा ऊला इंजीलों में पाया जाता है और इब्रानियों के खत में भी इज्मालन निहायत दिल-सोज़ बयान होता है, ¶उस ने अपनी बशरीयत के दिनों में ज़ोर-ज़ोर से पुकार कर और आँसू बहा-बहा कर उसी से दुआएं और इल्तिजाएँ कीं जो उस को मौत से बचा सकता था और खुदातरसी के सबब से उस की सुनी गई।” (इब्रानियों 5:7)

बाअज़ लोग बेतमीज़ और बे सोच जो ये ज़न खिलाफ़-ए-क्रियास और ग़ैर वाजिबी इस आयत मज़कूर से निकालते हैं कि मसीह ने जो रो-रो कर और आँसू बहा-बहा कर ब इन्किसार व तज़ज़रअ व मिन्नत व समाजत अपने बाप के हुज़ूर में दुआएं कीं तो सिर्फ़ एक ही सवाल व दरख्वास्त करता था और एक ही ग़नीमत और फ़ायदा इतनी शिद्दत व जोश व जुंबिश से तलब कर रहा था, यानी कि उस की जान इस तल्ख़ सलीबी मौत से बच जाये।

अगर वो साहब एतराज़ इस माजरे की तमाम हकीकत और कैफ़ीयत पर ज़रा ग़ौर और कदरे सोच करते और इल्म अख़लाक़ के क़वाइद की ज़रा तहकीक़ व तजस्सुस कर के मालूम करते कि आली हिम्मत और हौसला मंदों और खुसूसुन मर्दान-ए-ख़ुदा और मशाइख़ व अम्बिया के दिलों में तरद्दात (तरद्दुद की जमा, सोच, तज़बज़ब, परेशानी, मेहनत) किस तरह पैदा होते हैं, तो यकीन करते कि इतनी शिद्दत की अंदरूनी कुशती बाज़ी और सख्त तंगी और जिगर-सोज़ी एक ख़्वाहिश और रग़बत की तेज़ी से पैदा नहीं होती इस क़द्र कि जिस क़द्र दो ख़्वाहिशों और रग़बतों के जंग व जदाल बातिनी से जो बाहम तनाकुज़ व तनाज़अ रखते हैं।

और अगर वो साहब एतराज़ इस माजरे का वो मुफ़स्सिल बयान जो (मती 27 बाब) में पाया जाता है, ग़ौर से मुलाज़ा करें तो साफ़ देखेंगे कि जिस वक़्त ख़ुदावंद ज़ैतून के बाग़ में जान कुंदनी (नज़ा की हालत, अज़ाब) के से तल्ख़ आज़ार व अलम में था तो दो फ़िक़र और दरख़्वास्त मुतफ़र्रिक़ उस के पाक-दिल में पैदा हुईं कि तरफ़ैन के कश्मक़श और जद्दो-जहद से वो कुशती हैबतअंगेज़ मुद्दत तक जारी रही। एक उन दोनों में से उस तल्ख़ मौत से रिहाई पाने की उम्मीद और ख़्वाहिश जो हर एक हैवान क़त-ए-नज़र अज़ इन्सान के ख़वास व शराइत वजूद में से है। यहां तक कि उस के मौजूद ना

होने से इन्सान के कमाल और हकीकत वजूद में खलल आ जाता और दूसरी ख्वाहिश पिदराना मर्जी की तक्मील थी और तामील थी और जो शायद पूछा जाये कि पिदराना मर्जी कौन और किस तरह और किस बात की थी, तो साफ़ जवाब इस सवाल का युहन्ना रसूल अपनी इंजील में बताता है कि “और मेरे भेजने वाले की मर्जी ये है कि जो कुछ उस ने मुझे दिया है मैं उस में से कुछ खो ना दूं बल्कि उसे आखिरी दिन फिर ज़िंदा करूँ। क्योंकि मेरे बाप की मर्जी ये है कि जो कोई बेटे को देखे और उस पर ईमान लाए हमेशा की ज़िंदगी पाए और मैं उसे आखिरी दिन फिर ज़िंदा करूँ।” (युहन्ना 6:39,40)

पस इस होलनाक और सहमनाक साअत में ये दोनों गोया मैदान-ए-जंग में उतर के मुक्काबिल खड़े हैं। एक तरफ़ से इस तल्ख मौत का अंदेशा जिसकी तल्खी महज़ दर्द ही के तरस व लरज़श से नहीं हुई, बल्कि इस अम्र से कि गुनाह का अज़ ओर फल मौत है और क्रियास लाज़िम है कि जिस कद्र वो खुदा का बेदाग बर्दा सफ़ाई और पाकी के सबब गुनाह की हिस्स खुबस से गुजरां था, उसी कद्र उस के फल और अज़ से भी, यानी मौत से भी गुरेज़ और नफ़रत और गैरत बे-इख़्तियारी से मुतनफ़िर (नफरत करने वाले) था। पर देखो दूसरी तरफ़ से वो कमाल इतिफ़ाक़ और इन्क्रियाद और इम्तिसाल (तामीले-ए-हुक़म) खुदा की मर्जी की जिस मर्जी के हक़ में उस ने फ़रमाया था कि उसी को पूरा करना मेरी ख़ुद नोश है। और ये भी कहा था कि मैं हर-दम वही बातें किया करता हूँ जो उस को खुश आती हैं तो खुदावंद उस पाक मर्जी के पूरा करने और अमल में लाने का निहायत हिदत व शिदत से आर्ज़मंद था। इसी मर्जी पर कुर्बान होने के लिए वो निहायत तंगी से दिल बस्ता और पाबंद था। हाँ बल्कि इस मुहब्बत से जो उस के दिल में भरी थी, उस के बाप की तरफ़ जिसकी क़ज़ा व कद्र के बमूजब इस मैदान-ए-जंग में उतरा था।

और इस जमाअत आम्मा मुकद्दसा की तरफ़ जिसकी जान के एवज़ अपनी जान फ़िद्या और ज़बीहा के तौर पर सपुर्द करने वाला था। ऐसी नहर फ़रावान और मौजज़न और पुर जोश उमंडती चढ़ती आई थी, जिसकी बर्दाश्त व गुंजाइश ना हो सके।

और अगर शायद कोई साहब ये जाने कि इस रिसाले का मुसन्निफ़ अपने जोश से मुबालगा की बातें बोल रहा है, ना सही होश व एतिदाल के साथ तो उस से ये अर्ज़ है कि वो इन्जील (मत्ती 26:39,42,44) आयात को पढ़ ले और उन आयात की शहादत से मुकरर सहिकरर (बार-बार, दुबारा-तबारा) उन भारी बातों का इन्फ़िसाल और फ़ैसला करे कि मौत का अंदेशा कहाँ और अपने आस्मानी बाप की मर्ज़ी को पूरा करने की ख़्वाहिश और अज़्मबिल् जज़्म (पक्का इरादा) कहाँ। तो इन आयतों में से हर वाहिद में हकीकत-ए-हाल उस माजरे की साफ़ दर्याफ़्त और ज़ाहिर होती है कि अगरचे वो मौत का अंदेशा नफ़रत आमेज़ खुदा की पाक मर्ज़ी बजा लाने और अदा करने के खिलाफ़ अपना सर उठा सकता था तो भी हकीकत में वो इम्कान मुजादला (जंग) किसी वक़्त वजूद और अमल में नहीं आया पर हर वक़्त एक ही आक्रिबत और निजाम दिखाई देता है। यानी वो अंदेशा मौत का कामिल तस्लीम से और गोया अपनी मर्ज़ी की खुदकुशी से कुर्बान हो गया और ज़ेर व मुतीअ भी हुआ। मत्ती रसूल यसूअ मसीह की इस दुआ के हवाले से यूं बयान करता है, “फिर ज़रा आगे बढ़ा और मुँह के बल गिर कर यूं दुआ की कि ऐ बाप! अगर हो सके तो ये पियाला मुझसे टल जाये। तो भी ना जैसा मैं चाहता हूँ बल्कि जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।” (मत्ती 26:44) फिर दुबारा उस ने जाकर यूं दुआ की कि ऐ मेरे बाप अगर ये मेरे लिए बग़ैर नहीं टल

सकता तो तेरी मर्जी पूरी हो।” (मत्ती 26 42) और उन को छोड़कर फिर चला गया और फिर वही बात कह कर तीसरी बार दुआ की।” (मत्ती 26:44)

पस इन सलासा आयात बाला मत्ती की इंजील से साबित है कि इस दिली मुजादिला और दुआ व सवाल के जोश व हिदत की तीन बड़ी नौबतें थीं। और इन तीन नौबतों का एक ही अंजाम था यानी ये कि अंदेशा मौत का मफ़्तूह हुआ, लेकिन खुदा की मर्जी की इताअत और फ़रमांबर्दारी बिल्कुल गालिब हो गई। आफ़ताब नीम रोज़ (दोपहर) की तरह हर साहब अदल व तमीज़ पर साफ़ रोशन है और बुरहान क़तई इस बात की (इब्रानियों 5:7) से सादिर होती है। चुनान्चे वहां लिखा है कि “जिस अम्र को हैबत आमैज़ तस्लीम करता था उसी अम्र के बाब में इस की दुआ सुनी गई और मंज़ूर हुई।□

पस ऐ साहिबो में आपसे एक सवाल करता हूँ कि मसीह की दुआ किस बात के हक़ में सुनी गई और मक्बूल हुई, आया मौत के अंदेशा के हक़ में या कि अपने बाप की अदाए रज़ा के हक़ में। आप ही तूहन व करहन (ख्वामख्वाह खबरन) इस बात के मुक़र होंगे कि अदा-ए-रज़ा व क़ज़ा और तस्लीम हक़ में सुना और मंज़ूर किया गया। पस हासिल कलाम कि जो तक़रीर इस आयत में पेश आती है कि रो-रो कर और आँसू बहा-बहा कर मसीह ने दुआएं और मिन्नतें कीं। सो मुराद इस तक़रीर की खुसूसुन व फ़ज़लन ना मौत का नफ़रत आमैज़ अंदेशा था, बल्कि वो मुजादिला अंदरूनी जिसमें वो अंदेशा और लर्ज़िश तल्ख़ मौत के रूबरू जो इन्सान हक्कीकी की शराइत वजूद जिन्सियह में से तस्लीम व इन्क्रियाद की बरकरारी से दबाया गया, यहां तक कि नेस्त व नाबूद हो गया।

इन खयालात पर लिहाज़ और सोच करने के बाद ज़्यादा सफ़ाई और आसानी से इस मसअले मज़कूर का जवाब हो सकता है कि वो ग़मगीं बार

बर्दार जो बहुत ज़बूरों में मुतकल्लिम है, क्यों इतनी मिन्नत व खुजू व खुशू (आजिजी, गिड़गिड़ाना) से अपने दुखों और दर्दों के रद्द रफ़ा होने के लिए दुआ व सवाल करता है। चुनान्चे अब मालूम हो गया है इन दलाईल क़ब्ल से कि मसीह अपनी जान के खौफ़ व खतरे से मुतरद्दिव व मुज्तरिब नहीं था। पर इस की पेश-बीनी और दूर अंदेशी उस के बर्गुजीदा व रहानीदा (नजात याफ़ताह) क्रौम के आइंदा अहवाल की तरफ़ इल्तिफ़ात करती थी जिनको जलाल वहायत पहुंचाने के लिए पिदराना मर्जी के बमूजब वो मुजस्सम भी हो गया था। और बहस्ब मुक्तज़ा (तक्राज़ा करने वाला) ए कहानत और बहस्ब शराइत अहद व मिसाक़ अपनी जान को नज़राना व कुर्बान भी करने वाला था। तो इसी खास क्रौम का नाम लेकर और बड़ी मुहब्बत व दर्दमंदी से उनकी याददाश्त कर के उनके दुखों के सबब अस्फल गहराई पर से और ऐन गायत से ज़ारी व फ़र्याद करता है। और उन का वकील व एवज़ी हो कर इनकी तरफ़ से मारूज़ बाप के हुज़ूर में पहुँचाता है और उन्हीं के लिए इज़हार मलामत और इक्रार खता बतौर इस्तिग़फ़ार के उनकी हकीकत-ए-हाल की पूरी वाक़फ़ीयत से ज़बान पर लाता है। और ये अम्म उतना जाये ताज्जुब व तहय्युर नहीं जितना कि बड़ी तसल्ली और तक़वियत का बाइस है। उन अस्हाब ईमान और इफ़ान के लिए जिन्होंने कुछ इस राज़ की फ़हमीदा में दखल पाया है कि मसीह ने अपनी यानी अपने मिजाज़ी बदन के उज़ूओं को कैसी पूरी मुराफ़िकत व यगानगत में अपने साथ मिलाया है। और उनके लिए उस की दुआओं और शफ़ाअत की क्या ही कामलीयत और मंजूरी होती है। खासकर उस शफ़ाअत की जो मज़ामीर बाला के मज़्मून में दर्ज है कि “ऐ मेरे बाप मेरी खताओं और गुनाहों को यानी मेरी जमाअत बर्गुजीदा की जो तमाम जहान में मुंतशिर है शुरू खता को उफ़क़ कर और इस शर व खता के सबब इक्राब व अज़ाब को यानी मलामत व जुलमात और अंदेशा मर्ग और उनकी मानिंद ग़म व अन्दह को खफ़ीफ़ कर

और शिकस्ता-दिलों पर मरहम लगा और घाइलों के जख्मों को बांध और इतना उनका दर्द दुख जिस्मानी जितना कि रूह व जान की गमख्वारी और अन्दोह को मह कर” और बिलाशुब्हा हर एक शख्स के लिए जो रूह और कौल व फ़ेअल में खुदा-ए-हकीकी का और इस बादशाहत रब्बानी का जो अहले ईमान के कुलूब अंदरून में करार पाती है, दूढने वाला है। लाज़िम व मुनासिब है कि ख्याल और यकीन दिल नशीन रखे कि ऐ मेरी जान ये शिकवा व फ़र्याद व नाला व गिर्ये जो मज़ामीर बाला में इस बार बर्दार के हक़ में मारुफ़ हैं, चाहीए कि तू अपने ही हुज़ूर में लाए। और वो इकरारो इज़हार गुनाह अपनी तरफ़ मंसूब करे और सोच व ग़ौर भी करे कि तेरी ही खातिर तेरे शफ़ी और दरम्यानी खुदावंद मसीह ने ये खुशूअ व खुजूअ (आजिज़ी व फ़िरोतनी) की बातें अपनी ज़बान पर लाकर अफ़व व मग़िफ़रत की बातें माअरूज़ (अर्ज़, गुजारिश) कीं कि यकीन कर कि वो अहब अल-महबीन (احب المحبين) दोस्त से मुहब्बत करने वाला) तेरी ही खातिर इस बार-ए-गराँ का मुतहम्मिल (बर्दाश्त करने वाला) हुआ। और दरेग व दिल फ़िगारी (गमगीनी, जख्मीदिल) की तल्ख़ आवाज़ें निकालें और तेरे लिए वो लअन तअन उठाए। और इस रंज वा ज़ार की ना बतौर कयासी व सूरी बुर्दबारी की पर इस जिस्म हकीकी अंसरी में जो हज़रत मर्यम से मौलूद और खुसूमत (अदावत, दुश्मनी) शरारत मस्लूब भी था। और यूसुफ़ की क़ब्र में मदफ़ून और खुदा बाप से मुल्तजी हो कर मुर्दों में से नखसत ज़ादा और सुमराह अक्वल हो कर क़ब्र से उसे बर्खास्त किया। ऐ मेरी जान इसी बदन में खुदावंद मुबारक ने तिश्नगी और गिरसंगी (भूक) और ताब व मेहनत और मांदगी और संग सारी की बर्दाश्त की। और तेरी खातिर बे ख्वान व तोशाह और बे-खाना व सराय और काबिले फ़साद व ज़वाल हो गया। और हर सूरत से मिस्कीनी और उबूदीयत (इबादत, इताअत) के लवाज़म को ग़ैर अज़ गुनाह उठाया। वो नफ़स कि इन्सान कामिल की जहल ज़ात से

ताल्लुक नहीं रखता था, उसे कुबूल फ़रमाया। तो जब ये सब उमूर वाकई ना सिर्फ़ इन्जीलों से बल्कि ज़बूरों और नबीयों की शहादत से वाजिब-उल-तस्लीम हैं तो तुझ पर क्या फ़र्ज व लाज़िम है कि इन खताओं से जिनके जुल्म व जफ़ा से इस मुख़्लिस आलम ने इतने भारी दामों से तुझे ख़रीद लिया है, मुतनफ़्फ़िर (नफरत करने वाले) और दस्त बिरादर रहे। तुझे चाहिए कि उस की कुदरत माहूद पर तकिया लगा कर उनके सब आसारों और अलामतों पर गालिब और फ़त्हयाब निकले और अज़म-बिल-जज़म (पक्का इरादे) में कायम व दाइम रहे कि तो कभी इस जानी दोस्त और बिरादर अज़ीज़ को अपने तजरूद और बगावत और ख़यानत से ग़मगीन ना करे।

इस अम्र में जानना चाहिए कि इस अहब उन्नास ने वक़्त-ब-वक़्त अपने हवारियों को बक़दर उनकी बर्दाशत और इस्तिदाद (सलाहियत) के अपने दुखों की ग़ायत और इंतिहा से आगाह और मुत्ला अ (बाख़बर) किया। और इस से कि किस तरह अपनी रहलत और इंतिकाल से कब्ल वो अपनी ख़ास क्रौम से रद्द और मज़्लूम होगा। और ग़ैर क्रौमों के हाथ में हवाले किया जाएगा। और हर-चंद कि वो रसूल अपने ज़अफ़ और ज़लालत ईमान के सबब इस आख़री रंज व इल्म की इतिला से मुज्तर और सरासीमा हो गए। ताहम खुदावंद मसीह ने बताकीद तमाम इस बात को उन के दिलों पर मुनक्क़श किया कि शुरफा और उलमाए यहूद और अहले रुम बमूजब अपने मिज़ाज और तिश्नगी खून बेरहम के मेरे क़त्ल के मंसूबे बाँधने में बाहम मुत्फ़िक़ होंगे। और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि अपने सब मन्सूबों से महज़ इतना ही हासिल करेंगे कि खुदा तआला के मुकरर इरादा और अम्बिया-ए-सल्फ़ की पेश ख़बरियों को अमल में लाएँगे और सरअंजाम देंगे। और खुसूसुन हज़रत दाऊद की किताब मुक़द्दस खोल कर इसी के अस्ल मज़मून की तशरीह और तफ़सीर कर के अपने नज़राना

और ज़बीहा होने की कैफ़ीयत हाल को उन पर रोशन किया ताकि उन पर और सभी पर मालूम हो जाये कि बईद अज़ां कि खुदा की रज़ा व क़ज़ा मेरे दुख और मौत के सबब बातिल ठहरी। इस मेरी मौत मस्लूबी के दर्मियान वो क़दीमी मश्वरा और मस्लिहत खुदा की ऐन सरअंजाम होती है और मेरे बाप के जलाल का इज़हार और अशआर है और-और तुख्म नई हयात का जिससे अस्हाब नजात की फ़स्ल-ए-मुराद काटी जाएगी। इस पज़मुर्दा आलम के खेत में बोया जाता है और बाद मरने के अजीब तौर पर बारआवर होगा।

अब चाहिए कि सहीफ़-ए-ज़बूर से बाअज़ आयतों को निकालें जिनसे वो खास उमूर मुराद हैं जो मसीह की सलीबी मौत में वाक़ेअ हो गए। बाअज़ ऐसी हैं कि उन में उन वाक़ियात का खुलासा इज्मालन मज़कूर है और बाअज़ ऐसी हैं जो उन वारदात को मुफ़स्सिल बयान करती हैं। इंशा-अल्लाह हम हर दो सूरत की आयात को बतौर नक्ल बातर्तीब निकालेंगे।

अव्वलन : इस अम्र पर कि खुदावंद मसीह अपनी ही खास क़ौम से रद्द और हक़ीर होगा और हीच जाना जाएगा। (ज़बूर118:22) बसराहत तमाम दाल (दलालत करने वाला, पुर मअनी) है। “जिस पत्थर को मेअमारों ने रद्द किया वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया।□

सानियन : (ज़बूर 2:1-2) से ये बात साबित है कि रद्द होना खुदावंद मसीह का ना सिर्फ़ यहूद की बर्गुज़ीदा क़ौम से वक़ूअ में आने को था, बल्कि अज़जानिब मुलूक ग़ैर क़ौम और उन के बादशाहों और लशक़रों से कि वो “इब्ने खुदा” के हल्का-ब-गोश और मुतीअ होने का दावा सुनकर हुजूम व शोरिश व जोश व जुंबिश की हालत में निहायत गुस्सा करेंगे और खुदा की इस बादशाहत और हैकल को जिसकी अस्ल व बुनियाद नबी व रसूल हैं और कोने का पत्थर खुद मसीह है, शिकस्ता और ख़ाक-आलूदा करने का मन्सूबा बाँधेंगे। “कौमें

किस लिए तैश में हैं और लोग क्यों बातिल ख्याल बाँधते हैं? खुदावंद और उस के मसीह के खिलाफ़ ज़मीन के बादशाह सफ़-आराई कर के और हाकिम आपस में मथरा करके कहते हैं आओ हम उन के बंधन तोड़ डालें और उन की रस्सियाँ अपने ऊपर से उतार फेंकें।

सालुसन : एक खासीयत इस जुल्म व सितम की जिसे खुदावंद और उस का बदन मिजाज़ी अहले खिलाफ़ की तरफ़ से उठाने वाला था, सो ये है कि वो ज़ालिम जिस क़द्र तक इस मुनज्जी-उल-आलम को मज़रूब और मग़मूम करेंगे, उसी क़द्र जानेंगे कि खुदा तआला हमारी इबादत और बंदगी को मंज़ूर करता और हक़ ठहराता है और वो अपनी दानिस्त में निहायत सवाब (रास्त, ख़ूब) और फ़ारिक (फ़र्क़ करने वाला) हकीकत और हर फ़ज़ीलत व सलाहीयत में फ़ाइक़ (फ़ौक़ियत रखने वाला) और खुदा के घर में अपने आमाल हसना पर मुतकब्बिर और फ़ख़खार होंगे। मसलन (ज़बूर 35) में यूँ लिखा है, “जो नाहक़ मेरे दुश्मन हैं मुझ पर शादियाना ना बजाएँ और जो मुझसे बेसबब अदावत रखते हैं चश्मकज़नी ना करें। (ज़बूर 35:19) यहां तक कि उन्होंने ख़ूब मुँह फाड़ा और कहा हा..हा..हा..! हमने अपनी आँख से देख लिया है। (ज़बूर 35:21) वो अपने दिल में ये ना कहने पाएँ आहा हम तो यही चाहते थे। वो ये ना कहें कि हम उसे निगल गए। (ज़बूर 35:25) जो मेरे नुक़सान से खुश होते हैं वो बाहम शर्मिदा और परेशान हों। जो मेरे मुक़ाबले में तकब्बुर करते हैं वो शर्मिदगी और रुस्वाई से मुलब्बुस हों। (ज़बूर 35:26) इस मज़मून से मुतफ़िक़ और भी कलिमात हज़रत दाऊद के (ज़बूर 16,18,69) में हैं :- “जब मैंने टाट ओढ़ा तो उन के लिए ज़र्ब-उल-मसल ठहरा। फाटक पर बैठने वालों में मेरा ही ज़िक़र रहता है और मैं नशा बाज़ों का गीत हूँ।” (ज़बूर 69:11,12) इसी तरह (ज़बूर 38) में है, “क्योंकि मैंने कहा कि कहीं वो मुझ

पर शादियाना ना बजाएँ। जब मेरा पांव फिसलता है तो वो मेरे खिलाफ़ तकब्बुर करते हैं।” (ज़बूर 38:16) और खुदावंद मसीह के दुखों के उस वज़न वो साक़त (पुख्तगी, मज़बूती) की सूरत पर साफ़ दलील हज़रत यसअयाह की किताब के बाब 53 में पढ़ी जाती है, [वो आदमीयों में हक़ीर व मर्दूद, मर्द गमनाक और रंज का आश्रा था। लोग उस से गोया रू पोश थे उस की तहक़ीर की गई और हमने उस की कुछ क़द्र ना जानी। तो भी उस ने हमारी मशक़तें उठा लीं और हमारे ग़मों को बर्दाशत किया। पर हमने उसे खुदा का मारा-कूटा और सताया हुआ समझा।” (यसअयाह 53:3,4) और (मत्ती 27:43) से मालूम होता है कि यहूद के कुह्ना (पुराना) रऊसा ने खुदावंद मसीह पर ताना ज़नीयाँ और तोहमतें लगाईं, तो इस बदगोई में वही तलफ़ज़ात और इबारात दाख़िल कर लिए जिनकी ख़बर पेश अज़-वक़ूअ हज़रत पर उतरी थी और उस के (ज़बूर 22:7,8) में मर्कूम है। और मुवाफ़िक़ इस क़ौल के यहूद की वो किज़ब और मक़्र आमैज़ उज़-ख़्वाही थी, बजवाब उस सवाल के जो खुदावंद ने उनसे फ़रमाया था कि, [मैंने तुमको बाप की तरफ़ से बहुतेरे अच्छे काम दिखाए हैं। इन में से किस काम के सबब से मुझे संगसार करते हो? यहूदीयों ने उसे जवाब दिया कि अच्छे काम के सबब से नहीं बल्कि कुफ़्र के सबब से तुझे संगसार करते हैं और इसलिए कि तू आदमी हो कर अपने आपको खुदा बताता है।” (युहन्ना 10:32,33) और यक़ीन है कि हज़रत के अहवाल को इस मुसीबत के अम्र में बड़ी मुराफ़िक़त खुदावंद मसीह के साथ थी। चुनान्चे वो मक्कार अपने मुहिब व ख़ैर-ख़्वाह का मजरूह और मज़्लूम होना ऐन अपने फ़र्र का बाइस और बदजबानी को अपने हसनात और औसाफ़ के शुमार में हिसाब कर रहे थे। हाँ बल्कि अपनी वहशत मिज़ाजी और सीरत और तनेत शैतानी और ख़ूख़वारी को इसी बात में अयाँ व बयां करते थे कि नई-नई तोहमतें और रुस्वाइयाँ हवादिस की सख़्ती और अशद जालसाज़ी में हर हिक़मत व हीला को

हलाल और रूह बल्कि मुस्तहसिन (नेक, पसंदीदा) भी जानते थे। ताआं साअत कि उस खून-ए-नाहक की नशा बाज़ी से मस्त हो कर एक दिल और एक जबान से चिल्ला-चिल्ला कर इस लानत आमोज़ दरख्वास्त व सवाल पर मुद्दई हो गए, जिसका ज़हर हला-हल (जहर-ए-क्रातिल) का सा फल आज तक चखते चले आए हैं कि इस का खून हम पर और हमारी औलादों पर लगा रहे। (मत्ती 27:25) पर इस अम्र में हज़ार-हा शुक्रगुजारियों के लायक है कि अस्थाब शरारत व खसोमत से गो कितनी ही हिकमतें और हीला बाज़ीयां और जद्दो-जहद मन्सूबा जात वगैरह हुए, मगर इन सभी से एक ही नतीजा हो रहा कि खुदावंद मसीह वो बर्बा बेऐब और बेदाग़ और हर फ़ेअल व क़ौल व ख्याल की खता से मुबर्बा ठहरा। और तब से आज तक पुश्त दर पुश्त हज़ार-हा झूटे गवाह इस अम्र के सबूत के वास्ते गाँठे गए और हज़ार हा मजलिसों के बीच हज़ार-हा काज़ी इसी मुक़द्दमें के फ़ैसले करने के लिए मुस्नद नशीन हो गए हैं कि खुदा तआला ने इस अक्दस-उल-मुक़द्दसीन को ना खताकारों का बोझ बर्दार किया, बल्कि खुद मुजरिम और खताकार इसी को ठहरा।

बावजूद इस के भी उन की मुराद बर ना आई और इतनी-इतनी कोशिशों और हुनर और हिकमत की पेचिशों से सिर्फ़ यही एक बात निकली है कि वो खुदावंद सर और नमूना कुदुसियत का और अकेला चश्मा-ए-सफ़ाई का उनके लिए है जो ख्वाहां और आरज़ूमंद हैं कि इस क़ौल वज़नी और संजीदगी तौरत के शुन्वा होकर ताबे भी हों कि, “तुम पाक रहो क्योंकि मैं जो खुदावंद तुम्हारा खुदा हूँ पाक हूँ।” (ख़ुरूज 19:2) और अगर शायद मुम्किन भी होता कि किसी काज़ी, आदिल और रास्त की मुस्नद से कोई मसअला मुख़ालिफ़ सादिर होता तो भी कौन ऐसा फ़त्वा हो सकता कि जम्हूर आलम के मुत्तफ़िक़ शहादत के मुकाबिल कायम रह सकता। कौन शर्मिदा और लाजवाब ना खड़ा होगा, जब

खुदावंद आप ही इस मोअतरिज़ के रूबरू वो क़ौल फ़रमाएगा जैसे यहूद से मुतकल्लिम हो कर फ़रमाया था, ¶तुम में कौन मुझ पर गुनाह साबित करता है? अगर मैं सच बोलता हूँ तो मेरा यक़ीन क्यों नहीं करते? जो खुदा से होता है वो खुदा की बातें सुनता है तुम इसलिए नहीं सुनते कि खुदा से नहीं हो।¶ (युहन्ना 8:46, 47) और (ज़बूर 35) की भी वैसी ही गवाही है, “झूटे गवाह उठते हैं और जो बातें मैं नहीं जानता वो मुझसे पूछते हैं। वो मुझसे नेकी के बदले बदी करते हैं। यहां तक कि मेरी जान बेकस हो जाती है।” (ज़बूर 35:11,12)

ऐ साहिबो ज़रा सोच कर देखो कि मसीह के हुलुम और बर्दाश्त का मिज़ाज क्या ही बरअक्स था, मुहम्मद ﷺ के मिज़ाज से। जिस शख्स की बात रावयान मोअतबर से तस्लीम हो चुकी कि सौ-सौ और हज़ार-हज़ार यहूद के खून व क़त्ल के तमाशबीन इतनी ना हम्ददीं और लापरवाई से थे कि उन की रूह और रंग में कुछ तब्दीली ना हुई और खुदावंद मसीह की जाँ-फ़िशानी और खुद निसारी की कौन मुराफ़िक़त बईद भी हो सकती थी। इस साहब के साथ जिसने शहरों के तसल्लुत और तस्ख़र के जंग व जिदाल के ग़िनाइम में से एक चौथाई अपने हिस्से की अलैहदा (अलग) कराई। और फिर ये जुर्रत कौन साहब तास्सुब कर के अपने ख़्वाब व ख़्याल में भी ऐसा जाने कि पाकी और सफ़ाई और नफ़्स अम्मारा से कमाल परहेज़ के अम्र में खुदावंद मसीह के साथ मुहम्मद ﷺ जाये तफ़ज़्जुल और रुत्बा किब्रियाई हो। दरहालीका (इस हाल में) वो इस जसारत की ग़ायत तक पहुंच गया कि क़ौल व क़लाम-अल्लाह को अपना ही क़बील करना चाहा। अज़ आनरूका खुसूसुन इसी के लिए दरबाब तज़व्युज (शादी) के शरीअत अल्लाह की तख़फ़ीफ़ और तलियएन (नर्मी) हो जाएगी। बआनक़द्र कि जो बाक़ी ख़ल्क-उल्लाह के लिए ममनू व हराम था,

सिर्फ उस के लिए हलाल हो जाए। ये जाये ताज्जुब है, पर तो भी अगरचे इस अम्र में मफ़रूक और मुतमय्यज़ होना ऐसा आसान मालूम देता है कि तिफ़्ल शेर-ख़्वार बमुश्किल इस में मुतालआ कर सकता है तो भी अस्हाब अक़्ल व फ़िरासत इस बात से ज़ाल (गुमराह) और फ़रेब कश हैं।

बाअज़ नाम के अस्हाब अक़्ल व फ़रास्त इस अम्र में ऐसे ख़ाल ख़याल और जाहिल मुतलक रहते हैं कि दरबाब सफ़ाई व पाकीज़गी दिल मुहम्मद ﷺ को ख़ुदावंद मसीह का हम-रुत्बा और तबक्रा बताते हैं। बिलाशुब्हा बाइस इस ज़लालत और कोर-चश्मी उन की का ये है कि जो इंजील युहन्ना में मर्कूम है कि, “नूर दुनिया में आया है और आदमीयों ने तारीकी को नूर से ज़्यादा पसंद किया। इसलिए कि उन के काम बुरे थे।” (युहन्ना 3:19) यानी अक्सर उन्नास (लोग) ऐसा मज़हब और मिल्लत चाहते हैं जिसमें तख़्फ़ीफ़ शराअ हो और ख़ुदा के सख़्त अम्र और नही की कुछ तलइन (नर्मी) हो और हवाए नफ़स की कुछ इजाज़त हो और अस्हाब बद-मिज़ाज और बदमाश रसूमात दुनियवी को बजा लाने से अपने अख़लाक़ और खोए व ख़सलत की मओबी और ख़राबी का कुछ मुबादला कर सकें। और कलमा-ए-इस्तिग़फ़ार बऊज़ इन्किताअ बद शहवतों के मक़बूल हो जाए। और इस से मालूम और साबित है कि महज़ जहालत ही से और उसूल और हक़ायक़ दीन की नाबीनाई से वो ख़ाम तसव्वुर पैदा होता है जो डेविन पोर्ट साहब की किताब में लिखा है। अज़ां जिहत कि तालिबान हकीक़त की आँखों में गुर्दों गुबार डाले यानी ये तसव्वुर कि बाअज़ मसीही फ़िर्के के बादशाह बहुत खूँ-ख़्वार और ज़ालिम और अहद-शिकन हो गए हैं। इसलिए उन का दीन काबिले ईजाब (कुबूल करना) नहीं है। अज़-बराए आंका इस क़द्र अस्ल सवाल ये नहीं है कि अस्हाब मज़हब कैसे यानी दीन के कलिमा ख़्वां कौन-कौन रविश व रफ़्तार इत्तिफ़ाक़न इख़्तियार करते हैं, पर ये

कि खुद दीन ही अपने उसूल और हक़ायक़ में कैसा है। और वो मिज़ाज और तबीयत खास जो इन हक़ायक़ और अहक़ाम पर मब्नी है और उन पर मुस्तक्र है, सो कैसी है। अज़ानरो कि जिस क़द्र नेक सूरत बातिनी व बेरोनी उस के नक़शे पर मुनक़क़श है और उस की ऐन रूह और जान, उन की रूह और आदत और अमल में हलूल और तहलल करती है। इसी क़द्र वो मिज़ाज तहारत और सफ़ाई में पहुंचते और उस में तरक़की और तक्मील पाते हैं। तो अगर शायद कोई शख़्स ज़ाहिरन खुदावंद मसीह की बिरादरी से हो, पर दर-बातिन नशा बाज़ या, रंडी बाज़ या ज़ालिम और लुटेरा या दो ज़नों का कमबख़्त शौहर हो, साहब मज़हब तो शायद हो सके पर अहले दीन से महरूम है और विरसा-ए-अहद की बरकतों से बे-बहरा है। चुनान्चे युहन्ना रसूल के पहले आम खत में है कि, “उस से सुन कर जो पैग़ाम हम तुम्हें देते हैं वो ये है कि खुदा नूर है और उस में ज़रा तारीकी नहीं। अगर हम कहें कि हमारी उस के साथ शराक़त है और फिर तारीकी में चलें तो हम झूटे हैं और हक़ पर अमल नहीं करते।” (1 युहन्ना 1:5,6)

राबिअन : खुदावंद मसीह के दुखों और ग़मों की एक खासीयत ये है कि अपने अस्थाब ख़ुसूमत ज़ाहिरी की निस्बत अपने दोस्तों और रफ़ीकों की तरफ़ से ज़्यादा आज़ार और तकलीफ़ खींची। और बनिस्बत कीना-वर दुश्मनों के ऐन मुकर्रिबों की ख़ियानत और बेवफ़ाई से ज़्यादा मजरूह और मज़रूब था। चुनान्चे ज़क़रीयाह नबी ने अपनी किताब में माअरफ़न बाबत इस अम्र के लिखा है :-

“और जब कोई इस से पूछेगा कि तेरी छाती पर ये ज़ख़म कैसे हैं? तो वो जवाब देगा ये वो ज़ख़म हैं जो मेरे दोस्तों के घर में लगे।” (ज़क़रीयाह 13:6) और खास इशारा इस अम्र से हज़रत दाऊद के (ज़बूर 41:9) में पाया

जाता है, “बल्कि मेरे दिली दोस्त ने जिस पर मुझे भरोसा था और जो मेरी रोटी खाता था मुझ पर लात उठाई है।” और खुद खुदावंद मसीह ने इस आयत को अपनी हकीकत-ए-हाल की तरफ महमूल किया, “मैं तुम सबकी बाबत नहीं कहता, जिनको मैंने चुना उन्हें मैं जानता हूँ लेकिन ये इसलिए है कि ये नविश्ता पूरा हो कि जो मेरी रोटी खाता है उस ने मुझ पर लात उठाई।” (युहन्ना 13:18)

और सिवाए इस के दो और औसाफ व सरीह पेशगोईयां इस बेवफा की शरारत और उस की आक़िबत की तबाह हाली इबरत आमज़ अल्फ़ाज़ में अंगुशतनुमा करती हैं यानी (ज़बूर 109) में यूं लिखा है कि, “उन्होंने ने नेकी के बदले मुझसे बदी की है और मेरी मुहब्बत के बदले अदावत। तू किसी शरीर आदमी को उस पर मुकर्रर कर दे और कोई मुखालिफ़ उस के दहने हाथ खड़ा रहे। जब उस की अदालत हो तो वो मुजरिम ठहरे और उस की दुआ भी गुनाह गिनी जाये। उस की उम्र कोताह हो जाएगी और उस का मन्सब कोई दूसरा ले-ले।” (ज़बूर 109:5-8) वाज़ेह हो कि इसी आयत को पतरस रसूल ने रसूलों के आमाल के पहले बाब में यहूदाह इस्किरियोती की खियानत की तरफ़ मंसूब किया और ज़करीयाह नबी का क़ौल भी इस के मुवाफ़िक़ है, “और मैं ने उन से कहा कि अगर तुम्हारी नज़र में ठीक हो तो मेरी मज़दूरी मुझे दो नहीं तो मत दो और उन्होंने ने मेरी मज़दूरी के लिए तीस रूपये तौल कर दिए।” (ज़करीयाह 11:12)

और इसी मर्दूद और खुदावंद मसीह के मुखालिफ़ को पतरस रसूल ने (ज़बूर 69) की बाअज़ आयतों का मिस्ताक़ बताया था यानी (ज़बूर 69:26-28) और शक व शुब्हा नहीं कि इसी यहूदाह इस्किरियोती पर (ज़बूर 55:12,13) आइद और सादिक़ हैं “जिसने मुझे मलामत की वो दुश्मन ना था वर्ना मैं इस

की बर्दाश्त कर लेता और जिसने मेरे खिलाफ़ तकब्बुर किया वो मुझसे अदावत रखने वाला ना था नहीं तो मैं उस से छिप जाता। बल्कि वो तो तू ही था मेरा हम-सर, मेरा रफ़ीक़ और दिली दोस्त था।¹⁰ और अगर कोई शख्स ये जाये ताज्जुब और तहय्युर जाने कि उस एक शरीर फ़ित्ता अंगेज़ और अहद-शिकन के अहवाल की इतनी इतनी पेश-खबरियाँ कम से कम चार या पाँच पेशीनगोईयां बज़बान अम्बिया सादिर हो गईं तो इस शुब्हा का इतिफ़ा व अजबी और माकूली ये मालूम होता है। दरहालिका ऐसे शख्स के मुर्तद और बर्गशता होने से जो खुदावंद मसीह के मुम्ताज़ और मुख्तस रफ़ीकों में से था। बाअज़ जईफ़ और नीम ख़ाम नौ मुरीद मुतरद्दिद और ईमान में मुतज़लज़ल हो सकते थे तो खुदा की ये मर्जी थी कि इस माजरे की बड़ी पेश खबरी और इबरत नुमाई हो। गोया कि ज़िया अश्शम्स के रूबरू ज़ाहिर और रोशन हो जाएगी। शायद ना हो कि कोई मोअतरिज़ काबू पाकर खुदा की हिक्मत या खुदावंद मसीह की पेश फ़हमी में कुछ इशतिबाह या ऐब चीनी का बाइस पाए। या उस को खुदा की मश्वरत क़दीमी के मुखिल व मुज़िर जाने, इसलिए यहूदाह इस्किरियोती दज्जालों यानी मसीह के मुखालिफ़ों के सिलसिला में अक्वल और उन सब का पेशवा गिना जाता है और सहफ़ अम्बिया और मज़ामीर दाऊद में यही लईन मिनन्नास है, जैसा कि शैतान लईन मिन-उल-अर्वाह है और वो लानतें जो मज़ामीर बाला में उस पर वारिद हुई थीं, ऐसी हैरत-अफ़ज़ा और हैबत-अंगेज़ हैं कि कुल कलाम-उल्लाह में उन से तल्खी और शिद्दत में बढ़कर कोई नहीं। और इस बद्दुआ की ये खासीयत है कि किसी पर हरगिज़ नहीं कही गई, मगर यहूदाह इस्किरियोती और उस की मानिंद दज्जाल आखिरी मसीह के मुखालिफ़ों पर कि वो सब अश्खास बाक़ी सब अहले खिलाफ़ और आबा फ़ित्ता व फ़साद से ये तफ़रीक़ रखते हैं कि हर-चंद बाल-इख्तसास तमाम मुरातिब फ़ज़ल और मदारिज़ कुर्ब व रिफ़ाक़त में अफ़ज़ल और आला दर्जे तक सफ़राज़ हो गए थे।

मगर फिर खियानत व तज्वीर (फरेब, धोका) की तरफ़ रुजू लाकर अटवल कीना व फ़साद के सर लशकर हुए और गोया शैतान के हाथ में आपसे आप बिक गए। और इस के फ़ासिद और फ़ासिक मन्सूबों की इल्लतें और वसाइल हो कर आतिशी-ए-जहन्नम से अपनी हरारत गुस्सा व अदावत को सुलगाया।

खामसन : फिर ज़करीयाह नबी की किताब के 11 वें बाब से साबित है कि वो तर्दीद और खियानत खास जिसके सबब यहूदाह अपने उस्ताद और खुदावंद के खून व क़त्ल के मंसूबे में सर गिरोह हो गया। सिर्फ़ उस खियानत और नाशुकी आम्मा व कुल्लिया की मिसाल और तश्बीह था जिसके सबब तमाम क़ौम यहूद आज तक मुजरिम ठहरी और मुल्क ब मुल्क आवारा और परागंदा हो कर मुबादला और जुर्माने उठा रही है। चुनान्चे बददुआ का तौक़ आहनी अपनी गर्दनों में लगाए हुए हैं। बाअन्क़द्र कि ये क़ौम मुतल्लिक़न बेचारा और लाइलाज और आवारा हो गई है। लेकिन अज़ां बाइस कि अहद सलफ़ इब्राहीमी मंसूख़ होने के काबिल नहीं और वो उम्दा गडरिया (चरवाहा) जो इस अहद का ज़ामिन और मक़बल (हक़ का फ़रमान कुबूल करने वाला) और रहें अल-कौल है अपने इकरार मुस्तहक़म से हट नहीं सकता।

पस हर-चंद कि उन्हीं ने अपने वकील और औज़ी को यहूदाह इस्किरियोती के हाथ से जिसने बतौर बेवफ़ाई और नमक-हरामी के अपने चौपान को फ़रोख़्त किया, ख़रीदा। तो भी इसी ज़करीयाह नबी की किताब में (ज़करीयाह 12:10) से यकीन है कि आख़िर-उल-अय्याम में वो क़ौम बेवफ़ा अपनी मुद्दत-ए-मदीद के मर्दूद और मक़हूर किए हुए गडरीए की तरफ़ बड़ी पशे-माअनी से रुजू लाएँगी। चुनान्चे मर्कूम है, “और मैं दाऊद के घराने और यरूशलीम के बाशिंदों पर फ़ज़ल और मुनाजात की रूह नाज़िल करूँगा और वो उस पर जिसको उन्हींने छेदा है नज़र करेंगे और उस के लिए मातम करेंगे

जैसा कोई अपने इकलौते के लिए करता है और उस के लिए तलख काम होंगे जैसे कोई अपने पहलूठे के लिए होता है।□

इसलिए कोई साहब दीद व दानिश ये ख्याल ना करे कि यहूद की रुगिरदानी और सरकशी के सबब खुदावंद मसीह की रिसालत बातिल और नाकारा निकली, हरगिज नहीं। बल्कि वो इस बात से बे-लिहाज और बे सोच ना रहे कि शहादत अम्बिया और मजामीर दाऊद इस अम्र पर ऐन मुत्फिक्र हैं कि ऐन खुदा तआला की हिकमत और पर्वदिगारी की मशरत इस तर्दीद और बेवफाई के सरबराह और सर-अंजाम होने से ज़रा भी नहीं रुकी और ना रुक सकती थी, बल्कि यहूद और अहले रोम के इरादत (ख्वाहिश) मुतय्यना (मुकर्रर की हुई) से खुदा की मर्जी का पूरा इफितताह हो सकता था, चुनान्चे सुलेमान फ़रमाता है कि, “आदमी के दिल में बहुत से मंसूबे बदलते हैं लेकिन सिर्फ़ खुदावंद का इरादा ही कायम रहेगा।” (अम्साल 19:21) इसी सबब से जब खुदावंद मसीह की साअत इंतिकाल करीब आ पहुंची थी और गम व अलम निहायत दर्जे तक पहुंच गया था। तब उस के हवारियों ने हर-चंद कि साबिक्र में कोताह बीन और सुस्त एतिक्राद थे, ज़्यादा तसल्ली और तयक्कुन कुबूल किया। अज़ बराए आंका वो पूरी मुताबिक्रत और मुवाफिक्रत जो पेश गोईयों को उमूर वाकई के साथ थी, ज़्यादा सराहत से रोशन और मफ़हूम हो गई। चुनान्चे हज़रत दाऊद के नविशतों की बहुत सी नहानी पेशगोईयां आशकारा और नुमायां हो गईं।

सादसन : एक और खासीयत नादिर और बेमिसाल खुदावंद मसीह के अलम व अंदोह की ये भी थी कि अल्लाह-तआला के इब्ने वहीद और कलिमा-ए-रब्बानी होने पर दावा करना सिर्फ़ उसी पर लाज़िम व वाजिब था। किसी गैर को वो दावा इब्नीयत और कलमियत का रूह और जायज़ ना था। अगर

कोई करता तो कुफ़्र होता। सच है कि हर एक ज़माना-ए-सल्फ़ में हर साहब रिसालत व नबूवत को बाक़ी हम-अस्रों की निस्बत तजरूद और तन्हाई और यतीमी हासिल हुई है और बतरीक ऊला उस को जो नबियों के दर्मियान ब यकताई व तन्हाई तमाम इब्नीयत अस्लीया और कलमियत जोहरिया पर बरहक मुद्दई था और अपने आपको ख़ुदा की बादशाहत और बारगाह का मुख्तार और ख़ुदा के फ़ेअलों का फ़ाइल और कारसाज़ और सब आलिमों का वारिस और परवरदिगार बता सकता था। वो बसबब उस अलवियत खास व बेनज़ीर के इस क़द्र मौरिद हसदो कीना व अदावत था कि दूसरे का होना ग़ैर मुम्किन है। मसबत इस बात का (युहन्ना 10:37-38) का मज़्मून है, “अगर मैं अपने बाप के काम नहीं करता तो मेरा यक्रीन ना करो। लेकिन अगर मैं करता हूँ तो गो मेरा यक्रीन ना करो मगर उन कामों का तो यक्रीन करो ताकि तुम जानो और समझो कि बाप मुझमें है और मैं बाप में।”

इस आयत के मअनी निहायत बारीक और आली हैं। चुनान्चे ख़ुदावंद मसीह इस में ऐसी कुदरत और मंजिलत का मुद्दई नहीं, जिस पर हर कोई साहिबे मोअजज़ात यानी हर एक नबी या रसूल दावे कर सकता, पर अपने बाप के कुदरत आमैज़ अफ़आल की काबिलीयत और फ़अलियत की ये बुनियाद और अस्ल बाइस फ़रमाता है कि, “बाप मुझमें है और मैं बाप में रहता हूँ।” फिर इस बात की तरफ़ भी इल्तिफ़ात करना चाहिए कि जब कि ख़ुदावंद की ये मर्ज़ी थी कि उस का हर क़ौल व फ़ेअल बर मौक़ा और ब-वक़्त मुनासिब और मुतय्यन होतो वो आला दावा ना हर वक़्त और ना बतौर नख़वत (ख़ुद-बीनी, तकब्बुर) और शेख़ी बाज़ी के ज़बान पर लाया। लेकिन बलिहाज़ मुकररी औक़ात के बाअज़ वक़्त ख़ामोश रहा और बाअज़ वक़्त गोया और हिजाब कश। चुनान्चे मती की इंजील में अपनी आइंदा सलीबी मौत की साफ़ पेश ख़बरीयाँ

दीं और उस खास जुर्म मज़रूम की जिसके बाइस सलीब के फ़तवे का मुस्तहिक़ समझा गया, “जब बाग़बानों ने बेटे को देखा तो आपस में कहा यही वारिस है। आओ उसे क़त्ल कर के इस की मीरास पर क़ब्ज़ा कर लें।” (मत्ती 21:38) और बिलाशुब्हा ये उसी खास मज़म्मत की तरफ़ इशारा है जो दूसरे ज़बूर में है कि, “ख़ुदावंद और उस के मसीह के खिलाफ़ ज़मीन के बादशाह सफ़-आराई कर के और हाकिम आपस में मथरा कर के कहते हैं आओ हम उन के बंधन तोड़ डाले...।” (ज़बूर 2:2,3) और इसी तानाज़नी से ख़ुफ़ीया इशारा (ज़बूर 22) में है कि, “वो सर हिला हिला कर कहते हैं अपने को ख़ुदा के सपुर्द कर दे। वही उसे छुड़ाए, जब कि वो उस से ख़ुश है तो वही उसे छुड़ाए।” (ज़बूर 22:7,8) और ऐन वही कलाम उलमा और रउसा यहूद ने ज़बान ज़द किया, मसीह मस्लूब के मुक़ाबिल। चुनान्चे (मत्ती 27:43) आयत इस बात पर शाहिद है। और इसी तरह (ज़बूर 40) में ख़ुदावंद मसीह निहायत वज़नी और संजीदा क़ौल से सराहतन तो नहीं, मगर ज़मनन व किनायतन इस आली मर्तबा पर मुशारू ईलय्ह (वो जिसकी तरफ़ इशारा किया गया हो) है, “कुर्बानी और नज़र को तू पसंद नहीं करता, तू ने मेरे कान खोल दिए हैं। सोख़्तनी कुर्बानी और ख़ता की कुर्बानी तू ने तलब नहीं की। तब मैं ने कहा देख मैं आया हूँ। किताब के तूमार में मेरी बाबत लिखा है। ऐ मेरे ख़ुदा ! मेरी ख़ुशी तेरी मर्ज़ी पूरी करने में है बल्कि तेरी शरीअत मेरे दिल में है।” (ज़बूर 40:6-8) इस इशारे को बईद व मुबहम (यानी छिपे हुए) जान कर बईद अज़ बहस ना जानना चाहिए।

अज़ां जहत कि हफ़ता-दी मुतर्जिम जो अहले खिलाफ़ हैं, इस इबारत को (यानी तू ने मेरे कान खोल दीए हैं) बतौर सराहत व वज़ाहत के और बतरीक़ तबद्दुल हर्फ़ बमाअनी तावील कर के इस के ये मअनी बताते हैं कि, “तू ने

मेरे लिए एक बदन तैयार किया। जिस अम्र में वो मुतर्जमीन यहूदया तू अपने नुस्खों में एक इख्तिलाफ नकली के काइल हैं, जो उन की दानिस्त में मोअतबर और सही था या वो हफताद उलमा इस राय पर मुत्फिक हैं कि हमारे नज्दीक वो दो इस्तिलाहात एक ही माअनों से हैं।

अव्वलन : ये कि खुदा की मर्जी के मुवाफिक उस की तरफ से गोश (कान) की कुशादगी हो।

सानियन : ये कि रब तआला की तरफ से एक जिस्म मुरतिब और मुकम्मल किया जाये। ये अम्र किसी तरह हो मगर यकीन है कि शारहीन यहूद की इस तावील और तफसीर को रूहुल-कुद्दुस ने मंजूर किया और (इब्रानियों 10:5) आयत खत्म सबूत इल्हामी से इस तर्जुमे को मख्तूम (महर शूदा, बंद किया हुआ) कर के इस मज्मून की सेहत और अस्लीयत का मकब्ल वर हैं हो गई। “इसी लिए वो दुनिया में आते वक़्त कहता है कि तू ने कुर्बानी और नज़र को पसंद ना किया बल्कि मेरे लिए एक बदन तैयार किया।”

हासिल कलाम : खुसूसीयत इस गिला व शिक्वे की यही है कि खुदावंद ने जो कुछ अपने अस्ल वजूद की हकीकत के बाब में और अपने इस आलम-ए-शुहूद में मुजस्सम होने के मकासिद और मुतालिब के बाब में फ़रमाया था, इस बयान कुल्ली में रब तआला के नाम पर यानी उस की ज़ात व सिफ़ात पर मुद्दई होता चला आया, ना बतौर अदना और मिजाज़ी, बल्कि बतरीक आला और हकीकी जैसा खुदा तआला ने उस के रुतबे और वजूद कार अज़ हज़रत मूसा पर ज़ाहिर और कशफ़ फ़रमाया था, “तुम उस के आगे होशयार रहना और उस की बात मानना। उसे नाराज़ ना करना क्योंकि वो तुम्हारी खता नहीं बख़शेगा इसलिए कि मेरा नाम उस में रहता है।” (खुरूज 23:21)

ऐ साहिबो इस आयत पर खूब गौर व लिहाज़ करना मुस्तहब (पसंदीदा) बल्कि वाजिब है कि वह मालिक मीसाक़ और ज़ामिन अहद कौन है कि खताओं का हल व अक़द (निकाह) उस के इख़्तियार में है। और जो अपने क़ौल व कलाम के उदूल करने वालों के लिए बमुक़ाम मलके मीसाक़, मलके क़हर और मलक-उल-मौत बन जाता है। आप ही क़ाज़ी और मुफ़्ती हो कर इस बड़े मुक़द्दमे का इन्फ़िसाल कर के इस बात के क़ाइल हो जाओगे कि ये खता का अक़द व हल करने वाला कोई दूसरा नहीं, मगर वही जिसने अपने हवारियों को भी इख़्तियार बख़्शा कि मेरा नाम लेकर खता-कारों को अता व अफ़ु-ए-गुनाह से बहरावर या बे-बहरा करें। जैसे मती की इंजील में लिखा है :- “मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो कुछ तुम ज़मीन पर बाँधोगे वो आस्मान पर बंधेगा और जो कुछ तुम ज़मीन पर खोलोगे वो आस्मान पर खुलेगा।” (मती 18:18)

अब ज़रा और भी उस अजीब इतिफ़ाक़ पर जो ज़बूर की पेशीनगोइयों और वाक़ियात इंजील में साबित है, तफ़सील वार दलील दीनी, सलाह है। खुसूसुन उन सवानिह के हक़ में जो मसीह की उम्र अंजहानी के आख़िरी औकात में सरज़द हुए। ये ज़ेल में बयान हैं।

<p style="text-align: center;">आयात मज़ामीर दाऊद</p>	<p style="text-align: center;">आयात इंजील मुक़द्दस</p>
<p style="text-align: center;">अव्वल</p> <p>¶वो मेरे कपड़े आपस में बाँटते हैं और मेरी पोशाक पर कुरआ डालते हैं।” (ज़बूर 22:18)</p>	<p style="text-align: center;">अव्वल</p> <p>¶जब सिपाही यसूअ को मस्लूब कर चुके तो उस के कपड़े लेकर चार हिस्से किए। हर सिपाही के लिए एक हिस्सा और उस का कुर्ता भी लिया। ये कुर्ता बिन सिला सरासर बुना हुआ था। इसलिए उन्होंने आपस में कहा कि उसे फाड़ें नहीं बल्कि इस पर कुर्ता डालें ताकि मालूम हो कि किस का निकलता है। ये इसलिए हुआ कि वो नविश्ता पूरा हो जो कहता है उन्होंने ने मेरे कपड़े बांट लिए और मेरी पोशाक पर कुर्ता डाला।” (युहन्ना 19:23,24)</p>
<p style="text-align: center;">दुवम</p> <p>¶उन्होंने ने मुझे खाने को इंदारयन भी दिया और मेरी प्यास बुझाने को उन्होंने मुझे सिरका पिलाया।” (ज़बूर 69:21)</p>	<p style="text-align: center;">दुवम</p> <p>¶पित मिली हुई मय उसे पीने को दी मगर उस ने चख कर पीना ना चाहा।” (मत्ती 27:34) “सिपाहीयों ने भी पास आकर और सिरका पेश कर के उस पर ठट्ठा मारा और कहा कि अगर तू यहूदीयों का बादशाह है तो अपने आपको बचा।” (लूका 23:36,37)</p>
<p style="text-align: center;">सोइम</p>	<p style="text-align: center;">सोइम</p>

<p>¶वो सब जो मुझे देखते हैं मेरा मजाक उड़ाते हैं, वो मुँह चिढ़ाते। वो सर हिला-हिला कर कहते हैं अपने को खुदावंद के सपुर्द कर दे, वही उसे छुड़ाए, जबकि वो उस से खुश है तो वही उसे छुड़ाए।” (जबूर 22:7,8)</p>	<p>इसी तरह सरदार काहिन भी फ़कीहों और बुजुर्गों के साथ मिलकर ठट्ठे से कहते थे, इस ने औरों को बचाया, अपने तई नहीं बचा सकता... इस ने खुदा पर भरोसा किया है अगर वो उसे चाहता है तो अब इस को छुड़ा ले क्योंकि इस ने कहा था मैं खुदा का बेटा हूँ।” (मत्ती 27:41-43)</p>
<p style="text-align: center;">चहारुम</p>	<p style="text-align: center;">चहारुम</p>
<p>¶ऐ मेरे खुदा ! ऐ मेरे खुदा ! तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी मदद और मेरे नाला व फ़र्याद से क्यों दूर रहता है?” (जबूर 22:1)</p>	<p>¶और तीसरे पहर के करीब यसूअ ने बड़ी आवाज़ से चिल्लाकर कहा एली-एली लमाशबकतनी? यानी ऐ मेरे खुदा ऐ मेरे खुदा तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया।” (मत्ती 27:46)</p>
<p style="text-align: center;">पंजुम</p>	<p style="text-align: center;">पंजुम</p>
<p>¶वो मेरे हाथ और मेरे पांव छेदते हैं। मैं अपनी सब हड्डियां गिन सकता हूँ। वो मुझे ताकते और घूरते हैं।” (जबूर 22:16,17)</p>	<p>¶फिर एक और नविश्ता कहता है कि जिसे उन्होंने छेदा उस पर नज़र करेंगे।” (युहन्ना 19:37)</p>
<p style="text-align: center;">शश्म</p>	<p style="text-align: center;">शश्म</p>
<p>¶मेरी कुच्चत ठीकरे की मानिंद खुशक हो गई और मेरी ज़बान मेरे तालूओ से चिपक गई और तू ने मुझे मौत की खाक में मिला दिया।” (जबूर 22:15)</p>	<p>¶इस के बाद जब यसूअ ने जान लिया कि अब सब बातें तमाम हुईं ताकि नविश्ता पूरा हो तो कहा कि मैं प्यासा हूँ।” (युहन्ना 19:28)</p>
<p style="text-align: center;">हफ़्तुम</p>	<p style="text-align: center;">हफ़्तुम</p>

<p>□मुझसे बेसबब अदावत रखने वाले मेरे सर के बालों से भी ज़्यादा हैं। मेरी हलाकत के ख्वाहां और नाहक दुश्मन ज़बरदस्त हैं पस जो मैं ने छीना नहीं मुझे देना पड़ा।” (ज़बूर 69:4)</p>	<p>□पीलातुस ने सरदार काहिनों और आम लोगों से कहा मैं इस शख्स में कुछ कसूर नहीं पाता।” (लूका 23:4) □देखो मैं ने तुम्हारे सामने ही उस की तहक्रीकात की मगर जिन बातों का इल्जाम तुम उस पर लगाते हो उन की निस्बत ना मैं ने उस में कुछ कसूर पाया। ना हीरोदेस ने।□ (लूका 23:14,15)</p>
हशतम	हशतम
<p>□मैं अपनी रूह तेरे हाथ में सौंपता हूँ। ऐ खुदावंद सच्चाई के खुदा तू ने मेरा फ़िद्या दिया है।” (ज़बूर 31:5)</p>	<p>□फिर यूसूअ ने बड़ी आवाज़ से पुकार कर कहा ऐ बाप मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ और ये कह कर दम दे दिया।” (लूका 23:46)</p>
नह्य	नह्य
<p>□वो उस की सब हड्डीयों को महफूज़ रखता है। उन में से एक भी तोड़ी नहीं जाती।” (ज़बूर 34:20)</p>	<p>□ये बातें इसलिए हुई कि ये नविश्ता पूरा हो कि उस की कोई हड्डी ना तोड़ी जाएगी।” (युहन्ना 19:36)</p>

वाजेह हो कि इस आखिरी अम्र से एक आदत मशहूर और माअरुफ़ यहूद पर इशारा है। चुनान्चे जो शख्स दिन-भर मस्तूब रह कर इस कद्र बदन की तकवियत रखते थे कि उनकी जान बईना साबित व कायम रहती थी और करीबु-उल-वफ़ात होने की साफ़ अलामतें दिखाई नहीं देती थीं, तो उन मस्तूबों को ऐसा सख्त मज़रूब करते थे कि बदन से फ़ौरन जान निकल जाती थी। इस तरह जल्लादों का काम भी जल्दी से तमाम होता था और वो मुजरिम

मुद्दत की जान कुंदनी के दर्द से मख़िलसी पाकर जान देता था। इलावा अज़ां ईद फ़स्ह के एक कायदा मूसवी पर भी इशारा है, जिसका इशारा बतकरीर व ताकीद तमाम तौरैत में मिलता है, “ना तुम उस (बर्दा) की कोई हड्डी तोड़ना।” (ख़ुरूज 12:46) इस हड्डी के तोड़ने की मुमानिअत एक तम्सील नसीहत-आमेज़ ब-आँ मअनी थी कि फ़र्ज़ है जितने-जितने शख्स एक एक घर में इस पाक ईद के दस्तर ख़वान पर बैठे थे उन की रिफ़ाक़त में कुछ फूट और शिगाफ़ ना हो। और फिर भी इस रिफ़ाक़त की यगानगत और इस्तिकरार का खुद ज़बीहा भी निशान था और इस अंदरूनी और बाहम चस्पीदगी का जो खुदावंद मसीह के बदन मिजाज़ी के उज़ूओं के साथ मामूर है। और उस रिआयत व मुहाफ़िज़त का भी जिससे खुदावंद उन्हें खौफ़ व खतरे से रिहाई व खुलासी देता है।

चुनान्चे बाला ज़बूर में मर्कूम है कि वो उस की सारी हड्डीयों का निगहबान है। और ये बात यकीनन काबिले लिहाज़ है कि रूहुल-कुद्दुस ने जिस कद्र बज़बान अम्बिया इन आखिरी दुखों और आज़ारों के वाक़ियात को कश्फ़ और जाहिर किया। सो उनमें एक भी क़लील व ज़लील ना जाना, सभी में राज़ व रम्ज़ इबरतन नसीहत-आमेज़ पोशीदा रहे। जिस बात का ये अम्र बुरहान और निशान है कि चारों कुतुब समावी में से तीन किताबों के बीच जो इस इस्तिख़वान के तोड़ने की मुमानिअत माअरुफ़न व मशहूर न पाई जाती है। तो इस अम्र क़लील में भी क़वी सबूत और दलील है उस क़रीब इतिफ़ाक़ और इतिसाल और रिश्ता व राब्तदारी पर जिससे कुल कलाम-उल्लाह अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा तबका ब तबका बाहम मिलता जाता है।

और उन आयतों से एक और वज़नी और दिल-सोज़ ताअलीम मिलती है कि खुदावंद मसीह के बदन हकीक़ी और मिजाज़ी में क्या ही पूरी मुवाफ़ि़क़त

हैं। और बिलाशुब्हा इस इतिहाद और इतिफ़ाक़ पर जो शख्स ब तयक्कुन तमाम इस्तिकरार पाए तो कलाम-उल्लाह की तशरीह और तफ़सीर में हज़ार-हा मुश्किलात और मसाइल हल हो जाएंगे। चुनान्चे मुदब्बिर आला के इस खास ईलाज और तदारुक के जो वसीलात नजात हैं। उन के ऐन मुबादी (मब्दाअ की जमा, इब्तिदा) और हक्रायक़ में से एक यही अम्र है, मसलन अगर ज़रा भी सोच व ग़ौर हो तो साफ़ मालूम होगा कि ख़ुदावंद मसीह के दोनों बदन यानी हकीकी व मिजाज़ी मज़्लूम और मज़रूब होने और मौरिद लअन व तअन व मज़ाह व शमातत (किसी के नुक़सान पर ख़ुश होना) होने से बराबर नसीबवर रहे। और हर दोनों के लिए ख़ैर ख़वाही का मुबादला सिर्फ़ कीना-परवरी और ख़ुसूमत उठानी पड़ती है और दोनों के लिए ज़िल्लत और पस्त हाली और ज़ाहिरी शिकस्त व तबाही और मौत की राह आख़िर को फ़त्हयाबी और फ़ीरोज़मंदी और जलाल रसां है। सबसे स्याह ग़माम और घने बादलों में से नियम रोज़ी का आफ़ताब तमोज़ पदीद (वाज़ेह गर्मी) व रोशन होता है। सबूत इस तक़रीर का वो शख्स आसानी से पा लेगा जो (ज़बूर 44 को ज़बूर 45) के साथ मुकाबला करेगा। अज़बस कि (ज़बूर 44) में मुतकल्लिम निहायत ग़म व रन्ज में गर्क होने और ज़ालिमों की तलवार से मक्तूल होने वाले की आवाज़ें निकालता और फ़र्याद-रसी करता है। और वही शख्स (ज़बूर 45) में रौनक अफ़ज़ा और मुतजल्ली व मिताली होकर शुक्र व शादयाने के गीत गाता है और उस का रुत्बा फ़त्हयाब और महमूद और सतूदा बादशाह का रुत्बा हो गया। और इस गवाही की मानिंद सैकड़ों और शहादतें मज़ामीर के अहाते के अंदर इस हुज्जत व तक़रीर को कैद रखती हैं। इंशा-अल्लाह तआला ख़ुदा की तदाबीर कुल्लिया के जिन हिस्सों से अम्बिया मुस्तफ़ीज़ और उन के इज़हार इल्हामी से मुतवक्किल हो गए हैं, किसी दूसरी किताब में मुफ़स्सिलन बयान हो जाएगा।

बाब शश्म

दर बयान पेशगोई हाय मज़ामीर शरीफ़ दरबाब
बर्खास्तन खुदावंद मसीह अज़ मुर्द-गान व सऊद
करदनश अज़ हमगी आस्मानहा

در بیان پیش گوئی ہائے مزامیر شریف در باب برخاستن خداوند مسیح از مُردگان و صعود

کردنش از ہمگی آسمانها

अगर बावजूद हुज्जत व दलालत बाला शायद कोई मोअतरिज़ इस बात की ताईद करे कि वो मर्द-ए-गम व अलम जिसकी कैफ़ीयत व खुसूसीयत जबूरों में माअरूफ़ है, सो वो एक शख्स है और साहब फ़ुतूहात और खुदावंद जलाल कोई दूसरा है। और जमा होना उन नकीज़ैन सूरी (ज़ाहिरी) और जिद्दीन जाहिरी का यानी सूरत, तजल्ली और फ़िरोतनी और मदह व ज़म (बुराई, मज़म्मत) का एक शख्स के अंदर एक वक़्त में मुहाल है। तो उस और इस की मानिंद सवालात और एतराज़ात का एक जवाब काफ़ी व वाफ़ी ये है कि ये सब तदाबीर व तजाविज़ ईलाही जो आदमज़ाद की नजात से मुताल्लिक़ हैं, इस लायक़ नहीं कि फ़क़त मुजरिद अक़ल-ए-इंसानी ही की जरीब से उनकी पैमाइश की जाये। अज़ीं जहत कि इस तरह सिर्फ़ ऐसी बातें इदराक में आ सकती हैं जिन्हें अपने तंग दायरे और अहाते के अंदर रखता है और जिनकी आजमाईशें अपनी तजुर्बेकारी से की हैं ओर जिन्हें आप ही से मौजूद और पैदा कर सकता है। बरअक्स इस के कलिमतुल्लाह (كلمته الله) के वजूद और अहवाल

और कमालात और अफ़आल के राज़ बिल्कुल बे मिसाल व बेमानिंद हैं। और अक्सर मुद्दआत आलम ग़ैर मुरई (यानी जिसका वजूद हो लेकिन दिखाई ना दे, जिसको देखा ना जा सके) में से हैं और मज़ामीन एतिक़ाद ये में दाखिल हैं।

ये जवाब आम अगरचे काफ़ी है, लेकिन इस के सिवाए एक और जवाब रासिख व मूजिब यकीन है कि मर्तन-कर्तन एक ही ज़बूर में वही एक मुतकल्लिम हर दो हालात और मुरातिब को अपनी तरफ़ महमूल करता है, यानी फ़ना व ज़वाल और बक्रा व हय्युल-कय्यूम व वजूद मुतलक़ की शान। यकीन है कि ये इसरार ब-आसानी तमाम इन्किशाफ़ व इन्हिलाल के काबिल हैं। लेकिन ऐसे शख्सों के लिए जो रूह हक़ की तौफ़ीक़ व तन्वीर से इस अव्वल और अस्ल राज़ की मुमय्यज़ और मुद्रिक (समझने वाला, दाना) हो गए कि जो कामिल इन्सान सानी है, वही खुदावंद आस्मान पर से भी है। और ज़अफ़ व मांदगी व तिश्चगी और बाक़ी सब हवादिस और अवारिज़ इन्सानी में जो इंजील के अंदर बयान होते हैं, सिर्फ़ इन्सान पर इतलाक़ है। ये उमूर उस की उलूहियत पर काबिले इतलाक़ नहीं हैं, बल्कि इस जिस्मियत और बशरीयत पर, जिसके सब लवाज़मात और मुल्हक़ात ग़ैर अज़ गुनाह तहम्मूल किए थे। और वारा (पीछे) हिजाब इस जिस्मियत के अपने नूर रब्बानी की तजल्लियात को अक्सर औकात पोशीदा किया और खुदा तआला की मर्ज़ी और मुकर्ररी इरादत ये थी कि इस खुदावंद की उम्र के अहवालों में और कलीसिया की अन्जहानी मुसाफ़िरी तवारीख़ के दर्मियान ये ज़ाहिरी नक़ीज़ैन यानी ज़अफ़ इन्सानी और कुदरत यज़दानी बाहम मुकारिब किए जाएं और इस तकारुब ही के ज़रीये से उनका साफ़ इज़हार हो। मसलन मौत व फ़ना व ह्यात व बक्रा के मुकाबिल आखिरुल-अम्र उन में ऐसा कुर्ब हो कि मौत हयात में और फ़ना

बक्रा में मुस्तगर्क व माअदूम हो जाएगी। पोलुस रसूल का ये बयान कि “फ़त्ह ने मौत को निगल लिया।” (1 कुरंथियो 15:57)

पुर अफ़सोस है कि बाअज़ मोअतरिज़ अपना इनाद व तास्सुब खुसूसुन इसी अम्र में साफ़ ज़ाहिर व आशकारा करते हैं कि इस सूरी और ज़ाहिरी शिकस्त की तरफ़ बसरो चश्म निगाह करते हैं। और ब होशयारी तमाम उस की तरफ़ अपने रफ़ीकों और मोअतकिदों को मुतवज्जा करते हैं, पर हर एक आयत से जो उस खुदावंद के बर्खास्त और सऊद जलाली और उस की फ़ीरोज़ी और फ़त्हयाबी और हुक्मरानी पर दाल व शाहिद है, गोया चश्मपोशी या तज़लील व तक्रज़ीब करते हैं या ये कि उन आयात को ग़ैर सही और ग़ैर मोअतबर जानते हैं। और लोग उस और इस की मानिंद और शहरा आफ़ाक़ इलाजों से मुन्कतेअ हो कर और पेचिशों और रूबाह बाज़ीयों (फ़रेब) की तरफ़ रूजू लाकर एक किस्म की आयात यानी ख्वारी व ज़िल्लत के इज़हार करने वालों का मिस्ताक़ खुदावंद मसीह को बताते हैं और आयात दीगर को जो फ़त्हयाबी व हुक्मरानी और शहनशाह आलम पर मुश्तमिल हैं, अपने मतलब के लिए तास्सुब की राह से मुहम्मद ﷺ की तरफ़ आइद करते हैं।

चुनान्चे इस तरह अक्सर बातों में खुदा तआला के मुखालिफ़ और मुकाबिल गोया दस्त ब कब्ज़ा खड़े हो कर उस रब तआला की हिक्मत आमैज़ रिआयत को हीच व बातिल जान कर रद्द व नेस्त करना चाहते हैं। इस बहाने को पेश कर के कि हमारा मज़हब अक्ल में महदूद नहीं, बल्कि ऐसी अजाइब व गराइब हिक्मत और आली मआनी और इसरार ग़ैब पर मुश्तमिल है जो इन्सान की कुव्वत और क्रियास मुजरिद से बैरून व बरतर हैं। हर-चंद कोई बात वाजिब और माअकूल इस से बढ़कर नहीं कि खुदा के इरादात और हक़ायक़ वजूद को खुदा आप ही सबसे बेहतर जानता है और क़ौल हकीक़ी से

उनका बयान करता है। और जब कि खुदा खुद ही बोले तो हमको खामोश और आजिज़ रहना फ़र्ज़ है और यकीन है कि खुदा तआला अपनी अश्या के हक़ में हमारी नाकिस अक़लों से हरगिज़ सलाह लेने का हाजतमंद नहीं, मगर हम निहायत हाजतमंद उस के हैं कि वो अपने फ़ज़ल से हमको हिदायत करे और बीना और मुनव्वर फ़रमाए।

अब ज़रा इन बातों से फ़ारिग़ हो कर उन आयतों के गौर व मुलाहज़ा से जो खुदावंद मसीह की ज़िल्लत व ख़वारी की मज़हर व माअरफ़ हैं, फ़ैज़याब हों, और उन की तरफ़ माइल हो कर इल्तिफ़ात करें, जो उस की बर्खास्त और सऊद जलाली और तख़्तनशीनी दस्त रास्त पर और उस की सल्तनत के फ़ज़ाइल व रौनक व फ़वाइद के तमाम आलम में मुंतशिर होने पर दाल और शाहिद हैं। खुसूसुन उन की तरफ़ जिनकी तशरीह सहफ़ इंजील में पाई जाती है। चुनान्चे पोलुस तीन मुख्तलिफ़ ज़बूरों में से मसीह की बर्खास्त अज़ मुर्दगान की खास शहादत रसूलों के आमाल की किताब में पेश करता है, “और हम तुम को उस वाअदे के बारे में जो बाप दादा से किया गया था ये खुशख़बरी देते हैं। कि खुदा ने यसूअ को जिला कर हमारी औलाद के लिए इसी वाअदे को पूरा किया। चुनान्चे दूसरे मज़मूर में लिखा है कि तू मेरा बेटा है। आज तू मुझसे पैदा हुआ। और उस के इस तरह मुर्दों में से जिलाने की बाबत कि फिर कभी ना मरे उस ने यूं कहा कि मैं दाऊद की पाक और सच्ची नेअमतें तुम्हें दूंगा। चुनान्चे वो एक और मज़मूर में भी कहता है कि तू अपने मुक़द्दस के सड़ने की नौबत पहुंचने ना देगा।” (आमाल 13:32-35) देखो कैसी दिल तराश हुज्जतों और शाफ़ी बुरहानों से पतरस ने मसीह की क्रियामत अज़ मुर्दगाँ को साबित किया। और इनमें उस पेशीनगोई को जो दाऊद के (ज़बूर 16) में शामिल है, नक़ल कर के यहूद की मजलिस कलां के अस्हाब में ऐसा खातिर

नशीन किया कि वो मजबूर और लाजवाब हो कर निहायत छिद गए और इस अम्र वाकई के जो मदार ईमान है, काइल हो गए। चुनान्चे इस मुकद्दस ने अपनी तकरीर में फ़रमाया कि, “ऐ भाईओ ! मैं क्रौम के बुजुर्ग दाऊद के हक़ में तुमसे दिलेरी के साथ कह सकता हूँ कि वो मरा और दफ़न भी हुआ और उस की कब्र आज तक हम में मौजूद है। पस नबी हो कर और ये जान कर कि खुदा ने मुझसे क़सम खाई है कि तेरी नस्ल से एक शख्स को तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा। उस ने पेशीनगोई के तौर पर मसीह के जी उठने का ज़िक्र किया कि ना वो आलम-ए-अर्वाह में छोड़ा गया ना उस के जिस्म के सड़ने की नौबत पहुंची।” (आमाल 2:29-31)

शायद किसी के दिल में ये इश्तिबाह और सवाल पैदा हो कि वो वाअदा दाऊदी जिसकी खास इस्तिक़ामत और ज़मानत खुदा की रहमत और अमानतदारी है। क्यों इस मज़ीद इख़्तिसास से मसीह की बर्खास्त पर सादिक़ आता है और उस में ईफ़ा होता है। तो इस बात का बाइस बदाहत अक़ल से बईद नहीं। चुनान्चे में ये अर्ज़ करता हूँ कि खुदा की कलीसिया के औकात सल्फ़ व खल्फ़ में कौन से वक्त इस वाअदे के फ़रामोश और नस्ख व नाबूद होने की इतनी दहशत हो सकती थी, जैसे कि खुदावंद मसीह की वफ़ात व तदफ़ीन के वक़्त हुई। और किस वक़्त खुदा की रहमत व अमानतदारी का इतना क़वी वसूक (यक़ीन) और ईक़ान (यक़ीन होना) और इज़हार हो गया, जैसा उस साअत जलाली में था। जब कब्र का फ़त्हुल्बाब (लुब की जमा, अक़लें) हो गया और खुदावंद मसीह ने मौत की जंजीरों को काट कर और मुद्दत-ए-मदीद के कैदीयों को ख़लास कर के आलम में शम्स नूर अफ़ज़ तुलूअ किया और ममलकत खुदा को अलल-दवाम (हमेशा हमेशा के लिए) करार व कियाम बख़शा।

और अगर हम दूसरे ज़बूर के मज़मून पर ज़रा गौर करें तो देखें कि उस का मंशा और फ़हवा-ए-कलाम (बात का मतलब, गुफ्तगु का अंदाज़) मुजम्मलन वही है, जो मंशा कुल किताब मज़ामीर का है। यानी बाद ज़ाहिरी शिकस्त के हक़ीक़ी फ़हयाबी और बाद ज़ाहिरी मौत व इंतिकाल के बर्खास्त और बाद शोरिश व हुजूम के वो राहत व आराम जो मुल्कों में अक्सर दाइम व मुस्तकर हुआ करता है। बादअजां कि सब मुफ़सिद और बद-ख्वाह सरनिगों होकर हल्का-बगोश हो जाते हैं। और लाबुद इस दूसरे ज़बूर से साफ़ मफ़हूम होता है कि बाइस और मूजिब और मूजिद (इजाद करने वाला, बानी) इस हालत इस्तिराहत और आराम का एक इर्शाद शरीफ़ खुदा-ए-हुमायूँ है, जो खुदा तआला की तरफ़ से सादिर हुआ। इस के इब्ने वहीद यसूअ मसीह की बाबत “मैं उस फ़रमान को बयान करूँगा, खुदावंद ने मुझसे कहा तू मेरा बेटा है, आज तू मुझसे पैदा हुआ।” (ज़बूर 2:7) जिसमें इशारा ना उस तव्वुलुद बेनज़ीर और बेमिसाल की तरफ़ है जो कब्ल अज़ ज़मान और बईद अज़ मुक़ाम था। और जिसकी निस्बत हज़रत मीकाह नबी फ़रमाता है कि, “उस (मसीह) का मुसद्दिर ज़माना-ए-साबिक़ हॉ क़दीम-उल-अय्याम से है।” (मीकाह 5:2)

पर उसी तव्वुलुद सानी की तरफ़ जिससे तव्वुलुद अक्वल पर ख़त्म व सौक़ (यक़ीन) लगा है, यानी वो तव्वुलुद कि रहम अर्ज़ से था जो बर्खास्त अज़ मुर्दगान है। बमूजब इस क़ौल के जो रसूलों के आमाल के 13 वें बाब में मज़कूर है और जा-ब-जा कलाम-ए-ख़ुदा में बताकीद और बक़सत इस बात पर शहादत सरीह है कि क्रियामत और हयात ख़ुदा की जितनी सूरतें हैं, सबकी सब ख़ुदावंद मसीह की इस क्रियामत अज़ मुर्दगान पर मुन्हसिर हैं। चुनान्चे आप ही फ़रमाया कि, “क्रियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ।” (युहन्ना 11:25) और कुतुब अम्बिया के मुतालआ करने वालों पर मशहूद है कि जिन-जन

मुकामों में खुदा की कलीसिया के हाल या इस्तिकबाल की तबाह हाली और पज़मूर्दगी का बयान है, उन्हीं मुकामों के माक़बल और माबअद एक नए तव्वुलुद और क्रियामत का ज़िक्र-ए-दिल पज़ीर है, ताकि उम्मीद यकीनी और क़वी पैदा हो कि आक़िबत इस तबाही और मौत की बेफ़ाइदा नहीं है, बल्कि सआदत व बक्रा है।

और वो तव्वुलुद और क्रियामत इस वजह से बताई गई कि वो कलीसिया आम्मा की भी है और एक शख्स खास की भी, जिसके साथ वो पाक जमाअत वाबस्ता और निहायत मुत्सिल (मिला हुआ, नज़दीक) होकर उस की कुर्बत (नज़दीकी) में कायम और उस की हयात से ज़िंदा रहती है और उस की क्रियामत में शामिल-ए-हाल हो कर अलि-उल-दवाम बाकी और मुस्तक़ीम रहती है। यानी खुदावंद मसीह ही की क्रियामत में कायम होती है। कोई तालिब खुदा ऐसा ना जाने कि बग़ैर खुदा की हिकमत व रिआयत के यहूद के मुहक्किनी की तरफ़ से नज़्म व नस्क़ बा करीना (बहमी ताल्लुक) उसी तौर पर था, जिस तौर पर कि मसीह के तव्वुलुद का ज़िक्र उस सहीफे शरीफ़ के शुरू में बड़े संजीदा और दिल तराश अक्वालों में दर-पेश आता है, ताकि गाफ़िल और सुस्त दिल आदमी गोया बर्क़ व रअद (बिजली और कड़क) की सी आवाज़ से मुतहय्यर हो कर और इस इर्शाद ईलाही के कौल की तरफ़ इल्तिफ़ात कर के मालूम करें कि खुदा की ममलकत का वो सबूत और पुख़्ता बुनियाद कौन सी है, जिसके सबब हर-चंद चारों तरफ़ से डाह (कीना, दुश्मनी) और मख़्फ़ी (छिपी) कीनावरी और खुसूमत जाहिरी की वो मुख़्तलिफ़ा और मतअद्दा सूरतें जो बाकी ज़बूरों में बयान होती हैं, उस पर सदमा और हमला करें, तो भी वो कलीसिया जब तक क्रियामत मसीह के ईमान से मुन्हरिफ़ ना हो इस पर कायम व दाइम रहे। हर एक मौत पर नई क्रियामत से नसीब-वर हो जाएगी

और खालिक व परवरदिगार आलम के वाअदे रासिख और वासिक में पनाह लेकर हज़ार-हा सदमों और ज़र्बों को खाए, लेकिन जन्बीदह और मुतज़लज़ल ना हो, चेह (किया) ज़िक्र नेस्त और नाबूद होने का।

सच तो ये है कि बाज़-औकात और ज़मानों में इस तव्वुलुद और इब्नीयत अज़ली की खबर और बयान मुदब्बिर आला और हमा दान के मख्फ़ी (छिपी) इसरारों में पोशीदा और मखज़ून (खज़ाना में रखा गया, शामिल खज़ाना) रहती है। पर बाअज़ ऐसे वज़नी औकात भी हुए हैं जिनमें उस की खबर या तो अफ़्वाज समावी या बनी-आदम के रूबरू कश्फ़ और ज़ाहिर की गई है। मसलन आफ़रीनश आलम के वक़्त जब अजराम-ए-फल्की और अजसाम सिफ़ली नेस्त से हस्त व वजूद में आए तो क्रियास गालिब है कि तब इस सर्र ग़ैब का कुछ खास इन्किशाफ़ हो गया। चुनान्चे हज़रत सुलेमान के अम्साल में रक़मज़द (लिखा) है, “कौन आस्मान पर चढ़ा और फिर नीचे उतरा? किस ने हवा को अपनी मुट्ठी में जमा कर लिया? किस ने पानी को चादर में बाँधा? किस ने ज़मीन की हद्द ठहराई? अगर तू जानता है तो बता उस का क्या नाम है और उस के बेटे का क्या नाम है? खुदा का हर एक सुखन (कलाम, शेअर, बात) पाक है। वो उन की सिपर है जिनका तवक्कुल उस पर है।” (अम्साल 30:4,5) सानियन, मसीह के बर्खास्त का वक़्त उन मवाक़ेअ और औकात में से था, जिनमें वो इब्नीयत का राज़ ज़्यादा फ़ाश और लाहिजाब हो गया। चुनान्चे रसूल रोमीयों के ख़त में फ़रमाता है, “अपने बेटे हमारे खुदावंद यसूअ मसीह की निस्बत वाअदा किया था जो जिस्म के एतबार से तो दाऊद की नस्ल से पैदा हुआ। लेकिन पाकीज़गी की रूह के एतबार से मुर्दों में से जी उठने के सबब से कुदरत के साथ खुदा का बेटा ठहरा।” (रोमीयों 1:3,4) और

वो दलील दूसरे ज़बूर की तक्रीर बाला से कवी और मुईद (ताईद किया गया) है।

अज्ञानरो कि अगर हम इस ज़बूर के शुरू पर ज़रा गौर करें तो करीनह-ए-कलाम और सिलसिला खयालात से साफ़ मालूम होता है कि मिस्ताक़ इस पेशगोई का सिवाए खुदावंद मसीह के कोई दूसरा नहीं हो सकता। क्योंकि वो मन्सूबा बांधना बिल-इतिफ़ाक़ ग़ैर कौमों और बनी-इस्राईल का, जिसका जोश व ख़रोश और शोर व गुल खुदा तआला और उस के मसीह पर सदमा करते हुए बताया जाता है, ये कब वक़्त में आया, मगर उस वक़्त जब इन दोनों यानी मख़्सूस कौम और ग़ैर कौम ने मिलकर शरीर हाथों से इस हयात के पेशवा को क़त्ल किया और इस जोशो व ख़रोश के मुकाबिल और इस शोर व गुल की आड़ में कब वो अम्र शरीफ़ रब तआला की तरफ़ से सादिर हुआ कि “मैं तो अपने बादशाह को अपने कोहे-ए-मुक़द्दस सीय्योन पर बिठा चुका हूँ। (ज़बूर 2:6) मगर उस सुबह मुबारक को जब दो फ़रिश्तों बर्क़ लिबास ने तरसाँ व हिरासाँ औरतों से जिन्हों ने खुदावंद की क़ब्र खुली और ख़ाली पाई थी, मुतकल्लिम हो कर फ़रमाया कि, [ज़िंदा को मुर्दाँ में क्यों ढूँढती हो? वो यहां नहीं बल्कि जी उठा है।” (लूका 24:5,6)

चुनान्चे उसी वक़्त से लेकर कलाम के मुनाद और बशीर बे-ख़ौफ़ी और पहलवानी से ममलकत खुदा और खुदावंद मसीह का इश्तिहार और इंतिशार मुल्क ब मुल्क करते हुए चले आए। और कुछ हसरत और दरेग़ इस बात में है कि अक्सर मुनाद इंजील इस हिन्दुस्तान के बीच खुदावंद मसीह की कहानत और रुत्बा नबुव्वत और फ़वाइद के बहुत इज़हार और बशारत देते हैं, पर उस के जलाल और बादशाहत की तशहीर कम करते हैं। अगर ये क़सूर और ग़लती उन की ख़ादमिय्यत में ना होती, यानी अगर वो खुदावंद मसीह की सल्तनत

के हकीकी हाल को ज़्यादा सफ़ाई और दिलेरी और फ़साहत से जाहिर करते और उन पेशगोइयों का भी जो उस पर दाल और मज़हर हैं, ज़्यादा तजस्सुस जद्वो जहद से करते तो बमुश्किल ऐसा ख़याल और क्रियास कुफ़्र आमेज़ बाअज़ अहले मुहम्मद की खातिर में दाख़िल होता कि तख़्त ईलाही और दस्त रास्त की नशिस्त-गाह पर से इस जलाल के ख़ुदावंद को माअज़ूल कर के अपने नबी साहब को करीब इस मकान के तख़्त नशीन और ताजदार करें।

बादअज़ां इस ज़बूर के अवाइल में एक फ़रमान कुदरत व कब्रियाई इस कादिर-ए-मुतलक़ और बादशाह आला की तरफ़ से सब आलमों में जारी किया जाता है। उस शहनशाह के हक़ में जिसने कोहे-सियोन के तख़्त जलाल पर जलूस फ़रमाया है, **“मैं उस फ़रमान को बयान करूँगा।”** (ज़बूर 2:7) वगैरह। इन सब वाक्रियात मज़कूर में साफ़ और सिलसिले-वार तर्तीब नज़र आती है। बाद बयान इस इतिहाद और इतिसाल मश्वरा के जो अहले रुम और अहले यहूद में ख़ुदावंद मसीह के मुकाबिल और मुखालिफ़ था, उन के मकुलों के इब्ताल (गलत साबित करना) का और ख़ुदावंद मसीह की सल्तनत के क्रियाम और इस्बात का ज़िक़र दर्मियान आता है और फिर बमूजब सियाक़ कलाम के इस सल्तनत के साथ इब्नीयत के इज़हार और इंतिशार का करीब ताल्लुक़ बताया जाता है। चुनान्चे रोमीयों के नाम ख़त से मालूम हुआ कि इस्तिदलाल क्रियामत ब इब्नीयत यानी क्रियामत के सबूत से इब्नीयत का साबित और मुबर्हन होना, कलाम-ए-ख़ुदा के उसूल ज़रूरीया में से है। और अक्सर मुक़ामात में मुफ़स्सिरों की राय के बमूजब एक तीसरा वक़्त बाल-इख़्तसास इस इब्नीयत और तव्वुलुद अज़लियत का मुसद्दिक़ व मज़हर है और इस कलाम ख़ुदा “मशारु” एलियह है जो पोलुस रसूल के इब्रानियों के नाम ख़त में मर्कूम है, यानी मसीह के दूसरे ज़हूर और आमद का वक़्त जो कबल अज़ रोज़-ए-

क्रियामत होगा। “और जब पहलौठे को दुनिया में फिर लाता है तो कहता है कि खुदा के सब फ़रिश्ते उसे सज्दा करें।” (इब्रानियों 1:6)

हम इस रिसाले के पांचवें बाब में बाअज़ नक़ली दलाईल (ज़बूर 118) में से इस बात के सबूत में लाए हैं कि खुदावंद मसीह की तज़लील और तसलीब ना बनी-इस्राईल सादिक और हकीकी की तरफ़ से हुई थी, बल्कि काज़िब (झूठे) की तरफ़ से, यानी इस्राईल बशरीयह से। चुनान्चे नस्ल काज़िब और सादिक की तफ़सील कुल कलाम-ए-खुदा में बहुत ताकीद व शदीद से है। और इस राज़ का बयान मुफ़स्सिल पोलुस रसूल के रोमीयों के नाम ख़त में मिलता है। जिसका दिल चाहे बाब 9 ग़ौर से पढ़ ले। और जैसी तज़लील और तसलीब वैसी ही क्रियामत जलाली और सऊद ब फ़ीरोज़ी पर दलालत वाज़ेह व सरीह (ज़बूर 118) में है। मसलन (ज़बूर 118:22,23) में लिखा है, “जिस पत्थर को मेअमारों ने रद्द किया वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया। ये खुदावंद की तरफ़ से हुआ और हमारी नज़र में अजीब है।□ जिन आयतों का खुलासा अज़हर-मिन-अशशम्स है, ना ये कि वो मेअमारों का मर्दूद पत्थर मसीह और सरज़ावीया मुहम्मद ﷺ है।

बमूजब ख़ाम ज़नीत (फुज़ूल ख़्याल) बाअज़ अशखास के जो इस्लाम हकीकी से नहीं, पर ये ऐन एक ही शख्स है जिसका शुरू मर्दूद और आखिर को सर ज़ावीया भी होना। हर दो बातें बराबर खुदा तआला के क़ज़ा व क़द्र के मज़ामीन से हैं। और मुबारक हैं वो ख़ल्क जो हज़रत इब्राहिम और दाऊद की माहूद बरकतों से नसीब-वर हैं। वो ख़ल्क जो अपने तजुर्बे से जानते कि खुदावंद मसीह की इस मौत व हयात में उम्र-भर शराकत और रिफ़ाकत क्या चीज़ है, जिसके ख़वास और फ़राइज़ रोमीयों के खत के छटे बाब में तशरीहन व तफ़सीलन रोशन व मुबय्यन हैं। और वो मौत और हयात (ज़बूर 118) में

पेशगोई की राह से बयान होती है। अज़-आनरो कि जमाअत अक्दस जो खुदावंद मसीह का बदन और मलकूत भी कहलाता है, कब्र की खुबस व जिल्लत व स्याही से बर्खास्त कर के इस ज़बूर के अंदर उसी गीत के ऐन तलफ़ुज को आरियतन (कर्ज़ के तौर पर, मांग कर) लेता है जिससे बहर-ए-कुल्जुम के उबूर करने के बाद मुसा और बनी-इसाईल ने खुदा तआला की अजीब कुदरतों की सताइशों और सना को ज़बान ज़द किया, “**खुदावंद मेरी कुव्वत और मेरा गीत है, वही मेरी नजात हुआ।**” (ज़बूर 118:14) और बिलाशुब्हा जिस दिन से कोई गरीब, नाचार, खताकार अपनी जान पर तरस खाकर और खुदावंद मसीह की क्रियामत का तयक्कुन पाकर उसी का हमराह होकर अपनी उम्म-ए-गुज़िशता की साल ख़ुर्दगी के सबब पज़मर्दगी से नई और जीते राह से ताज़ा हयात के लिए जी उठता है, तो इसी हाल में इस (ज़बूर 118:15,16) आयतें क्या ही ख़ूब पूरी हो जाती हैं, “**सादिकों के खेमों में शादमानी और नजात की रागनी है, खुदावंद का दहिना हाथ दिलावरी करता है, खुदावंद का दहिना हाथ बुलंद हुआ है।**” कि गोया मुक़द्दसों के मिस्कनों में उस फ़ीरोज़ी और फ़ल्हयाबी के सबब जो अफ़वाज शयातीन और मौत के अंदेशों और कब्र के होलों पर है, शादयाने की सदा सुनाई देती है। और आस्मानी और जमीनी पाक सरवदियों की आवाज़ बड़ी हम साज़ी और खुश इतिफ़ाकी से उस ज़बूर शरीफ़ के तहलीलों में मिलती है। और वो अपने इमाम और पेशवाए मुबारक के पसरू और मुक्त्तदी हो कर दरवाज़ा सदाक़त व सलामत में उस के पीछे हो लेते हैं। और चलते हुए ये कलिमा और इकरार शुक्र पढते हैं, “**मैं मरूंगा नहीं बल्कि जीता रहूंगा और खुदावंद के कामों का बयान करूंगा। खुदावंद ने मुझे सख्त तंबीया तो की लेकिन मौत के हवाले नहीं किया। सदाक़त के फाटकों को मेरे लिए खोल दो। मैं उन से दाखिल हो कर खुदावंद का शुक्र करूंगा। खुदावंद का फाटक यही है, सादिक इस से दाखिल होंगे।**”

(ज़बूर 118:17-20) देखो वो दरवाज़ा बहिश्त और बाब हयात है कि जिसकी हिरासत और ज़ीनहार (ताकीद के लिए, खबरदारी) के लिए इस तआला के इर्शाद से चलती तलवार मुकर्रर की गई, ताकि कोई खुबस आलूदा खल्क इस में मुदाखिलत ना पाए। अब वह दरवाज़ा क्या ही खूब मफ़तूह हो गया।

अज़ां जिहत कि सब मुक़द्दस उस के तवस्सुत से उस पर क़वी यक़ीन कर के जो क़ब्र के कुफ़ुल तोड़ कर फ़रमाता है, “मैं मर गया था और देख अबद-उल-आबाद ज़िंदा रहूँगा और मौत और आलम-ए-अर्वाह की कुंजियां मेरे पास हैं।” (मुकाशफ़ा 1:18) गोया उस की हशमत रब्बानी हो कर इस महल और हिसार रब्बानी के मुलाज़िम्ओं से वो इर्शाद कर सकते जो 19 वीं आयत में मर्कूम है। “सदाक़त के फाटकों को मेरे लिए खोल दो, मैं उन से दाखिल हो कर खुदावंद का शुक्र करूँगा।” (ज़बूर 118:19) इस ज़ुरत और बेखौफ़ी का सबब ये है कि खुदावंद ने आप ही अपनी कुदरत ईलाही के बमूजब यसअयाह की किताब में फ़र्मा दिया, “तुम दरवाज़े खोलो ताकि सादिक़ क़ौम जो वफ़ादार रही दाखिल हो।” (यसअयाह 46:2)

ये भी ज़रा ग़ौर व लिहाज़ के क़ाबिल है कि जब खुदावंद मसीह सर जावीया से इस ज़बूर में मुलक़क़ब है, तो इस से मालूम होता है कि ये कलीसिया जो कुल आलम की सब अक्वाम और क़बाइल में मुंतशिर फिरावाँ होती चली जाती है, एक इमारत बुज़ुर्ग और आलीशान से तश्बीह रखती है। और जैसे ओर सब का हाल है वैसे ही इस इमारत में भी तीन पत्थर मख़्सूस और मुम्ताज़ ज़रूर चाहीएँ, जिनकी इज़ज़त और रौनक और क़द्र उम्दा और अफ़ज़ल और अशर्फ़ है, यानी :-

(अव्वल) संग बिना (बुनियाद का पत्थर) जिससे इस्तिक़रार और मज़बूती इमारत को मिलती है

(दोम) संग ज़ावीया (कोने का पत्थर) जिससे उस के अजज़ा-ए-मुख्तलिफ़ा वाबस्ता और मरबूत होते हैं।

(सोम) संग क़ल्लिता (छोटे पत्थर) उल-मीनार जिससे ज़ेबाइश और तक्मील और ततमीम ज़ाहिर व अयाँ हो।

पस हमको जानना चाहिए कि मज़्लिस ख़ास मोमिनीन की इमारत के इन तीन संगों के मजमा औसाफ़ व ख़वास के बयान में ख़ुदावंद मसीह मशारु इलेयह है, यानी कलीसिया की बिना (बुनियाद) मसीह पर। ख़ुसूसुन उस की इब्नीयत और उलूहियत के इकरार पर क़ियाम और बाअद-अज़ां उस की मौत और क़ियामत अज़ मुर्दगान पर मब्नी है। और इसी इकरार पर क़ियाम और करार पाकर मरबूत और बाहम पैवस्ता भी है और उस की रूह के ख़साइल व फ़ज़ाइल से मामूर हो कर अपनी ज़ीनत व जमाल और तमाम व इख़तताम इस से लेती है। हाँ शहादत रसूल व अम्बिया से ये साफ़ व सरीह है कि पाक कलीसिया के सब कमालात इसी से मुस्तआर और मुस्तफ़ाद हैं। और वो जो पोलुस रसूल इफ़िसियों के ख़त में फ़रमाता है कि, “और रसूलों और नबियों की नींव पर जिसके कोने के सिरे का पत्थर ख़ुद मसीह यसूअ है तामीर किए गए हो।” (इफ़िसियों 2:20) तो फ़हवा-ए-कलाम ये नहीं कि रसूल व अम्बिया नफ़िसही बज़ातिह जमाअत मोमिनीन की बुनियाद हैं, बल्कि पेशतर वो इकरार और शहादत बुनियाद है जो मसीह की ज़िल्लत व क़िल्लत इन्सानी की और जलाल व अज़मत व कुदरत रब्बानी की नेअमत फ़ैज़ से उनको तफ़वीज़ व मर्हमत की गई। जिसका सबूत वो मशहूर इकरार और कलिमा है जिसे पतरस रसूल ने बाकी हवारियों के एवज़ ख़ुदावंद के हुज़ूर पढ़ा कि, “तू ज़िंदा ख़ुदा का बेटा मसीह है।” (मत्ती 16:16) कि वो क़ौल कबीर और बुजुर्ग जिस वक़्त उस मुक़द्दस की ज़बान से सादिर हुआ। ख़ुदावंद ने उसे उस रुत्बे मुम्ताज़ से

मुशरफ़ किया जिसका ज़िक्र मती की इंजील में मुंदरज है, [मुबारक है तू शमाउन बरयूनाह क्योंकि ये बात गोशत और खून ने नहीं बल्कि मेरे बाप ने जो आस्मान पर है तुझ पर ज़ाहिर की है, और मैं भी तुझसे कहता हूँ कि तू पतरस है और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा और आलम-ए-अर्वाह के दरवाजे उस पर ग़ालिब ना आएँगे।” (मती 16:17,18)

ये वाज़ेह व लाइह है कि जिस क़द्र रसूल मुबारक अपने इकरार की सफ़ाई और बे-खौफ़ी और इन्किशाफ़ आम्मा में फ़ौक्रियत रखता था, इसी क़द्र तक रुत्बे और दर्जे में भी फ़ज़ीलत ले गया। चुनान्चे किस शख्स का इकरार कभी ऐसा अफ़ज़ल हुआ, जैसा उस रसूल ने यहूद के रऊसा और ख़वास उम्मत के मुक़ाबिल अपने ख़िताब में दरपेश किया, जिसका बयान रसूलों के आमाल की किताब में लिखा है, “ये वही पत्थर है जिसे तुम मेअमारों ने हक़ीर जाना और वो कोने के सिरे का पत्थर हो गया। और किसी दूसरे के वसीले से नजात नहीं क्योंकि आस्मान के तले आदमीयों को कोई दूसरा नाम नहीं बख़शा गया जिसके वसीले से हम नजात पा सकें।” (आमाल 4:11)

ऐ यारो खुदा आप पर फ़ज़ल करके इस ईमान और ईकान को आप में खातिर नशीन करे कि हर कोई जो खुदावंद मसीह के वजूद और ज़ीस्त और कौल से मुन्क़तेअ और मुन्फ़सिल (जुदा, अलग) है, उस की हयात खुदा की हयात की निस्बत फ़ील-तहक़ीक़ मौत है। और हर-चंद आदमज़ाद के नज़दीक और अपनी दानिस्त में आप लोगों के मुरातिब और मदरिज आली और सतूदा हूँ। मसलन शैख-जी या हाजी जी या सय्यद जी या पीर-जी या मुर्शिद जी या अहले तक्रवा जी या फ़कीर जी या ग़ौस जी और मानिंद इन की वग़ैरह मुरातिब हों, पर तो भी अगर आप खुदा तआला के इस फ़ज़ल व शफ़क़त व रहमत के अहाते से जो खुद मसीह है बेरून (बाहर) रहें तो खुदा की कुर्बत (नज़दिकी)

और दीदार की उम्मीद बातिल और बेअस्ल है। बरअक्स इस के जो सबसे कलील और जईफ़ साहिब-ए-ईमान और हकीकत है, उस से इस बंदे का कौल बल्कि कसम तक भी है (क्योंकि खुदा की कसम शरीफ़ इस अम्र के कुबूल करने वाली है) कि तू हरगिज़ किसी सदमें और ईका ग़म से मुतास्सिफ़ (अफ़सोस करने वाला) और मुतज़लज़ल ना हो, बशर्ते के तू इस फ़ज़ल व लुत्फ़ के अहाते के अंदर महसूर हो। और कि ये तेरे सब मुआमलात और मुक़द्मात उस खुदावंद मुबारक के हाथ में सपुर्द हैं कि इस वकील सिक़ह (मोअतबर) और अमानतदार के जिम्मे कलीसिया का सब इंतिज़ाम और बंदोबस्त हवाले किया गया है। हाँ बल्कि खुदा बाप तआला ने जो मालिक और खालिक और राज़िक-उल-आलमीन है, बमूजब तक़रीर कब्ल अपनी पाक सिफ़ात और कमालात हसना इस अम्र के वसुक़ (यक़ीन) पर कफ़ील कर दिए कि वो उसी के ज़रीये से तुम्हारी सारी ख़ताओं को अफू व महू करेगा। और अपना ख़ौफ़ इस कद्र अमल और असर पज़ीर तुम्हारे दिलों में डालेगा कि तुम कभी उस से रूग़दान ना होगे। और हज़िक्रीएल की किताब में ये कौल खुदा मर्कूम है, “और मैं उन के साथ सलामती का अहद बाँधूंगा जो उन के साथ अबदी अहद होगा और मैं उन को बसाऊंगा और फ़रावानी बख़शूंगा और उन के दर्मियान अपने मुक़द्दस को हमेशा के लिए क़ायम करूँगा। मेरा ख़ैमा भी उन के साथ होगा। मैं उनका खुदा होऊंगा और वो मेरे लोग होंगे।” (हज़िक्रीएल 37:26,27)

और जिस शख़्स ने खुदावंद मसीह और उस के रसूलों की गवाही को मंज़ूर किया है कि ज़बूर की किताब उस की पेशीनगोइयों और इशारों से भरी हुई है और मुतकल्लिम मज़ामीर सिर्फ़ खुद दाऊद हकीकी नहीं, बल्कि उस की नस्ल मौऊद यानी खुदावंद मसीह को मानता है। वो शक व शुब्हा ना करेगा कि तीसरे और अठारहवें ज़बूरों में खुदावंद मसीह की बख़्रास्त अज़ मुर्दगान

की पेश खबरीयाँ उस रूह हक की तरफ़ से फ़रमाई गई हैं, जिसकी आवाज़ और इल्हाम बातिनी से अम्बिया हालत ख़ामोशी से गोया हो गए। और इस कलिमा-ए-रब्बानी से जो खुदा कादिर-ए-मुतलक़ का काशिफ़-उल-इसरार है, कुव्वत इन्किशाफ़ पाई। और उम्दा से उम्दा मुफ़स्सिरीन ने मुफ़्त और ग़ैर वाजिब नहीं कहा कि तीसरे ज़बूर के सब मज़ामीन ना सिर्फ़ दाऊद पर सादिक़ आते हैं बल्कि उस की तरफ़ आइद होते हैं, जिसके हुज़ूर में यरीहू शहर का अंधा पुकारता था कि, “इब्ने दाऊद! ऐ यसूअ! मुझ पर रहम कर।” (मरकुस 10:47) चुनान्चे ना सिर्फ़ दोनों कीनावर और खूँखार दुश्मनों से मुहासिरा किए गए, बल्कि दोनों पर क़त्ल और तोहमत और ताना और मलामत का बोझ पड़ा कि ये खुदा से मतरूक और उस की कुमक से महरूम हैं। और दोनों इस अज़दहाम (अंबोह, भीड़) और शोरिश के दर्मियान लेट कर सो रहे और जाग भी उठे। देखो वो इब्ने दाऊद बे-खौफ़ी और दिलजमई तमाम हमले गनीमों और सदमें तकालीफ़ के बावजूद गोया सलीब के सख़्त बिस्तरे पर पादराज़ कर के इस्तिराहत करता है और क्रियामत की मियाद मुकर्रर की यक़ीनी इंतिज़ारी से अपनी जान को बाप के हवाले और सपुर्द करता है। और जैसा पहलवान नींद से उठकर ताज़ा-दम निकलता है और हर सूरत की पेशक़दमी और जवाँमर्दी से हर शख्स के मुकाबिल जंग व जिदाल पर मुस्तइद और कमर-बस्ता है। इसी तरह बमूजब कौल उस तीसरे ज़बूर के खुदावंद मसीह अपनी सलीबी मौत और क़ब्र की ख़्वाबगाह से उठ कर आप भी फ़रमाता है और अपने बदन मिजाज़ी यानी जमाअत ख़ास की हर ज़बान पर ये गीत दिलजमई और तयक्कुन का लाता है, “मैं लेट कर सो गया, मैं जाग उठा क्योंकि खुदावंद मुझे सँभालता है। मैं उन दस हज़ार आदमीयों से नहीं डरने का जो गिर्दागिर्द मेरे खिलाफ़ सफ़ बस्ता हैं।” (ज़बूर 3:5,6) और खुदावंद मसीह के तसल्लुत की जो मुर्दों से बर्खास्त करने के वक़्त सब शयातीन और

कलीसिया के सब गनीमों पर था। और उस हुक्मत व कुदरत की जिसे वो मुकद्दसों की जमाअत खास में है (जबूर 19) के शुरू में मिसाल दी जाती है। आफ़ताब के नूर और तजल्लियात के इंतिशार से, जिससे वो रुबा मस्कून को गोया अपनी शआओ की जरीब से पैमाइश कर के आलम को अपने कब्जे में कर लेता है और अपने रौनक व जलाल के दरयाए मुहीत से उस को घेर लेता है, उस ने आफ़ताब के लिए उन में खैमा लगाया है जो दुल्हे की मानिंद अपने खल्वत-खाने से निकलता है और पहलवान की तरह अपनी दौड़ में दौड़ने को खुश है। वो आस्मान की इतिहा से निकलता है और उस की गश्त उस के किनारों तक होती है और उस की हरारत से कोई चीज़ बे-बहरा नहीं।” (जबूर 19:4-6) चुनान्चे पोलुस रसूल ने रोमीयों के खत के दसवें बाब में इन्हीं आयतों की तशरीह व तफ़्सीर करके खुदावंद मसीह की तरफ़ और उस के मुज्दा नजात और बशारत की जानिब मंसूब किया है। यूं मर्कूम है, “पस ईमान सुनने से पैदा होता है और सुनना मसीह के कलाम से। लेकिन मैं कहता हूँ क्या उन्हीं ने नहीं सुना? बेशक सुना चुनान्चे लिखा है कि उन की आवाज़ तमाम रू-ए-जमीन पर और उन की बातें दुनिया की इतिहा तक पहुंचीं।” (रोमीयों 10:17,18)

और जिस तरह रसूल मुबारक ने (जबूर 19) के मज़ामीन का मिस्ताक़ खुदावंद मसीह को बताया अज़-आनरो की, कि फ़जाए समावात का नूर और तजल्लियात मुज्दा और बशारत इंजीली के मुशाबेह हैं। और ज़मनन व इशारतन ये भी फ़रमाया कि आफ़ताब फ़लकी की रौनक और हशमत और उस की पेश-कदमी और मुदावमत मिसाल उस कलिमतुल्लाह (كلمته الله) की है जिसको नबियों ने आलम-ए-अर्वाह के लिए आफ़ताब सदाक़त से मुलक़क़ब किया। इसी तरह उसी रसूल ने (जबूर 18:1) के कुल्लियह मज़मून को खुदावंद मसीह की

तरफ महमूल किया। चुनान्चे हमने इस रिसाले के बाब बाला में अस्थाब नबुव्वत और पेशीनगोई के उस कायदे और दस्तूर पर लिहाज और इल्तिफात किया था कि उन्होंने किसी फ़ि़ह और आयत मुजर्रिद को सिलसिला-ए-कलाम से मुनक़तेअ और मुन्फ़सिल (जुदा) कर के आइंदा ज़माने के वाक़ियात के सिर्फ़ एक निशान बईद और इशारा आरिज़ी को दरपेश नहीं किया, बल्कि ऐसा सिलसिला कलाम व मज़ामीन का नज़र आता है जिसमें करीना (बहमी ताल्लुक) क़ब्ल व बाद की इस आयत या फ़ि़के के साथ पूरी मुताबिक़त व मुवाफ़क़त हो। पस इस काएदे की एक मिसाल देखने के लायक़ वही आयत “मशारु” इलयहा है, जिसे रसूल ने (ज़बूर 18) के अवाख़िर से नक़ल किया है। वो आयत मअ़ इस सियाक़ के इस वज़अ मज़कूर पर है, “मैं कहता हूँ कि मसीह, ख़ुदा की सच्चाई को साबित करने के लिए मख़्तूनोँ का ख़ादिम बना ताकि उन वाअदों को पूरा करे जो बाप दादा से किए गए थे। और ग़ैर कौमों भी रहम के सबब से ख़ुदा की हम्द करें। चुनान्चे लिखा है कि इस वास्ते मैं ग़ैर कौमों में तेरा इकरार करूँगा और तेरे नाम के गीत गाऊँगा।” (रोमीयों 15:8,9 ज़बूर 18:49)

इस मौज़ेअ से साफ़ ज़ाहिर है कि रसूल आयत को नक़ल करता है, ब इल्लत सबूत इस अम्र के कि ग़ैर कौम ज़माने-खल्फ़ में ख़ुदा की सना और सताइश करेंगे। बसबब उस के रहम व फ़ज़ल के जो यसूअ मसीह में मख़ज़ून था और उस की मौत व क़यामत व सऊद में वकूअ व शुहूद में आया। सच तो ये है कि इस आयत मज़कूर में सबूत वाज़ेह व लाएह है, हज़रत दाऊद की फ़ुतूहात का और उस क़ियामत ख़िलाफ़-ए-क़ियास का जो उस ने ग़म व अलम और शिकस्त व ज़बोनी की ज़ुलमात से हासिल की थी, पर तो भी पोलुस रसूल की शहादत इस बात पर दाल है कि बाल-इख़्तसास तमाम इस ज़बूर

18 के मज़्मून का तुख्म व अस्ल खुदावंद मसीह के अहवालों का इज़हार व इशतहार है कि किस तरह उन के अवाइल में शिकस्तगी और रुस्वाई और जिल्लत होगी। और बरअक्स इस के उन के अवाखिर में क्रियामत व सऊद और दूर-दूर ग़ैर क्रौमों तक तबसीत सल्लतनत होगी। और इस आयत बाला का करीना (बहमी ताल्लुक) कब्ल व बाद भी अजीब व ग़रीब इतिफ़ाक़ हरफ़न व मअनन रखता है, बाकी नबियों और खुसूसुन यसअयाह नबी की मशहूर पेशीन-गोइयों के साथ, मसलन शिकस्त और मौत के बयान में मर्कूम है, “मौत की रस्सियाँ ने मुझे घेर लिया और बेदीनी के सैलाबों ने मुझे डराया। पाताल की रस्सियाँ मेरे चौगिर्द थीं मौत के फंदे मुझ पर आ पड़े थे।” (ज़बूर 18:4,5)

और फिर क्रियामत व फ़ीरोज़ी और ग़नीमों की शिकस्त की गवाही 43,44,50, आयतों में दी जाती है, “तूने मुझे क्रौम के झगड़ों से भी छुड़ाया, तू ने मुझे क्रौमों का सरदार बनाया है, जिस क्रौम से मैं वाकिफ़ भी नहीं वो मेरी मुतीअ होगी। मेरा नाम सुनते ही वो मेरी फ़र्माबरदारी करेंगे। परदेसी मेरे ताबे हो जाएंगे, वो अपने बादशाह को बड़ी नजात इनायत करता है और अपने ममसोह दाऊद और उस की नस्ल पर हमेशा शफ़क़त करता है।□ और मिसाल उस हुक्मरानी और कुदरत आमैज़ फ़त्हयाबी की जिससे खुदावंद मसीह मुर्दों में से जी उठकर सब शयातीन को और अपनी कलीसिया के सब ग़नीमों को ज़ेर-पा करने वाला था, आफ़ताब के तुलूअ होने और उस की तजल्लियात के इन्तशार से (ज़बूर 19) के शुरू में दी जाती है। यानी जिस तरह वो शम्स फ़लकिया अपनी शआओं की जरीब से आस्मान की पैमाइश कर के इस पर गोया अपना कब्ज़ा कर लेता और अपने रौनक व जलाल के दरयाए मुहीत से घेर लेता है। इसी तरह तमाम आलम क्रौम बाद क्रौम के और अतराफ़ बाद अतराफ़ के खुदावंद का मुतीअ होगा जैसा इस (ज़बूर 19:4-7) में लिखा है :-

“और उनका कलाम दुनिया की इतिहा तक पहुंचा है। उस ने आफ़ताब के लिए उन में खेमा लगाया है जो दुल्हे की मानिंद अपने खल्वत-खाने से निकलता है और पहलवान की तरह अपनी दौड़ में दौड़ने को खुश है। वो आस्मान की इतिहा से निकलता है और उस की गश्त उस के किनारों तक होती है और उस की हरारत से कोई चीज़ बे-बहरा नहीं। खुदावंद की शरीअत कामिल है, वो जान को बहाल करती है। खुदावंद की शरीअत बरहक है, नादान को दानिश बख़्शती है।¹⁰ चुनान्चे पोलुस रसूल ने रोमीयों के खत में इस तफ़सीर और तशरीह को सही और बरहक ठहरा कर फ़रमाया है, “पस ईमान सुनने से पैदा होता है और सुनना मसीह के कलाम से (यानी मसीह का कलाम एलची गिरी के तौर पर सुनाने से) लेकिन मैं कहता हूँ क्या उन्हीं ने नहीं सुना? बेशक सुना चुनान्चे लिखा है कि उन की आवाज़ तमाम रू-ए-ज़मीन पर और उन की बातें दुनिया की इतिहा तक पहुंचीं।” (रोमीयों 10:17,18)

और जिस तरह रसूल मुबारक ने ज़बूर 19 के वज़नी मज़्मून का मिस्ताक़ खुदावंद मसीह को बताया है, अज़ आनरो कि इन्जील मसीह की बशारत और आफ़ताब की शआओ के नूर और हरारत का एक ही हाल है और हिदायत मसीह को उतनी ही तासीर है रूहानियत में, जितनी आफ़ताब को आलम महसूसतात में। इस तरह उसी रसूल ने जो ज़बूर 18 की पहली आयत को खुदावंद मसीह की तरफ़ मंसूब व महमूल किया है तो साफ़ मालूम है कि बाक़ी सब मज़्मून जो करीनह-ए-कलाम के तौर पर उस आयत से मुताल्लिक़ है, कुल्लीयतन (पूरे पर) मसीह पर सादिक़ आता है। और अहवाल मज़कूर ज़बूर उस खुदावंद की सल्तनत के अहवाल की गोया तसावीर और तशाबिह के बराबर हैं, बमूजब उस कायदे बयान नब्वीयह के जो बाब साबिक़ में मज़कूर

हुआ कि हर पेशीनगोई के करीना (बहमी ताल्लुक) कबल व बाद का सिलसिले मजामीन के साथ ताल्लुक और तताबुक करीब रखता है।

पस इस कायदे का नमूना इस आयत “मशारु इलयह से खूब निकला, जिसे रसूल ने (ज़बूर 18) के अवाखिर से नकल कर के मसीही सलतनत की तरफ आइद बताया है तो मिस्दाक उस आयत का मअ सियाक कलाम के खुद खुदावंद मसीह है। देखो पोलुस रसूल रोमीयों के खत में ये आयत किस तरह नकल करता है :-

“और गैर कौमें भी रहम के सबब से खुदा की हम्द करें। चुनान्चे लिखा है कि इस वास्ते में गैर कौमों में तेरा इकरार करूँगा और तेरे नाम के गीत गाऊँगा।” (रोमीयों 15:9) इस मुकाम से साफ़ साबित और जाहिर है कि पोलुस रसूल आयत मज़कूर को नकल करता है, बइल्लत सबूत इस अम्र के कि गैर कौम ज़माने-खल्फ़ में हक़ तआला की सना व सताइश करेंगे। उस खास रहमत और फ़ज़ल के एहसान के सबब जो हमारे खुदावंद यसूअ मसीह में मखज़ून हो रहा है, था। फिर उस की मौत और क्रियामत व सऊद से वकूअ और शुहूद में आया। सच तो ये है कि उस ज़बूर में शहादत सरीह और मुस्तनद सबूत है, हज़रत दाऊद की फ़तूहात का और उस क्रियामत ख़िलाफ़-ए-क्रियास और खारिक़ आदत का जिसे उस मुबारक ने ग़म व अलम और ख्वारी व ज़िल्लत की ज़ुलमात से पाया था। पर तो भी पोलुस रसूल की साफ़ गवाही इस बात पर दलालत करती है कि ब तमाम तफ़ज़ील व तख़सीस इस (ज़बूर 18) का अस्ल तुख़्म खुदावंद मसीह के अहवालों का इज़हार और इशितहार है कि किस तरह उस के अवाइल में ख्वारी व रुस्वाई होने वाली थी। और बरअक्स उस के अवाखिर उस मुनज्जी-उल-आलम के क्रियामत और सऊद और दूर-दूर गैर कौमों तक फ़ीरोजमंदी और सलतनत की बढ़ाओ होगी।

और इस आयत मशरू इलयहा का करीना (बहमी ताल्लुक) कब्ल व बअद अजीब और करीब इतिफाक रखता है। हम हरफन और हम माअनन बाकी नबियों और खुसूसुन यसअयाह नबी की मशहूर पेशीनगोइयों के साथ। मसलन फ़िलहाल शिकस्त और मौत का बयान (ज़बूर 18:5-6) का मफ़हूम है। “पाताल की रस्सियाँ मेरे चौगिर्द थीं मौत के फंदे मुझ पर आ पड़े थे। अपनी मुसीबत में मैं ने खुदावंद को पुकारा और अपने खुदावंद से फ़रियाद की। उस ने अपनी हैकल में से मेरी आवाज़ सुनी और मेरी फ़र्याद जो उस के हुज़ूर थी उस के कान में पहुंची।□ इस के बरअक्स क्रियामत और फ़ल्हमंदी और अहले ख़िलाफ़ की परागंदगी व हज़ीमत की गवाही (ज़बूर 18:35,37,43) में तफ़सील वार दी जाती है। “तूने मुझको अपनी नजात की सिपर बख़्शी और तेरे दहने हाथ ने मुझे सँभाला और तेरी नर्मी ने मुझे बुजुर्ग बनाया है, मैं अपने दुश्मनों का पीछा कर के उन को जलाऊंगा और जब तक वो फ़ना ना हो जाएं वापिस नहीं आऊँगा, तू ने मुझे क्रौम के झगड़ों से भी छुड़ाया। तू ने मुझे क्रौमों का सरदार बनाया है। जिस क्रौम से मैं वाक्रिफ़ भी नहीं वो मेरी मुतीअ होंगी।□

हर एक अम्बिया ख़वान को मालूम होगा कि क्या ही बेशुमार पेश खबरियां इन दो मज़ामीन की अम्बिया-ए-खल्फ़ के सहफ़ नबुव्वत में पाई जाती हैं, इस वजह से कि वो हज़रत दाऊद की आयात बाला मज़कूर के ऐन मुशाबेह और मुत्तफ़िक़ हैं। मसलन यसअयाह नबी की किताब में मर्कूम है :-

“जिस तरह बहुतेरे तुझको देखकर दंग हो गए उस का चेहरा हर एक बशर से जाइद और उस का जिस्म बनी-आदम से ज़्यादा बिगड़ गया था। उसी तरह वो बहुत सी क्रौमों को पाक करेगा। और बादशाह उस के सामने

खामोश होंगे क्योंकि जो कुछ उन से कहा ना गया था वो देखेंगे और जो कुछ उन्होंने ने सुना ना था वो समझेंगे।” (यसअयाह 52:14-15)

अब चाहिए कि उन आयतों की तरफ़ ज़रा लिहाज़ करें जिनसे ख़ास मुराद खुदावंद का सऊद और उरूज है। अगरचे शायद लाज़िम और ज़रूरी ना था कि इस के सऊद पर अलैहदा (अलग) शहादत और दलालत दी जाये। अज़ां जिहत कि खुदावंद मसीह का सऊद उस के बर्खास्त अज़ मुर्दगान का इख़तताम था और हकीकत में ये दो उमूर अम्र वाहिद हैं, सिर्फ़ ख़याल में मुतफ़र्रिक हो सकते हैं या बहर-ए-हाल लाज़िम व मल्ज़ूम की निस्बत रखते हैं। जिस नजात का काम खुदावंद ने अपने जिम्मे लिया उस का कुछ कमतर हासिल और इतमाम इस से ना हो सका कि आप ही कब्र से ख़ुरूज कर के आस्मान को भी उरूज करे और अपनों को भी तहत ज़मीन से और पंजे-मौत से खल्लास करके अपने सऊद में शामिल और हम वारिस और अपने जलाल के शाहिद होने से मुशरफ़ करे। बमूजब उस की मुराद मुशफ़िक और मर्ज़ी मुबारक के कि अपने मिजाज़ी बदन के सब अज़ा को अपनी उम्र के सब अहवालों में बहरावर और शरीक करे। चुनान्चे इंजील की आयात मुतअद्दा से साफ़ मालूम और साबित है कि अहले मसीह का हक़ बल्कि ऐन फ़ख़्र व सवाब यही है कि अपने खुदावंद की तसलीब और तदफ़ीन और बर्खास्त अज़-मुर्दगान और उरूज में रफ़ीक़ हो जाएं। मसलन कुलस्सियों के ख़त में मर्कूम है :-

“पस जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए तो आलम-ए-बाला की चीज़ों की तलाश में रहो जहां मसीह मौजूद है और खुदा की दहनी तरफ़ बैठा है। आलम-ए-बाला की चीज़ों के ख़याल में रहो ना कि ज़मीन पर की चीज़ों के। क्योंकि तुम मर गए और तुम्हारी ज़िंदगी मसीह के साथ खुदा में पोशीदा है। जब मसीह जो हमारी ज़िंदगी है जाहिर किया जायेगा तो तुम भी उस के साथ

जलाल में जाहिर किए जाओगे।” (कुलस्सियों 3:1-4) पस जब कि खुदावंद मसीह की उम्र के बाकी उम्र की निस्बत इस अम्र की यानी उस के उरूज की रौनक और जलवागरी ज़्यादा थी, अज़ां-जिहत कि तब ही से उस का जलूस बादशाहाना और दस्त रास्त पर तख्त नशीनी शुरू हुई, यानी आप हमारी खस्ता शिकस्ता जात का मुतहम्मिल (बर्दाश्त करने वाला) हो कर और उस के खुबस और गंदगी को उठा कर तब ही से उसे ऐसे आली दर्जे तक सर-बुलंद किया कि कायनात के सब मुरातिब और मनाज़िल में एक भी उस के मुकाबले करने के लायक नहीं। तो क्रियास वाजिबी था कि बतौर इशारे और पेशीनगोई के इस का जिक्र और खबर हज़रत दाऊद के ज़बूरों में पाया जाये। चुनान्चे कई मशहूर मुकामात से मालूम होता है कि उस मुबारक ने बतौर कश्फ और दया के नज़र नबुव्वत से उस उरूज को दूर से देखा और आइंदा जमानों के तयक्कुन के लिए उसे मज़कूर और मफ़हूम किया मसलन (ज़बूर 8 और ज़बूर 110 और ज़बूर 68) के कई मज़ामीन में पोलुस रसूल ने खुदावंद मसीह के सऊद का इज़हार और इशतिहार पाया है।

(ज़बूर 8) में बतौर रम्ज व कनाईआ के उस शम्स सदाक़त की तरफ़ इशारा है, जिसके आगे बाकी सब आफ़ताब नामी गिरामी अंजहानी रियासत और किबरीयत और इल्म व हिक्मत और वस्फ़ फ़ज़ीलत का जलाल नूरानी कुसूफ़ (सूरज ग्रहन) कहलाता है, जैसे बाकी अज़ाम फ़लकिया शम्स समाविया के तलूअ के आगे स्याह फ़ाम हो जाते हैं। चुनान्चे इस ज़बूर में ये सवाल पैदा होता है कि बनी-आदम क्या क़द्र और क्या रौनक रखता है? उन जलवागर सय्यारों की निस्बत जिस कासीर गाह और दायरा इज़ज़त मदार अर्श की फ़िज़ा है। पर तो भी यकीन है कि मर्द, बच्चों और शेर ख़वारों (दूध पीते बच्चे) की जबानों से रब तआला हम्द व सना को मंज़ूर कर के मंज़िला तक्मील से उन

कलील ज़लीलों को मुशर्रफ़ करता है, तो ये क्या वाजबीयत रखता है और उस का क्या सबब है?

जानना चाहिए कि इस सवाल का जवाब हज़रत दाऊद अंजहानी हकीमों की मजलिसों से नहीं मांगता, बल्कि उस मुदब्बिर अज़ला की हिक्मत व रिआयत के दलाईल व अम्साल से जो इस आलम की तदबीर में दरपेश आए हैं। चुनान्चे जवाब हकीमी ये है कि अगरचे इन्सान के क़द व क़ामत और सूरत जिस्मियह इतनी ज़िल्लत व क़िल्लत की है, मगर फ़ज़ल ईलाही से उस का रुत्बा और मंजिलत आंकद बुजुर्ग और शरीफ़ है कि ख़ुदा तआला से थोड़ी कमी और कोताही रखता है। यानी ख़ुदा तआला के एहसानों और इनामों से जो कुछ लेना मुम्किन था और उस के फ़ज़ल की दौलत अता बख़्श और करम गुस्तर¹⁰ (کرم گستر) का जो कुछ तनावुल (खाना खाना) हो सकता था उस से थोड़ी ही कमी और कोताही रखता है। हाँ बल्कि उस तआला के साथ वो करीब ताल्लुक़ रखता है जो मुशाबहत इशबा (शुब्हा की जमअ, सूरतें) अपने अस्ल नक़शे के साथ रखती है। लेकिन इस अम्र में एक मसअला पैदा होता है जिसका ज़िक्र और इशारा इब्रानियों के ख़त में मिलता है कि जब इन्सान का पैदाइशी हाल ऐसा ही था तो अब बिल-फ़अल उस को क्या हुआ और उस के मफ़कूद होने का क्या सबब? रसूल फ़रमाता है, “तू ने सब चीज़ें ताबेअ कर के उस के पांव तले कर दी हैं, मगर हम अब तक सब चीज़ें उस के ताबे नहीं देखते।” (इब्रानियों 2:8)

10 گستر गुस्तर दन मुस्तर से अम्र का सीगा जो किसी इस्म के बाद आकर उसे फाईल तर्क़ीबी बना देता है और फ़ैलाने वाला, किसी चीज़ की इफ़्रात करने वाला के माअनी देता है जैसे करम गुस्तर (کرم گستر)

फिर रसूल मुबारक इस सवाल का जवाब इस मज़मून से फ़रमाता है कि “अलबत्ता उस को देखते हैं जो फ़रिश्तों से कुछ ही कम किया गया यानी यसूअ को कि मौत मौत का दुख सहने के सबब से जलाल और इज़्जत का ताज उसे पहनाया गया है ताकि खुदा के फ़ज़ल से वो हर एक आदमी के लिए मौत का मज़ा चखे।” (इब्रानियों 2:9) यानी कुल जिन्स को तो नहीं, मगर उस को जो कुल जिन्स का सर और पेशवा और हर अटवल है, जिसने बतौर कफ़ील और वकील के उन की नजात व लामत की मुहिम्मात को अपने जिम्मे लिया। आप ही गोया इनका काइम मक़ाम हो कर इस तख़्त जलाल पर चढ़ बैठा जहां उन्हें भी अपने साथ कर लेने और रब तआला के कुर्ब व रिफ़ाकत में पहुंचाने के क़ौल वासिक की क़बालत से मरहून है। जैसा इफ़िसियों के ख़त में इसी रसूल ने फ़रमाया है :-

“मगर खुदा ने अपने रहम की दौलत से, हमको मसीह के साथ जिंदा किया (तुमको फ़ज़ल ही से नजात मिली है) और मसीह यसूअ में शामिल कर के उस के साथ जिलाया और आस्मानी मुक़ामों पर उस के साथ बिठाया।” (इफ़िसियों 2:4-6)

और दूसरे मुक़ाम में यानी कुरंथिस की कलीसिया के नाम ख़त में रसूल ने इन दो बातों को यानी मसीह के दस्त रास्त पर सऊद व कड़द (बैठक, नशिस्त) को और आलमगीरी कामिल और जावेद को लाज़िम व मल्ज़ूम बताया है और इन दो अम्रों का लाज़िम व मल्ज़ूम होना इस (जबूर 8:6) की गवाही से साबित व मंसूस करता है :-

“क्योंकि जब तक कि वो सब दुश्मनों को अपने पांव तले ना ले आए उस को बादशाही करना ज़रूर है। सबसे पिछला दुश्मन जो नेस्त किया जाएगा वो मौत है।” (1 कुरंथियो 15:25-26)

तो इस अस्ल ज़बूर को और इंजील शरीफ़ के जिन-जिन मवाज़ेअ मज़कूर में इस की इबारतें मन्कूल हैं, उन के खयालात और मज़ामीन पर गौर करने से यकीन है कि खुदावंद मसीह ने इस गुनाह को जो इन्सान के अस्ल हाल के मुज़िर और मुखिल थे, बीच में से उठा कर सब मुक़द्दसों को आप ही में पैवंद कर के उनकी आक़िबत को इन्सान के अवाइल की निस्बत और भी अकमल और आला जलाल को सर-बुलंद किया। चुनान्चे आप खुदावंद मुकाशफ़ा की किताब में फ़रमाते हैं, “जो ग़ालिब आए मैं उसे अपने साथ अपने तख़्त पर बिठाऊंगा।” (मुकाशफ़ा 3:21) और (ज़बूर 18) में भी दो मुख़्तलिफ़ हालतें कमाल शदीद और तख़्सीस से आपस में मुक़ाबला की जाती हैं यानी कैद और तंगी और वफ़ात और बाद-ए-हयात और कुशादगी और आज़ादी बयान होती हैं।

हालाँकि वो शख़्स जिस पर ये दो हालतें आइद व सादिक़ होती हैं अवामुन्नास में से नहीं है, बल्कि निहायत साहब रौनक व दबदबा ओर आली दर्जे पर है। ताआंक़द्र कि इस की उम्र के सब अहवाल से ख़्वाह ज़िल्लत व ख़वारी हो, ख़्वाह अज़मत व अलवियत हो, कुल आलम तबीइयह यानी फ़लकिया और सफलिया हर तरह से असर पज़ीर हैं और उस की सूरत के तग़य्युरात और तक़ल्लुबात से उन की सूरत भी मुतग़य्यर (बदला हुआ) हो जाती है। और ख़ुसूसुन जहान के सब मुल्क और क़बाइल और उन के अस्हाब सियासत व रियासत उस शख़्स के बर्खास्त अज़ मुर्दग़ान पर और बाद शिकस्त व तबाह हाली के मुतजल्ली होने पर अजीब तौर पर मुन्हसिर होते हैं। और इस ज़बूर मजीद की बहुत सी इबारतों और मिसालों से रोशन और पदीद है कि यहां ऐसे शख़्स की तरफ़ इशारा है जो मुतक़ल्लिम ब तज़रूद नहीं है, बल्कि किसी क़ौम क़बीले की पेशवाई और ख़िलाफ़त रखता है। चुनान्चे इस शख़्स मज़कूर के

वाकियात अम्र में इतने और ऐसे मोअजजात और खवारिक आदात (खिलाफ़ आदात बातें, मोअजजे) बयान होते हैं जैसे बनी-इस्राईल के मुल्क मिस्र से खुरूज के वक़्त वाक़ेअ हुए थे। जिनके वारिद और वाक़ेअ होने से अशहाद और इज़हार हो गया, उस विलादत सानी का और इस रुत्बा आलीया का यानी कहानत बादशाहाना होने का और सब अक्वाम में से क़ौम बर्गुजीदा और पसंदीदा होने का, जो उस ज़माने में खल्फ़ इब्राहिम को मिला। पस यहां भी वाजिबी क्रियास और करीन यकीन है कि इन सब अम्साल और इबारतों से एक ही शख्स मुफ़र्रद और मुजर्रिद मुराद नहीं, बल्कि खुदावंद मसीह मअ क़ौम नोव-मोल्द और नोव-मख्लूक के जिसका तज़िकरा पोलुस रसूल के इब्रानियों के नाम खत में पाया जाता है, “पस जिस सूरत में कि लइके खून और गोश्त में शरीक हैं तो वो खुद भी उन की तरह उन में शरीक हुआ ताकि मौत से वसीले से उस को जिसे मौत पर कुदरत हासिल थी यानी इब्लीस को तबाह कर दे।” (इब्रानियों 2:14)

हाँ बिला-शक सही तफ़्सीर और बरहक़ तशरीह इस ज़बूर की तब ही मिलती है जब हमने मान लिया कि इस की अजीब और नादिर इबारतों से मुराद एक शख्स भी और एक क़ौम भी है। और ये कि वो शख्स कोई दूसरा नहीं है, मगर वो खुदावंद जलील और मजीद, जिसका तव्वुलुद-अज़-अज़ल उस की क्रियामत अज़मुर्दगान से साफ़ साफ़ मुबर्हन और मंसूस हो गया। और ना वो क़ौम कोई दूसरी है, मगर वो क़ौम मुम्ताज़ और मुख्तार मुक़द्दसों की जिनके मन्सुबे और मंजिलत के ये औसाफ़ इब्रानियों के खत के 12 वें बाब में बयान होते हैं। “बल्कि तुम सिय्योन के पहाड़ और ज़िंदा खुदा के शहर यानी आस्मानी यरूशलेम के पास और लाखों फ़रिश्तों, और उन पहलोठों की आम जमाअत यानी कलीसिया जिनके नाम आस्मान पर लिखे हैं और सब के

मुंसिफ़ खुदा और कामिल किए हुए रास्तबाज़ों की रूहें, और नए अहद के दरम्यानी यसूअ और छिड़काओ के उस खून के पास आए हो जो हाबिल के खून की निस्बत बेहतर बातें कहता है।” (इब्रानियों 12:22-24) और ये अम्र कि वो फ़त्हयाब आलमगीर जिसकी ग़ैर-क़ौम क़दम-बोसी और इताअत करेंगे, सौ मसीह मुनज्जी-उल-आलम है। हाँ वही है जिसके लिबास और जिसकी रान पर वो नाम व खिताब मुनक्क़श है, “बादशाहों का बादशाह और खुदावन्दों का खुदावंद।” (मुकाशफ़ा 19:16) सो वही रसूल रोमीयों के खत के बाब 15 की आयत बाला मज़्कूर को नक्ल कर के ज़ाहिर और साबित करता है, “और ग़ैर कौमों भी रहम के सबब से खुदा की हम्द करें। चुनान्चे लिखा है कि इस वास्ते में ग़ैर क़ौमों में तेरा इक्करार करूँगा और तेरे नाम के गीत गाऊँगा।” (रोमीयों 15:9)

पस जब कि इस आखिरी आयत का मिस्ताक़ हकीकी मसीह है, रोमीयों के खत की इल्हामी शहादत के बमूजब, तो नतीजा उन मुक़द्दमात से अज़हर-मिन-अशशम्स है कि इस ज़बूर की बाकी आयतों से मुराद और मुराद उन वाक़ियात से जो उन में मफ़हूम हैं, सो खुदावंद की उम्र मुबारक के अहवाल हैं। मसलन (18:16-25) में जितनी-जितनी सूरतें ज़िल्लत और ख्वारी की तसलीब और तदफ़ीन उठाने में खुदावंद ने कुबूल फ़रमाई सभों के बरतरफ़ होने का और इज़्जत व जलाल से मुबद्दल होने का साफ़ व सरीह बयान मिलता है। जिस पर ग़ौर करने से और उस में अपनी रिफ़ाक़त शराक़त के तयक्कुन से अहले ईमान को हर तरह के शक व शुब्ह और खौफ़ व खलिश से जो उन पर शाक़ होता है, तस्कीन और तश्फ़ी हासिल होती है। अज़-आनरो कि उस पेशवाए मुतआली (बुलंद, खुदा तआला का नाम) ने जो मुशफ़िफ़क़ (मेहरबान) अल-आसीन है, उन्हें अपनी वफ़ात और क़ियामत में शामिल-ए-हाल कर के

मलक-उल-मौत के गिनाइम इस कद्र तक्सीम कर दिए हैं कि कब्र उन के लिए गोया साँप बिला ज़हर के, पहलवान बुदून (बगैर) तल्वार के मुवाफ़िक़ हो गई यानी ठनकने डरने की जगह नहीं, बल्कि शीरीं उम्मीद गाह और बहिश्त का दरवाज़ा बनी है, चुनान्चे (ज़बूर 16:9-11) आयात जिन्हें पतरस रसूल ने तमाम तख़्सीस से खुद मसीह की तरफ़ हवाले किया, सो बतौर रिफ़ाक़त के हर साहब-ए-ईमान पर सादिक़ आती है, “कोलुह□ (इस का कौल है) “मेरा जिस्म भी उम्मीद में बसा रहेगा, इसलिए कि तू मेरी जान को आलम-ए-अर्वाह में ना छोड़ेगा और ना अपने मुक़द्दस के सड़ने की नौबत पहुंचने देगा। तू ने मुझे ज़िंदगी की राहें बताई। तू मुझे अपने दीदार के बाइस खुशी से भर देगा।” (आमाल 2:26-28)

फिर वाजिब और मुनासिब ये भी था कि बाअद-अज़ां कि (इस के बाद) कब्र से ख़ुरूज और बर्खास्त का ज़िक्र दर्मियान आया था, तब आप ख़ुदावंद के और उस की जमाअत आम्मा के अहले ख़िलाफ़ के शिकस्ता और परागंदा होने का इज़हार हो जाए कि वहा उस के उरूज माक़बल पर और रियासत व सल्तनत की कुर्सी पर तख़्त नशीन होने पर मुन्हसिर हैं और उस के मुसबत (साबित गया) भी हैं। चुनान्चे इस (ज़बूर 18) के आखिर में उस फ़त्हयाबी के इत्माम और इख़्तताम पर बड़ी ज़ोर-आवर बलागत से गवाही दी जाती है (इन आयात 27, 28, 43 को तक्मीली सूरत में पेश किया जाएगा) मैं ने अपने दुश्मनों का पीछा कर के उन को जलाया और जब तक वो फ़ना ना हो गए वापिस ना आया, मैं ने उन को ऐसा छेदा कि वो उठ ना सके। वो मेरे पांव के नीचे गिर पड़े हैं, तू ने मुझे क़ौम के झगड़ों से भी छुड़ाया। तू ने मुझे क़ौमों का सरदार बनाया है। जिस क़ौम से मैं वाकिफ़ भी नहीं वो मेरी मुतीअ होगी।”

फिर खुदावंद मसीह के उरूज और उस के उम्दा फल और हासिलात पर कोई बालिगा शहादत और क़तई दलालत नहीं है। (जबूर110) की उस आयत से जिसे जब खुदावंद ने मजलिस उलमा व शरिफा यहूद के बीच मसअले के तौर पर पेश किया, तब उस की ज़बान मुबारक से गोया तल्वार से ज़ख्म कातिल खा कर वो सब खामोश हो गए और शर्मिदा और लाजवाब हो कर चले गए। “खुदावंद ने मेरे खुदावंद से कहा मेरी दहनी तरफ़ बैठ जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पांव के नीचे ना कर दूँ।” (मत्ती 22:44) इसी क़ौल खुदा के तीर से पतरस रसूल ने जिस दिन रूहुल-कुद्दुस आतिशी ज़बानों की सूरत में नाज़िल हुआ उन अजाइबात के नातरीन और शाहिदीन को यूं छेद कर मारा कि बिला इख़्तियार हर ठट्ठे बाज़ और ख़िलाफ़ गो का मुँह-बंद हो गया और बड़ी जमाअत उन वाकियात के हकीकत-ए-हाल की मुकर (इकरारी) हो कर रसूलों से सवाल करने लगी, “ऐ भाईओ ! हम क्या करें?” (आमाल 2:37) चुनान्चे उस आयत का अस्ल मज़मून उस दिन की वारदात के साथ इस क़द्र मुत्तफ़िक़ और मुवाफ़िक़ दिखाई देता था कि गोया खुदावंद आप इस मजलिस के रूबरू खड़ा हो कर रूहुल-कुद्दुस के हसनात और तीबात को दस्त रास्त पर से इस कस्रत व फ़रावानी से अता फ़रमाता था कि रसूल मज़कूर की तक़रीर खुश तासीर से किसी में ख़िलाफ़ बात के कहने का ज़ोर ना रहा। “पस खुदा के दहने हाथ से सर-बुलंद हो कर और बाप से वो रूहुल-कुद्दुस हासिल कर के जिसका वाअदा किया गया था उस ने ये नाज़िल किया जो तुम देखते और सुनते हो।” (आमाल 2:33)

फिर खुदावंद मसीह के उरूज पर दाल और शाहिद एक और मुक़ाम जबूरों का यानी जबूर (68:18) मशहूर है जिसे पोलुस रसूल ने अपने इफ़िसियों के नाम ख़त में नक़ल कर के यूं फ़रमाया है :-

“और हम में से हर एक पर मसीह की बख्शिश के अंदाजे के मुवाफ़िक़ फ़ज़ल हुआ है। इसी वास्ते वो फ़रमाता है कि जब वो आलम पर चढ़ा तो कैदीयों को साथ ले गया और आदमीयों को इनाम दिए।” (इफ़िसियों 4:7,8)

यहां एक मिसाल लायक़ लिहाज़ उस कायदा मज़कूर बाला की मिलती है जिससे कलाम-ए-ख़ुदा के मुफ़स्सरीन ने बहुत ही मदद पाई है। यानी ये कि अम्बिया-ए-ख़ल्फ़ को रूह हक़ की हिक्मत और इल्हाम से अम्बिया-ए-सल्फ़ के मज़ामीन आली और ख़ुफ़ीया को हल करने की काबिलीयत मिलती थी। चुनान्चे एक ही रूह अल्लाह उन दोनों में साकिन और मुतकल्लिम थी। अज़ आनरो कि अट्वलीन के हाथ में तो कुफ़ुल सपुर्द किया और आख़िरीन को कुफ़ुल खोलने की किलीद बख़शी। और अम्बिया-ए-साबिक़ जिन जिन बातों के उम्मीदवार थे अम्बिया-ए-आख़िर बाद अज़ वकू अम्र उन्हीं के मज़हर और काशिफ़ मुक़र्रर हो गए और इस सबब से दोनों को एक ही अज़्र व सवाब मिला।

मसलन हज़रत दाऊद को इल्हाम से मालूम हो गया कि कोई बादशाह अज़ीम व करीम आलम-ए-बाला को उरूज फ़र्मा कर अपनी दाद गुस्तरी (दादरसी) और सखावत से बड़ी नामवरी और रौनक पैदा करेगा। पर कौन और किस ज़माने में कैसी बख़िशिशें अता फ़रमाएगा, ये मसाइल तो ख़ुदा तआला के ख़ज़ाइन ख़ुफ़ीया में मस्तूर हो रहे। हवारीयिन के ज़माने तक जो रूहुल-कुद्दुस की रिआयत से उन ख़बरों के मिस्ताक़ से वाक़िफ़ और आगाह किए गए और उस के इज़हार करने के मंजिलत से नसीब वर हो गए। और इसी कायदे का वो सरीह नमूना बा हुस्न व जा सोच और ग़ौर के लायक़ है जो (ज़बूर 8) की ताबीर व तशरीह बाला में मफ़हूम हो गया था।

याद होगा कि बनी-आदम की जाहिरी जिल्लत व ख्वारी में उस जलाल के ताज से जो उस ज़बूर में माअरूफ़ और मौऊद है, कुछ इख़्तिलाफ़ और तनाफी (नफी, मना) मुसन्निफ़ ज़बूर को नज़र आती थी। और सच तो ये है कि इब्न-ए-आदम के ज़हूर के अय्याम तक साफ़ जवाब इस मसअले का मफ़कूद और महजूब हो रहा। सिर्फ़ इंजील मुक़द्दस में और खुसूसुन इब्रानियों के खत में वो राज़ खुल जाता है। इस खत के दूसरे बाब से मालूम हो गया कि आदमियत की अस्लीयत हसना और हकीकत कामिल को इस की कैफ़ीयत हाल में जो इस क़द्र शिकस्ता और ज़बूँ है, तलब करना बिल्कुल बेजा और बे मुनासिब है। जिंदों को मुर्दों में ढूँढना कौन वाजबीयत रखता है। फिर जो कोई तालिब हक़ पूछे कि वो हकीकत और अस्लीयत मुतजल्ली इन्सान की किस चीज़ पर या किस शख्स पर करार पाती और कौन-कौन से ज़वाबत से मशरूअत है, तो उसी बाब की (इब्रानियों 2:8,9) आयतों में राज़ मज़कूर का कशफ़ इल्हामी मिलता है। तू ने सब चीज़ें ताबेअ कर के उस के पांव तले कर दी हैं... मगर हम अब तक सब चीज़ें उस के ताबेअ नहीं देखते। अलबत्ता उस को देखते हैं जो फ़रिश्तों से कुछ ही कम किया गया यानी यसूअ को कि मौत का दुख सहने के सबब से जलाल और इज़ज़त का ताज उसे पहनाया गया है ताकि खुदा के फ़ज़ल से वो हर एक आदमी के लिए मौत का मज़ा चखे।” (इब्रानियों 2:8,9) यानी बऐतबार अपनी जिस्मियत और इन्सानियत के भी उस ने उस जलाल के ताज को जो बऐतबार उस की कलमियत और इब्नीयत अज़ली के इब्तिदा से उस का हक़ और मीरास ज़ातीया था, पहन लिया। बमूजब मज़मून उस सवाल के जो कब्ल मस्लूब होने के अपने बाप तआला से मुखातब हो कर फ़रमाया था, “और अब ऐ बाप ! तू उस जलाल से जो मैं दुनिया की पैदाईश से पेशतर तेरे साथ रखता था मुझे अपने साथ जलाली बना दे।” (युहन्ना 17:5) पस खुदावंद मसीह ने इन्सानियत का ऐन

अस्ल और मब्दा आप ही में मुन्तहा कर के और अपने नफ़्स में उसे तख़्त जलाल पर जलूस करा के ज़िल्लत व ज़बूनी की हालत पर से मुतालआ और मुतजल्ली किया है। ताआंक्रद्र कि जितने अशखास ईमान क़ल्बी और इताअत की राह से उस के साथ वाबस्ता और चस्पीदा होते हैं, वो उस जलाल से बहरावर हो जाते हैं, बाक़ी मर्दूद हैं।

ऐ साहिबो आपसे इस बयान में अजीब तवालत से माफ़ी मांगता हूँ, चूँकि यक़ीन है कि इन बातों के बयान में दीन मुस्तक़ीम के उन उसूल और उय्यून (ऐन की जमअ, आँखें) में दर्ज व दखल होता जिनके इशारा किनाया तक का कुरआन मजीद में कुछ ज़िक्र नहीं। हज़ार शुक्र उस राज़िक्र और परवरदिगार जल्लेशानहु का जिसने औकात क़दीम से ये तज्वीज़ निकाली कि खुद कलिमतुल्लाह (كلمته الله) जो मसीह है, मौत का तलख़ मज़ा चखने तक अपने आपको फ़रिश्तों से पस्त कर के आदमियत की ज़िल्लत और ख़वारी के लिबास से अपनी शान हकीक़ी और रब्बानी को महज़ूब कर के और ग़ैर अज़गनाह हर सूरत से अपने बिरादरों के शामिल-ए-हाल हो कर उन्हें अपने साथ मुक़ामात आलीया तक सर-बुलंद करे और ऐसी मंजिलत और मन्सब से जो फ़र्ज़न्दियत के रुत्बे से अफ़ज़ल है, मुशरफ़ करे। बमूजब क़ौल हज़रत यसअयाह के :-

“मैं उन को अपने घर में और अपनी चार-दीवारी के अंदर ऐसा नाम व निशान बख़्शुंगा जो बेटों और बेटियों से भी बढ़कर होगा। मैं हर एक को एक अबदी नाम दूंगा जो मिटाया ना जाएगा।” (यसअयाह 56:5) जिस मज़्मून का ऐन इत्तिफ़ाक़ है। रसूल मुबारक के उस क़ौल से जो रोमीयों के खत के 8 वें बाब में है :- “और अगर फ़र्ज़द हैं तो वारिस भी हैं यानी खुदा के वारिस और मसीह के हम मीरास बशर्ते के हम उस के साथ दुख उठाएं ताकि उस के

साथ जलाल भी पाएं। (रोमीयों 8:17) जो कोई शख्स अज़-राह ईमान व मुहब्बत व इताअत मसीह के साथ वाबस्ता और उस के जलाल का हम वारिस हो कर गुनाह की हक सज़ा और उस के जुल्मो-सितम से खल्लास हो गया, वही खुदा और मसीह की सल्तनत में दाखिल किया गया और खुदा तआला की ऐन बादशाही इस जहान में भी है। यानी वो वाबस्तगी दिलों की खुदा के साथ फ़िलहाल ब वास्ता-ए-खुदावंद मसीह के जो तकल्लुब कल्बी और नई खल्कत और विलादत सानी कहलाती है। और कुल कलाम-ए-खुदा में अज़ शुरू ता-आखिर रब तआला की उस सल्तनत का जो ज़माने हाल में है, सिर्फ यही बयान मिलता है। अगरचे हज़ार-हा अम्साल और मुशाबेहात अंजहानी बादशाहों की लश्कर कुशी और शम्शीर ज़नी और क़वाइद जंगी और सियासत मदाइन¹¹ से आरियतन माखूज हैं। और ग़ौर व तामिल के लायक है कि यहूद ने जो कनआनी क़ौमों के नेस्त व नाबूद और इस्तीसाल करने की ताकीद बताइद पाई तो मुराद और मक़सद उस हुक्म का ये हरगिज़ बताया नहीं जाता कि खुदा की बादशाहत जारी और सारी करें। मगर ये कि रब तआला के उस फ़तवाए लानत व हलाकत को जो उन शरीरों के बुग़ज़ व बगावत और लामसाल मकरूहात के सबब खलील-उल्लाह के ज़माने से लेकर पुश्त दर पुश्त उन पर वारिद हुआ सर-अंजाम देना, उन के हवाले किया गया था, तो वो मुल्क उस क़दीम क़ौल और अहद के बमूजब मौरिद लईन हो गया था।

और बनी-इस्राईल उस मुल्क मलऊन को हर सूरत खुबस और गंदगी से साफ़ करने की खिदमत के लिए बर्गुज़ीदा और कमर-बस्ता हो गए। उस अपनी कुद्ूस मन्सबदारी से उज़्र करना मम्नू बल्कि जुर्म मौत के बराबर जाना जाता था, तो भी ये अम्र हज़रत मूसा और उस के खलीफ़ा यशुआ के तसव्वुर से

¹¹ मदीना शहर की जमाअ, इराक़ अरब का एक शहर जो नौशेरवां का पाया तख्त था।

बईद था कि बाद फ़तहयाब होने और मुल्क कन्आन पर अपना कब्ज़ा कर लेने के यहूद की मिलिकयत मौऊद को खुदा की बादशाहत कहते। दरहालिका खुदा की सल्तनत दुनियवी जंग व जिहाद और अक्ल व हिकमत-ए-जिस्मानी की मदद से फैलती नहीं। अगर शायद फैल भी जाये तो बाक़ी मुनाफ़ा और इस्तिकामत हक़ीकी उस तरक्की से हासिल नहीं होते। चुनान्चे खुद मसीह ने इंजील लूका में फ़रमाया था, «खुदा की बादशाही जाहिरी तौर पर ना आएगी। और लोग ये ना कहेंगे कि देखो यहां है या वहां क्योंकि देखो खुदा की बादशाही तुम्हारे दर्मियान है।» (लूका 17:20,21) यानी इन्सान की बसारत जिस्मियह के मुदआत में से नहीं है, पर अंदरून कल्ब (दिल) के करार व कयाम पाती है और गौर व लिहाज़ के लायक़ ये भी है कि परवरदिगार ने कोह-ए-सिना पर से बनी-इस्राईल से ये इर्शाद बताकिद फ़रमाया कि तुम्हारे लिए क़ैद और शर्त बादशाहत की पाकीज़गी और कुद्दुसियत है। और कि अहले यहूद सिर्फ़ उस क़द्र तक बादशाह हो सकते जिस क़द्र दुनिया की बाक़ी सब क़ौमों की निस्बत और उन के मुक़ाम में वो इमामत और कहानत के अमल और अदाए फ़र्ज़ में मशगूल और मुम्ताज़ भी रहते हैं।

इसी तरह जो हम हज़रत दाऊद की सल्तनत के अवाइल और इब्तिदा पर लिहाज़ करें कि क़त्ल व खून और ज़ोर व ज़ब्र उनका तुख़्म व बुनियाद था, तो साफ़ मालूम होता है कि वो ब ख़िताब सल्तनत ईलाही के मुशर्रफ़ होने के फ़िलहाल काबिल व मुस्तहिक् नहीं ठहरे। चुनान्चे खुदा की सल्तनत में मरने का इल्म दाख़िल होता है, मारने का नहीं। ये तो दुनियवी सब बादशाहतें पर मुशर्तक़ है पर वो खुदा की सल्तनत के साथ मख़सूस है और उन दोनों सूरतों के तनाकुज़ असली और ज़रूरी को हज़रत यसअयाह ने बड़ी फ़साहत और सराहत से बयान किया है। “क्योंकि जंग में मुस्लह मर्दों के तमाम सलाह

और खून-आलूदा कपड़े जलाने के लिए आग का ईंधन होंगे। इसलिए हमारे लिए एक लड़का तव्वुलुद हुआ और हमको एक बेटा बख्शा गया और सल्तनत उस के कंधे पर होगी और उस का नाम अजीब मुशीर खुदा-ए-क्रादिर अबदीयत का बाप सलामती का शाहजादा होगा।” (यसअयाह 9:5,6) पस तख्त दाऊद तब ही से आनकद्र मुतजल्ली होने लगा जब रब तआला के तख्त और बर्रे के तख्त से मुलक़कब होने के लायक और क्राबिल ठहरा। जब से शाह सलामत अपने कलाम सुलह और बशारत-ए-नजात के वसीले से आस्मान की बादशाहत को रूए ज़मीन पर इज़हार व इश्तिहार करने लगा। चुनान्चे अम्बिया और रसूलों दोनों ने एक ही आवाज़ से साफ़-साफ़ पुकारा कि तुम अपने दिलों में नए बनो कि आस्मान की बादशाहत करीब है। इंशा-अल्लाह बाब ज़ेल में इस बादशाहत के औसाफ़ और फ़ज़ाइल की कैफ़ीयत का बयान तफ़सील वार मिलेगा।

बाब हफ्तुम

दरबयान आँ मअनी कि बादशाहत रब तआला
 फ़िलहाल दर आलम शुहूद कुदाम अस्त वचा
 सूरत में बंदद व दरआलिम मुस्तक़बिल चह हाल
 व कदाम सूर्तश ख्वाहिद्शद

در بیان آن معنی که بادشاہت رب تعالیٰ فی الحال در عالم شہود کد ام است و چه صورت مے بندد

و در عالم مستقبل چه حال و کد ام صورتش خواهد شد

कुतुब अम्बिया के मआनी और मुबादी अंदरूनी से वाक़िफ़ होने की एक शर्त ज़रूरी ये है कि सोच व ग़ौर से तजस्सुस कर के मालूम करें कि कलाम खुदा में खुदा की और आस्मान की बादशाहत से क्या मुराद और मअनी है, यानी रब तआला की सल्तनत और बाक़ी सल्तनतों की निस्बत कौन सी और कैसी ख़सूसीयात रखती है। इस बात से नावाक़िफ़ होने की जिहत से मौलवी रहमत उल्लाह साहब और उन के ताबईन लाहौरी हज़ार हा ग़लतीयों और

जहल आमेज़ कयासों वहमों में फंस गए हैं। और बाल-इख्तसास बाअज़ ज़बूरों और इन्जील मजीद के बाअज़ मुकामों का बहुत ही उल्टा और ग़ैर वाजिबी बयान किया है। मसलन सयानत (हिफाज़त, बचाओ) अल-इन्सान के मुसन्निफ़ ने ये नाक़िस समझ और ख़ामख़्याल किया है कि आस्मान की बादशाहत से मुराद आस्मान यानी बहिश्त है, हालाँकि ख़ुदावन्द मसीह की तम्सीलों पर ज़रा भी ग़ौर व तामिल करने से साफ़ साबित और वाज़ेह है कि वो बादशाहत माअरूफ़ इस जहान के दर्मियान फैलती और बढ़ती है। और कि इस जहान के सब मुआमलात और उमूर और वाक़ियात उस से असर पज़ीर होते हैं। और ये कि वो सलतनत अपनी इब्तिदा में निहायत कोताह और कम क़द्र हो कर ऐसी तरक्की और कुदरत और बलागत और कुल आलम में इंतिशार से नसीब वर होगी, जैसे हज़रत दानीएल ने अपनी नबुव्वत के दूसरे बाब में साफ़ बयान किया है, “तू उसे देखता रहा यहां तक कि एक पत्थर हाथ लगाए बग़ैर ही काटा गया और उस मूरत के पांव पर जो लोहे और मिट्टी के थे लगा और उन को टुकड़े टुकड़े कर दिया... और वो पत्थर जिसने उस मूरत को तोड़ा एक बड़ा पहाड़ बन गया और तमाम ज़मीन में फैल गया।” (दानीएल 2:34-35) जाये तहीय्यर है कि इस अम्र में ज़रा भी शक और एहतिमाल किसी साहब अक़्ल व तमीज़ के दिल में क्यों बाक़ी रहता है। दर-हालिका इस बयान मज़कूर पर बेशुमार गवाहियाँ और दलाईल क़वी व क़तई अम्बिया और इन्जील में दर-पेश आती हैं कि इस आलम-ए-फ़ानी में तकल्लुबात और तग़य्युरात के बावजूद वो सलतनत मौजूद भी है और बमूजब अम्र ईलाही के मुनादों की बशारत से मुन्तशिर और माअरूफ़ होती रहती है। और कि वो पुरानी ख़ल्क़त की बदी व ज़बूनी और ख़ुबस व पलीदी को नेस्त करती और उस के मुक़ाम में एक ख़ल्क़त पाक और जदीद और कायम व दाइम सर-अंजाम करती चली जाती है। जिससे इस कौल-ए-क़दीम और इर्शाद-ए-मुबारक की ततमीम हो

जाएगी। “फिर खुदा ने कहा कि हम इन्सान को अपनी सूरत पर अपनी शबिया की मानिंद बनाएँ।” (पैदाइश 1:26) पोलुस रसूल ने मुजम्मलन इस बादशाहत के बयान में कहा, “मगर जहां गुनाह ज्यादा हुआ वहां फ़ज़ल उस से भी निहायत ज्यादा हुआ। ताकि जिस तरह गुनाह ने मौत के सबब से बादशाही की उसी तरह फ़ज़ल भी हमारे खुदावन्द यसूअ मसीह के वसीले से हमेशा की जिंदगी के लिए रास्तबाज़ी के ज़रीये से बादशाही करे।” (रोमीयों 5:20,21) मतलब इस आयत का जैसा साफ़ व सरीह है, वैसा ही दिल पज़ीर और तक्वियत और तसल्ली बख़्श है कि खुदा की बादशाहत फ़ज़ल की हुकूमत और तसल्लुत है और कि इस हुकूमत की फ़अलियत और कार्रवाई बतोसित खुदावन्द मसीह के रास्तबाज़ी है। जिसका अंजाम आलम जलाल और हयात यानी सआदत आस्मानी और रब तआला की पूरी कुर्बत (नज़दिकी) और दीदार होगा।

आयात बाला मज़कूर से मुसन्निफ़ ने इस अम्र को ज़ाहिर और साबित किया था कि जब तक इस्राईल की हुकूमत और हज़रत दाऊद की सल्तनत जंग व जिदाल व क़त्ल पर क़याम व करार पा रही थी और ईनजहानी धूम-धाम और तुमतराक़ (शानो-शौकत) से रौनकदार और मुजय्यन ठहरी। तो हालाँकि वो खुदा की बादशाहत की तम्सील और तशबीह हो सकती थी, पर अपने अस्ल वजूद और हकीकत में उस से अलैहदा (अलग) और जुदागाना थी। सिर्फ़ बाद इज़हार खुदावन्द मसीह के और उस के कलाम शरीफ़ के इश्तिहार के, वो दोनों सल्तनतें यानी खुदावन्द मसीह की और दाऊद की इस क़द्र मुत्तफ़िक़ और बाहम पैवस्ता और वाबस्ता हो गईं कि लफ़ज़ व इबारत तक कुछ फ़र्क़ ना रहा। दोनों से अज़राह हकीकत व इन्साफ़ मुराद थी, वो बादशाहत फ़ज़ल व करम की जिसे खुदावन्द इस जहान में जारी और दाइम

क्रायम करने आया था। दोनों बुदून (बगैर) तफ़रूक व तमीज़ उसी की तरफ़ इतलाक़ की जाती हैं। चुनान्चे इन्जील मरकुस में खुदावन्द मसीह की अक्वल मुनादी का ये बयान मिलता है, **॥यसूअ ने गलील में आकर खुदा की खुशखबरी की मुनादी की। और कहा कि वक़्त पूरा हो गया है और खुदा की बादशाही नज़्दीक आ गई है। तौबा करो और खुशखबरी पर ईमान लाओ।**” (मरकुस 1:14,15) और फिर इसी इन्जील में लिखा है कि, **॥मुबारक है वो जो खुदावन्द के नाम से आता है। मुबारक है हमारे बाप दाऊद की बादशाही जो आ रही है। आलम-ए-बाला पर होशाना।**” (मरकुस 11:9) जिसमें इतिफ़ाक़ साफ़ और कुल्लिया है अम्बिया-ए-सलफ़ के सहीफ़ों से मसलन बज़बान हज़िकीएल नबी के, **“मेरा बंदा दाऊद उन के दर्मियान फ़रमां-रवा होगा।”** (हज़िकीएल 34:24) और होसीअ नबी की किताब इसी बात पर गवाह है, **“इस के बाद बनी-इसाईल रूजू लाएँगे और खुदावन्द अपने खुदा को और अपने बादशाह को ढूँडेंगे।**” (होसीअ 3:5)

और ये अम्र भी कलाम ईलाही का एक अस्ल ताअलीम और मुलाहिज़ा के लायक़ है कि खुदा तआला की ममलकत औकात अज़ली से करीब ताल्लुक़ रखती थी। यहूदीयों की उस खास और मुख्तार क़ौम से जिससे तौरैत में मुखातब हो कर उस रब तआला ने फ़रमाया था, **“और तुम मेरे लिए काहिनों की एक ममलकत और एक मुक़द्दस क़ौम होगे।”** (इस्तिस्ना 19:6) और उस ताल्लुक़ के सबब जो रिश्ता राबिता बनी-इसाईल का खुदा की बादशाहत के साथ था अगरचे मुद्दत-ए-मदीद तक अज़ जिहत बगावत और रुगिरदानी के उस में खलल आ गया तो भी आख़िर अय्याम में उस अम्र मुज़िर और मुख़िल की पूरी मराफ़अत हो जाएगी। और कुल इसाईल अपने बादशाह हकीकी के मुकर (इकरारी) हो कर खुदा की बादशाहत में शामिल होंगे। बइतफ़ाक़ पोलुस

रसूल की इस साफ़ गवाही के जो रोमीयों के नाम खत में मिलती है, “और इस सूरत से तमाम इस्राईल नजात पाएगा। चुनान्चे लिखा है कि छुड़ाने वाला सीय्योन से निकलेगा और बेदीनी को याक़ूब से दफ़ाअ करेगा।” (रोमीयों 11:26) और करतन-मरतन आप खुदावन्द मसीह खुसूसुन जिस वक़्त कहना (كَهَنَ) (काहिन की जमा) और रूसा यहूद और रूमी हाकिमों की मुस्नद अदालत के मुकाबिल हाज़िर किया गया। इसी अम्र मज़कूर का काइल और मकर हुआ था कि बेशक मैं बादशाह हूँ, ना अज़ां हैसियत कि ईनजहानी ममलकत मुझे मन्ज़ूर और मतलूब है।

अज़बस कि तलब रिफ़अत और इंजहानी तख़्त व ताज की हिर्स मुझसे दूर व बईद है, मगर ऐन हकीकत और सलाहीयत और फ़ज़ल ईलाही की ममलकत जिससे तहज़ीब आदत व अमल और इस्लाह इल्म व फ़हम और इन्क़िलाब कुलूब और बनी-आदम की खल्कत जदीद हर ज़माने व ज़मीन में मुताल्लिक है। सो मेरे खास नाम यानी कलिमतुल्लाह (كَلِمَةُ اللَّهِ) के नाम से और ज़ात व माहीयत (असलियत) से मुक़य्यद और मेरी ख़िदमत और ज़म्मत (फ़र्ज़) से मख़सूस है। और युहन्ना रसूल की (मुकाशफ़ा 19:11) और आयात मुकारिन (नज़दीक, दर्मियान) से साफ़ साबित और मालूम है कि सल्तनत खुदा की जितनी सियासत और रियासत और रिआयत व तदबीर है, वो सब उसी कलिमतुल्लाह (كَلِمَةُ اللَّهِ) यानी खुदावन्द मसीह के तवस्सुत से अमल में आती और उसी को हवाले की गई है। और कि बादशाहों का बादशाह उस का खास नाम है यानी सुल्तान-उल-सलातीन होना उस की ऐन कलमियत के अस्ल ख़वास और हुकूक में से है। तो बिलाशुब्हा अक्ल और नक्ल दोनों इस बात पर मुत्फ़िक़ हैं कि जिस खुदावन्द का नाम ज़ाती और मौरूसी अज़ल से कलिमतुल्लाह (كَلِمَةُ اللَّهِ) है, सो खुदा की सल्तनत की तमाम कार्रवाई और

दस्तगीरी उसी से है। और कि वही कुल आलम के बार सल्तनत के मुतहम्मिल (बर्दाश्त करने वाला) होने का मुस्तूजिब है, पर तो भी कुछ ताज्जुब की बात नहीं कि जितने अशखास उस की अज़ली और ज़ाती कलिमियत के मुन्किर होते हैं और रसूल मुक़द्दस की इस गवाही को मन्ज़ूर नहीं करते कि उसी के तवस्सुत से रब तआला ने आलम को मख्लूक किया। सो उस के बादशाह आलम के नाम व खिताब से मुशरफ़ होने में कुछ मुनासबत और वाजबीयत नहीं पाते।

और मौलवी रहमत-उल्लाह साहब के मुवाफ़िक :-

इन ज़बूरों से जिनमें सल्तनत खुदा के खुदावन्द मसीह को ज़िम्मे और हवाले होने का बयान है, ठोकर खाकर मुहम्मद ﷺ की तरफ़ या किसी ईनजहानी पहलवान की तरफ़ मन्सूब करते हैं। और बो-फ़ौर तकब्बुर व तफ़र्र अम्बिया-ए-सलफ़ और खुद मसीह और उस के रसूलों की साफ़ मुत्तफ़िक़ गवाही को इस हक़ में हीच और पोच (हक़ीर) जान कर ये दावे करते हैं कि हम लोगों ने हज़ार-हा बरसों के बाद अज़ जिहत अपनी तेज़ बीनी और इदराक नाफ़िज़ के अस्हाब इल्हाम की गवाही को रद्द किया है और किज़्ब ठहराया है, बल्कि वो राज़ हक़ीक़ी जो कुतुब और रसूल और अम्बिया का ऐन माख़ज़ और मुब्तदा और बुनियाद है यानी खुदावन्द मसीह की वो कलिमियत ईलाही जिस पर उस की इब्नीयत अज़ली का राज़ भी मुन्हसिर है और उस के शाह-आलमीन होने का हक़ व

ताअल्लुक़ ग़ैर इन्हिलाल¹² की राह से उन दोनों पर मौक़फ़ है, हमने सफ़ीना-ए-वजूद से मिटाया है।

ख़िलाफ़ इस के जिन-जिन शख्सों ने रूहुल-कुद्दुस की तौफ़ीक़ से इस राज़ का कश्फ़ पाया और यक़ीन किया है कि इन दोनों (ज़बूर 45 और 72) ज़बूरों को ख़ुदावन्द मसीह के सिवाए किसी दूसरे की तरफ़ इतलाक़ करना ऐन नादानी और ज़लालत है। वो सब ना सिर्फ़ इस अम्र से बड़ी ख़ातिर जमई लेते हैं कि शुरू से इज्माअ यहूद और इज्माअ मसीहयान इस बात पर मुत्तफ़िक़ हुआ है, बल्कि इस यक़ीन क़वी पर भी उस ने क़ियाम पाया है कि कुतुब अरबअ (चारों किताब) यानी तौरैत, ज़बूर, अम्बिया और इन्जील इस अम्र की तबईन (पैरवी) में बाहम पैवस्ता और हर सूरत से मुवाफ़िक़ और मुत्तफ़िक़ हैं और इलावा इस बात के अपने ही दिल में बड़ी तश्फ़ी और आराम पाया है। इस तजुर्बा और ख़याल से कि जो हम गुनाहगार, बदख़्वाह और अस्हाब बगावत व क़हर थे तो इस बादशाह करीम व मेहरबान ने हमें रब तआला के साथ मिलाया। जैसा पोलुस रसूल ने कुलस्सियों के नाम ख़त में लिखा है, “उसी ने हमको तारीकी के क़ब्ज़े से छुड़ा कर अपने अज़ीज़ बेटे की बादशाही में दाख़िल किया।” (कुलस्सियों 1:13)

पर तो भी कोई शख्स ना समझे कि ख़ुदावन्द मसीह ने सिर्फ़ तहज़ीब कुलूब और अपनी रूह की कुदरत वाली तासीरों से और अपने कलाम के इश्तिहार से अपनी बादशाहान शान को फ़ाश और ज़ाहिर किया, बल्कि ये भी मालूम कर ले कि उस आली मर्तबा तक उस का जलाल लहलहाया कि इस जहान-ए-फ़ानी के रंगा-रंग अहवालों और वाक़ियात को उस तरीक़े पर तदबीर

12 किसी मुरक्कब शे के अनासिर तरकिबी

और इन्तिज़ाम करता है। जिससे इज्माअ कुद्दूसयान की तरक्की और बेहतरी हो और सब औकात और ज़मानों के सरों को आप ही में मुन्तहा करता है। यानी आप अपने दूसरे ज़हूर के वक़्त जामेंअ औकात और जामेअ वाक़ियात आलम इस क़द्र होगा कि उन के सब मुतालिब का अक्वल और अस्ल मतलब आप ही निकलेगा। चुनान्चे पोलुस रसूल ने इफ़सस की कलीसिया के नाम खत में साफ़ बताया कि, “ताकि ज़मानों के पूरे होने का ऐसा इन्तिज़ाम हो कि मसीह में सब चीज़ों का मजमूआ हो जाए। ख़्वाह आस्मान की हों ख़्वाह ज़मीन की।” (इफ़िसियों 1:10) जिस आयत पर और इस की मानिंद और आयात पर गौर कर के कोई मुंसिफ़ हकीकत ख़्वाह और खुश तमीज़ कुछ जाये तनाकुज़ इस क़ौल से ना निकाले जो खुदावन्द मसीह ने खुद फ़रमाया कि, “मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं।” (युहन्ना 18:36) क्योंकि इसी वक़्त और इसी जगह पर रूमी हाकिम के रूबरू ये दूसरा क़ौल भी फ़रमाया “मैं बादशाह हूँ, जो कोई हक्क़ानी है मेरी आवाज़ सुनता है।” (युहन्ना 18:37) इन आयतों को पढ़ कर समझ लीजिए कि आप ही ने तनाकुज़ की हर सूरत को रफ़अ-दफ़अ किया। क्योंकि आप ही ने आँजहानी और ईनजहानी बादशाहतों का फ़र्क़ साफ़ मुबय्यन और फ़ैसला किया जिससे मालूम और साबित हो कि कौन और कैसी बादशाहत का मुद्दई और मुक़रर और कौन और कैसी का मुन्किर व मानेअ है। मुन्कर तो उसी का है जिसके बाब में फ़रमाया, “अगर मेरी बादशाही दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम लड़ते ताकि मैं यहूदीयों के हवाले ना किया जाता।” (युहन्ना 18:36) जिससे साफ़ इशारा (मुकाशफ़ा 11:15) में मिलता है, “और जब सातवें फ़रिश्ते ने नर्सिंगा फूँका तो आस्मान पर बड़ी आवाज़ें इस मज़मून की पैदा हुईं कि दुनिया की बादशाही हमारे खुदावन्द और उस के मसीह की हो गई और वो अबद-उल-आबाद बादशाही करेगा।” और मकर और मक़बल इसी का है जिसकी ये अस्ल ख़ासीयत और

दावा बताया जाता है, “जो कोई हक्कानी है मेरी आवाज़ सुनता है।¹⁰ और फिर वही बादशाहत मसीही क्या ही ख़ूब बयान होती (मुकाशफ़ा 18:14) में ¹¹और वो दस सींग जो तूने देखे दस बादशाह हैं। वो बर्रे से लड़ेंगे और बर्रा उन पर ग़ालिब आएगा क्योंकि वो खुदावन्दों का खुदावन्द और बादशाहों का बादशाह है और जो बुलाए हुए और बर्गुजीदा और वफ़ादार उस के साथ हैं वो भी ग़ालिब आएँगे।” (मुकाशफ़ा 17:12-14)

साहिबो इस सलामत बख़्श हकीकत को ज़ाए ना करो कि वो कुतुब अरबअ माअरूफ़ जो एन कलाम-ए-ख़ुदा हैं यानी तौरैत, ज़बूर, अम्बिया और इन्जील। इन शख्सों के लिए ग़ैर मफ़हूम और सरासर मख़्तूम और महज़ूब हैं जो खुदावन्द मसीह की नबुव्वत के काइल तो हैं, पर उस की कहानत जावेद और बादशाहत मुदाम के राज़ से कि ये दोनों उस की कलिमियत अज़ली और इब्नीयत ईलाही पर मौकूफ़ हैं, हर सूरत से नावाकिफ़ और जाहिल और बिला-तजुर्बा रहते हैं। जाये ताज्जुब नहीं कि ऐसे जाहिलों के लिए हज़रत मूसा की तौरैत मअमात की मानिंद है जो काबिल इन्हिलाल नहीं और ज़बूरों की वो तफ़सीर इल्हामी जो अम्बिया और इन्जील में पढ़ी जाती है, महज़ वाहीयात और अस्हाब तास्सुब के ख़ाली तसव्वुरात हैं। हाँ ताज्जुब की बात नहीं कि इस मुबारक को बादशाह आलमीन और अनस व मलाइक का मुंसिफ़ और मुहतसिब ना जान कर उस के कलाम को रद्द और मतरूक और मंसूख़ बताते हैं और उस के हुक्मों को नामंज़ूर और मुनक़तेअ करना आसान बात और बेखटके जानते हैं और बड़ी ला-परवाई और बे-खौफ़ी से खुदा तआला के अहदो मीसाक़ व क़दीमी से बैरून रहने से ख़ूब राजी हैं। यानी ये ख़ामख़याल करते हैं कि इस की सिफ़ात जमाली को यानी हसन और रहमत और फ़ज़ल व मुहब्बत को हीच जान कर आक्रिबत में उस की सिफ़ात जलाली को यानी उस के क़हर

और रास्ती और पाकी और अदल व इन्साफ़ के ज़हूर को बर्दाश्त कर सकेंगे और अपने बर्गुजीदा नबी की वकालत में पनाह पकड़ कर खुदावन्द मसीह के हिसाब और आतिशी इम्तिहान के उस बड़े दिन से अमन व अमान में रहेंगे। खुदा चाहे कि वो अस्हाब इहानत मलाकी नबी की दिल तराश पेशगोई ज़ेल ज़हन नशीन करें, ताकि ग़फ़लत और ज़लालत की नींद से बेदार हो कर खुदा तआला की उस तदबीर कदीम और अम्बिया के पेश नविशते शहादत को मन्ज़ूर करें और इताअत भी करें। यूँ लिखा है, «खुदावन्द जिसके तुम तालिब हो नागहाँ अपनी हैकल में आ मौजूद होगा। हाँ अहद का रसूल जिसके तुम आर्ज़ूमंद हो आएगा रब्ब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है, पर उस के आने के दिन की किस में ताब है? और जब उस का ज़हूर होगा तो कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वो सुनार की आग और धोबी के साबून की मानिंद है।” (मलाकी 3:1,2)

बाब हशतम

दर बयान आँ मज़ामीर कि बइख्तसास तमाम बर
मलकूत रब तआला व खुदावन्द मसीह शहादत साफ़
व सरीह दर याफ़ताह मेशोद

در بیان آل مزامیر کہ باختصاص تمام بر ملکوت رب تعالیٰ و خداوند مسیح شہادت صاف و صریح در آنہا یافتہ

مے شود

मज़ामीर गुजश्ता से मसीह की बर्खास्त अज़ मुर्दगान और बहिश्त में सऊद और खुदा-ए-कादिर-ए-मुतलक के दस्त-रास्त पर तख्तनशीनी साफ़ पेश-गोइयों से साबित ठहरी और बाअज़ उन (ज़बूरों में से मसलन ज़बूर 8 और 22 और 69) इस राज़ पर दाल हैं। जिसे अक्ल-ए-इंसानी बावजूद येकि उसे अपनी हद और अहाते से बाहर और अपने मर्तबा से बाला जानता है, तो भी आजिज़ी और खाकसारी से उसे कुबूल कर के फ़िल-हकीकत मुतजल्ली हॉ बल्कि अपनी काबिलीयत के दर्जे कमाल तक सर्फ़राज़ हो जाती है। यानी इस

अम्र पर कि वो जो गम-ज़दा और हकीर और बेईमानों की दानिस्त में नाचार मलऊन था, सो बादशाह आलमीन भी और अक़सा-ए-ज़मीन तक माअबूदियत का मुस्तहिक़ और तमाम जहान के बादशाहों का पेशवा और फ़रमांरवा है। इस ताअलीम नब्वी और लातर्दीद की बाबत (ज़बूर 22:27-28) में (मुकाशफ़ा 5:1) के साथ ऐन मुताबिक़त और मुवाफ़िक़त है। आन्कद्र कि मुक़द्दस युहन्ना की शहादत मज़कूर इस (ज़बूर 22) की किलीद कुफ़ुल कुशा है और ये कलीद इस ज़बूर की और इस की मानिंद हज़ार-हा मुशिकलात की रफ़अ और हल करने वाली है। और इस से हम बख़ूबी नमूना ले सकते हैं, इस बात का कि कुतुब साबिक़ ईलाही की जो तफ़सीर और तशरीह इन्जील शरीफ़ में मिलती है, वो मुख्तलिफ़ फ़ज़ाइल और बराहीन रखती है। पर उम्दा और फ़ाज़िल तर उन फ़ज़ाइल से और क़वीतर उन बराहीन से ये है कि वो तशरीह इस तरह की है कि इस में हज़ार-हा कुफ़लों के खोलने के लिए एक किलीद है और हज़ार-हा गुत्थियों और अकिदों के हल करने के लिए एक अंगुशत और कलाम-ए-ख़ुदा के साइरिन (साइर, सैर करने वाला) के वास्ते एक कुतबनुमा है यानी वो मुरातिब सलासा जो ख़ुदावन्द मसीह की तरफ़ मन्सूब हैं।

(अव्वल) कहानत (दोम) बादशाहत (सोम) नबुव्वत

और अगर कोई शख्स पूछे कि कहानत से किया मुराद है, तो वो ज़रा भी तजस्सुस कर के मालूम कर सकता है कि कहानत से मुराद है वो मर्तबा ख़ुदावन्द मसीह का जिसके बमूजब वो साहिबे इमामत और साहिबे शफ़ाअत और साहिबे वकालत है। और इत्वार व अक़साम वकालत से ख़ुसूसुन वो सूरत वकालत की इस जगह माअरूफ़ है जिसका ये मुक़्तज़ी था कि वो अपनी जान मुबारक को इन्सान के एवज़ गुज़राने और अपने आपको सदका कर के ता अबद-उल-आबाद सब मोमिनीन के लिए सलामत बख़्श हो जाए। और यक़ीन

हैं अक्ल और नक्ल और रोजमर्रा की तजुर्बाकारी से कि जब खुदावन्द मसीह के इन तीन मर्तबों में उस की इन्सानियत और उलूहियत के खवास दोनों दर्ज होते हैं और उन की अमलियत और वफ़ा-ए-अहूद में मददगार हैं तो इन दोनों जातों की इस वाबस्तगी और मिलाप में इतनी वुसअत और दौलत वसीलात की है कि इन्सान की हर हाजत रुहानी की मराफ़अत हासिल होती है और उस की उम्र ईनजहानी की हर हालत और सूरत की पूरी मुनासबत पाई जाती है, ता आंकि रब तआला की हिक्मत बेपायाँ और मुहब्बत बे बयान कश्फ़ और नमूदार हो जाए।

अब यहां कुछ जवाब और तर्दीद तफ़सील-वार चाहिए उस क़यास और दावा बे-हया की जो रहमत उल्लाह साहब ने पेश किया है कि वो दोनों ज़बूर मज़कूर यानी (ज़बूर 45 और 72) खुदावन्द मसीह की तरफ़ किसी वजह से हवाले करने के लायक़ नहीं हैं, बल्कि मुहम्मद ﷺ की तरफ़ बा-इस्तहक्राक़ तमाम उनके हवाले करना चाहिए। मौलवी साहब मज़कूर ने इस उन्नीसवीं सदी में औकात सलफ़ के मुअल्लिमों की सब तफ़सीलात और तशरीहात को रद्द करके उन की हक़ीक़ी तफ़सीर और तारीफ़ निकाली है जिससे ये ग़ैर वाजिबी नतीजा अव्वल हासिल होता है कि यहूद मुतक़द्दिमीन (पहले ज़माने के लोग) का इज्माअ़ शरीफ़ जिसने इन मज़ामीर को खुदावन्द मसीह की तरफ़ मन्सूब व महमूल किया, बिल्कुल उन के हक़ीक़ी मअनी के फ़हम व तमीज़ से ज़ाल और ज़ाए हुआ और महज़ ग़लत के ज़ोअम में फंस गया। हर-चंद कि वो पैतालीसवां (45) ज़बूर खुद आप ही हर आक़िल और पढ़ने वाले पर साफ़ शाहिद है कि उस का मिस्ताक़ एक ऐसे शख़्स के साथ मुक़य्यद है जो इलोहीम यानी खुदा तआला के नाम से मुखातब होने के काबिल है और मुखातब होता भी है और जो दाऊद बादशाह का बेटा भी है। बग़ैर तावील ज़ाहिरी और सरीह

के कोई मुफ़स्सिर इस तारीफ़ और बयान से जिससे वो शख्स जो इस ज़बूर का मिस्ताक़ है बाल-इख़्तसास मुतअय्यन और मुतमय्यज़ होता बच नहीं सकता।

और दूसरा ग़ैर वाजिबी नतीजा ये निकला कि खुदावन्द मसीह खुद और-आवर उस के रसूलों ने जो हज़रत दाऊद की पेशगोइयों का दरबाब सलतनत सिर्फ़ मसीह को ऐन मिस्ताक़ और मुराद जाना, सो वो भी अपने आपको और अपने ताबईन को क़सदन या सहु-अन धोका देते थे। मसलन जिस दिन खुदावन्द मसीह कोहे-ज़ैतून पर चढ़ा और अवाम यहूद का बड़ा हुजूम उस के साथ-साथ चला जाता था तो इस यकीन से कि यही हमारा पेश गुफ़ता और मौऊद दाऊदी बादशाह है, उन के दिल इस क़द्र जोश व निशात से निहाल हो गए कि नागहां आगे और पीछे जाने वालों के मुँह से एक आवाज़ ज़बान ज़द हो गई कि, “मुबारक है हमारे बाप दाऊद की बादशाही जो आ रही है। आलम-ए-बाला पर होशाना।” (मरकुस 11:10) और इस हम्द और शुक्र की आवाज़ की जब बाअज़ हासिद और कीना-वर फ़रीसीयों ने मुमानिअत की और उन चिल्लाने वालों को डाँट कर उन का जोश दबाना चाहते थे तो खुदावन्द मसीह ने ताकीद और तहदीद से उन हासिदों को सख़्त सरज़निश कर के कहा, “मैं तुमसे कहता हूँ कि अगर ये चुप रहें तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।” (लूका 19:40) पस रहमत-उल्लाह साहब के फ़ख़्र आमैज़ दावे के बमूजब ख़ल्क यहूद ने बेमाअनी और लाहासिल शुक्र की आवाज़ निकाली और मुबारक मसीह ने इन हासिदों को मुफ़्त और बेइंसाफ़ी से डाँटा और कुल इज्माअ मसीहयान ने जो इब्तिदा इन्जील से लेकर आज तक खुदावन्द और उस के रसूल की गवाही मन्ज़ूर की और जीते मरते उस उम्मीद और यकीन क़वी पर अपने ईमान को मबनी किया, सो (क्या) अपने तास्सुब और जहालत और ज़लालत के सबब

इस एतिकाद में जीते रहे और वफ़ात पा गए? और इस अम्र में कोई शख्स ना समझे कि हमारी हुज्जत मर्दूद हो गई और बातिल ठहरी। इस वजह से कि खुदावन्द मसीह ग़म-ज़दा और हकीर को अक्सर यहूद नहीं मानते, मगर सिर्फ़ खुदावन्द मसीह आलमगीर और सलतनत पज़ीर और फ़त्हयाब को। अज़बस कि यहूद और मसीही दोनों कमाल मुत्फ़िक़-उल-राए हैं इस अम्र में कि इन दोनों ज़बूरों का मिस्ताक़ सिवाए मसीह के कोई दूसरा नहीं है। अल-हासिल कुछ डरने का बाइस नहीं कि कोई हकीकत ख़्वाह और मोअतदल मिजाज और साहिबे तमीज़ इस वज़न की इल्हामी शहादत पर ग़ौर कर के हरगिज़ ऐसा दावा बर्दाश्त कर सके।

अब ज़रा बेतास्सुबी और इन्साफ़ की राह से हम ग़ौर करें कि कौन-कौन सी अलामतों से मालूम और साबित है कि ये दोनों ज़बूर मज़कूर और उनकी मानिंद और ज़बूर दाऊदी बकमाल वाजबीयत बल्कि बह लज़ूमियत तमाम खुदावन्द की तरफ़ आइद और सादिक़ आते हैं और सिर्फ़ इसी साहब जलाल में इन शराइत और तअयिनात का जो उनमें माअरूफ़ हैं, इज्तिमा मिल सकता है। अगर सिर्फ़ तलवारों और तीर कमान और बाक्री जंगी औज़ारों का और अफ़वाज और जहांगीरी और क़हर रेज़ी और क़ताल का ज़िक़ व बयान होता तो उन ज़बूरों को दारा या ख़ुसरो या सिकंदर-ए-आज़म या ﷺ मुहम्मद की तरफ़ या किसी दूसरे सुल्तान आलम-अफ़रोज़ की तरफ़ हवाले करना मुम्किन, बल्कि माअकूल भी होता। लेकिन इन दो ज़बूरों के मुसन्निफ़ मुबारक ने इस क़द्र सराहतन और मुफ़स्सिलन गोया रूह इल्हाम की अंगशत से खुदावन्द मसीह और उस के ख़्वासों को बयान किया और इस बयान को उस के वजूद और अहवालों के इतने-इतने तअयिनात से मुक़य्यद किया है कि जो शख्स इस तस्वीर के क़याफ़ै पर लिहाज़ करता है, अगरचे नाबीना और ग़ाफ़िल

भी होता है, मगर बमुश्किल मसीह की ऐन मुशाबहत और हम सूरती के पहचानने से बच सकता है।

ऐ साहिबो आप गौर करोगे तो देखोगे कि इन मुनव्वर ज़बूरों में जो निशानीयां खुदावन्द मसीह पर और इस जहान के आम पहलवानों और बादशाहों पर मुश्तर्क हैं, सो निहायत थोड़ी हैं। फिर जो अलामतें खुदावन्द मसीह के साथ मख्सूस और मुकय्यद हैं आम भी हैं और खास भी। पोलुस रसूल इब्रानियों के खत के पहले बाब में जब नक़लियात से खुदावन्द मसीह की मंजिलत और मर्तबा साफ़ दिखाना चाहता है कि फ़रिश्तों से कितनी तफ़ज़ील और तर्ज़ीह रखता है तो मअ़आवर नक़ली (नक़ल उतारना, किसी तहरीर को नक़ल करना) दलीलों के (ज़बूर 45:8) आयत पेश करता और उस पर माअकूलन और वाजिबन जोर और ताकीद करता है। अज़-बस कि ऐसी साफ़ व सरीह गवाही को जो नाखल्फ़ों और मुन्किरों बल्कि ग़नीमों की किताबों में मुन्दर्ज है। और यहूद अपने अम्बिया-ए-सलफ़ की तिलावत में रोज़ उसे ज़बान ज़द करके अपने नफ़्सों पर इल्ज़ाम लगाते हैं, रद्द और नामंज़ूर करना महज़ बुतलान और बेहूदगी है।

पस उस ज़बूर का मुसन्निफ़ इस बादशाह के खिताब में जो अज़ शुरू ता आखिर माअरूफ़ और महमूद है, बड़ी संजीदगी और उबूदीयत की राह से फ़रमाता है, “ऐ खुदा ! तेरा तख़्त।” (ज़बूर 45:6) और यकीनन हर ज़बान शनास जो इब्रानी लुगत से आश्ना है, नाचार हो कर इकरार करेगा इस अम्र का कि ग़ैर अज़ तावील इब्रानी लुगत से सही क़वाइद के बमूज़ब दूसरे मअनी इस आयत पर लगाने मुहाल हैं। सच तो ये है कि (ज़बूर 82:6) में इस जहान के सदर दीवानों और मुस्नद अदालत नशीनों वग़ैरह से मुखातब होकर रूहुल-कुदुस फ़रमाता है, “मैं ने कहा था कि तुम इलाह हो और तुम सब हक़-तआला

के फ़र्ज़न्द हो। पर इस जगह इस लक़ब का मजाज़ी होना और मुताल्लिक़ होना ना ज़वात (जात की जमा) और अशखास से, बल्कि उन की खास खिदमत और खिलाफ़त और जानशीनी से, यानी उस नशिस्त मुक़ाम से जो बाला-इस्तहकाक़ व इख़्तिसास खुदा तआला का है। सो करीना (बहमी ताल्लुक़) कब्ल व खल्फ़ से साफ़ व सरीह, बल्कि अज़हर-मिन-अशशम्स है। पर (ज़बूर 45:7) में हर्फ़-ए-निदा का इस्तिमाल यानी “ऐ खुदा पर ग़ैर अल्लाह के खिताब में साफ़ कुफ़्र होगा और रूह इल्हाम के तरीक़े और इबारत से बईद। तो इस दलील क़तई से साबित है कि वह बादशाह जो इस ज़बूर का मिस्ताक़ है, खुदा हकीक़ी के खिताब से मुशरफ़ और मुतआली है। पस जब मुखातब हकीक़ी खुदा है तो वो मुखातब सिवाए हमारे खुदावन्द मसीह के जो मुनज्जी अल-खातबीन है, कोई दूसरा नहीं हो सकता।

यसअयाह नबी की एक मशहूर आयत इस अम्र की मवीय्यद और मुसद्दिक़ है कि वो बादशाह जो हज़रत दाऊद के तख़्त पर बैठने वाला और बऊज़ क़ताल अजनास और मुलूक को ज़ेर-ए-पा करने के सुलह व सलामत और अदल व इन्साफ़ की सल्तनत जारी करेगा “ऐल पर यानी “एलोहीम” खुदा होगा। और ज़बूर मज़कूर को (यसअयाह 9:6) के साथ मुक़ाबला करने से बहुत रोशनी और खातिर जमुई पैदा होती है कि, “इसलिए हमारे लिए एक लड़का तव्वुलुद हुआ और हमको एक बेटा बख़शा गया और सल्तनत उस के कंधे पर होगी और उस का नाम अजीब मुशीर खुदा-ए-क़ादिर अबदीयत का बाप सलामती का शाहज़ादा होगा। उस की सल्तनत के इक़बाल और सलामती की कुछ इन्तिहा ना होगी। वो दाऊद के तख़्त और उस की ममल्कत पर आज से अबद तक हुक्मरान रहेगा और अदालत और सदाक़त से उसे क़याम बख़शेगा

रब्ब-उल-अफ़वाज की गय्युरी ये करेगी। अब इस में तीन बातें फ़िलहाल गौर व ताम्मुल के लायक हैं।

अव्वल : ये कि (ज़बूर 45) में और इस आयत में “ऐल” या “ईलोहीम” यानी खुदा का नाम उस बादशाह पर सादिक आता है जो नस्ल दाऊद से तव्वुलुद हो कर उस का खलीफ़ा और काइम मक़ाम ता-अबद-उल-आबाद होगा।

दोम : ये कि लफ़ज़ “कादिर” या “जब्बार” (جبار)¹³ उस बादशाह आलीक़दर या मुतजल्ली पर महमूल है, हर दो मुक़ामों में, यानी (ज़बूर 45:4) में और यसअयाह नबी की आयत माअरूफ़ में।

सोम : यह कि हर हालीका दोनों मवाज़ेअ में “जब्बार” का ख़िताब इब्रानी इबारत में उस बादशाह अबदी के साथ मुल्हिक है तो भी हर दो मुक़ामों के मज़मून का मदार कलाम वो सुलह सलामत है, जो उस की सल्तनत के ज़माने में और इस के वसीले से मुरव्वज और मुन्तशिर होगी।

और खुसूसुन सोच व गौर के लायक है कि (ज़बूर 45 और 72) में सल्तनत माअरूफ़ की इसी खासीयत पर बहुत सी सूरतों और इबारतों में ताकीद और ताईद की जाती है, मसलन (ज़बूर 72:7) का नविश्ता है, “उस के अय्याम में सादिक बरूमंद होंगे और जब तक चांद कायम है ख़ूब अमन रहेगा। अबस कि इब्रानी इबारत इस्तिलाही “शालोम” से मुराद सिर्फ़ सलामती नहीं, बल्कि सुलह व सलामती दोनों का मिलाप है।

हासिल कलाम : ये है कि बादशाह माअरूफ़ की वो तशखीस और तख़्सीस कि वो “जब्बार” है और तलवार से कमर-बस्ता और मुरक्कब सवार

13 यसअयाह 9:6 में यह लफ़ज़ इब्रानी ज़बान में शामिल नहीं

और दस्त रास्त से दहशतनाक कुदरतें दिखाता है और अपने नाफ़िज़ तीरों से मुख़ालिफ़ों के कुलूब तक छेदता है, मुस्तलज़म और मुस्तदल नहीं। ऐसी बादशाहत पर जो ख़ूरेज़ी और जोरू जफ़ा और लशकर शिकनी और कशुरगीरी पर मरबूत है, बल्कि बरअक्स उस के हर दो मज़ामीर मज़कूर का मज़मून आइद है, ऐसे बादशाह के जलूस और रौनक पर जो किब्रीयत और जबरूत में सबसे बेशतर और मुक़द्दम हो कर हर-चंद कि सब वसाइत (वास्ता की जमा, ताल्लुकात) और वसाइल जंग से ताकमाल आरास्ता हो और ज़ायदाज़ हद्दो अंदाज़ा साहब अफ़वाज व ख़जाइन होता हम ये बेशतर और अपनी शान सल्तनत और जलाल और फ़ज़ल ईलाही के लायक़-तर जानता कि जुल्म व सितम व दस्त दराज़ी को मकरूह जान कर सुलह और मेल मिलाप व करम व रहम व अदल व इन्साफ़ व महरो ख़ैर ख़्वाही की मज़बूत बुनियादों पर अपनी ममलकत को मबनी करे ताकि दूर व करीब की मुख़्तलिफ़ अक्वाम इस बादशाह अज़ीम के फ़ज़ाइल की ख़बर सुनकर खुद इख़्तियारी कुर्बानीयों की राह से उस की इताअत कुबूल करें और वो उन्हें अपनी मुल्कगीरी और रिआयत और सियासत रियासत से मामूर करे और इस के बाकी सब मुनाफ़ा सआदत और रौनक और अमन व अमान और फ़वाइद और बरकतों में शामिल करे।

इलावा इस के अगर आप गौर व तामिल से इन दो मज़ामीर बाला मज़कूर की सैर करेंगे तो साफ़ दलाईल से यक़ीन होगा कि वो तल्वार जिससे कमर-बस्ता हो कर वो बादशाह फ़ीरोज़मंद और दुश्मनों पर फ़त्हयाब बताया जाता है, सो आलम रूहानियत के मैदानों में चलाई जाती है, ना इस आलम-ए-फ़ानी के मैदानों में। बिलाशुब्हा वो तल्वार कलाम-ए-ख़ुदा है, चुनान्चे (जबूर 45:2) में नविश्ता है कि, “तेरे हॉटों में लताफ़त भरी है।” और फिर (जबूर

45:4-5) में कौन साहिब-ए-इल्म व अक्ल जो ज़रा भी कुतुब समाविया के मगज़ और कल्ब (दिल) अंदरूनी से आश्वा हो इस कद्र मुद्रिक और रोशन जमीर ना होगा कि बे-इख्तियारी से मालूम करे कि लफ़्ज़ों का मतलब मजाज़ी है, हकीक़ी नहीं। “और सच्चाई और हुलुम और सदाक़त की खातिर अपनी शान व शौक़त में इक्बालमंदी से सवार हो और तेरा दहना हाथ तुझे मुहीब काम दिखाएगा। तेरे तीर तेज़ हैं, वो बादशाह के दुश्मनों के दिल में लगे हैं, उम्मतें तेरे सामने ज़ेर होती हैं।□ जिस क़ौल पर मुत्फ़िक़ है पोलुस रसूल का क़ौल (इफ़िसियों 6:17) में “रूह की तल्वार जो खुदा का कलाम है ले लो।□ और फिर (इब्रानियों 4:12) में “क्योंकि खुदा का कलाम ज़िंदा और मोअस्सर और हर एक दो-धारी तल्वार से ज़्यादा तेज़ है और जान और रूह और बंद-बंद और गूदे को जुदा कर के गुज़र जाता है और दिल के खयालों और इरादों को जाँचता है।□ और फिर “इसलिए कि हमारी लड़ाई के हथियार जिस्मानी नहीं बल्कि खुदा के नज़दीक़ क़लओं को ढा देने के क़ाबिल हैं।” (2 कुरंथियो 10:4)

इन सब आयतों का एक ही अस्ल मज़मून और एक ही जान है। हज़रत दाऊद और हज़रत पोलुस एक ही बात एक ही रूह के इल्हाम से बोलते हैं। इन ज़बूरों में तल्वार खूँखार से कुछ इशारा जैसा मुहम्मद ﷺ और उस के खलीफ़ों की तल्वार। और हज़ार अफ़सोस है कि बाअज़ ईसाई पहलवानों और सुल्तानों ने भी अपने खुदावन्द मुबारक के हक़ायक़ और मुबादी से गाफ़िल व नादान हो कर इसी तरह की खूँखार शमशीरज़नी औकात खल्फ़ में की जो लज़न-तज़न का मूजिब और बाइस हो गए। बरअक्स उस के वो जो कलिमतुल्लाह (كلمته الله) और हक़-तआला का इब्ने मुबारक है, उस तेग़ कलाम से जिसमें हुलुम और अदल और सदाक़त के हक़ायक़ और मुबादी मुन्दर्ज हैं,

कुलूब के गरूर को मज़रूब व मग़लूब करता है, ना ये कि जुल्म से मजबूर कर के दबाता है। पर कलाम शरीफ़ की नरम और शीरीं कशिशों से अहद फ़ज़ल आमेज़ के अहाते के अंदर पहुँचाता और मुहब्बत की गोद में खींचता है।

इन्जील और कुरआन की फ़साहत और बलागत की बाबत मौलवियान और मुज्ताहिदिन मुहम्मदी बड़े मुबालग़े और ज़बान दराज़ी करते हैं। मगर इस तरह की हुज्जत से उज़्र करते हैं और ऐसे मुतालिब बहस में इस अम्र कोताह को मसरूफ़ करना बातिल और लाहासिल जानते हैं। ऐसी मुफ़ाज़लत और मुबारदत हुक़मा-ए-यूनान और शोअरा-ए-अरब और उलमा रूमी के लिए मुनासिब और बजा होगी, मगर हम इस किस्म के फ़ज़ाइल ईनजहानी जिनमें फ़ज़लाए फ़नून व उलूम बुत परस्तान निहायत माअरूफ़ और महमूद और आलीक़द्र हो सकते थे, इस आलम के महतज्जों के लिए छोड़ देते हैं। बमूजब इस कौल आली मज़मून खुदावन्द मसीह के कि, “तू मेरे पीछे चल और मुर्दों को अपने मुर्दे दफ़न करने दे।” (मत्ती 8:22) ना इसलिए हम ये फ़ज़ाइल छोड़ते हैं कि कुतुब सलफ़ व खल्फ़ ईलाही में सहफ़ मूसा से लेकर इन्जील शरीफ़ के आख़िर तक कुछ बलागत व फ़साहत व जमाल व जलाल की कमी व कोताही है।

सैंकड़ों मुवाज़ेअ सहफ़ रसूल व अम्बिया से मसलन मज़ामीर मज़कूर 45,72 को हम इस क़द्र मुक़व्वी और हसीन और फ़सीह और कलाम के सब फ़ज़ाइल और खूबीयों से इस दर्जे कमाल तक आरास्ता जानते और बताते हैं कि अनक़रीब है कि बमुश्किल कुरआन मजीद की एक भी सूरत को उस के साथ मुक़ाबला होने के काबिल जानते हैं। क़त-ए-नज़र अज़ दावा तफ़ज़ील और ताज़ीम के जिसे मौलवी साहिबों ने बड़ी लाफ़-ज़नी से निकाला है या तो

इनाद और तास्सुब से और या अज़जहत आंका वो अस्ल इब्रानी और यूनानी ज़बानों से आगाह नहीं हैं। लेकिन खुदा तआला ने अपने कलाम मजीद का सबूत ऐसे दलाईल और अलामतों पर मुन्हसिर नहीं छोड़ा जिनके इन्फिसाल और इम्तियाज़ करने के लिए एक ऐसा सालिस चाहीए था जो इब्रानी, अरबी, सुर्यानी, वगैरह ज़बानों से कामिल और पुख्ता वाक़फ़ीयत रखता और इलावा उस के जो सर्फ व नहू व क़वाइद इल्म बलागत से खूब आश्ना होता और जोश दीनी और तास्सुब की बू से ख़ाली होता, बल्कि अफ़ज़ल और उम्दा सबूत और ताईद अपने कलाम की वो कुदरत ईलाही बताता है जिससे वो आतिश सोज़ां के मुवाफ़िक़ जिस्मानी शहवतों और नफ़स-ए-अम्मारा वगैरह को भस्म करता और हथौड़े के मुवाफ़िक़ संग-दिलों को रेज़ा-रेज़ा करता और दो-धारी तल्वार के मुवाफ़िक़ तेज़ और जिंदा और जान और रूह की जाये तफ़ज़ील तक नाफ़िज़ और दिल की नीयतों और तसव्वुरों का मुमय्यज़ है। बमूजब इस क़ौल खुदा बज़बान यर्मियाह नबी के, “क्या मेरा कलाम आग की मानिंद नहीं है? खुदावन्द फ़रमाता है और हथौड़े की मानिंद जो चट्टान को चकना-चूर कर डालता है?” (यर्मियाह 23:29)

वही कलामे-हयात ईलाही के लाज़वाल तुख्म के मुवाफ़िक़ पुरानी खल्कत की ज़बूनी और क़बाहत और ख़राबी को बेख़ व बिन से उखाड़ कर नई खल्कत और विलादत सानी का अस्ल बाइस और मूजिब और वसीला होता है और रअदो बर्क़ से खौफ़नाक तर आवाज़ से ग़फ़लत की नींद तोड़ता और रुहानी खुबस और फ़साद से भरी हुई क़ब्रों का दरवाज़ा खौलता और गुनाह के ज़हर मोहलिक से मक्तूलों और मुर्दों का जिलाता है। जैसा खुदावन्द मसीह ने आप फ़रमाया, “मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वो वक़््त आता है बल्कि अभी है कि मुर्दे खुदा के बेटे की आवाज़ सुनेंगे और जो सुनेंगे वो जिंएंगे।” (युहन्ना 5:25)

और वही कलाम काज़ी साहिब-ए-इख्तियार के मुवाफ़िक़ इस शख्स पर जो कौल खुदा को सुनकर पुनबा बगोश (कान में रूई डाले हुए, बेखबर) और गाफ़िल रहता है, बल्कि बाअज़ मुलायान लाहौरी के तौर पर महज़ एतराज़ और ऐब चीनी और मज़हका और खयालात फुहश की तहरीस के लिए आयात मुबारक का मज़मून बिगाड़ता है और तावीलात किज़ब से शहद से ज़हर बनाने के वास्ते आयात को नक़ल करता है। अज़ाब का फ़त्वा मुंसिफ़ आज़म के हुज़ूर में साफ़ मुश्तहिर (ऐलान) करेगा जिस अम्र का शाहिद खुद खुदावन्द मसीह का कौल है, “अगर कोई मेरी बातें सुन कर उन पर अमल ना करे तो मैं उस को मुजरिम नहीं ठहराता। उस का एक मुजरिम ठहराने वाला है यानी जो कलाम मैंने किया है आखिरी दिन वही उसे मुजरिम ठहराएगा।” (युहन्ना 4:47,48) जो चाहे सौ मिसालें इस तहरीस फुहश की जिसका इशारतन ज़िक्र करने से भी हर नाफ़ाहश आदमी के दिल में नफ़रत आती है, उस कज़फ़ क़बाहत आमेज़ में पाए जिसे मौलवी लाहौरी ऐन आफ़ताब सदाक़त यानी इब्ने खुदा मुबारक पर लगाना चाहता है। उन मुक़द्दस औरतों के बाब में जो खुदावन्द की सैर व सफ़र के वक़्त उस के नक़श-ए-क़दम पर चल कर और उस का वाअज़ शरीफ़ सुन सुनकर उस की खिदमत करती थीं और उस के फुक्र वफ़ाका की तख़फ़ीफ़ अपने वसाइल से किया करती थीं और फिर उस औरत की बाबत जिसने खुदावन्द के सर पर और पैरों पर बेशकीमत इत्र को नज़र व न्याज़ की राह से उंडेला।

हासिल कलाम : ये है कि हम खुदा तआला के कौल व कलाम के हतक इज़्जत के इल्ज़ाम से किस तरह बचेंगे, जो हम इस कलाम की नाफ़िज़ और दिल-सोज़ दिल-शिकन कुदरत को महज़ इस दुनिया के हुकमा और फ़सहा की बलागत की तासीरों के साथ मुक़ाबला करेंगे और इस क़द्र अजीब तक़वियत

और क़िब्रियाई और वज़न के अक्वाल को ईनजहानी फुक़हा के खार व ज़लील तराज़ू पर तौलेंगे। बिलाशुब्हा तासीर इस कलाम की जिसकी धमकीयां सुनकर शयातीन अपने-अपने मज़्लूमों से निकल भागे और समुंद्र का तमूज और तलातुम फ़ील-फ़ौर थम गया और खामोश हो गया, लाचार आजिज़ इन्सान के अंदाज़े और मिक़दार पर आजमाईश और पैमाइश में नहीं आती। इस बात पर रसूलों और इन्जीलों की बाअज़ गवाहियाँ ग़ौर से सुनो, मसलन मती की इन्जील में मर्कूम है, “और अपने वतन में आकर उन के इबादतखाने में उन को ऐसी ताअलीम देने लगा कि वो हैरान हो कर कहने लगे इस में ये हिक्मत और मोअजज़े कहाँ से आए?” (मती 13:54) और फिर लिखा है :- “और कोई उस के जवाब में एक हर्फ़ ना कह सका और ना उस दिन से फिर किसी ने उस से सवाल करने की जुरत की।” (मती 22:46) और फिर लूका की इन्जील में यूं लिखा है, “और सब हैरान होकर आपस में कहने लगे कि ये कैसा कलाम है? क्योंकि वो इख़्तियार और कुदरत से नापाक रूहों को हुक्म देता है और वो निकल जाती हैं।” (लूका 4:36) और फिर युहन्ना हबीब की इन्जील में कलम-बंद है :- “प्यादों ने जवाब दिया कि इन्सान ने कभी ऐसा कलाम नहीं किया।” (युहन्ना 7:46) और उम्दा तश्बीह मसीही कौल के इस अजीब और बेक्रियास कुदरत की वो आतिश आस्मानी मालूम होती है जिसका बयान अक्वल सहीफ़ा सलातीन में है कि वो हज़रत एलियाह की कुर्बानी पर उतरी, जिससे वो भारी मुक़द्दमा खुदा-ए-हकीक़ी और फ़ासिद व क़बीह माबूदों के दर्मियान फ़ैसला हुआ और रब तआला ने आस्मान और ज़मीन की मौजूदात के मुक़ाबिल गोया उन बुत परस्तों पर सख़्त इल्ज़ाम और फ़त्वा अज़ाब को इस आतिश के दुरूद से इश्तिहार कराया, क्योंकि नबी मुबारक ने इस हुज्जत के इन्फ़िसाल के लिए तजुर्बे की ये सूरत बताई थी “तुम अपने देवता से दुआ करना और मैं खुदावन्द से दुआ करूँगा और वो खुदा जो आग से जवाब दे वही खुदा

ठहरे। (2 सलातीन 18:24) और नतीजा इस तजुर्बे का मशहूर है कि किस तरह “खुदावन्द की आग नाज़िल हुई और उस ने उस सोख्तनी कुर्बानी की लकड़ीयों और पत्थरों और मिट्टी समेत भस्म कर दिया। जब सब लोगों ने ये देखा तो मुँह के बल गिरे और कहने लगे खुदावन्द वही खुदा है ! खुदावन्द वही खुदा है । (2 सलातीन 18:38,39) जो साहब तमीज़ इन ज़बूरों पर ज़रा भी गौर से लिहाज़ करेगा, वो इस अम्र का काइल होगा कि जिस बादशाही ईलाही को नबियों ने अपनी पेशगोइयों में खुदावन्द मसीह की तरफ़ मन्सूब किया और उस के औसाफ़ व फ़जाइल का बयान किया वही है जिसके उसूल व हक़ायक़ इन ज़बूरों में फ़ाश और नमूदार होते हैं यानी हुलुम और अदल और सदाक़त और सुलह और दाद ख़्वाहों और मज़्लूमों की पुश्तीबानी वगैरह। और ये भी शहर-ए-आलम और ज़बान ज़द हो गया कि जिस क़द्र तक रब तआला और खुदावन्द मसीह की सल्तनत उस रुबा मस्कून में मुन्तशिर होती जाती है, उसी क़द्र ख़वास और फ़जाइल क़वाइद मदाइन और क़वानीन मुलूक मजालिस मक्बूल होते जाते हैं और उनकी तामील और तरक्की और क्रियाम जाइद होते चले जाते हैं और ये क़वाइद और हक़ायक़ ख़िलाफ़ के सब काईदों पर ग़ालिब होना चाहते हैं और हज़रत सुलेमान इब्ने दाऊद ने अपनी अम्साल के बाब 8 में इन्हीं उसूल और हक़ायक़ की तक्रीर की कि वो इस हिक़मत-ए-इलाही के ख़ास औसाफ़ हैं, बल्कि उसी के साथ मुल्हिक़ और मुक़य्यद हैं जो इब्तिदा से खुदा के साथ मौजूद होती चली आई है और जो खुदावन्द मसीह के आस्मानी अल्काब में से है और अनक़रीब है कि वो हिक़मत उस की कलिमियत का लफ़ज़ मुतरादिफ़ हो और उन्हें उसूल और फ़जाइल की तश्बीह और तम्सील ज़ईफ़ हज़रत सुलेमान की सल्तनत में दरपेश आई, यानी उस की बड़ी मद्दाही और नामवरी थी। अज़ां जिहत कि उसने बुदून ख़ूरेज़ी और क़ताल के पहलवानी की तारीफ़ हासिल की और कुदरत और किब्रीयत की

तारीफ़ बगैर जोर व जफ़ा और आलमगीरी के और बगैर हिर्स और दस्त अंदाज़ी के और बदन गज़ा (जंग) और जिदाल के इन्साफ़ और गैरत अल्लाह से मौसूफ़ और ममदूह हो गया।

पस इस लामिसाल सलतनत की सीरत और सूरत हज़रत सुलेमान में देखो और सूरत हकीकी और बेदाग़ व बेऐब खुदावन्द मसीह पर नज़र करो। इस बादशाह मुबारक और महमूद का झंडा और इल्म मुराद है (जबूर 60:4) में है, “जो तुझसे डरते हैं तू ने उन को एक झंडा दिया है ताकि वो हक़ की खातिर बुलंद किया जाये। चुनान्चे हज़रत यसअयाह ने नज़र नबुव्वत से इस झंडे को दूर से देखकर फ़रमाया, “और उस वक़्त यूं होगा कि लोग यस्सी की उस जड़ के तालिब होंगे जो लोगों के लिए एक निशान (झंडा) है और उस की आरामगाह जलाली होगी।” (यसअयाह 11:10) पर तो भी ऐ साहिबो ऐसा ना समझो कि मेरी तकरीर उस दाअवे पर है कि हर मसीही हाकिम और बादशाह का हर हुक्म व अमल व क़ानून शरअ उन फ़जाइल और हक़ायक बाला मौसूफ़ पर करार पाता है, जैसा पोलुस रसूल का मक़ला है, “इसलिए कि जो इस्राईल की औलाद हैं वो सब इस्राईली नहीं।” (रोमीयों 9:6) वैसा ही क़ौल वाजिबी ये भी है कि वो सब मसीही नहीं जो मसीह का नाम लेते हैं, लेकिन इतना दाअवा हम लापरवाई से कर सकते हैं कि जिस क़द्र मसीह की तक़वियत बख़श रूह और उस की मुहब्बत का जोश और उस के अहक़ाम की इताअत और उस की सूरत हकीकी और तिब्बी की मुशाबहत किसी के क़ल्ब (दिल) और मिज़ाज को क़ब्ज़ कर लेती है तो उसी क़द्र फ़जाइल और ख़साइल माअरूफ़ उस के तमाम अफ़आल और आमाल में हाइल और आमिल हो जाते हैं। और अगर शायद मुल्क की रियासत और रिआयत उस के ज़िम्में हो तो उस की तमाम हुक्मरानी और मुल्कगीरी पर खुदावन्द मसीह का नक़श व तबाअ साफ़ व

सरीह छपेगा। क्योंकि अगरचे मसीह की सल्तनत मज्कूर कल्ब (दिल) नशीन और अंदरूनी हो पर उस के नताइज और अलामात रफ़ता-रफ़ता अंदरून से बैरून आते और उनसे क़वाइद मुल्की की इस्लाह और जो कुछ ज़िल्लत व क़बाहत हो, उस की तख़्फ़ीफ़ हो जाती है और खुदगरज़ी और खुद-परस्ती पर क़ैद व लगाम दी जाती है और मुहताजों और मज़्लूमों और क़ैदीयों पर तरस खाना और बीमार पर्सी और ज़ेर बारियों की बार-बरदारी और बे लिखे-पढ़ों और जाहिलों को दर्स देना और गुमराहों को राह रस्त की हिदायत और गमगीनों को दिलासा देना और मातम ज़दों की हम्दर्दी और तमाम खल्क-उल्लाह बल्कि अपने ग़नीमों और बदख्वाहों के हक़ में ख़ैर-ख्वाह होना, लज़न-तअन करने वालों को बरकत देना और जिनकी रविश और रफ़तार ज़बून व अबतर हो उन की इस्लाह और बेहतरी के लिए मेहनत मशक्कत करने पर मुस्तइद होना, बादशाहत मसीही के ये और इनकी मानिंद और औसाफ़ सहफ़ अम्बिया में माअरूफ़ हैं। मसलन **यसअयाह नबी बाब 32** में ये ख़वास और हवासिल सल्तनत क्या ही दिल तराश और शीरी इबारतों में मुतसव्वुर होते हैं।

फिर जो हम इन्जील शरीफ़ की रिवायतों की तरफ़ मुतवज्जा हो कर मुलाहिज़ा करें तो तताबुक सलफ़ व खल्फ़ यानी साबिक की पेशीनगोइयों का तताबुक खुद खुदावन्द मसीह और उस के हवारियों के वाक़ियात के साथ साफ़ मालूम और ज़ाहिर होता है और जिस बात की शबिया और साया को अम्बिया और मज़ामीर दाऊदी में देखकर हम खुश हो गए थे। उस की हकीकत बिला साया व हजाब व तशबीह इन्जील में नमूदार हो जाती है और हर साहिब-ए-इंसाफ़ पर बिलाशुब्हा रोशन है कि जिस तरह खुदावन्द मसीह की एक ही रूह इल्हाम से वो पेशखबरीयाँ एक सूरत और एक-रंग निकलीं, इसी तरह मौरिद

और मिस्ताक इन पेशखबरियों का एक ही बादशाह मुतजल्ली और मितआली यानी खुदावन्द मसीह है और उस की बादशाहत के खवास माअरुफ़। जैसा आप खुदावन्द की कुल गुफ्तार और रसूलों के कुल वाअज़ और अफ़आल और अहकाम में ज़ाहिर हुए, वैसा ही उस के इज्माअ आममा के इन रिवाजों रस्मों में और कलीसिया-ए-जामेअ की कुल तदबीर व रिआयत में जो इब्तिदा में मुरव्वज और मुतदाविल हो गई और नव-मुरीदों से लेकर असाकीफ़ तक खल्क मसीही की तबईयतों और मिज़ाजों में सलतनत खुदा की ऐन कैफ़ीयत और खास तरीका गोया हज़ार गवाहों की एक ज़बान से मुबय्यन और मंशूर हो गया और अंजाम व हासिल उन फ़ज़ाइल व खसाइल का सिवाए सुलह और आराम के कौन दूसरा मुम्किन था? बमूजब (ज़बूर 72:7) में है कि, “उस के अय्याम में सादिक़ बरूमंद होंगे और जब तक चांद कायम है ख़ूब अमन रहेगा।” और मुसद्दिक़ उस कौल रूह खुदा बज़बान (यसअयाह 32:17) में मज़कूर है :- “और सदाक़त का अंजाम सुलह होगा और सदाक़त का फल अबदी आराम व इत्मीनान होगा।” और अनक़रीब है कि अम्साल और तसावीर जो कुतुब साबिका समाविया में नज़र आती हैं जिनमें मसीह “मुशारूफ़ इलयहा है, सब के सब इसी मतलब और मज़मून में मिलती हैं यानी हुस्न व जमाल और मलामत व तहमिल और सैराबी व ज़र खेज़ी और फ़र्हत व निशात और शीरीनी और नज़ाक़त और खुलूस व आज़ादगी और इत्मीनान व खातिर जमुई और हिदायत और तन्वीर और मानिंद उनकी हज़ार-हा हसनात और बरकात का वाअदा मोमिनीन को हासिल होता है। जब हकीक़त-ए-हाल यूँ है तो कौन साहब सुखन-संज और अम्साल (मिसाल की जमा) गंज और माकूल फ़हम ये खामखयाल रखने की ज़रत करेगा कि इन सब तमासील और तशाबहु (मुशाबहत) से ख़ूरेज़ी और जंग खेज़ी और मज़्लूमों की आह और चीख़ मारना और हुजूम वेलगार और मुल्कों की तख़रीब और शहरों का इस्तीसाल ज़रा भी

खुश इतिफ़ाकी दिखाते हैं। ऐ साहिबो ! मैं लापरवाई से हर शख्स जो बेतास्सुब और तजुर्बाकार हो कर अज़िमना क़दीम व अखीर के सब रावियों और मोअरिखों से आश्रा और वाक़िफ़ हो, इस अम्र का गवाह कर लेता हूँ कि ममालिक ईनजहानी में से एक भी सल्तनत ना हुई और हरगिज़ ना होगी जिस पर ये मिसालें वाजिबन आइद और सादिक आ सकें। सिर्फ एक बादशाह में और उस की सल्तनत के वाक़ियात और हक़ायक़ में ये सब मिसालें मुजतमा हो कर अपनी जज़ा व जवाब पाती हैं, सिर्फ़ ख़ुदावन्द मसीह ही में और उस सल्तनत ख़ुदा में जिसे उस ने इस दुनिया में जारी करना अपने ज़िम्में लिया था, ये सब पेश-ख़बरीयाँ वकूअ और ज़हूर में आती हैं। फिर ज़रा सोच व ग़ोर करने से साफ़ मालूम होगा कि क्या सबब है इस बात का कि दशत के बाशिंदे और ख़ुसूसुन अरब और हब्शी मअ तरसीस वालों के अक्वाम और क़बाइल के ख़ुद इस बादशाह के ताबईन और पेशकश पहुंचाने वालों में शुमार किए जाते हैं।

पहले इस अम्र की याद और ज़िक्र मुफ़ीद है जो (2 तवारीख़ 9:14,28) से साफ़ मालूम और साबित है कि उन्हें मुल्कों और क़ौमों में से मुलूक और सलातीन हज़रत सुलेमान के हुज़ूर में पेशकश और नज़र व नियाज़ ले आए और बयानात बाला से रोशन हुआ कि मुराद और मिस्ताक़ इन ज़बूरों का अज़रूए मिजाज़ी ना बतौर हकीकी, हज़रत सुलेमान है। चुनान्चे इस हज़रत ने अपनी उम्र के ख़ुसूसुन तीन उमूर और वाक़ियात में ये फ़ज़ीलत पाई कि सल्तनत मसीही की पेश-नुमाई करे।

अव्वलन : इस में कि शाह सुलह व सलामत होना उस का ख़ास ख़िताब इल्हाम से बताया गया। गोया मुरातिब अम्बिया में ये मर्तबा इसी का था कि मसीह की इस मिसलियत में मुक़द्दम हो जाए।

दोम : ये कि अपने ज़माने के सब सलातीन से उस हज़रत ने हिक्मत और ख़िरदमंदी और तेज़ फ़हमी की सबक़त उठाई।

सोम : कि उसने ऐसी इबादत-गाह तामीर करने की इजाज़त पाई जो कुल ख़ल्क-ए-ख़ुदा की ख़ुदा-परस्ती का कुतुब और मर्कज़ हो जाये।

बावजूद ये कि ये रौनक और ज़ीनत बेमिसाल उस के बाप दाऊद से ममनू थी और ज़करीयाह नबी के मुवाफ़िक़ राज़ व रम्ज़ के तौर पर ख़ुदावन्द मसीह पर सादिक़ आती है, “और उस से कह कि रब्ब-उल-अफ़वाज यूं फ़रमाता है कि देख वो शख़्स जिसका नाम शाख़ है उस के ज़ेर-ए-साया ख़ुशहाली होगी और वो ख़ुदावन्द की हैकल को तामीर करेगा। हाँ वही ख़ुदावन्द की हैकल को बनाएगा और वो साहिबे शौक़त होगा और तख़्त नशीन हो कर हुकूमत करेगा और उस के साथ काहिन भी तख़्त नशीन होगा और दोनों में सुलह सलामती की मश्वरत होगी।” (ज़करीयाह 6:12,13)

हासिल कलाम : जब हज़रत सुलेमान कम से कम अपनी उम्र व सल्तनत की तीन ख़सुसीआत में ख़ुदावन्द मसीह मुबारक की मशहूर तश्बीह और तम्सील ठहरे, तो ये वाजिबी और हक़ था कि इन क़ौमों और कबीलों का जो ना जबरन बल्कि तूअन उस के मुतीअ हो गए, खास और साफ़ ज़िक़र दर्मियान में आए।

इस अम्र में दूसरी बात सोच व ग़ौर के लायक़ ये है कि बादशाह माअरूफ़ के मताबईन और इन्क्रियाद करने वालों का बयान अरबों और तुर्कों और मुग़लों से मख़सूस और मुक़य्यद इन ज़बूरों में जानना अज़ जिहत आंका इन मुल्कों में मुहम्मद ﷺ के तव्वुलुद और उनके मज़हब की बीख़ व बुनियाद थी, हर सूरत से बेजा और बेअस्ल है। अज़-बस कि हक़ीक़त-ए-हाल इस वजह पर है

ख्वाह ख्याल व रोया में, ख्वाह सच-मुच कोहे सीय्योन पर खड़ा हो कर चारों एतराफ़ की तरफ़ बार-बार मुँह फेर कर फुरात नदी को मशरिक़ की तरफ़ अपना हद-ए-नज़र करता और जुनूब की तरफ़ अहले अरब व हब्श और मगरिब की तरफ़ तरसीस और बहर-ए-रुम और जज़ीरों को ताकि मालूम हो कि कितनी कुशादगी और इमतीदाद ता बर व बहर मसीह की हुक्मरानी की होगी। खुसूसुन उन्हीं मुल्कों और हुक्मरानों की खुद इख़्तियारी इताअत और ताबेअ फ़र्मानियों को बताता है जो बनी-इस्राईल के क़दीमी और मौरूसी ग़नीम और बद ख्वाही में तल्ख़ व सरगर्म थे कि ये सब इस शाह सुलह व सलामत के जो हज़रत दाऊद के खानदान से होगा, क़दम बोस और हल्का-ब-गोश हो जाएंगे। अगर शायद आप पूछें कि ये सब किस उम्मीद पर और कौन-कौन सी कशिशों से इस शाह सुलह की रईयत और रफ़ीक़ हो जाएंगे तो इस सवाल का साफ़ व सही जवाब (ज़बूर 87) में मिलता है, “मैं रहब (मिस्र) और बाबुल का यूं ज़िक्र करूँगा कि वो मेरे जानने वालों में हैं। फिलस्तीन और सूर और कूश को देखो। ये वहां पैदा हुआ था। बल्कि सिय्योन के बारे में कहा जाएगा कि फ़ुलां-फ़ुलां आदमी उस में पैदा हुए और हक़-तआला खुद उस को क्रियाम बख़शेगा। खुदावन्द क़ौमों के शुमार के वक़्त दर्ज करेगा कि ये शख़्स वहां पैदा हुआ था।” (ज़बूर 87:4-6) इस से ये राज़ हासिल और मालूम हुआ कि विलादत सानी की राह से यानी इस नव पैदाईश की राह से जो अंदरूनी और रुहानी तव्वुलुद का राज़ है, उन खुद निसार रअतियों के नाम सीहोन शहर यानी इज्माअ आम्मा की फ़हरिस्त में दाख़िल किए जाएंगे। वो जिनकी विलादत अव्वल का इतिफ़ाक़ मुख़्तलिफ़ और मुतअद्दिद मुल्कों और क़ौमों में हुआ था, उनका तव्वुलुद जदीद सीहोन में जो बैतुल-मुक़द्दस आस्मानी कहा जाता है, वाक़ेअ होगा। चुनान्चे युहन्ना रसूल ने अपनी इन्जील में फ़रमाया, “वो ना

खून से ना जिस्म की ख्वाहिश से ना इन्सान के इरादे से बल्कि खुदा से पैदा हुए।” (युहन्ना 1:13)

यहां भी मज्मून की बड़ी खुश इतिफाकी उन दूसरे मज्मूनों के साथ है यानी सीहोन के मौरूसी दुश्मनों और तशनह-ए-खून कीनावरों की हालत उस विलादत सानी के सबब से इस कद्र बदलेगी कि फिलिस्तीन और बाबुल और मिस्र व सूर अपनी अदावत तवील को मौकूफ कर के हुकूक फर्जन्दियत के ख्वाहां होंगे। यही अपना ऐन फ़ख़ और मनाफ़त जानेंगे कि तूमर नवीसी के वक़्त वो आप भी इज्माअ कुद्दूस की रौनक और सआदत से मुशर्रफ़ हो जाएं। यही वो क़ौम नव-मख़्लूक और मुक़द्दसों की जमाअत है, जिसका ये बयान (ज़बूर 102) में पाया जाता है “और क़ौमों को खुदावन्द के नाम का, और ज़मीन के सब बादशाहों को तेरे जलाल का ख़ौफ़ होगा। क्योंकि खुदावन्द ने सिय्योन को बनाया है। वो अपने जलाल में ज़ाहिर हुआ है। उस ने बेकसों की दुआ पर तवज्जा की और उन की दुआ को हक़ीर ना जाना। ये आइन्दा पुश्त के लिखा जाएगा और एक क़ौम पैदा होगी जो खुदावन्द की सताइश करेगी।” (ज़बूर 102:15-18)

पस कुतुब पाक और समाविया की सदाक़त के निशानों और दलीलों से ये कमतरिन और हक़ीर तरीन नहीं कि ये और उनकी मानिंद दीगर अल्फ़ाज़ इस्तिलाही जो आली माअनों और निहां राज़ों के मुअर्रिफ़ हैं, मसलन नव-मख़्लूक और नव-मौलूद वग़ैरह, ज़बूर और अम्बिया और इन्जील में मज्मून के वफ़क़ और तताबुक अजीब से दरपेश आती हैं और ये अम्र साबित और ज़ाहिर करते हैं कि जब इतने मुतफ़र्रिक़ ज़मानों में इन किताबों के इतने मुख़्तलिफ़ मुसन्निफ़ थे तो ख़्याल वाजिबी बल्कि लाज़िम है कि वो सब एक ही रूहुल-कुद्दूस की हिदायत और इल्हाम से बोलते और लिखते थे। ये अम्र

और भी गौर व लिहाज़ के लायक है कि इस विलादत जदीद मज़कूर का तुख्म जब कलाम-ए-खुदा है और रूह-ए-खुदा की हुज़ूरी और तहरीक और कुदरत वाली तासीर के बगैर वो तुख्म लाहासिल और मुर्दा और बे-ज़ोर व जीस्त रहता है और उस उम्दा बीज का बोने वाला बमूजब इन्जील (मती 13:37) आयत के “इब्न-ए-आदम” है यानी “खुदावन्द यसूअ मसीह” है तो इन सब बातों पर जो सोच करे, बमुश्किल इस यकीन से चूक जाएगा कि वो नव-मोलूदों की पाक जमाअत जो खुदा तआला का घर और खानदान कहलाता है ना तो खास यहूद, ना अंग्रेज़, ना तुर्क, ना मुगल हैं और ना बाप बेटे को वसीयत और तर्क की राह से उसे सपुर्द कर सकता है। आंतोर कि वो रुत्बा और आली दर्जा फ़र्ज़न्दियत का दुनियवी विरसा के मुवाफ़िक़ मौरूसी बन जाये, बल्कि ये अम्र खुदावन्द मसीह के बादशाहाना इक्त्तदार और इख्तियार पर मौक़ूफ़ है, वो जिसको चाहता है बल्कि हर मांगने वाले को इनआम बख़शता है और इस काम में खुदावन्द ने अपने घर और खानदान का बड़ा इन्तज़ाम और बन्दोबस्त किया है, यानी अपने रसूलों के बहुत से खलीफ़ों और अपने राज़ों के खास वली ओहदों और कारखाना दारों को पुश्त दर पुश्त पसंदीदा और बर्गुजीदा कर के जिनको उसक़फ़ (पादरीयों का सरदार, लार्ड बिशप) और क्रिस्सीस (मसीही दीन का आलिम) कहते हैं, उन्हीं के वसीले से नव-मोलूदों को अपने फ़र्ज़न्दों के शुमार में और घर की खिदमतों और मंसबों में दाख़िल कराता है। सिर्फ़ ये शर्त ज़रूरी है कि दिलोजान से तौबाकार हो कर और सेहत आदात व आमाल रूह खुदा की तौफ़ीक़ से पा कर और दीन हक्कीकी की रिवायतों और इकरारों में जो उमूर वाक़ई मुंदर्ज हैं, उन के मोअतरिफ़ और मकर (इकरारी) हो कर गुस्ल इस्तिबाग़ यानी बपतिस्मा की पाक रस्म मन्ज़ूर करें।

खुदा करे कि हिन्दुस्तान की तमाम खल्क को मालूम और मफहूम हो जाये कि अम्बिया और रसूलों और खुदावन्द मसीह की राह में दाखिल होना यानी मसीही होना ना अंग्रेज बन जाने की बात है, ना किरानी (नस्रानी) होने की जैसा दीन खुदा के मुखालिफों और मुतहिमों (तोहमत लगाने वाले) में जबां-जद है, मगर मुकद्दसों की जमाअत बर्गुजीदा में शामिल होना है। जैसा रसूल इब्रानियों के खत (इब्रानियों 12:22,23) में फ़रमाता है। नुखसत ज़ादों यानी नव-मख्लूकों के शुमार में आना जिनकी हालत सआदत आमेज़ और दर्जा खास ये है कि बजाय खल्फ़ महरूम या ज़र-खरीद गुलाम होने के जो हर-दम घर से महरूम होने के खौफ़ व खतरे के सबब बेचैन और बेआराम रहते हैं, वो इस फ़र्जन्दियत तक सर्फ़राज़ हैं जिसकी बाबत खुदावन्द मसीह ने फ़रमाया है, “और गुलाम अबद तक घर में नहीं रहता बेटा अबद तक रहता है। पस अगर बेटा तुम्हें आज़ाद करेगा तो तुम वाकई आज़ाद होगे।” (युहन्ना 8:35,36) और रूह खुदा पोलुस रसूल के तवस्सुत से ग़लतियों के नाम खत में फ़रमाता है, “मगर कित्ताब मुकद्दस क्या कहती है? ये कि लौंडी और उस के बेटे को निकाल दे क्योंकि लौंडी का बेटा आज़ाद के बेटे के साथ हरगिज़ वारिस ना होगा। पस ऐ भाईओ हम लौंडी के फ़र्जन्द नहीं बल्कि आज़ाद के हैं।” (ग़लतियों 4:30,31)

शुक्र हज़ार शुक्र खुदा तआला का कि ये दरवाज़ा बादशाहत का यसअयाह नबी के अक्वाल इल्हामी के बमूजब दिन रात बराबर खुला रहता है और इस खुले हुए दरवाज़े की राहनुमाई करना और गुमराहों को इस की तरफ़ रशद व हिदायत करना खुसूसुन दीन के खादिमों और उस्तादों का ओहदा मुबारक और उमूमन सब मुकद्दसों का फ़र्ज यही है। अगर ऐसा हो कि दीन मुहम्मदी में शामिल हो कर तुमने खुदा की दारुल-सल्तनत को दूर से देखा तो यक्रीन करो

कि दरवाज़े के अंदर सिर्फ़ दीन खुदा जो अम्बिया और खुदावन्द मसीह का दीन है, आप लोगों को पहुंचा सकता है। हमारी मिन्नत है आपसे रब तआला के एवज़ और मुहब्बत की राह से कि बहिश्त के दरवाज़े के बाहर मत पड़े रहो, बल्कि इसी के तवस्सुत से जो फ़रमाता है, “मैं दरवाज़ा हूँ, “मैं राह हूँ”, “मैं हयात हूँ”, दाख़िल हो कर खुदा के पास जो मुंसिफ़-उल-आलमीन है, आ जाओ। जैसा हज़रत दाऊद फ़रमाता है, “आज़मा कर देखो कि खुदावन्द कैसा मेहरबान है। मुबारक है वो आदमी जो उस पर तवक्कुल करता है।” (जबूर 34:8) दो-चंद बल्कि दह-चंद तल्ख़ अज़ाब का हुक्म और फ़त्वा उन शख्सों पर सादिर होगा जो सिर्फ़ करीब दरवाज़े ही तक पहुंच कर और वहां से मुँह फेर कर या ख़ूँखार शेर और भेड़ीए का शिकार हो गए या चोरों डकैतों की रिफ़ाक़त में जा मिले। अज़बस कि युहन्ना रसूल के दसवें बाब में खुदावन्द मसीह उनको चोर और डाकू कह कर अंगुशत नुमाई करता है जो आप इस दरवाज़ा हक़ीक़ी में दाख़िल नहीं होते और दाख़िल होने वालों को रोकते हैं।

बरअक्स इस के हक़-तआला के सब नबियों और पैग़म्बरों को चूँकि वो सब खुदावन्द मसीह के शाहिद (गवाह) और पेशवा और इस एक दरवाज़े की तरफ़ मुर्शिद और हादी थे भेड़ों का गल्लाबान हक़ीक़ी बताता है, जिनकी बहुत बड़ी शान फ़ज़ीलत और शर्फ़ है और उन की सोहबत से महरूम और बे-बहरा होना सबसे बदतर लानत और कमबख़्ती का निशान बताता है। चुनान्चे इन्जील लूका में लिखा है, “वहां रोना और दाँत पीसना होगा जब तुम अब्रहाम और इज़हाक़ और याक़ूब और सब नबियों को खुदा की बादशाही में शामिल और अपने आपको बाहर निकाला हुआ देखोगे।” (लूका 13:28)

बाब नहुम

दरबाब आँ अलामतहा कि दरवक्त आक्रिबत यानी दर
वक्त इख्तताम व तकमील सलतनत हक-तआला
पदीद व नमूदार ख्वाहिंदशद

درباب آل علامتها که در وقت عاقبت یعنی در وقت اختتام و تکمیل سلطنت حق تعالی پدید

و نمودار خواهند شد

खुदा की बादशाही की वो सूरत जो फ़िलहाल है, कुतुब रसूल और अम्बिया की तारीफों और तकरीरों के बमूजब बयान हो चुकी। अब ये कर्ज़ व फ़र्ज़ बाक़ी है कि वो सूरत उस बादशाही की जो अख़ीर-उल-अय्याम में होने वाली है, कौन और कैसी होगी, उन्हीं किताबों से तहक़ीक़ाना दर्याफ़्त करें। पस ये अम्र साफ़ मालूम होता है कि तौरैत की बनिस्बत हज़रत दाऊद ने उस आइन्दा सलतनत की कैफ़ीयत और हकीक़त-ए-हाल को ज़्यादा तफ़सील और तसरीह से बयान किया, पर अम्बिया की निस्बत कुछ कम। लेकिन बाअज़ ख़वास उस सलतनत पर और उस की वजूद व तरक़की की सूरतों पर ख़्वाह ख़ौफ़नाक, ख़्वाह तसल्ली बख़्श हों, ज़रा सा मुलाहिज़ा करना इंशा-अल्लाह मुफ़ीद भी और मुतालिब बाला का मुकारिन भी होगा।

फ़िलहाल की, बादशाही का बयान जो ज़बूर में मिलता है कुछ तो वाक़ियात साबिक़ा और उमूरात गुज़श्ता का बयान था और कुछ उन उमूर

वाकई का जो हज़रत दाऊद के अस्र से आज तक तामील और तक्मील होते चले आए हैं और जो बादशाही आइन्दा का बयान ज़बूर में मिलता है वो तो वाकियात शुदनी (इत्तफाकी बात) का बयान है जिसकी वसाकत (पुख्तगी, मज़बूती) और सबूत खुदा तआला के क़ौल व क़रार के सिवाए कोई दूसरी नहीं हो सकती थी। पस हर साहब अक्ल को साफ़ मालूम है कि उमूरात वाकई मंसूख नहीं हो सकते और अहले ईमान को भी बराबर साफ़ मालूम होता है कि वो मुराद और मक्सद ईलाही जिसकी तामील और तक्मील के लिए वो वाकियात पेश आए और मुतअय्यन हुए, वो भी मंसूख नहीं हो सकता, नहीं तो खुदा तआला ग़ैर मुतबद्दल और लामुतय्यर ना होगा, बल्कि उस की पाक जात और सिफ़ात में खलल आजाएगा। जिस हाल में कुल आलम मज़हब हनूद के बमूजब माया (खुदा की कुदरत, रूह) और पर पंच (फ़रेब) बना है, वास्तविक (जड़ी बूटी) नहीं है। फिर ना तो रब तआला होगा, ना आलम दर-हकीकत वजूद में होगा और ये भी हर मोमिन पर साफ़ ज़ाहिर है कि वो पेशीनगोईयां जिनकी वफ़ा और कामिल होने का यकीन और इंतज़ार मुक़द्दसों की जमाअत में कायम और नाजनबीदा रहता जो शायद किसी की दानिस्त में मंसूख हों तो रब तआला की सिफ़ात जलाली, मसलन उस की हिक्मत और कुदरत और इन्साफ़ का वो शख्स इस क़द्र मुखिल ठहरेगा कि उस की राय और मज़हब को दहरियों के मज़हब से थोड़ा ही फ़र्क होगा।

या अगर शायद कोई शख्स ये भी कहे कि रब तआला की वो हम्द और सताइश जो मज़ामीर दाऊदी में नादिर और मुम्ताज़ है और उस तआला की अजीब साख़त व सनअत की तारीफ़ जो आलम की आफ़रीनश और खुश-इंतज़ामी में और इज्माअ मुक़द्दस की रिआयत और तामीर में नज़र आती है और वो दुआएं और नसीहतें जो मज़ामीर में हैं और जो बातें उम्मीद और

ईमान और मुहब्बत की तहरीक करने वाली और गाफ़िलों और शरीरों की तंबीया करने वाली और निशात रुहानी की उभार ने वाली हैं, वो सबकी सब हमारे मज्हब की शराइत और इकरार के बमूजब मंसूख जानना मुस्तहब या लाज़िम भी है, तो कौन साहब हकीकत व अदालत इतनी कुदरत और रू पोशी की पर्दा अंदाज़ी हक़-तआला की तजल्लियात और अस्मा-ए-जलाली पर बर्दाशत कर सकेगा? कौन साहब इंसाफ़ ना कहेगा कि दर हालिका ज़बूर नुस्ख हो जाएं तो दुआ और सवाल और इस्तिग़फ़ार और हम्द व ममदोह और हसनात व औसाफ़ का ज़िक्र और एहसानों और नेअमतों की शुक्रगुजारी का नमूना महव व नेस्त हो गया, जो इस आलम-ए-फ़ानी में लामिसाल और लासानी है, हाँ जिससे फ़रिश्तों के मिज़ाज की मुताबिक़त बनी-आदम में पैदा हो सकती और हुआ भी करती है और मोमिनीन और मुक़द्दसीन उन के पाक तवाइफ़ (पाक बादशाहत) की रिफ़ाक़त में दाख़िल हो जाते हैं।

बाद इस जुम्ला मोअतरिज़ा के जो यान हकीकत को मालूम हो कि खुदा तआला की आइन्दा सल्तनत की तीन चार ख़सुसियात और लवाज़मात मुतय्यना मज़ामीर में ज़ाहिर की जाती हैं। अच्चल ये कि खुदावन्द मसीह आप ही अपनी हज़रत पुर जलाल और कुदरत आमेज़ ज़ाहिर कर के अपनी मुस्नद अदालत के हुज़ूर में कुल आलम के साकिनान को बुलवाएगा। देखो (ज़बूर 50) में वो सदर अदालत किस तरह जारी होगा, “रब खुदावन्द खुदा ने कलाम किया और मशरिक़ से मगरिब तक दुनिया को बुलाया। सिय्योन से जो हुस्न का कमाल है खुदा जलवागर हुआ है। हमारा खुदा आएगा और ख़ामोश नहीं रहेगा। आग उस के आगे आगे भस्म करती जाएगी और उस की चारों तरफ़ बड़ी आंधी चलेगी। अपनी उम्मत की अदालत करने के लिए वो आस्मान व ज़मीन को तलब करेगा।” (50:1-4) जो इस बयान के मुतफ़र्रिकात और

मुफ़र्रिदात पर गौर व तामिल करे सो यकीनन जाने कि इस सदर अदालत का जो आफ़ियत में होगी, तशरीह अहवाल व हक़ायक़ ज़बूर और इन्जील में असालतन (बजात-ए-ख़ुद, ख़ुद आप, ब नफ़्स-ए-नफ़ीस) एक ही है, मसलन वो आवाज़ जिसे सुन कर साकिनान क़ब्र अपनी ख़्वाब मौत से जागेंगे ख़ुदा ही की आवाज़ है। वो कलिमतुल्लाह (كلمته الله) जो ख़ुदावन्द मसीह है जिसके जिस्म मुतजल्ली में उलूहियत की कुल भर पूरी रहती है, अपने फ़रिशतों से इर्शाद करेगा कि जिंदों मुर्दों, ख़वास व अवाम को मेरे हुज़ूर में हाज़िर करो, पर अक्वलन मेरे मुक़द्दसों को। इस अम्र में ज़बूर और इन्जील की शहादत में इतिफ़ाक़ कामिल है। चुनान्चे कुरंथियो के पहले ख़त में मशहूद (मौजूद, जाहिर) है। “लेकिन हर एक अपनी-अपनी बारी से, पहला फल मसीह, फिर मसीह के आने पर उस के लोग।” (1 कुरंथियो 15:23) और थिस्सलुनीकियों के नाम ख़त में लिखा है, “पहले तो वो जो मसीह में (मुए) मरें जी उठेंगे” (1 थिस्सलुनीकियों 4:16) और वही रसूल (इब्रानियों 12:19-26) में हमें जताता है कि ये आवाज़ उसी मुतकल्लिम की है जिसकी आवाज़ कोह-ए-सीना यानी कोह-ए-तूर पर सुनकर हज़रत मूसा ने भी लर्ज़िश व ख़ौफ़ खाया और बनी-इस्राईल मिन्नत से अर्ज़ व माअरोज़ करने लगे कि जो हम इस आवाज़ को फिर सुनेंगे तो मर जाएंगे और इसी अपनी आवाज़ की कुदरत के बयान में ख़ुदावन्द मसीह ने ना मुबालगा और मुफ़ाज़िला की राह से, बल्कि ख़ूब साख़ता और संजीदा इबारतों में और क़सम खाने वालों की ताईद और तशदीद शहादत से फ़रमाया “इस से ताज्जुब ना करो क्योंकि वो वक़््त आता कि जितने क़ब्रों में हैं उस की आवाज़ सुन कर निकलेंगे, जिन्होंने नेकी की है जिंदगी की क्रियामत के वास्ते और जिन्होंने ने बदी की है सज़ा की क्रियामत के वास्ते।” (युहन्ना 5:28,29) और इब्रानियों के नाम ख़त के इसी बाब मज़कूर में रसूल मुक़द्दस ने रूह इल्हाम की हिदायत से हज्जी नबी के अक्वाल इल्हामी को मए

तारीफ़ और तशरीह नक्ल करके फ़रमाया है, “ख़बरदार ! उस कहने वाले का इन्कार ना करना क्योंकि जब वो लोग ज़मीन पर हिदायत करने वाले का इन्कार कर के ना बच सके तो हम आस्मान पर के हिदायत करने वाले से मुँह मोड़ कर क्योंकि बच सकेंगे? उस की आवाज़ ने उस वक़्त तो ज़मीन को हिला दिया मगर अब उस ने ये वाअदा किया है कि एक बार फिर मैं ना फ़क़त ज़मीन ही को, नहीं ! बल्कि आस्मान को भी हिला दूंगा।” (इब्रानियों 12:25-26)

इसी कलिमतुल्लाह (كلمته الله) ने जैसा तौरैत के मुक़द्दमे में बयान होता है अज़ाम फ़लकिया और अजसाम अर्ज़िया को आलमे नेस्त से हस्त में दाख़िल कराया। जिस वक़्त “ख़ुदा ने कहा (यानी कलाम किया) कि रोशनी हो जा और रोशनी हो गई।” (पैदाईश 1:3) और वही कलिमा आख़िर ज़माने में उसी आलम के नज़्म व नुस्क़ को और ताल्लुकात व सिलसिले जात को जिन्हें आप ही ने ताअय्युन किया था, तोड़ कर हल करेगा और वो नया आस्मान और ज़मीन जो कामिल रास्ती का जाये सुकूनत और करार होगा, दरपेश करेगा। फिर ज़बूर मज़कूर को इन्जील पेशीनगोइयों के साथ मिलाने और मुक़ाबला करने से साफ़ मालूम होता है कि उस मुस्नद अदालत पर जिसके हुज़ूर में हर शख्स घुटना टेकेगा और हर ज़बान उस मुंसिफ़ अज़ीम की ईलाही कुदरत व किब्रियत की काइल होगी, मुक़द्दसों की जमाअत हम नशीन और हम-जलीस होगी। सच तो ये है कि ख़ुदावन्द मसीह के हकीकी दोस्तों में से एक भी नहीं जो रुत्बा आली और दर्जा जलाली की उम्मीद पर ख़ुदावन्द की सिपहगरी की मेहनतें नहीं उठाता और खुशी से मौरिद ज़िल्लत व हकारत व रुस्वाई नहीं हो जाता, बल्कि वो तो इस नाम-ए-मुबारक और महमूद के लिए बेइज़्जती उठानी ऐन इज़्जत जानते हैं।

अज़ां जिहत कि उसी में रब तआला की माहीयत (असलियत) का नक़्श और जलाल के नूर का ज़हूर पहचान कर उस की कुर्बत (नज़दिकी) और दीदार व ख़िदमत को बहिश्त की ऐन निशात जानते हैं, पर जब उस की मुहब्बत इस क़द्र बे दरेग और फ़य्याज़ है कि मताबईन और रफ़ीक़ों और खादिमों को अपनी चीज़ों में यानी अपनी तजल्लियात व फ़ज़ाइल व हसनात में शामिल व शरीक करना अपनी शान जानता है, बक़्द्र उन की इस्तिदाद (सलाहियत) के तो कुछ भी चीज़ अपने वास्ते नहीं छोड़ता और उस की मर्जी ये भी है कि इस आलम की आक्रिबत और बाज़पुरस के वक़्त उस की बर्गुज़ीदा ख़ल्क अज़राह ख़िलाफ़त व वकालत उस की हम नशीन हो जाये। चुनान्चे लूका की इन्जील में ये वाअदा हवारियीन के साथ मख़्सूस व मुक़य्यद बताया जाता है, “और जैसे मेरे बाप ने मेरे लिए एक बादशाही मुक़र्रर की है मैं भी तुम्हारे लिए मुक़र्रर करता हूँ। ताकि मेरी बादशाही में मेरी मेज़ पर खाओ पियो बल्कि तुम तख़्तों पर बैठ कर इस्राईल के बारह क़बीलों का इन्साफ़ करोगे।” (लूका 22:29,30)

और करीब इतनी ही वुसअत का और फ़य्याज़ी का एक वाअदा आम और बेक़ैद सब खादिमों के लिए मुकाशफ़ा की किताब में इस शाहिद हक़ीक़ी और मोतमन ज़बान पर आता है, “जो ग़ालिब आए मैं उसे अपने साथ अपने तख़्त पर बिठाऊँगा। जिस तरह मैं ग़ालिब आकर अपने बाप के साथ उस के तख़्त पर गया।” (मुकाशफ़ा 3:21) और फिर दानीयेल भी अपनी नबुव्वत में इसी तक़रीर पर गवाह है, “लेकिन हक़ तआला के मुक़द्दस लोग सल्तनत ले लेंगे और अबद तक हॉ अबद-उल-आबाद तक उस सल्तनत के मालिक रहेंगे, और तमाम आस्मान के नीचे सब मुल्कों की सल्तनत और ममलकत और सल्तनत की हशमत हक़-तआला के मुक़द्दस लोगों को बख़शी जाएगी।□

(दानीयल 7:18,27) इब्न-ए-खुदा यानी नखसत जादे मुकद्दसों की तमाम खल्क का वो ज़हूर होगा जिसका तज़िकरा रसूल मुबारक ने रोमीयों के नाम खत में उम्मीदो मुहब्बत के बड़े जोश से इशारतन किया है कि, “क्योंकि मख्लूक़ात कमाल आरजू से खुदा के बेटों के ज़ाहिर होने की राह देखती है।” (रोमीयों 8:19) ये बात और भी आक्रिबत अंदेशों के मुलाहिजे के लायक है जो ज़बूर में इज्मालन पर तफ़्सील-वार मुकाशफ़ात युहन्ना में साफ़ नमूदार होती है कि उस नए आस्मान और नई ज़मीन पर से जो उस वक़्त पुरानों और रद्द किए हुंवो के काइम मक़ाम होंगे, हर खताकार और अहले शर नेस्त हो जाएगा।

ज़बूरों में ये उम्दा नतीजा दो तरहों और तदबीरों से हासिल बताया जाता है। एक तो ये कि कलाम-ए-खुदा की उस दिल तराश शमशीर ज़नी से जो मुकद्दसों के मुँह से निकलेगी, अहले खिलाफ़ में से लाखों आदमी अपने कीना और फ़ित्ना व फ़साद और बगावत की निस्बत क़त्ल हो कर और मर कर खुदा की और उस के इब्ने महबूब की निस्बत जिँएँगे और यही कलाम-ए-खुदा वो आहनी सलाख और तौक़ व ज़ंजीर और बेड़ियाँ और कैद-खानों के कुफ़ुल हैं, जिनसे खुदा के बंदगान हक़ीर व मज़्लूम उस वक़्त मुहब्बत आमेज़ इंतिक़ाम की राह से अपने तिश्वा खून ज़ालिमों को कैद कर लेंगे। हाँ ना अज़ाब व हलाक़त के लिए बल्कि हयात व सआदत बहिश्त के लिए बाँधेंगे। जिस बात की तारीफ़ व तक़रीर (ज़बूर 149) में पढ़ी जाती है, “मुक़द्दस लोग जलाल पर फ़ख़्र करें। वो अपने बिस्तरों पर खुशी से नग़मा सराई करें। उन के मुँह में खुदा की तम्ज़ीद और हाथ में दो-धारी तल्वार हो ताकि क़ौमों से इंतिक़ाम लें और उम्मतों को सज़ा दें। उन के बादशाहों को ज़ंजीरों से जकड़ें और उन के सरदारों को लोहे की बेड़ियाँ पहनाएं ताकि उन को वो सज़ा दें जो मर्कूम है। उस के सब मुक़द्दसों को ये शर्फ़ हासिल है। खुदावन्द की हम्द हो।” (ज़बूर

149:5-9) बरअक्स उस के जो बाकी शैतानी तबीयत वाले हैं, जिनकी दानिस्त में जुल्म व तअद्दी व शरारत ऐन फ़ख़्र व ज़ीनत है और वो अपने बुग़ज़ से खुदा की तरफ़ मुराजअत करना मकरूह जानते हैं। उनका होलनाक अंजाम बताया जाता है। चुनान्चे दूसरे ज़बूर में लिखा है कि, “तू उन को लोहे के असा से तोड़ेगा। कुम्हार के बर्तन की तरह तू उन को चकना चूर कर डालेगा।” (ज़बूर 2:9) और मुकाशफ़ा की किताब में उन की शिद्दत अज़ाब बयान होती है, “वो पाक फ़रिशतों के सामने और बर्बा के सामने आग और गंधक के अज़ाब में मुब्तला होगा।” (मुकाशफ़ा 14:10) तक्मील सल्तनत के करीब होने की एक और अलामत ज़बूरों में बल्कि कुल कलाम-ए-ख़ुदा में माअरूफ़ व मशहूर है कि कौम मतरूक इस्राईल की और सीहोन का कोह मर्दूद दुबारा हक़ तआला के हुज़ूर में मुख्तार और मुखतस और मन्ज़ूर होगा। चुनान्चे यर्मियाह नबी की किताब में है, “ख़ुदावन्द फ़रमाता है उन दिनों में और उसी वक़्त इस्राईल की बद-किर्दारी ढूँढे ना मिलेगी और यहूदाह के गुनाहों का पता ना मिलेगा क्योंकि जिनको मैं बाकी रखूँगा उन को माफ़ करूँगा।” (यर्मियाह 14:20) और रुसुल व अम्बिया की हज़ार-हा गवाहियों से ये बात साबित और अज़हर-मिन-अशशम्स है कि रब तआला ने जिस नस्ल यहूद को इस अहद व मीसाक़ के सबब जिसे इब्राहिम और बाकी औलिया-ए-क़दीम के साथ मुतअय्यन किया था, अज़ीज़ और बर्गुज़ीदा किया। सो उन्हीं आख़िर अय्याम में अस्ल दर्जे की निस्बत और उम्दा और अफ़ज़ल दर्जे में बहाल करेगा और अहले ईमान में से कौन शख्स ऐसी ग़ैर-वाजिबी बात मानेगा कि ख़ुदा तआला वफ़ा व ईद में ईमानदार पर वादों की तक्मील में बेवफ़ा हो और पोलुस रसूल के रोमीयों के नाम खत में (रोमीयों 11:15) ये ताअलीम मिलती है कि जब उस महबूब कौम की अहद शिकनी और बगावत गुजश्ता अल्लाह तआला के फ़ज़ल व वफ़ादारी से बख़शी जाएगी और अपनी फ़ज़ीलत और शराफ़त क़दीम पर उन की

बहालियत पूरी होगी। तब इस कद्र चशमा-ए-बरकत व खेरियत फ़रावान कुल आलम के लिए फूट निकलेगा कि उस का हाल ऐसा बदलेगा, जैसा मुर्दा उठकर जिंदा हो गया। और यकीन है कि उस वक़्त रब तआला की और उस के खुदावन्द मसीह की सल्तनत जो मुदत से पोशीदा और खुफ़ीया बढ़ती और जड़ पकड़ती चली आई थी, अलानिया फ़ाश व कश्फ़ हो जाएगी।

ऐ साहिबो इस मलकूत के इन्किशाफ़ पुर जलाल को इस रूह खुदा ने जो रूह इल्हाम और काशिफ़-ए-इसरार है, इशारतन और मुजम्मलन तो हज़रत दाऊद के ज़रीये से और मुफ़स्सिलन अम्बिया-ए-सलफ़ और मुसन्निफ़ मुकाशफ़ा के ज़रीये से मुबय्यन और क़लम-बंद कराया है और ये अम्र भी साफ़ दिखाया है कि बैतुल-मुक़द्दस और कोह सीहोन उस सल्तनत का दार-उल-खिलाफ़त होगा। चुनान्चे (जबूर 102) में वो रूहुल-कुद्दूस हमें सिखाता है, “तू उठेगा और सिय्योन पर रहम करेगा क्योंकि उस पर तरस खाने का वक़्त है, हाँ उस का मुईन वक़्त आ गया है, क्योंकि खुदावन्द ने सिय्योन को बनाया है। वो अपने जलाल में ज़ाहिर हुआ है।” (जबूर 102:13,16) इस कश्फ़ व जहूर की सरीह शहादत यसअयाह नबी की किताब में मिलती है, “और जब रब्ब-उल-अफ्वाज़ कोह सिय्योन पर और यरूशलेम में अपने बुजुर्ग बंदों के सामने हशमत के साथ सल्तनत करेगा तो चांद मुज़्तरिब और सूरज शर्मिदा होगा।” (यसअयाह 24:23) और इसी तरह इस इन्किशाफ़ सल्तनत मज़कूर के सब मुक़द्दमात यानी वाक़ियात क़ब्ल और हवासिल और नताइज बाद की कैफ़ीयत हाल सिर्फ़ इशारतन और मुजम्मलन मुन्दर्ज जबूर हुई। यानी क़ब्ल अज़ कियाम सल्तनत, किस तरह वो हरीफ़ खुदा तआला का और खुदावन्द मसीह का जिसको अहले मुहम्मद [दज्जाल] कहते हैं, पर खुदावन्द मसीह और हवारीयीन कुद्दूस उसे “साहिब-ए-शर” और “मसीह काज़िब” और “मसीह[

का ऐन मुखालिफ़ा वगैरह कहते हैं। हर-चंद कि वो कुछ अरसे तक इज्माअ मोमिनीन की सख्त और मुफ़ीद आजमाईशों के लिए अबना-ए-ममलकत की खराब हाली और दिक्कत शदीद और दिली जुंबिश व इजतिराब का मूजिब व बाइस हो, पर तो भी मौसम मुईन पर खुदावन्द के ज़हूर के शोला-ए-बराक़ से भस्म होगा, बल्कि अबद तक नेस्त व नाबूद होगा और किस तरह खुदावन्द उन और उनकी मानिंद दीगर तेज़ इम्तहानों के ज़रीये से इज्माअ कुद्स में से सब क़बायह और हर किस्म का किज़ब व ख़ुबस व फ़साद और जो कुछ बात पलीदो नफ़रत-अंगेज़ और ठोकर खिलाने वाली इस में मख़्लूत हो गई, उस की कमाल मराफ़ात बे दरेग़ और तस्फ़ीया करेगा। बमूजब उस क़ौल के जो उस की ज़बान मुबारक से निकला “इब्न-ए-आदम अपने फ़रिशतों को भेजेगा और वो सब ठोकर खिलाने वाली चीज़ों और बदकारों को उस की बादशाही में से जमा करेंगे। और उन को आग की भट्टी में डाल देंगे। वहां रोना और दाँत पीसना होगा। उस वक़्त रास्तबाज़ अपने बाप की बादशाही में आफ़ताब की मानिंद चमकेंगे।” (मत्ती 13:41-43) और बेशक ये बात अक्वल ज़बूर में मुशारू-इलयहा है, इसलिए “शरीर अदालत में क़ायम ना रहेंगे ना ख़ताकार सादिक़ों की जमाअत में, क्योंकि खुदावन्द सादिक़ों की राह जानता है पर शरीरों की राह नाबूद हो जाएगी।” (ज़बूर 1:5-6)

साहिबो मेरी मिन्नत और अर्ज़ है आप से ख़्वाह मसीही हो, ख़्वाह मुहम्मदी इस बात पर गौर व तामिल करो जिससे एक भी बात कुल कलाम-ए-ख़ुदा में अज़हर और सरीह तर नहीं है कि खुदावन्द मसीह तब ही यानी कब्ल अज़ कश्फ़ व क़ियाम सलतनत सब मक्कारों और रियाकारों को जितने-जितने खल्क ने खल्कत जदीद का भेस पहन कर पुरानी इन्सानियत की गंदी पोशाक तहक़ीक़ नहीं उतारी, उन्हें जमाअत मोमिनीन हकीकी में से रूह अदालत

और रूह सोज़िश से साफ़ कर के भेड़ों से बकरीयों को और उम्दा गेहूँ से भूसी जुदा कर के अपनी कलीसिया को पाक, बेऐब दुल्हन की मानिंद अपने बाप के रूबरू हाज़िर करेगा। चुनान्चे रसूल कुलस्सियों के नाम खत (कुलस्सियों 3:11) में फ़रमाता है, “सिर्फ मसीह सब कुछ और सब में है।” और (1 कुरंथियो 15:28) में मशहूद है, “सब में खुदा ही सब कुछ हो।”

अज़ां जिहत कि जहां नूर है, वहां नूर की तजल्लियात और जहां माहीयत (असलियत) है, वहां माहीयत (असलियत) का नक़्श है। अगरचे वो ख़ास “दज्जाल” जो अखीर-उल-अय्याम में होगा किसी ज़बूर दाऊदी का साफ़ और यकीनी मिस्ताक़ नहीं है, पर तो भी उस के बाअज़ पेशरूवों और तमसीलों का ज़िक्र और इशारा है। चुनान्चे युहन्ना रसूल ने कहा कि, “जैसा तुमने सुना है कि मुखालिफ़ मसीह आने वाला है, उस के मुवाफ़िक़ अब भी बहुत से मुखालिफ़ मसीह पैदा हो गए हैं।” (1 युहन्ना 2:18) जिससे वो रसूल हमें मालूम कराता है कि पुश्त दर पुश्त बाअज़ शख्स खाइन और दगाबाज़ उठा करते हैं जो खुदा की रिफ़ाक़त करीब से अपना हाल बदल कर तल्ख़ तरीन हासिद और हीला-साज़ दुश्मन बनते हैं और जिनसे दज्जाल की बदबू निकलती है और उस की मकरूह सूरत नज़र आती है। हाँ इस क़द्र खुदा की तरफ़ से कीना और नफ़रत उनके दिलों में जम जाता है कि अगर मक्दूर (ताक़त) हो तो खुदा तआला का नाम व निशान और औसाफ़ व जोद आलम-ए-हस्ती से महव कर दें।

अबवाब-बाला से मालूम हो गया कि ग़ालिबन एक ऐसा शख्स अखीतफ़ल नाम हज़रत दाऊद के मुशीरों और हबीब रफ़ीकों में से था और इसी तरह खुदावन्द मसीह के हवारियों में से भी यहूदाह इस्किरियोती नाम एक मशहूर खाइन निकला। पस सिर्फ़ ऐसे ही शख्सों और क़ौमों के साथ (ज़बूर 69 और 109) की सख़्त और वहशत-अंगेज़ लानतें मुक़य्यद हैं। हरगिज़ कोई साहब

ऐसा बेजा और नारवा ख्याल ना करे कि जो लानतें और बद दुआएं इन ज़बूरों में मुन्दर्ज हैं किसी नबी या बंदे खुदा ने अपनी जान या घर या कबीले के किसी दुश्मन की निस्बत उन्हें ज़बांजद या कलम-बंद किया और ना खुदा तआला के आम दुश्मनों की निस्बत। मगर सिर्फ खुद शैतान ही की निस्बत और उस के खलीफों की निस्बत जिनकी अमलियत उसी की फ़अलियत पर मौकूफ़ है और जो जो रब तआला और मसीह के मुखालिफ़ शुरू से उस अशर (बहुत शरीर) और अशद्द (शदीद तरीन) और लइन (लानती) तरीन तक जो आक्रिबत में होने वाला है, बराबर होते चले आएँगे। बाकी ज़रा सा ज़िक्र चाहीए एक और अम्र का जो आलम उक़्बा के वाक्रियात और अलामात मौऊद में शुमार होता है कि कलाम-ए-खुदा के इस वक़्त मुल्क ब मुल्क और क़ौम ब क़ौम इशतिहार व इंतिशार होने के सबब (ज़बूर 22) का वो भारी खुश मज़्मून पूरा होगा। “सारी दुनिया खुदावन्द को याद करेगी और उस की तरफ़ रुजू लाएगी और क़ौमों के सब घराने तेरे हुज़ूर सज्दा करेंगे। क्योंकि सल्तनत खुदावन्द की है वही क़ौमों पर हाकिम है।” (ज़बूर 22:27,28) इस मतलब मतलूब के जल्द सरज़द और बर-पा होने के लिए काश हम सब दिलोजान से वो उम्दा सिफ़ारिश (ज़बूर 82:8) से निकाल कर अर्ज करें। “ऐ खुदा ! उठ ज़मीन की अदालत कर। क्योंकि तू ही सब क़ौमों का मालिक होगा।” आमीन

बाब दहम

दरबाब फ़ज़ाइल शराअ व ख़ुसूसुन दर जवाब आँ
 मसअला कि चहतौर आन शराअ क़ाबिल मत्रोकियत
 अस्त व बकदाम हैसियत व एतबार मत्रोकीतिश अली
 अलद्वाम मुहाल व बईद अज़िकयास अस्त

درباب فضائل شرع و خصوصاً در جواب آل مسئله که چه طور آن شرع قابل مکتوبیت است و

بکدام حیثیت و اعتبار مکتوبیتش علی الدوام محال و بعید از قیاس است

इस रिसाले के अक्सर पढ़ने वालों को मालूम होगा कि बाअज़ शख्सों ने ये ख़ाम तसव्वुर किया और उसे हवाले क़लम भी किया कि पोलुस रसूल ने उस शराअ मूसवी में जिसको तौरैत कहते हैं तरह-तरह के रज़ाइल निकाले हैं, कुछ फ़ज़ाइल इस में नहीं पाए। जिससे उन्होंने ने ये बेजा और नाहक़ नतीजा निकाला है कि रसूल मज़कूर ने हज़रत मूसा की शराअ को रद्द और मंसूख़ बताया और उसे हर सूरत से बातिल और बेमाअनी, बल्कि ख़ुदावन्द मसीह का ऐन मुख़ालिफ़ जाना। और बेशक़ कुछ ताज्जुब नहीं कि जो अशख़ास बिला गौर व तामिल और रूहुल-कुद्दुस से हिदायत और तौफ़ीक़ मांगे बग़ैर तास्सुब व हट धर्मी से रसूल मुबारक के ख़ुतूत का मुतालआ करते हैं, कुछ एहतिमाल और इश्तिबाह करें कि इस मसअले की बाबत उस की ताअलीम की अस्तल मुराद और मुतालिब क्या हैं और कि वो लोग बाअज़ मुहीन और बारीक मज़ामीन में ठोकर भी खाएं। चुनान्चे पतरस रसूल ने ख़ुद अपने दूसरे ख़त

में (2 पतरस 3:15) में फ़रमाया [हमारे प्यारे भाई पोलुस ने भी सारे खतों में इन बातों का ज़िक्र किया है, उनमें कितनी बातें हैं जिनका समझना मुश्किल है और वो जो जाहिल और बे-क़याम हैं, उनके माअनों को भी अपनी हलाकत के लिए फेरते हैं।]

पस बाब ज़ेल में रूह हिकमत व फ़हमीदा से मदद व तौफ़ीक़ मांग कर मुसन्निक़ रिसाले इस बात को मुजम्मलन अहले इन्साफ़ और मुहक्किकीन के लिए साबित किया चाहता है कि पोलुस रसूल के ख़ुतूत में जितनी तक़रीरें इस बू और मज़ा की हैं कि उन से रब तआला की शरअ मूसवी मअयूब (एब वाला) और हकीर और मज़मूम मालूम देती है। सो वो ऐब व ज़म सिर्फ़ सूरतन और ज़ाहिरन है, हकीकतन नहीं। बल्कि वो हज़रत शरअ के फ़ज़ाइल और फ़वाइद पर बहुत ज़ोर और ताकीद फ़रमाता है और जैसा ख़ुदावन्द मसीह ने आप किया, वैसा ही उस के रसूलों ने भी शरअ और तौरैत की ताज़ीम व तक़रीम फ़रमाई और अपने आपको और कुल जमाअत मसीही को इस शरअ का निहायत एहसानमंद और मर्हूने मिन्नत जाना। इंशाअल्लाह रसूल मुबारक का हकीकी मतलब और मुराद ज़्यादा सफ़ाई और आसानी से फ़ाश और रोशन होगा। पहले ही पहल लफ़ज़न-लफ़ज़न वो नक़लियात पेश करेंगे जिन की ज़ाहिरी सूरत और ख़ाली इबारत में शरअ की ज़रा सी तज़लील और तहकीर मालूम होती है। यानी उस की इज़्जत और शराफ़त कुछ घटती और इस की बतालत और कम कद्री और कम कोफ़ी की तारीफ़ व तस्दीक़ होती हुई मालूम होती है। अगर रिसाले ख़वानान होशयारी और सुबूरी से उन नक़लियात पर गौर करेंगे तो शायद शरअ मूसवी की निस्बत व ताल्लुक़ शरअ इन्जीली के साथ थोड़ा बहुत वाज़ेह और रोशन हो जाएगा।

जानना चाहिए कि खुसूसुन तीन खत पोलुस रसूल के खुतूत में से हैं जिनमें जाहिरन और सूरतन शरअ की तज़लील दिखाई देती है, यानी रोमीयों के नाम खत और इब्रानियों और ग़लतीयों के नाम खत। अक्वलन, रोमीयों के नाम खत (रोमीयों 4:14) का मज़्मून है, “क्योंकि अगर शरीअत वाले ही वारिस हों तो ईमान बेफ़ाइदा रहा और वाअदा ला हासिल ठहरा। सानियन, (रोमीयों 7:6) में है, “लेकिन जिस चीज़ की कैद में थे उस के एतबार से मर कर अब हम शरीअत से ऐसे छूट गए कि रूह के नए तौर पर ना कि लफ़्ज़ों के पुराने तौर पर ख़िदमत करते हैं। फिर ग़लतीयों के नाम खत में है, “और ये बात जाहिर है कि शरीअत के वसीले से कोई शख्स खुदा के नज़्दीक रास्तबाज़ नहीं ठहरता क्योंकि लिखा है कि रास्तबाज़ ईमान से जीता रहेगा।” (ग़लतीयों 3:11) और इसी खत में है, “तुम जो शरीअत के वसीले से रास्तबाज़ ठहरना चाहते हो मसीह से अलग हो गए और फ़ज़ल से महरूम।” (ग़लतीयों 5:4) उनके साथ अगर (इफ़िसियों 2:15) आयत मिलाई जाएगी तो ये अम्म और भी रोशन और मुबय्यन होगा “चुनांचे उस ने अपने जिस्म के ज़रीये से दुश्मनी यानी वो शरीअत जिस के हुक्म ज़ाबतों के तौर पर थे मौकूफ़ कर दी ताकि दोनों से अपने आप में एक नया इन्सान पैदा करके सुलह करा दे। फिर इब्रानियों के खत में है, “क्योंकि अगर पहला अहद बे नुक्स होता तो दूसरे के लिए मौका ना ढून्डा जाता, जब उस ने नया अहद कहा तो पहले को पुराना ठहराया और जो चीज़ पुरानी और मुद्दत की हो जाती है वो मिटने के करीब होती है।” (इब्रानियों 8:7,13) और इसी खत में है, गरज़ पहला हुक्म कमज़ोर और बेफ़ाइदा होने के सबब से मन्सूख हो गया, क्योंकि शरीअत ने किसी चीज़ को कामिल नहीं किया और उस की जगह एक बेहतर उम्मीद रखी गई जिस के वसीले से हम खुदा के नज़्दीक जा सकते हैं।” (इब्रानियों 7:18,19)

अब इनके मुकाबिल की बाअज़ और आयतों पर भी गौर व मुलाहिजा करना चाहिए जिनकी मुराद और मअनी इन आयात मज़कूर के बरअक्स और

मतनाकिज़ मालूम देते हैं, यानी शरअ की तारीफ़ और तहरीम व तहसीन उन से साफ़ व सरीह निकलती है। चुनान्चे वही रसूल (रोमीयों 7 बाब) की कितनी ही आयतों में इस तौर से शरअ को ममदूह करता है, “पस शरीअत पाक है और हुक्म भी पाक और रास्त और अच्छा है। (रोमीयों 7:12) क्योंकि हम जानते हैं कि शरीअत तो रूहानी है मगर मैं जिस्मानी और गुनाह के हाथ बिका हुआ हूँ। (रोमीयों 7:14) पस हम क्या कहें? क्या शरीअत गुनाह है? हरगिज़ नहीं बल्कि बगैर शरीअत के मैं गुनाह को ना पहचानता मसलन अगर शरीअत ये ना कहती कि तू लालच ना कर तो मैं लालच को ना जानता। (रोमीयों 7:7) मगर गुनाह ने मौक्रा पाकर हुक्म के ज़रीये से मुझ में हर तरह का लालच पैदा कर दिया क्योंकि शरीअत के बगैर गुनाह मुर्दा है। (रोमीयों 7:8) क्योंकि बातिनी इन्सानीयत की रू से तो मैं खुदा की शरीअत को बहुत पसंद करता हूँ। (रोमीयों 7:22) गरज़ मैं खूद अपनी अक्ल से तो खुदा की शरीअत का मगर जिस्म से गुनाह की शरीअत का महकूम हूँ। (रोमीयों 7:25)

अब इन सब आयतों को ज़रा होशयारी और इदराक से बाहम मिलाने वालों पर ये रोशन और नमूदार है कि इस एक लफ़्ज़ यानी “शरअ” या “शरीअत” के तीन मआनी पोलुस रसूल के ख़तों में दरपेश आते हैं, जिनकी तमीज़ बख़ूबी और ब-आसानी हो सकती है।

अव्वल : शरअ के पहले और उम्दा मआनी वो मुबादी और हकायक व उसूल हैं जिनमें शरअ का खुलासा-ए-लाज़वाल और ला मुतगय्यर (बदला हुआ) दर्ज है कि ये मआनी उस का क़ल्ब (दिल) अंदरूनी और बातिनी मग़ज़ हैं, मसलन “तुम पाक रहो क्योंकि मैं जो खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ पाक हूँ।” (ख़ुरूज 19:2) पर तो भी इस हर्फ़ का बे मतरूक और महफूज़ रहना अखीर ज़माने तक मुफ़्त और लाहासिल नहीं। अज़ां-जिहत कि वो हर्फ़ रूहानी मिज़ाज

के लिए आली मज़ामीन का मुअर्रिक है और मोमिनीन और मुहक्किकीन शरअ रूह खुदा की तौफ़ीक से उस पर गौर कर के उस के मज़मून अंदरूनी से रुहानी रिज़क को जज़ब कर के हज़म कर लेते हैं, जिस तरह जिस्मानी गिज़ा से जिस्म की कुव्वत और क़दो-क़ामत बढ़ता जाता है। ये शरअ निहायत पाक और मुहतरम है, अज़-बस कि रब तआला के ज़मीर ग़ैब का मज़हर और उस के महज़ूब ख़यालात और मुहासिबों का मुबय्यन है।

दोम : दूसरे मअनी इस शरअ के ज़ाहिरी अहकाम और तअयिनात हैं, मसलन वो जो रसूम इबादत और इबादत-गाह की आराइश व ज़ेबाइश से इलाका रखते हैं और जो फ़राइज़ कहानत और वसाइल तहारत और उनकी जीनत व हशमत व लिबास से और ज़बाएह और बाकी सब कुर्बानीयों की तर्तीब व इन्तिज़ाम से और ईदों और मीयादों और पाक मजलिसों के क़वाइद से और गुस्ल व वुजू ख़ास व आम के क़वानीन से मुल्हिक व मुताल्लिक थे। पस सब अस्हाब इदराक व तमीज़ को मालूम बाल-बदाहत (बदाहत, फ़ी-अल-बदीहा बात कहना, सरीही) है कि ये सब क़वाइद व रसूम एक ज़माने और एक क़ौम के साथ मख़सूस और मुक़य्यद होना चाहते हैं और तुफुलियत (बचपन) के हाल से मुनासबत रखते हैं, यानी इस हाल और दर्जे से जब जिस्म रूह पर ग़ालिब होता और हर्फ़ मअनी पर और अम्साल व साया जात अश्या व जवाहर पर तो वाजिबी हासिल है कि जब वो तिफ़ल ख़्वाह शख़्स हो, ख़्वाह क़ौम हो उम्र बलूग (जवानी) तक पहुंच गया हो तो कस्रत रसूमात के पुख़्ता मेवा के मुवाफ़िक़ आपसे आप कमाल रसीदा हो कर गिर जाएगी या नर्म व मुलाइम हाथ से बनाई जाएगी।

सोम : शरअ के तीसरे मअनी एक ख़ास मिज़ाज और दिल का मीलान है जिसकी अस्ल हर्फ़ परस्ती और ज़ाहिर परस्ती है और इस का भरोसा और

लापरवाई खुदा की तरफ़ और इस के रूबरू अमल व कसब व रसम की कसत से पैदा होती है और हलाल व हराम का अंदाज़ा व हिसाब ना क़ल्ब (दिल) की ख़ैर व बद् नीयतों और रग़बतों और खयालों पर मुन्हसिर जानती है, बल्कि क्रिस्म क्रिस्म की ख़ुराक के परहेज़ पर और नमाज़ व दुआ का सवाब (नेकी) ना उतना दिली सफ़ाई और पाकीज़गी पर और अपने कुल वजूद के नव-मख़्लूक होने पर और रुहानी मिज़ाज और खुद निसारी और गुफ़तार व रफ़तार की दुरुस्ती पर, मगर उन क़वाइद शरइया पर जो रूकूअ व सुजूद और क्रियाम व क़ऊद (बैठक, नशिस्त) और पाँच औक़ात के हद्द से इलाक़ा रखते हैं, मौक़ूफ़ बताती है। पस इस मीलान का मिज़ाज शरअ यानी शरअ की गुलामी और शरअ परस्ती कहलाती है। अज़ीजिहत कि जिसको आला और वसीला और तवस्सुत जानना चाहिए था उसी को इंतिहा और मंज़िल-ए-मक्सूद जानते हैं।

अब सोच बिचार करना चाहिए कि इस अक्वल मअनी में जो शरअ का ज़िक्र है तो रसूल माअरूफ़ उस की बे-इंतिहा तारीफ़ करता है और हर सूरत से उसे मुतजल्ली और रौनकदार और बुजुर्गवार ठहराता है और इस का ओहदा और खिदमत निहायत उम्दा और मुफ़ीद बताता है, बल्कि उस दूसरे मअनी की शरअ को मुद्दत मुईन तक बड़ी मनाफ़त (नफ़ा) का बाइस और वसीला हिदायत और मूजिब शुक्र बताता है। अज़ां जिहत कि वो अस्ल व अक्वल शरअ मज़कूर उसी की रसूम और आईन के ज़रीये से बंदगान-ए-खुदा को तंबीया और तादीब दिया करता था और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि जाहिलों का मुदरिस और जालों (बेकार) का मुअल्लिम हो गया था और खुदा तआला की ये मर्जी थी कि इस शरअ रसमिया को नूर और हिदायत के बाअज़ उसूल व मुबादी से मामूर कर के इनके वसीले से अपनी उम्मत की दस्तगीरी कर के उन्हें खुदावन्द मसीह की तरफ़ ले जाये और दर्जा फ़र्जन्दियत को पहुंचाए।

साहिबो शराअ तौरैत के लिए कोई शुक्रगुजार पोलुस रसूल से बढकर हरगिज़ नहीं मिलता। कोई अपने आपको उस का ज़्यादा एहसानमंद नहीं जानता। चूँकि उसी के ज़रीये से गुनाह के तुख्म मोहलिक और ज़हर-ए-कातिल का पर्दा खुल गया था और उसी तुर्श मुर्शद की हिदायत व तादीब से अपनी हकीकत-ए-हाल जान कर कि मुहताज, नाचार, ज़ेर-ए-बार गुनाहगार में हूँ, खुदा के उस महज़ फ़ज़ल का जिसकी दौलत मुफ्त व बेनिहायत खुदावन्द मसीह में है, उम्मीदवार हो गया था और दरया-ए-कहर से शाह बंदर नजात व सलामत में पनाह लेकर इस्तिराहत कुल्लिया और आराम पाया था। ये वो अस्ल शरअ और मजमा मुबादी और हकायक है जिसके हक में खुदावन्द ने फ़रमाया, “क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक आस्मान और ज़मीन टल ना जाएं एक नुक्ता या एक शोशा तौरैत से हरगिज़ ना टलेगा जब तक सब कुछ पूरा ना हो जाये।” (मत्ती 5:18) वो शरअ आप ही आप कामिल और खैर और रास्त और जिस खास ओहदे और खिदमत के लिए खुदा तआला से मुबय्यन हो गई, उस की मुहिम्मात और ज़वाबत को इस कद्र कमाल तौर पर वफ़ा करने के काबिल और लायक थी कि हर ऐब व कोताही से मुबर्रा थी और जितने नफ़र (अदना खादिम, नौकर) रूह-उल-कुद्दुस से रोशन ज़मीर और गैब दान हो गए, वो हद व हिसाब से ज़्यादा उसे लज़ीज़ व नफ़ीस व अज़ीज़ जानते हैं। जैसा हज़रत दाऊद (ज़बूर 119) में ईमान व मुहब्बत व निशात के जोश से फ़रमाता है, “आह! मैं तेरी शरीअत से कैसी मुहब्बत रखता हूँ। मुझे दिन-भर उसी का ध्यान रहता है।” (ज़बूर 119:97) और (ज़बूर 19) में उस अस्ल शरअ को जो मदार तौरैत है, शहद और शहद के टपकने वाले छत्ते से शीरीतर बताता है। (ज़बूर 19:10) और इस की अज़लियत और अबदीयत की उसी (ज़बूर 119) की बीस तीस गवाहियों से तक़रीर और तस्दीक करता है और इस के बातिनी मज़मून की कद्रो-कीमत ज़र व सीम के हज़ार-हा खज़ानों

से बढ़कर जानता है, ना कि उसे मतरूक और मंसूख जानता। और ऐसा ना हो कि किसी के दिल में जोश व मुबालगा का एतराज़ इतनी मदह व सताइश से पैदा हो तो वो हज़रत शरअ रब्बानी के ज़ातीया और बातिनी औसाफ़ व फ़ज़ाइल को सिल-सिलादारी से शुमार कर के (ज़बूर 119) में खुसूसुन इस फ़ायदे खास का तज़िकरा करता है जो शरअ की अमानत व ज़मानत में दिया गया है, यानी गुनाह खुफ़ीया को बे-हिजाब और नंगा कर के और उस के इसरारों को कश्फ़ कर के खुदा तआला की क़हर रेज़ी और सख़्त मुहासिबा व इताब का ख़ौफ़ दिल में पैदा करता है, “कौन अपनी भूल चूक को जान सकता है? तू मुझे पोशीदा ऐबों से पाक कर। तू अपने बंदे को बेबाकी के गुनाहों से भी बाज़ रख वो मुझ पर ग़ालिब ना आएंगे तो मैं कामिल होऊंगा और बड़े गुनाह से बचा रहूंगा।” (ज़बूर 19:12,13)

साहिबो इबारत और तलफ़फ़ुज़ इन दो आयात बाला मन्कूल का निहायत कवी और नाफ़िज़ और दिल सोज़ है। चूँकि आँहज़रत (दुरुस्त तलफ़फ़ुज़ आँ हज़रत है) मुजम्मलन खुदा की शराअ के उस उम्दा फ़ायदे को बयान करता है कि खुदा की शरीअत गुनाह के उस मौरूसी तुख़्म और तासीर के जो जम्हूर बनी-आदम में सूरत-पज़ीर है और फ़ाइल व आमिल शरारत है, मुखालिफ़ और मुक़ाबिल होती है। तो वो दोनों रूबरू खड़े होते हैं और सख़्त जंग और कुशती जारी होती है। फिर इस जंग का जोश व जुंबिश बढ़ाना और मबऊस करना और इस कुशती की आतिश सोज़ां पर हैज़ुम (ईंधन, सूखी लकड़ी) का अंबार डालना। शरअ का पहला नतीजा और इस की फ़अलियत मुतअय्यन व मोअस्सर है। हाँ बेचारे गुनाहगार को मायूसी के ज़िंदान में जकड़ बंद करना जिससे मौत क़ब्ल अज़ मौत हो इस शरअ के ज़ख़्मों और ज़र्बों का हासिल हक़ीकी और खास्सा है। हाँ इस कुशती की तख़फ़ीफ़ और इस जंग में कुमक देना उस की

मंजिलत और कार्रवाई के अहाते से बेरून (बाहर) है। इस तखफ़ीफ़ और कुमक के काम में आप ही अपनी कम कुव्वती और कसूर का मुकर्र व काइल है। इस नाचार गुनाहगार को खुदा के फ़ज़ल व रहमत के खुले हुए दरवाज़े पर जो खुदावन्द मसीह है, पड़ा हुआ छोड़ा जाता है। खुदावन्द मसीह के हुज़ूर में पहुंचा कर फिर आप पीछे हट जाता है। और इस अम्र में कुछ हतक-ए-इज़्जत नहीं उठाता बल्कि शर्फ़ व इज़्जत का इज़दियाद पाता है। तनज़्जुल नहीं, बल्कि तफ़ज़्जुल मिलता है। हाँ जैसा इस कोहे-ताबूर (Mbunt Tabor) में जहां खुदावन्द मसीह ने नक़ल सूरत (तब्दीली सूरत) हो कर अपने अस्ल जलाल और आइन्दा सल्तनत की रौनक कशफ़ की। हज़रत मूसा और हज़रत एलियाह जो दोनों के दोनों शरीअत के उम्दा सतून और मज़बूत पुश्तीबान¹⁴ थे, मसीह के साथ मुतजल्ली और मुनव्वर तीन मुखतस रसूलों को नज़र आए। इसी तरह वो शरअ खुद तालिबान नजात और मुंतज़िर इन खुदावन्द मसीह को खुदावन्द के हुज़ूर और ख़िदमत में हाज़िर कर के उस की तजल्लियात में जलवागर और इस की ज़ेब व ज़ीनत से नसीब वर करती है। इसी तरह खुदावन्द मसीह की शरअ मूसवी और कुल शरीअत ईलाही का मंज़िल-ए-मक़सूद और इस की सब मुरादों की तक्मील और सब वादों का मूफी बना और इस जिहत से शरअ खुदावन्द यसूअ मसीह में बड़ी ताज़ीम और तकरीम पाती है। और जो शरअ की ताबेअ फ़रमानी और तामील अहकाम बंदगान-ए-खुदा से नामुम्किन थी जब तक वो शरअ की गुलामी में थे, अब खुदावन्द मसीह में पैवस्ता हो कर फ़र्ज़न्द बनने पर उनसे बखूबी और आसानी से हो

14 इस लफ़्ज़ के मअनी [सहारा देने वाला साथी, मददगार] के हैं, इस से मुराद वह लकड़ी भी है जो निचे की जानिब पाएदार के लिए किवाड़, तख़्त, कशती, जहाज़ वगैरह में लगाई जाती है।

सकती है। जिस राज पर रसूल मुबारक साफ़ शहादत देता है, “इसलिए कि जो काम शरीअत जिस्म के सबब से कमज़ोर हो कर ना कर सकी वो खुदा ने किया यानी उस ने अपने बेटे को गुनाह आलूदा जिस्म की सूरत में और गुनाह की कुर्बानी के लिए भेज कर जिस्म में गुनाह की सज़ा का हुक्म दिया ताकि शरीअत का तक्राज़ा हम में पूरा हो जो जिस्म के मुताबिक नहीं बल्कि रूह के मुताबिक चलते हैं।” (रोमीयों 8:3,4)

पस जब इस अक्वल और अशर्फ़ मअनी वाली शरअ की ये हालत है कि अपने ओहदे और अहाते के अंदर की खास खिदमत और कार्रवाई को दर्जा कमाल तक पूरा कर सकती है, पर नजात व सलामत के तयक्कुन पैदा करने में आजिज़ और कम कुव्वत हो कर अज़ाब गिरफ़ता ख़ताकारों को अहद व मिसाक़ फ़ज़ल की उम्मीद में कैद और पाबंद छोड़ती है तो बतरीक़ ऊला उस शरअ का जिसका मदार कलाम, अहकाम और रसूम हैं, वही अजुज़ का हाल होगा। उन्हीं जाहिरी रस्मों और काईदों की तरफ़ इशारा कर के पोलुस रसूल फ़रमाता है, “पस अगर तुम मसीह के साथ दुनियवी इब्तिदाई बातों की तरफ़ से मर गए तो फिर उन की मानिंद जो दुनिया में ज़िंदगी गुज़ारते हैं इंसानी अहकाम और ताअलीम के मुवाफ़िक़ ऐसे काईदों के क्यों पाबंद होते हो, कि उसे ना छूना, उसे ना चखना, उसे हाथ ना लगाना, क्योंकि ये सब चीज़ें काम में लाते-लाते फ़ना हो जाएँगी?” (कुलस्सियों 2:20,21) “पस जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए तो आलम-ए-बाला की चीज़ों की तलाश में रहो जहां मसीह मौजूद है और खुदा की दहनी तरफ़ बैठा है।” (कुलस्सियों 3:1)

पस इस के मुवाफ़िक़ जो शरअ परस्त है तो शरअ रब्बानी के ऐन मतलब व मुराद से चूक गया है और अपनी ही रास्ती शरइया पर जब कायम और मब्नी होता है और उसे पुख़्ता और कामिल और बेऐब व बे चीन दिखाना चाहता है, तब खुदा की हकीकी रास्ती से बे-बहरा रहता है और चूँकि इस

मलऊन मेहमान की मानिंद जिसका जिक्र इन्जीली तम्सील में इबरत के लिए दर्ज है, ये जुरत करता है कि बादशाह की मुहय्या की हुई पोशाक रद्द कर के बादशाह के दस्तर ख्वान पर हाज़िर होने का अपने आप को मुस्तइद समझना है। इस वास्ते हर-चंद कि रस्म व रिवाज के हर हर्फ़ और शोशे का बारीक बीन और नुक्ता चीन हो, मगर फिर भी शरअ की रूह और हकीकत मजामीन से महरूम रहता है और हज़ार-हा तकालीफ़ शदीदा और लाज़रूरी का ज़ेर-ए-बार होता है। जो बंदगान इस तरह की गुलामी को फ़र्जन्दियत की आज़ादी और कुशादा दिली से अफ़ज़ल जानते हैं, उनका अंजाम क्या ही सख्त दुशवार और मलामत आमेज़ है। बमूजब इस क़ौल मसीह के, “और गुलाम अबद तक घर में नहीं रहता बेटा अबद तक रहता है। पस अगर बेटा तुम्हें आज़ाद करेगा तो तुम वाकई आज़ाद होगे।” (युहन्ना 8:35,36) और पोलुस रसूल की इबरत नुमाई वैसी ही है, “मगर किताब मुक़द्दस क्या कहती है? ये कि लौंडी और उस के बेटे को निकाल दे क्योंकि लौंडी का बेटा आज़ाद के बेटे के साथ हरगिज़ वारिस ना होगा। पस ऐ भाईओ हम लौंडी के फ़र्जन्द नहीं बल्कि आज़ाद के हैं।” (ग़लतीयों 4:30,31)

वो तमाम मसअला जिसका माख़ज़ व मदार शरअ और शरअ परस्ती है, रूहुल-कुद्दुस ने हज़रत पोलुस के ग़लतीयों के नाम ख़त के ज़रीये से इस कद्र कतई दलीलों और साफ़ तकरीरों और मुफ़ीद सलाहों से इन्फ़िसाल व इन्किताअ किया है कि ज़्यादा कील व क़ाल और मुबाहिसा महज़ तवालत लाहासिल और बातिल फ़ुज़ूलगो मालूम देती है। बिलाशुब्हा कलाम-ए-ख़ुदा की शमशीर ज़नी उस ख़त में निहायत तेज़ और दिल तराश है। इस से यकीन है कि हर शरअ परस्त ख़ुदावन्द मसीह के इस ओहदा जलीला और मंज़िला ला-शरीक पर नाहक़ दस्त अंदाज़ी करता है। जिस से वह ख़ुदावन्द मसीह आप

मौरिद लानत हो कर कातिल और कातेअ लानत शरइया सब मोमिनों के लिए हो गया और इलावा अजां वो शरअ परस्त खुदा तआला की इस मशरत कदीम को जो कबल अज़ आलमीन पुख्ता और साबित थी, ख्वारो जलील जान कर ता-बमकदूर ज़ेरो ज़बर और नेस्त व नाबूद करता है। अजां सबब कि अपनी कलील व नाक़िस शरअ पर्वरी और हिफ़ाज़त अहकाम का सवाब बमुक़ाम मसीह की वकालत व कफ़ारे के मूजिब कबूलीयत और बाइस नजात का बताता है। पस हर तालिब हक़ीक़त से अर्ज़ व माअरूज़ है कि बड़ी सोच व गौर से इस ख़त की सैर व मुतआला कीजीए और लौह खातिर पर नक़श व हिफ़ज़ कीजिए।

हासिल कलाम : अगर कोई मोअतरिज़ या जो यान हक़ीक़त फिर दुबारा ये सवाल करे कि ताअलीम इल्हामी रसूलिया और दर्स मसीही शरअ पर्वरी और रिआयत तौरेत के साथ कौन ताल्लुक़ रखता है तो इंशाअल्लाह इन खयालों पर गौर कर के ज़रा सी खातिर जमुई हासिल होगी और हक़ीक़त-ए-हाल दर्याफ़्त होगी। अगर वो मुहक्किक़ बरेतबार उस तीसरे मअनी वाली शरअ के ये सवाल करे तो रसूलों का जवाब सादा और सरीह आयात मज़कूर बाला से निकल चुका है। रसूल हर हाल और सूरत की शरअ परस्ती की ताकीद से तर्दीद करता है, बल्कि मिन्नत से इस की मुमानिअत करता है। अगर उस दूसरे की निस्बत सवाल हो जिससे मुराद रसूमात ईनजहानी और अहकाम जिस्मानी हैं कि तावक्त मुईन मामूर हो गए थे तो जवाब उस का बराबर सीधा और सादा और बे पस व पेश है। उस मीयाद तक उन की हिफ़ाज़त रिआयत बहुत ही सही व मुस्तहब बल्कि फ़र्ज़ व लाज़िम भी थी, बाद अजां आज़ादी के वक़्त उन की गुलामी और क़ैद में रहना बेजा है और महज़ नाशुक़ी और खुद-पसंदी, बल्कि फ़साद और ना-फ़रमानी जो मूजिब इल्ज़ाम है। और अक्वल

और आली मअनी वाली शरअ की हिफाज़त व इल्तफ़ात रसूल इस कद्र फ़र्ज़ व लाज़िम जानता है कि लज़ूमियत (ज़रूरत) इस की अब हज़ार गुनी बढ़कर बताता है।

इस वजह से कि खुदावन्द मसीह ने उस अस्ल शरअ का मए बाअज़ मुल्हिकात मुकर्ररा की तक्मील व तामील करना और कराना अपने जिम्मे लिया है, बल्कि अपनी ही मुहब्बत की खातिर अपनी रूह की तौफ़ीक से उस शरअ की रिआयत और तकरीम का दावा अपने सब बंदों से करता है और उस तामील की रग़बत और कुदरत भी उन के अंदरून में पैदा करना है और अपनी तक्मील शरअ और कफ़ारे के सवाब से उनकी तामील का नुक़्स व क़सूर बख़्शता है और पूरा भी करता है। बमूजब क़ौल बाला माअरूफ़ के, “इसलिए कि जो काम शरीअत जिस्म के सबब से कमज़ोर हो कर ना कर सकी वो खुदा ने किया यानी उस ने अपने बेटे को गुनाह आलूदा जिस्म की सूरत में और गुनाह की कुर्बानी के लिए भेज कर जिस्म में गुनाह की सज़ा का हुक्म दिया ताकि शरीअत का तक्वाज़ा हम में पूरा हो जो जिस्म के मुताबिक नहीं बल्कि रूह के मुताबिक चलते हैं।” (रोमीयों 8:3,4) और इसी शरअ की हिफ़ाज़त की बाबत पोलुस रसूल कुरिन्थियों के नाम ख़त में ये तकरीर और तारीफ़ करता है, “खुदा के नज़्दीक बे शरअ ना था बल्कि मसीह की शरीअत के ताबे था।” (1 कुरंथियो 9:21)

बाब याज़ दहुम

दर बाअज़ अम्साल व इबारात व मज़ामीन कलाम-
उल्लाह व खुसूसुन दर बाअज़ हवास व खवास कि दर
कुतुब ईलाही सोए रब तआला इतलाक़ कर्दा शूदा इन्दि
कि अज़ आंहा निज़द बाअज़ मुअतरज़ान नुक़स व
क़सूर दर शान ओ तआला मे आयद

در بعض امثال و عبارات و مضامین کلام اللہ و خصوصاً در بعض حواص و خواص کہ در کتب الہی سوئے رب تعالیٰ

اطلاق کرده شدہ اند کہ از آنہا نزد بعض معترضان نقص و قصور در شان او تعالیٰ لازم مے آید

करीब है कि हर कौम व मुल्क में बाअज़ अशखास ऐसे मिलते हैं जो अम्साल और तशबीहात की राह से मुतकल्लिम होना खुदा का मूजिब तखफ़ीफ़ व तन्क़ीस (नुक़सान, कमी) बताते हैं और उस की ज़ात मुबर्रा व मुअर्रा के औसाफ़ से बईद। और उन में से भी जो अम्साल और तशबीहात से नफ़रत नहीं करते बाअज़ ऐसे हैं कि अम्बिया की कोई कोई मिसालें कुतुब समाविया के नालायक़ और ना सज़ावार बल्कि जिशत (बदशक्ल) और ज़बू (आजिज़, जलील) भी जानते हैं। अज़बस कि वो लोग अपनी नाक़िस अक़लों को कलाम-ए-खुदा के तराजू और महक (कसौटी, वह स्याह पत्थर जिस पर सोना चांदी परखा जाता है) ठहरा कर अपने अपने ज़ोअम व क्रियास के क़वानीन को बनाते हैं। जिससे अगर ज़रा भी इख़्तिलाफ़ किसी मौज़ज़ में हो तो उसे कौल

खुदा से मुन्क़तेअ करना चाहते हैं और दर-हालिका खालिक व परवरदिगार आलम ने अपने दस्त की सनअत-गरी से जो बनी-आदम हैं, मुखातब और मुतकल्लिम होने के कई कई तरीकों को पसंद किया है। वह उस रब तआला पर क़ैद लगाने के वास्ते एक तरीका खास जिस की ﷺ मुहम्मद ने तक्लीद की है, मन्ज़ूर कर के सिर्फ उसी को शान-ए-खुदा और क़ौल इल्हामी का मुस्तहिक बताते हैं और बाकी सब अत्वार से वो सुलूक करते हैं जो यहवीकीम शाह यहूद ने बाअज़ वईदों और तहदीदों से किया, जिन्हें इस तआला ने यर्मियाह नबी पर नाज़िल फ़रमाया यानी चाकू लेकर उन वक्रों को चाक-चाक कर के अँगीठी में डाल कर भस्म कर दिया। इसी तरह वो नीम अक्ल और गुस्ताख खुदा तआला के अम्बिया पर बल्कि खुदा तआला पुर-तकब्बुराना ये दावा करते हैं कि रूहुल-कुद्दुस की इल्हामियत को हमारे क़ाईदों की हद्द के अंदर मुक़य्यद और महसूर करना ज़रूर चाहिए और अगर शायद वो रूह अपनी आज़ादगी के बमूजब इन हद्द मौज़ूअ से कुछ तजावुज़ करे तो अंगुशत बगोश हो कर गया खुदा के वज़ीर व मुशीर बन कर खुदा के मुक़द्दसों में अपने फ़तावी जारी करते हैं। हर-चंद कि हज़रत सुलेमान ने जो कुल जहान के उम्दा से उम्दा हकीमों से सबक़त ले गया, कलाम-उल्लाह की कमालियत और बे मुतरूकी पर ये साफ़ शहादत दी, “और मुझको यक़ीन है कि सब कुछ जो खुदा करता है हमेशा के लिए है। उस में कुछ कमी बेशी नहीं हो सकती और खुदा ने ये इसलिए किया है कि लोग उस के हुज़ूर डरते रहें।” (वाइज़ 3:14)

ग़ालिबन इन मज़कूर बाला मुतकब्बिरों ने इस अम्र मशहूर को फ़रामोश किया कि जब साहिब-ए-इल्म व फ़ज़ल अपने लड़कों को दर्स देना चाहता है तो उन्हें ना इतना बारीक इल्म ना इतनी लतीफ़ और ज़रीफ़ इबारतों में जितना उम्र रसीदों और अस्हाब इस्तिदाद (सलाहियत) के लिए चाहिए, ताअलीम देता

हैं वर्ना हकीम कद्रशनास हरगिज़ ना जाना जाएगा। अब सोच कर और होश से इस बात को समझ लो कि बादशाह और पर्दे आलमीन की ये मर्जी और रईयत पर्वरी और हिक्मत आमेज़ बन्दोबस्त था कि किताब कुद्स व समाविया ना सिर्फ यहूद की मीरास हो बल्कि कुल जिन्स इन्सान के सब कबीलों और लुगतों पर, मसलन बाबुल और नैनवा और ईरान और यूनान और रोम वगैरह। पर रफ़ता-रफ़ता मुन्कसिम और मुश्तर्क हो जाये और ये भी कि वो किताब ना एक ज़माने या पुश्त के साथ मुखतस हो, बल्कि पुश्त दर पुश्त नस्ल इब्राहिम के तव्वुलुद और तिफ़्लेत ही से लेकर उस नस्ल की उम्र दराज़ी और पीरी तक फैलती और अपनी तासीर बढ़ाती चली जाये यहां तक कि कोह सीहोन पर से चश्मा लबरेज़ उमंड कर दरिया-ए-नूर और हयात बन कर रुबअ मस्कून की बरकत व सेहत का बाइस हो जाये।

पस जब खुदा तआला की ये मर्जी थी तो गुमान ग़ालिब और वाजिब था कि इल्हाम का तर्ज़ तरीक़ रंगा-रंग और मुतफ़रि़क़ हो और कि रूह इल्हाम मुख्तलिफ़ अम्बिया और मर्दान-ए-खुदा को इख्तियार और तैयार कर के रब तआला के पैग़ाम के मज़ामीन बांट-बांट कर सपुर्द करे और ये भी कि जिस-जिस ज़माने में वो इल्हाम नाज़िल हुआ तो अहले ज़माने की फ़हमीदा और इस्तिदाद (सलाहियत) के कुछ मुवाफ़ि़क़ और मुनासिब हो। आंतोर कि दर-हालिका अस्ल मतलब तो एक ही हो, पर नबी-उल-ज़मान तिफ़लों से तिफ़लाना और बालिग़ों से बालिग़ाना बोले और ये सिर्फ़ वाजिबी गुमान नहीं बल्कि साफ़ नक़ली दलीलों से साबित और मफ़हूम है कि खुदा की ये ऐन मर्जी थी कि मआनी तो सब के सब अल्लाह जल्जलालहू के मुस्तूजिब, मगर इबारत और तरीका तफ़हीम व ताअलीम में फ़र्क़ बलिहाज़ व अंदाज़ा तफ़रीक़ हाल व बर्दाश्त सामईन के मुकरर हो।

चुनान्चे होसीअ की किताब में है, “मैं ने तो नबियों से कलाम किया और रोया पर रोया (कश्फ़) दिखाई और नबियों के वसीले से तश्बीहात इस्तिमाल की।” (होसीअ 12:10) और इसी अम्र का मुसद्दिक है वो कौल खुदा जिसमें हज़रत मूसा की सबक़त और तर्जीह बाकी सब नबियों की निस्बत बयान होती है। देखो गिनती की किताब में मर्कूम है, “तब उस (खुदा) ने कहा मेरी सुनो! अगर तुम में कोई नबी हो तो मैं जो खुदावन्द हूँ उसे रोया (कश्फ़) में दिखाई दूँगा और ख़्वाब में उस से बातें करूँगा। पर मेरा ख़ादिम मूसा ऐसा नहीं है, वो मेरे सारे ख़ानदान में अमानतदार है। मैं उस से मअमों में नहीं बल्कि रूबरू और सरीह तौर पर बातें करता हूँ और उसे खुदावन्द का दीदार भी नसीब होता है।” (गिनती 12:6-8) और ग़ालिबन कलाम ईलाही के तर्ज़ व तरीके की ये तफ़रीक़ व सूरत रंगा-रंग इशारतन एक दूसरे मुक़ाम में बताई जाती है, यानी यसअयाह की किताब में, “वो किस को दानिश सिखाएगा? किस को वाअज़ कर के समझाएगा? क्या उन को जिनका दूध छुड़ाया गया जो छातीयों से जुदा किए गए? क्योंकि हुक्म पर हुक्म, हुक्म पर हुक्म। क़ानून पर क़ानून, क़ानून पर क़ानून है। थोड़ा यहां थोड़ा वहां। लेकिन वो बेगाना लबों और अजनबी ज़बान से उन लोगों से कलाम करेगा।” (यसअयाह 28:9-11)

इलावा बरां कलाम-ए-खुदा की कुल्लियत ताअलीम और मुतअद्दा ख़ास शहादतों से (मसलन हज़रत सुलेमान के अम्साल की किताब के आठ अक्वल अबवाब पर गौर व लिहाज़ करने से) साफ़ मालूम होता है कि अस्ल और उम्दा मुराद रब तआला की तमाम जिन्स की मस्लिहत और तसहीह अवाम है। बाअद-अज़ां तफ़हीम व ताअलीम उलमा व हुकमा और वो हुक्म मुकरर ताकीद न हज़रत मूसा पर उतरा कि तिफ़लॉ कम फ़ह्र और नाख़्वान्दा भी

तौरैत में रोज़-रोज़ सुनने सुनाने से पुख्ता हो जाएं। पस ऐसे-ऐसे हुक्मों से क्या नतीजा निकलता है? मगर ये कि जैसा कोताह बीनों (नज़र की कमज़ोरी) के लिए ऐनक और सुस्त कदमों के लिए असा और तिफ़लों के लिए अबजद खानी मुफ़ीद है और ब-कार (मर्ज़) है, इसी तरह कलाम-ए-खुदा के मज़ामीन आली और हिकमतें और हकीकतें बे पायाब ना वाहीयात और पोच गोइयों (फ़ुज़ूल बकवास) और दून (शेखी) और अदना अक्वाल में, बल्कि रोज़मर्रा की तश्बीहों और तमसीलों में और मन्कूलात ज़बान ज़द में सुस्त फ़हमों के लिए माअरूफ़ हो जाएं।

हाँ रब तआला ने जिसके औसाफ़ और खिताबों में बनी-आदम का मुहिब और मुहाफ़िज़ मशहूर है गोया तवाज़ो की राह से अपनी किब्रीयत (गंधक, उम्दा सोना, ज़र-ए-ख़ालिस) को गुदाज़ व मुलाइम कर के और अपनी अलवियत व बुजुर्गी को पस्त व ख़ुर्द कर के ऐसे दिलासा और नरम व सहल ज़बान से इन्सान से तकल्लुम फ़रमाया कि गोया आप ही हवास इन्सानी और रग़बतों और दिली हरकतों और जुम्बिशों में शरीक था। मसलन हज़रत नूह के ज़माने का ज़िक्र है कि तमाम ख़ल्क-ए-खुदा की शरारत कुल्लिया और ज़लालत आम्मा के सबब उसे नेस्त से हस्त में लाने से रब तआला तवाब (तौबा करने वाला) था। और यर्मियाह नबी में इस कादिर-ए-मुतलक़ का बयान है कि जिस किसी नाचार ख़ताकार के क़ल्ब (दिल) व बातिन से ग़म व पशेमानी व नदामत की साफ़ अलामतें दिखाई देती हैं, उस पर आँ तआला सोख़ता व गदाख़ता (जला हुआ, अफ़सुर्दा, पिघला हुआ) हो कर तरस खाता है और तौरैत के दूसरे मुक़ाम में मज़कूर है कि कादिर-ए-मुतलक़ ने ग़ज़ब के जोश और सख़्त क़हर रेज़ी से हज़रत मूसा की सिफ़ारिश की मुमानिअत की, इस मुराद से कि कुल क़ौम बनी-इस्राईल को बेख़ व बिन से महव कर डाले। सच तो ये

है कि ऐसे-ऐसे जोश व जुंबिश दिली से खुदा तहकीकन मुबर्रा व मुअर्रा है, पर जब कि ये भी सच है कि खुदा ने आदम को अपनी मुशाबहत में अपनी मानिंद खल्क किया जिससे हमारे हवास की मज़कूर बाला जुम्बिशों बाअज़ अश्या और हक़ायक़ की जो उस आली मुआली की ज़ात में मौजूद हैं, ज़ईफ़ साया और शबिया हैं, मगर ना जैसी वो अब इस हमारी खस्ता शिकस्ता हालत में झलझलाहट से जोशाँ हैं। पर जैसी तब थीं जब खुदा तआला की उस अस्तल मुशाबहत और इनअकास (अक्स) में कुछ खलल ना आया था और अब भी उन जुम्बिशों के आसार और तसावीर व तशाबा (मुशाबहत) आदिल व रास्त मुस्नद नशीन काज़ीयों और बादशाहों के मिज़ाजों और फतावे में नज़र आते हैं।

बहरहाल कोई साहब-ए-होश व मुदरक इस अम्र पर ताज्जुब ना करे कि फुलां-फुलां आमाल जिन-जिन जुम्बिशों और दिली हरकात इन्सानी का मज़हर और मुअर्रिफ़ हैं, जब उन या उन की मानिंद दीगर अमलों का फ़ाइल हक़-तआला है तो उन्हीं हरकतों और दिली जुम्बिशों को कुतुब इल्हामी के मुसन्निफ़ों ने उस तआला पर इतलाक़ किया है। बरोफ़िक़ मुबतदा-ए-इलमिया और हिकमियह के जो शरअ फ़िसोस में इन लफ़्ज़ों में हवाला कलम है। इज़हार-ए-अस्मा कि कमाल ज़ात तआला अस्त अज़ फ़आल औसत बाई मअनी कि अस्मा मख़्फ़ी (छिपी) अज़ आलमयान व ज़हूर अस्मा हासिल नमेशोद मगर बआसार व अफ़आल ना बां मअनी कि अफ़आल सबब अस्मा अंद ज़ीरा कि अस्मा सबब व अलल अफ़आल अंद वग़ैरह।

और इलावा बरां जिस तरह दरहाल ज़हूर व वकूअ अफ़आल नबियों ने उन दिली जुम्बिशों को जिन पर वो आमाल बनी-आदम के बीच मुस्तलज़िम हैं, उस कादिर-ए-मुतलक़ पर इतलाक़ किया इसी तरह उन इबारतों को जो

ऐसी जुम्बिशों की मुअरिफ़ हैं। खुदा तआला की गुफ़तार इस्तिमाली से बईद नहीं बताया। चुनान्चे हज़रत सुलेमान की अम्साल में ठट्ठे बाज़ अहले शर के हक़ में यूं लिखा है, “इसलिए मैं भी तुम्हारी मुसीबत के दिन हँसूँगी और जब तुम पर दहशत छा जाएगी तो ठट्ठा मारूँगी, तब वो मुझे पुकारेंगे लेकिन मैं जवाब ना दूँगी और दिलो-जान से मुझे ढूँढ़ेंगे पर ना पाएँगे।” (अम्साल 1:26,28) इन दो आयतों का मज़मून तो एक ही है, सिर्फ़ तारीफ़ का तर्ज़ तरीका मुतफ़रिक् है। पहली में अम्साल और तशबिहयात और दूसरी में साफ़ सादा तक़रीर है। इतना फ़र्क़ है कि अम्साल में कुव्वत और लुत्फ़ और तासीर ख़वास व अवाम पर बढ़कर है, जो शायद कोई मोअतरिज़ इस पहली आयत की इबारत में ऐब चीनी करे तो दूसरी आयत से जब तशरीह मिली तो कौन साहब क़बाहत व एतराज़ बाकी रहा।

इसी किस्म के इस्तिमाल का एक और नमूना (ज़बूर 18) में देखो जहां बाअज़ मोअतरिज़ों ने शायद जाये ऐब व क़बाहत पकड़ी है “रहम दिल के साथ तू रहीम होगा और कामिल आदमी के साथ कामिल। नेकोकार के साथ नेक होगा और कजरो के साथ टेढ़ा।” (ज़बूर 18:25,26) यकीन है कि खुदा तआला के अफ़आल से वाकिफ़ और आश्रा हज़रत दाऊद से बढ़कर कभी कोई आलम-ए-वुजूद में नहीं आया, पर तो भी वो मर्द-ए-खुदा रब तआला की उस फ़अलियत और सुलूक की तरफ़ नज़र व लिहाज़ कर के जिसे वो तआला कजरूवों की तरफ़ दिखाया करता था कज-रवी की सूरत और इज़हार खुदा पर इतलाक़ करता है। यही जा-ए-ऐतराज़ है बाअज़ अहले ख़िलाफ़ के नज़्दीक। पस वो लोग ग़ौर करें कि वो कलिमात जो क़बीह और मअय्यूब (ऐब वाला) मालूम होते हैं, सरासर तशबिहाना तरीके पर हैं।

अब फ़र्ज़ करो कि बजाय अम्साल व इश्बाह के इस जुम्ले में सिर्फ़ सीधी तकरीर होती या अम्साल और साफ़ तकरीर दोनों मौजूद होतीं और कि उस की इबारत इस तौर पर होती कि कोई कज-रौ खुदा के घर से बे-सज़ा रवाना नहीं होगा तो बमुश्किल तल्ख़ तरीन और सख़्त तरीन ऐब-जोयों में कोई इस तकरीर में एतराज़ पकड़ता। पस जब इस मज़मून की सादा तकरीर में ऐब नहीं तो उसी मज़मून की अम्साल की ऐब चीनी कैसा अक्ल व इन्साफ़ है। यही मोअतरिज़ खुदा तआला के कलाम की और अम्साल पर ऐब लगाते हैं और उन्हें क़बीह जानते हैं जिनमें परवरदिगार आलम की फ़अलियत का बयान है और खुसूसुन उस इताब व अज़ाब व इंतिकाम पर जो बागीयों और मुफ़सिदों पर सादिर वारिद हुआ करता है। पस इन अम्साल में से बाअज़-बाअज़ ऐसी हैं जिन्हें बाअज़ मौलवियान लाहौरी अपने मुरीदों समेत जिश्त व ज़बू और फ़ाहिश बताते हैं।

ऐ साहिबो खुदा के हुज़ूर में हमें यकीन है कि जिस किसी शख्स के दिल में फ़ुहश की जड़ और अस्ल ना हो वो खुदा के पाक कलाम पर फ़ुहश का इल्ज़ाम लगाने का मौक़ा किसी आयत या जुम्ला से नहीं निकालेगा, बल्कि फ़िस्क़ व फ़ुज़ूर के अफ़आल का ज़िक़र इशारतन भी नहीं आता। मगर इस मुराद से कि वो उन्हें जो शर के मुर्तकिब हुए हैं, मुल्ज़िम और मुजरिम ठहराए और उन के दिलों में ख़ौफ़ और इबरत डाले और हर साहब अदल व अक्ल इस क़ाएदे का क़ाइल होगा कि मुसन्निफ़ की नीयत और इरादे पर लफ़ज़ की निस्बत ज़्यादा लिहाज़ करना चाहिए। जो इस क़ाएदे के तराज़ू पर मज़ामीन को तोलेगा, वो हरगिज़ ठोकर ना खाएगा। (यसअयाह 47:1-3) पर बाअज़ मौलवियों ने गंदगी और पलीदी का ऐब व दाग़ सादिक़ करने के लिए बहुत बेजा सई और कोशिश की है और खुदा तआला के सख़्त तंबीया वाले और

वज़नी कलिमात पर जबरन ऐसे उलटे मअनी डाले हैं कि बाज़ारों में हर बच्चा और जवान उस पर मेल फेंक कर अपने आपको ख़ुदा-परस्त और मुसल्लम हकीकी जानता है और हैरत-अंगेज़ कुफ़्र की बातें चिल्ला-चिल्ला कर ख़ुदा की मस्लिहत आमेज़ इबारतें अपनी हलाकत की तरफ़ पल्टाता है।

अब ज़रा सोच करने से मालूम होगा कि इन आयात मज़कूरह में “बाबुल की बेटी, दुख़्तर-ए-बाबुल” से मुराद अहले बाबुल यानी बाबुल शहर के बाशिंदे हैं और मिसाल उस शहर की एक बाद-शाहजादी से दी जाती है जो मुद्दत से बादशाही महल में नाज़नीन व नाज़ुक पर्दा-नशीन हो कर एश व इशरत में रहा करती थी और शर्फ़ व ज़ीनत में सब हम-असर शाहजादियों से मुम्ताज़ और मुख्तार थी, पर तो भी मगरूरी और तकब्बुर और जोर व जफ़ा और खुदगर्जी और बुत-परस्ती में बाक़ी सब क़बाइल जहान में बेमिसाल और शहरा-आलम हो गई थी। इसलिए ख़ुदा तआला के हुज़ूर से ये फ़त्वा निकला कि उस की शिकस्त और खाक-नशीनी और फ़ज़ीहत उतनी ही हैबतनाक और इबरत नुमा होगी जिस क़द्र औकात साबिक़ में वो फ़ख़्र व गरूर में सबक़त ले गई थी। उस की पर्दा-नशीनी का हिजाब खुल जाएगा। आइन्दा ज़र-ख़रीद लौंडी के मुवाफ़िक़ वो चक्की पिसेगी और बरहना-पा फरात नदी के पायाब की राह से पार उतरेगी। इतनी बेचारगी और बे-दुरमती की हालत होगी कि वो अंजाम जिससे ज़नान शर्मसार और राज़ परवर मौत को हज़ार गुनाह मुस्तहसिन (बेहतर) जानती हैं, उस पर सरज़द होगा यानी नंग व नामूस की पर्दा कुशाई। जब कि वो बित्त बाबुल अपनी नहानी (नहाने की ज़रूरत, एहतिलाम) शरारतों में ऐसी बेचूँ और बे-हया थी तो बतौर किसास (खून का एवज़ खून) और मिजाज़ात के ख़ुदा-ए-बरहक़ के रास्त फ़त्वे से वो अपनी रुस्वाई और रु-स्याही में भी ला मिसाल और बे-चूँ होगी। और इस की मानिंद और भी आयात हैं

जिनमें बयान उस होलनाक अज़ाब और इताब का जो सरकशों और मुफसिदों पर उतरने वाला है, इस सूरत पर है कि सबसे सहम नाक उमूरात ईनजहानी अम्साल और तशबीहात की राह से इस्तिमाल हुआ करते हैं ताकि दीदनी मालूमात के ज़रीये से मजहूल चीज़ों का फ़हम और यक़ीन ख़ुदा तरसूँ में सीना नशीन हो जाये। मसलन क़हर ईलाही के इस मोहलिक और बे-बर्दाश्त सदमों की जो बेवफ़ा और बेईमान उम्मत पर वारिद हुआ चाहता था क्या ही मुक़व्वी और दिल तराश मिसाल (होसीअ 13:7,8) में मिलती है, क्योंकि ख़ुदा तआला की मर्ज़ी थी कि आलम-ए-शुहूद के वाक़ियात में आलम रूहानियत की ऐसी साफ़ मुताबिक़त नज़र आए, जैसा कि आईना में मुँह मुनाकिस हो कर दिखाई देता है “इसलिए मैं उन के लिए शेर बब्बर की मानिंद हुआ। चीते की मानिंद राह में उन की घात में बैठूँगा। मैं उस रीछनी की मानिंद जिसके बच्चे छिन गए हों उन से दो-चार हूँगा और उन के दिल का पर्दा चाक कर के शेर बब्बर की तरह उन को वहीं निगल जाऊँगा। दशती दरिंदे उन को फाड़ डालेंगे। यहाँ भी उन बाला-मज़कूर आयात के मुवाफ़िक़ एक मुशब्बेह एक मुशब्बेह बह मौजूद है। एक हक़ीक़ी शैय और एक तम्सीली।

अब जो मौलवी साहिबों ने तम्सील से जाये तारूज़ और ताख़ज़ निकाला है तो अफ़सोस है कि वो हक़ीक़ी शैय से जो इस मौज़ेअ की मुराद है, चूक गए। अगर इस मुक़ाम की अस्ल इब्रानी इबारत पर ज़रा सी सबूरी से लिहाज़ व ग़ौर होता तो आसानी से मालूम होता कि इस (यसअयाह 13:6) से लेकर मिसाल गल्ला और गल्लाबानी के दरम्यान में आई है। बनी-इस्राईल मिस्ल गल्ला के है जो सबज़ा-ज़ार की शादाबी और चराई की फ़रवानी से सैर व फ़रबा हो गए और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि अपने चौपान से गाफ़िल और बे शुक्र और उस की महर व मुहब्बत को फ़रामोश कर गए तो ग़ालिबन और वाजबन् उस

की चौपानी और गल्लाबानी की सूरत बदल जाती। खुदा तआला चरवाहा होने से बाज़ तो नहीं आता मगर इन गाफ़िलों और दो दिलों को अपनी तरफ़ रुजू कराने के लिए तादीब व तंबीया के वसाइल और तदाबीर अपनी पर्वर्दिगारी से तैयार करता। जिस अर्से तक ये तादीब और रंजूरी बरपा होती और उस से गम व अलम और आह दरेग पैदा होता तो इस्राईल का दोस्त गया दुश्मन के भेस में होता। दिल तो चरवाहे का पर सूरत और आवाज़ शेर बब्बर की। जब इस तरह की सियासत और रिआयत का कमाल फ़ायदा हासिल होगा, तब अंजाम क्या ही ख़ूब होगा और खुदा की दाइमी मुहब्बत की दलील क्या ही पुख़्ता और क़वी हो जाएगी, चुनान्चे लिखा है, “ऐ इस्राईल यही तेरी हलाकत है कि तू मेरा यानी अपने मददगार का मुखालिफ़ बना।” और इस नबी ने (यसअयाह 6:1-2) इस इबारत ईलाही के अंजाम और हासिल का और भी साफ़ व सरीह बयान मिलता है, “आओ हम खुदावन्द की तरफ़ रुजू करें क्योंकि उसी ने फाड़ा है और वही हमको शिफ़ा बख़्शेगा। उसी ने मारा है और वही हमारी मरहम पट्टी करेगा। वो दो रोज़ के बाद हमको हयात ताज़ा बख़्शेगा और तीसरे रोज़ उठा खड़ा करेगा और हम उस के हुज़ूर ज़िंदगी बसर करेंगे।□ जानना चाहिए कि ये सब बातें रूह खुदा की हरकतों और आसारों में से हैं और खुदा के राज़ों और फ़न व हिकमत ईलाही की पोशीदा अलामतों से हैं।

अज़ां जिहत जिस्मानी मिज़ाज और कुव्वत-ए-मुद्रिका (दर्याफ़्त करने और मालूम करने की कुव्वत) की समझ और फ़हम में दाख़िल नहीं हो सकतीं। बमूजब इस क़ौल रसूल के, “मगर नफ़्सानी आदमी खुदा के रूह की बातें क़बूल नहीं करता क्योंकि वो उस के नज़्दीक बेवक़्फ़ियों की बातें हैं और ना वो उन्हें समझ सकता है क्योंकि वो रूहानी तौर पर परखी जाती हैं।□ (1

कुरंथियो 2:14) महफ़िल हुकमा में इस तरह के मसाइल की हुज्जत व बहस बातिल है जब तक रूह खुदा के नूरु हिदायत से हिजाब ना उठ गया हो और चश्म-रुहानी पर से जाला ना उतर गया हो और इस आलम नूरानी में जिसका शम्स खुदावन्द मसीह है, कुर्बत (नज़दिकी) और मुदाखिलत का हक़ दस्तयाब ना हुआ हो।

हासिल कलाम : इन सब आयात मज़कूर में और जितनी और उनकी मानिंद बतौर तारुज़ मुवाख़िजा के पेश की जाती हैं, सादिकों और साफ़ दिलों के नज़दीक ज़शती ज़बूनी के सबब मअय्युब (एब वाला) होने का ज़रा भी मौक़ा और मूजिब बाक़ी ना रहा। ऐन मुराद और मतलब हकीक़ी उस रूह इल्हाम का जिसके ज़मीर मुक़द्दस के वो मुअरिफ़ और मज़हर हैं, यही है कि सबसे क़वी तर और असर पज़ीर और दिल तराश अम्साल के ज़रीये से वो हर शख्स को हर तरह की ज़शती ज़बूनी से बरतरफ़ करें और तौबा कराएं, ज़िशत और ज़बून बिलाशुब्हा बाअज़ इबारतें पर फ़ुहश हैं जिन्हें ज़बान पर ला कर मौलवियान लाहौरी कलिमतुल्लाह (كلمته الله) के जो खुदावन्द मसीह है, तव्वुलुद जिस्मियाह के हवादिस को ना इशारतन बल्कि सराहतन ठट्ठे में उड़ाते और खुदा के पाक नाम के साथ ऐसे ज़िशत खयालों को मुल्हिक़ करते हैं कि हवाला कलम करने से भी हैबत के सबब उज़्र है। और इलावा बरां यक़ीन है कि जितने मवाज़ेअ में मुल्ला साहब इन ख़ाम हुज्जतों और तक़रीरों को दर्मियान लाए हैं तो इस बड़े किज़्ब और ग़लती में और उस के हक़ सज़ा व जज़ा में अपनी जान फंसाते हैं। जो वो कहते हैं कि मसीही तमाम ज़ात रब्बानी की तरफ़ ऐसे हवादिस को हमल करते हैं जिनको कलिमतुल्लाह (كلمته الله) यानी खुदावन्द मसीह की तरफ़ भी सिर्फ़ इस हैसियत और एतबार से हवाला करना जायज़ व रूह है कि उस की कलिमियत और इब्नीयत ईलाही जिस्मियत ईस्वी के

साथ इस कद्र करीब वस्ल और वाबस्तगी में पहुंची कि कोई वस्ल उस के बराबर ना तो आलम-ए-शुहूद में नज़र आता है और ना ऐसा वस्ल बनी-आदम या मलाइक बहिश्त की खातिर खातरा (किसी का लिहाज़ करते हुए) में आ सकता है। इस ग़लती में मौलवी ने मुहम्मद ﷺ की तक्लीद की है जिसने नाहक मसीहीयों की तरफ़ ये बेअस्ल तोहमत लगाई कि उन के अकाइद के बमूजब खुदा मसीह है। हर-चंद कि ऐसी तकरीर उन के अकाइद से बईद है, मगर अक्स इस बात का हज़ार हा नक्ली दलीलों से साबित है कि मसीह खुदा है, यानी उस की पाक ज़ात के अंदर हमेशा मौजूद रहता है। कोई वक़्त या ज़माना कब्ल अज़ औकात हरगिज़ ना था जब खुदा था पर उस का कलिमा जो इस का इब्ने महबूब है इस की माहीयत (असलियत) में दर्ज व मौजूद ना था।

लेकिन मौलवी साहब इस से और भी बे मौक़ा और हैरत अंगेज़ ग़लत व कज़ब के काइल हैं, जो वो मसीहीयों को ना सिर्फ़ हवादिस के ज़ात ईलाही की तरफ़ मन्सूब करने के मुल्ज़िम ठहराते हैं, बल्कि ऐसी नजासत व खुबस के हवादिस को कि सिर्फ़ वही लसान ऐसी बातों को बता सकती है जिसका याकूब रसूल बयान करता है कि, “ज़बान भी एक आग है, और जहन्नम की आग से जलती रहती है।” (याकूब 3:6) फिर कतअ-नज़र-अज़-उल्हियत जब मौलवी साहब जिस्मियत ईस्वी की तरफ़ उन हवादिस को हमल करते हैं ताकि उसे खार व ज़लील बताकर उस की फ़ज़ीलत व शर्फ़ व शान को घटाएँ तो क्या वो इस बात को जानते और मानते हैं जो हर मुल्ला साहब बल्कि हर मर्द-ए-खुदा को मालूम और मफ़हूम होनी चाहिए कि हकीकत में गुनाह और शरारत के सिवाए कोई चीज़ जिश्त व ज़बून नहीं, खुदा की दरगाह में। सिर्फ़ वही खुबस और पलीदी है जो उम्दन खुदा तआला के किसी अम्र व नुही का

उदूल व तजावुज है। सच-मुच तो बहुत जाये ताज्जुब नहीं है कि वो साहब जिनकी राय के बमूजब दीन और बेदीनी की तमीज़ खुसूसुन खुर्द नोश के हलाल व हराम से मुताल्लिक है, वो इस चीज़ को जिशत व ज़बून जानें जिसे जाहिरी हवास मकरूह जानते हैं, ना उस खता व शरारत को जिससे बंदगान की इन्कियाद और दिली सफ़ाई में और उस पाक सूरत बातिनी में जो खुदा की मुशाबहत में नव-मख्लूक है, खलल व कसूर आता है।

इस गलती मज़कूर की मराफ़अत अगरचे अक़ली दलीलों से भी हो सकती है, मगर इसे रफ़ा-दफ़ाअ करने का सबसे उम्दा तरीका ये है कि आप ही एक ही रूह की यगानगत में एक ही मसीही बदन के अज़ज़ा में शामिल हो कर और उस के इज्माअ कुद्दूस में मिलकर सिर्फ और जाहिर परस्ती की जलालत में से रूह की आज़ादी और नूर और कामलीयत में आ जाएँ। अगर आप लोगों का हाल ऐसा हो तो वो सख्त हुक्म जो (हिज़िकीएल 4:12) में उस नबी पर उतरा पहले तो गूह (फुज़ला, नजासत) इन्सान से और पीछे (हिज़िकीएल 4:15) में गोह इन्सान के बदले गोबर से रोटी पकाने की बाबत ठट्ठों में उड़ाया नहीं जाएगा। ताकि हर नव-मख्लूक और रूहुल-कुद्दूस का नव-मुरीद इन दो काईदों को बेतरद्दुद और बे-हैरत मन्ज़ूर करेगा।

अव्वलन : ये कि दीनयात में ज़शती फ़ील-तहकीक वही ज़शती है जो अख़लाकी और रुहानी खुबस है।

सानियन : ये कि खुदा की सियासत आलम और रिआयत कलीसिया में कोई चीज़ छोटी और कोई वसीला ज़लील जानना जायज़ व रवा नहीं, जिसके अंजाम में खुदा तआला की हिक्मत और पर्वर्दिगारी के बाइस बड़े भारी फ़वाइद हासिल होने वाले हैं।

चुनान्चे रसूल फ़रमाता है, “क्योंकि ख़ुदा की बेवकूफियां आदमियों की हिकमत से ज्यादा हिकमत वाली है और ख़ुदा की कमज़ोरी आदमियों के ज़ोर से ज़्यादा ज़ोरावर है।” (1 कुरंथियो 1:20) मसलन तम्सील जिसमें होसीअ नबी के हम-अस्र यहूद रब तआला के क़हर और रंजूरी और आइन्दा तंगी और क़हत की नफ़रत-अंगेज़ तश्बीह देखकर आप अपने शर से मुतनफ़िफ़र (नफ़रत करने वाले) और किनारा-कश हो जाएं तो कौन साहब-ए-होश व अदल इस को इस क़द्र मकरूह और तर्दीद के लायक़ जाएगा कि अपने दिल में कहे ये मिस्ल मेरे ख़ास ज़माने के अहले लुत्फ़ व फ़ज़ल की दानिस्त में बेमज़ा और बे मौक़ा और ख़िलाफ़ सलीक़ा मालूम देती है, तो उसे कलाम-ए-ख़ुदा से मुन्क़तेअ करना ज़रूर चाहिए। इस के बरअक्स ऐसे साहब तमीज़ ने रोज़मर्रा के तजुर्बे और बड़े-बड़े औक़ात सलफ़ व ख़ल्फ़ के मुसन्निफ़ों की कुतुब के सैर करने से ये कायदा मन्ज़ूर किया होगा कि अगर शायद किसी किताब आली मज़मून के दर्मियान कोई बाब या फ़रीक़ ज़वाबत ज़र्ज़ाफ़त व लताफ़त से ज़रा अबतर मालूम दे तो पढ़ने वाला ज़रूर दो उमूर से एक को यक़ीन करेगा या ये कि मेरे ज़ायक़ा और खुश तमेज़ी में क़सूर या हद से ज़्यादा इक्तिज़ा दकाइक़ (अच्छी बुरी बात के वह पहलु जो ग़ौर करने से समझ कर आएँ) है। या अहले-ज़माने की जहालत और संग-दिली और वहूश मिज़ाजी के सबब नबी ने उम्दन क़सदन शीरीं ज़बानी और खुशगोई छोड़कर उन सख़्त दिलों को तुरश और दिल-शिकन और दुरुशत (करखत) लफ़ज़ों में तंबीया की।

जैसा पहले भी मुसन्निफ़ रिसाले ने कहा था कि हकीम महमूद जब तिफ़लाना बोलता और अपने दस्तूर से बईद हो तो हर शख़्स कहेगा कि ये कम कोफ़ी से नहीं और ना कम ज़हनी से और ना इस सूरत का कलाम बे मुराद और बेमतलब मुफ़्त बोलता है। अगरचे मतलब खुफ़ीया है। और बतरीक़

ऊला अग़लब (यक़ीनी, मुम्किन) है कि अम्बिया की कुतुब इल्हामिया में ये कायदा इस्तिमाल और लायक़ क़बूलीयत हो। ब-ई वजह कि उन के मआनी आली और बारीक और उन के मक़ासिद व मुतालिब इन्सान की कुव्वत-ए-मुद्रिका से बढ़कर हैं और अगर कोई शख्स कहे कि चाहीए था कि कलाम-ए-ख़ुदा का हर लफ़्ज़ और फ़िक़्रह हुकमा और फुज़ला और शाएयक़ीन ज़र्राफ़त के नज़दीक बेऐब और बे अख़ज़ हो तो जवाब वाजिबी ये है कि कौन जानता है कि इस हाल में ख़ुदा को क्या चाहीए था और क्या फ़र्ज़ था? चुनान्चे यसअयाह नबी फ़रमाता है, “किस ने ख़ुदावन्द की रूह की हिदायत की या उस का मुशीर हो कर उसे सिखाया?” (यसअयाह 40:13)

और दूसरा जवाब वाजिबी ये है कि आया ख़ुदा सिर्फ़ हकीमों का ख़ुदा है या कुल आलम का। अगर कुल आलम का है तो इस कुल्लियत और जम्हूर आलम में हुकमा कितने और हिक्मत में नाकिस और क़सीर (पस्तक़द) कितने हैं? फिर हमारी अर्ज़ ये भी है कि इस सवाल का जवाब दो कि क्या ख़ुदा हकीमों की हिक्मत से आजिज़ है? क्या जाने कि उम्दा से उम्दा हकीमों की निहायत हिक्मत कुछ और चीज़ ख़ुदा की हिक्मत मुतलक़ के आगे ना हो, मगर तिफ़लाना और बातिल पोचगोई? होसीअ नबी की किताब के बाब अव्वल में जो अहकाम ख़ुदा तआला की तरफ़ से नबी पर नाज़िल हुए, ज़न हरामकार को ब्याह में लाने की बाबत, शायद कोई ख़ुदा-तरस और हक़-जू नज़र अव्वल से देखकर कुछ ठोकर खाए और हैरान व परेशान हो जाये। लेकिन नज़र-ए-सानी से देखकर और अम्साल की कुल सिलसिला बंदी पर गौर कर के इस मौज़अ की पूरी उक़दा कुशाई होगी। और सिर्फ़ ये नहीं बल्कि एक कायदा और क़ानून मुफ़ीद तफ़सील और तशरीह कलाम के लिए हासिल होगा जिससे और

भी इस की मानिंद मुश्किलात हल हो जाएँगी और वो मोअतरिज़ अंजाम में तसल्ली पज़ीर और शुक्रगुज़ार भी निकलेगा।

सच तो ये है कि अगर बिल-फ़अल इस आलम इश्बा और अम्साल में तादर्जा कमाल इस मौज़अ में हल मुश्किलात नक्ली दलीलों से नहीं हो सकता तो भी ब मुक्तज़ा-ए-अक्ल (तक्राज़ा करने वाला) हर रोशन ज़मीर और ज़हीन आदमी पर ज़ाहिर और बाल-बदायत (आगाज़ करना) वाज़ेह होगा कि जब रुहानी और नफ़्सानी ज़िनाकारों की तंबीया और तादीब होसीअ नबी की नबुव्वतों की अस्ल मुराद और मज़मून है, तो अगर इस तादीब और सरज़निश के शुरू ही में ज़िनाकारी का हुक्म दिया जाता तो इस कद्र बे-हूदगी और बे-ठिकाने जिद्दीयत कौल और फ़अल की उस पर सादिक आएगी कि क़त-ए-नज़र अज़ अस्हाब नबुव्वत कोई शख्स जो हवास-बाख़ता ना होता, हरगिज़ ऐसा ना-मुवाफ़िक हुक्म ज़बान ज़द ना करता। लेकिन ऐसी ख़ामख़याली की नक्ली मुमानिअत उसी नबी (होसीअ 2:2) में दरपेश आती है। इस दूसरे बाब में खुदावन्द ने इस सिलसिले अम्साल की साफ़ तफ़सील अता फ़रमाई है। चुनान्चे बतौर मअमात और अमीक रम्ज़ों के इर्शाद है कि उस ज़न हरामकार का शौहर खुदावन्द आप ही है, यानी वो ज़न हरामकार कुल जमाअत बनी-इस्राईल है जिसे खुदा तआला अपने अहद व मीसाक शरईया से अक़द व रिश्ते मुहब्बत में बांध कर अपनी कुर्बत (नज़दिकी) व वस्ल में लाया था। पर जब वो क़ौम मुख्तार और मुम्ताज़ इतनी मुद्दत-ए-मदीद से गुमराह और बेवफ़ा और नमक-हराम ठहरी तो इस अम्र से कौन सा इलाज और चारा बाक़ी रहा कि वो उम्मत ज़न बेवफ़ा की मानिंद अपने ख़ावंद से मरूदू और मतरूक हो। चुनान्चे लिखा है, “तुम अपनी माँ से हुज्जत करो क्योंकि ना वो मेरी बीवी है और ना मैं उस का शौहर हूँ कि वो अपनी बदकारी अपने सामने से और अपनी ज़िनाकारी

अपने पिस्तानों से दूर करे।” (होसीअ 2:2) जिससे यकीनन और सराहतन ये नतीजा निकला है कि इस नबी के अटवल बाब का मज़मून उमूर वाक़ईयह का बयान करने वाला नहीं, बल्कि उस में अम्साल हैं।

बाब दो अज़ दहुम

दरबाब नुस्ख व तहरीफ़

در باب نسخ و تحریف

अगरचे वो दावा जो मौलवी साहिबों ने कुतुब साबिका इल्हामिया की तंसीख व तहरीफ़ पर हवाला कलम व ज़बान किया है, सैकड़ों मर्तबा हज़ार-हा हुज्जतों और दलीलों से उस की तर्दीद व तक्ज़ीब हो गई और उन हज़ार-हा दलीलों को मुजम्मलन भी इस रिसाले में तालीफ़ करना मुहाल और मक्सद मुसन्निफ़ से बईद है तो भी हक़ जोर्यों की तसल्ली और खातिर जमुई के लिए बाअज़-बाअज़ उन दलीलों को जो हमारी दानिस्त में क़वी और क़तई और लाजवाब हैं, ताब-मक़दूर तवालत के ऐब से बच कर पेश करूँगा।

नुस्ख की बाबत ये पहला सवाल बे-इख़्तियारी पैदा होता है कि इन चारों किताबों से जिन्हें आप मंसूख जानते हैं यानी तौरैत, ज़बूर, अम्बिया और इन्जील। इनमें से कौन-सी है और उन के अजज़ा में से कौन सा जुज है जिसे मंसूख कहना वाजिबी और माअकूल बात है?

शरीअत मूसवी के हक़ में बाब गुज़श्ता में खुद खुदावन्द मसीह की और उस के रसूलों की गवाहियों से मालूम और साबित हो गया कि इस शरअ की बाअज़ रसूमात आरिज़ी और चंद रोज़ा फ़ुलानी क्रौम और ज़माने के साथ मुक़य्यद थीं जिन्हें इस शरअ के उसूल और हक़ायक़ से अलैहदा करना चाहीए और उनका बरतरफ़ होना और लाहासिल ठहरना, बाद उन की तक़मील की

मयाद के ऐन शरअ के बरतरफ़ होने और लाहासिल ठहरने के बराबर जानना ना चाहिए, बल्कि उन रसूमात को भी सरासर लाहासिल किसी ज़माने में जानना ना चाहिए। अज़ां सबब कि उन की खबरें और तअयिनात और क़वाइद के बयानात कलाम-ए-ख़ुदा में पैवस्ता हो कर अपने अपने हक़ायक़ और उसूल शरअ पर गवाही देने से अख़ीर ज़माने तक बाज़ नहीं आते। हर-चंद कि वो ऐन अस्ल शरअ तो नहीं पर उस के मुल्हिकात ब तअय्युन ज़मीन व क़ैद ज़माना हैं। बहर-ए-हाल ऐन शरअ का मंसूख जानना और बताना ज़बूर और अम्बिया और इन्जील की साफ़ शहादतों और तक़रीरों के बरअक्स और बर-खिलाफ़ है।

फिर वो उमूर वाक़ई जो अम्बिया-ए-सलफ़ की कही हुई किताबों में यानी यशूअ और काज़ीयों की और हज़रत समुएल और सलातीन की किताबों में मुन्दर्ज हैं, सो कुल आलम के सब वाक़ियात और वारदात से चुन लिए गए हैं। इस इल्लत से कि ख़ुदा तआला की सल्तनत की तैयारी और तरक्की और तदाबीर तामीर ज़ाहिर की जाएं तो उन्हें कौन साहिबे अक्ल व होश मंसूख जान सकता है। अगर शदनी (इत्तिफ़ाकी बात) वाक़ियात भी ग़ैर शदनी हो सकते हैं तो भी उमूर वाक़ई कब ग़ैर वाक़ई हो सकते हैं और जब कि वाक़ियात सलफ़ का ग़ैर वाक़ेअ ठहरना जाये तनाक़ुज़ और इज्तिमा-ए-ज़िदियीन है, तो वो किताबें जिनमें वो वाक़ियात बयान होते हैं उतनी तफ़सील और तशरीह से जितनी और किसी रिवायत में नहीं मिलती, बल्कि ख़ुद कुरआन मजीद में अक्सर वाक़ियात सिर्फ़ इशारतन मज़कूर हैं, कौन साहब ज़हन मंसूख ठहराएगा। गरज़ कि जो किताबें ख़ुदा की सल्तनत की तवारीख बल्कि कुल आलम की तवारीख की कुतुब और मर्कज़ हैं, उन्हें कोई साहब-ए-होश मंसूख नहीं ठहरा सकता।

फिर कलाम-ए-खुदा के कोई वजनी वाकियात बयान नहीं होते गैर अज़ आंका उनका मक़सद और इल्लत वकूअ भी बयान हो और बिलाशुब्हा उन उमूर की इल्लत व मक़सद (इरादा) रब तआला की कामिल मस्लिहत और गैर मुतनाही हिक्मत से सादिर है। मसलन हज़रत युहन्ना बिन ज़करीयाह कुल आलम के एवज़ कुर्बान और कफ़ारा होना मसीह की सलीबी मौत की इल्लत बताता है। जिस सलीबी मौत पर मौलवियान लाहौरी जा-ब-जा बड़ी तल्खगोई से ठट्ठा मारते हैं। युहन्ना ने खुदावन्द यसूअ को अपने पास आते देखा और कहा, “देखो ये खुदा का बर्सा है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है।” (युहन्ना 1:29) और खुदावन्द यसूअ अपने हक़ में मर्तन ये गवाही देता है, “और मैं अगर ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा तो सबको अपने पास खींचूँगा।” (युहन्ना 12:32) और फिर खुदावन्द मसीह के मौरिद लानत होने की जिस पर वो मौलवियान बेदीनों और दहरियों के तौर पर लहू व लाब करते हैं। पोलुस रसूल ग़लतीयों के खत में ये उम्दा इल्लत बताता है, “मसीह जो हमारे लिए लज़नती बना उस ने हमें मोल लेकर शरीअत की लज़नत से छुड़ाया क्योंकि लिखा है कि, “जो कोई लकड़ी पर लटकाया गया वो लानती है।” (ग़लतीयों 3:13)

मुल्ला साहिबान मज़कूर उसी रसूल मुबारक की इस हैबतनाक तादीब को भूल गए होंगे जो कुरंथस के नाम पहले खत में दर्ज है, “पस मैं तुम्हें जताता हूँ कि जो कोई खुदा के रूह की हिदायत से बोलता है वो नहीं कहता कि यसूअ मलऊन है और ना कोई रूहु-उल-कुद्दुस के बगैर कह सकता है कि यसूअ खुदावन्द है।” (1 कुरंथियो 12:3) और अगर आप पूछते हो कि क्या सबब है इस बात का कि रूह खुदा के मुहतदों (मुहतदी, हिदायत पाने वाला) में से एक भी नहीं जो यसूअ को मलऊन कहता तो सबब साफ़ है कि खुदावन्द मसीह ना उस लानत को अपने ही सर पर क़ायम रखने के लिए मौरिद लानत हो गया बल्कि उड़ा देने और नेस्त करने के लिए। तो गौर करना चाहिए कि

जिस तरह उमूर वाकईह मंसूख नहीं हो सकते, अजां जिहत कि गैर वाकेअ नहीं हो सकते इसी तरह उन वाक्रियात की इल्लतों और मकासिद का नस्ख होना भी मुहाल है, जैसा ऐन अस्ल शरअ। चूँकि वो खुदा की मर्जी और मुहासिबों का मजहर व मुअरिफ़ है, हरगिज मंसूख होने के काबिल नहीं। इसी तरह वाक्रियात मज्कूर की उन इल्लतों को जो कलाम-ए-खुदा में सफ़ाई और लापरवाई से माअरूफ़ हैं, कौन शख्स मंसूख बताने की जुरत कर सके कि वो कामिल और अंजाम रसीदा ना हों और खुदा के वईद व वाअदे वफ़ा ना हों।

पर एक और अम्र पर भी मुलाहिजा करना चाहिए कि जैसा उमूर वाकईयह के बयान में उन के सबबों और इल्लतों का बयान भी जो महज खुदा की मर्जी और पर्वदिगारी पर मौकूफ़ हैं, दर्मियान में आता है। इसी तरह उन इल्लतों के साथ रवा इल्हाम व कुदुसियत की हिदायत से बाअज ख़ास ताअलीमात मुल्हिक और मुताल्लिक हैं कि उनका उनसे फिराक और इन्किताअ और जुदाई मुहाल है। मसलन उन खुतूत में जिन्हें रसूल ने इफ़सस और कुलिसीयो की कलीसिया को लिख भेजा खुदावन्द मसीह की सलीबी मौत की एक इल्लत और मक्सद यही तस्लीम किया जाता है कि खुदावन्द मसीह की सलीब में यानी उस के मस्लूब बदन में वो दोनों पुराने इन्सान जो यहूद और यूनान हैं, पैवस्ता वाबस्ता हो कर एक हो जाएं। उनकी सब जुदाइयों का मेल-मिलाप हो जाये। और इलावा बरां दोनों से एक हो कर एक नई खल्कत बनें और नई खल्कत बन कर खुदा तआला के साथ मेल मिलाप कराए जाएं।

देखो कि इस अम्र वाकेअ यानी मसीह की सलीबी मौत की उस इल्लत “मुशारु एलियह” से यानी इन्सान के फ़रीकैन के मेल-मिलाप से क्या ही भारी ताअलीमात इस खल्कत जदीद और विलादत सानी की बाबत रोशन व जाहिर हो गई। फिर इस से ये नतीजा वाजिब व लाज़िम निकला है कि जैसा अम्र

वाक्रेअ मंसूख नहीं हो सकता जब तक कि गैर वाक्रेअ ना होने पाए, वैसा ही उस के वकूअ की इल्लतें और अस्बाब नस्ख नहीं हो सकतीं। फिर जिस तरह उनका नस्ख मुहाल है, वैसी ही वो ताअलीमात भी जो उन के साथ वाबस्ता हैं मुम्तना-उल-नस्ख (मंसूख करने से बाज़ रखा गया) हैं। और यही नहीं बल्कि वो अहकाम अख्लाकी और अम्र व नफ़ी जो उस खल्कत जदीद के साथ मुल्हिक और मुकय्यद हैं, किसी सूरत से काबिले नस्ख नहीं हैं।

फिर बमुश्किल अहले मुहम्मद दावा करेंगे इस बात पर कि कुरआन मजीद को कुछ तर्जीह और तफ़ज़ील है, इस हम्दो सताइश और इबादत व तौबा कारी और शुक्रगुजारी और रसूमात पर जो हज़रत दाऊद के मज़ामीर में और जाबजा बाकी कुतुब मंज़िला में दरपेश आती हैं, जिनसे खुदा के खास दोस्त और बंदे तीन हज़ार बरस से रुहानी तर्बीयत और परवरिश और तादीब व ताअलीम निकालते हैं और दुखों और मेहनतों और मुतअद्दिद आज़्माईशों में तस्कीन व तश्फ़ी पाते हैं। इस से और उनकी मानिंद और अक्ली दलीलों के सिवाए बेशुमार नक्ली दलीलों से भी कुतुब मंज़िला साबिका के नस्ख होने की मुमानिअत कतई और कामिल है, तो यकीन है कि वो शख्स खुदा तआला के और उस के कलिमे और इब्ने महबूब के जो खुदावन्द मसीह है, जाह जलाल में ता बमक्दूर खलल डालता और उस तआला की हैरत-अंगेज़ तहकीर और तज़लील करता है, जो खुदा की ज़ात व सिफ़ात की अबदीयत का तो मुकर है, पर उस के कलाम समाविया की बका का मुन्किर है। अज़ आनरो कि जैसा ज़वी-उल-हयात होना उस तआला की मशहूर सिफ़त है, इसी तरह ज़वी-उल-हयात होना कलाम रब्बानी का भी एक वस्फ़ माअरूफ़ और मशहूर है।

और साफ़ रोशन है कि वो कलाम-ए-खुदा जो ज़वी-उल-हयात कहलाता है, उस शख्स की मौत व ज़वाल में शरीक नहीं जो मौरिद कलाम है। चुनान्चे

रूहुल-कुद्दुस ने बजबान ज़करीयाह नबी फ़रमाया, “तुम्हारे बाप दादा कहाँ हैं? क्या अम्बिया हमेशा जिंदा रहते हैं? लेकिन मेरा कलाम और मेरे आईन जो मैंने अपने ख़िदमत गुज़ार नबियों को फ़रमाए थे क्या वो तुम्हारे बाप दादा पर पूरे नहीं हुए। (ज़करीयाह 1:5,6) जिससे मालूम होता है कि वो कलाम और क़ौल खुदा मौरिद कलाम की मौत में शामिल हो कर नहीं मरता, पर उस रब ज़वी-उल-हयात की हयात में शामिल हो कर जीता है। और जैसा अहले ईमान को हरगिज़ ना मरने का वाअदा दिया गया है। खुद खुदावन्द की ज़बान से इसी तरह मौजूअ-उल-ईमान जो क़ौल खुदा है हरगिज़ मरने और जाइल और जाए होने वाला नहीं है। तो हमारी मिन्नत है खुदा के लिए उन सभी से जो ना खादिम और नियम पुख़्ता बल्कि कामिल और हकीकी और पुख़्ता मुसलमान होना चाहते हैं कि वो खुदा के कलाम साबिक की उस खास वस्फ़ पर जो मुकर्रर रसाह कररर उस की तरफ़ इतलाक़ किया जाता है, सोच और गौर करें और उस के रूबरू हिरासाँ और तरसाँ भी हों। खुसूसुन मसीह के उस संजीदा और दिल-सोज़ क़ौल से हैबतज़दा हों जो इन्जील युहन्ना में कलम-बंद है “जो मुझे नहीं मानता और मेरी बातों को क़बूल नहीं करता उस का एक मुजरिम ठहराने वाला है यानी जो कलाम में ने किया है आखिरी दिन वही उसे मुजरिम ठहराएगा।” (युहन्ना 12:48)

हज़रत दाऊद भी कलाम-ए-खुदा की बका और बरकरारी पर साफ़ दाल और शाहिद हैं, मसलन (119 ज़बूर की 89,90 आयात) में वो फ़रमाते हैं, “ऐ खुदावन्द ! तेरा कलाम आस्मान पर अबद तक कायम है। तेरी वफ़ादारी पुश्त दर पुश्त है। तू ने ज़मीन को क्रियाम बख़शा और वह कायम है। जिन आयतों से वाज़ेह और रोशन हुआ कि जैसा उन क़वानीन में जिनसे आलम मशहूद का इन्तिज़ाम और इर्तिबात (मिलाप) हुआ कुछ जुंबिश और खलल व जवाल

नहीं आता, इसी तरह कलिमात समाविया ईलाही हरगिज़ जाए और ज़वाल पज़ीर होने के लायक नहीं हैं और इसी अम्र पर हज़रत यसअयाह में मुक़व्वी दलालत हवाला क़लम है, “घास मुरझाती है, फूल कुमलाता है क्योंकि खुदावन्द की हवा उस पर चलती है। यक्रीनन लोग घास हैं, हाँ घास मुरझाती है। फूल कुमलाता है पर हमारे खुदावन्द का कलाम अबद तक कायम है।” (यसअयाह 40:7,8)

और जाये गौर है कि पतरस रसूल अपने अक्वल ख़त के पहले बाब में साफ़ तक्ररीर करता है कि वो कलाम जिसकी बक्रा और अबदीयत नशो व नुमा की फ़ना पज़ीरी के साथ मुकाबला की जाती है, वो कलाम है जिसकी बशारत व वाअज़ इन्जील में सुनी जाती है, पर इस वजह की नक़ल दलीलों को बढ़ाना फ़ुज़ूल और लाज़रूरी है। दर-हालिका खुदा शनासों और खुदा तरसों पर ये अम्र बाल-बदाहत (नागहानी वाक्रिया, यक्रीनी होना) ज़ाहिर है कि कलाम-ए-ख़ुदा फ़ी नफ़िसहा और फ़ी ज़ातहा काबिल तग़य्युर व तबदिल नहीं। और हर शख़्स को जो गौर और बेतास्सुबी से कुरआन मजीद की सैर व मुतालआ करने वाला है, मालूम और मुबय्यन है कि वही शहादत जो कुतुब मंज़िला में कलाम-ए-ख़ुदा के क्रियाम व बक्रा पर दी जाती है, कुरआन से मुकर्रर सह कररर हासिल होती है। जो चाहे विलियम म्यूर साहब की तस्नीफ़ की हुई “शहादत कुरआनी” में और मौलवी सफ़दर अली साहब के “नयाज़ नामा” में इस अम्र की बाबत हर शक व शुबह की मराफ़ात करे और तहक़ीक़ है कि कुरआन मजीद में कुतुब साबिक़ा की तन्सीख़ का इशारतन और किनायतन भी कुछ ज़िक़्र पाया नहीं जाता। और ये भी साबित है कि हिज़्रत के बाद दो सदीयों के अर्से तक किसी कलाम-ए-ख़ुदा के नस्ख़ होने की हुज्जत व बहस किसी के सुनने में नहीं आई। इतनी मुद्दत के बाद बाअज़ मुहम्मदी

मुज्त्हिदों (जद्दो जहद करने वालों) ने अल्लाह तआला के दीन हकीकी यानी दीन ईस्वी के वज़न व कस्रत दलाईल से हैरान हो कर ये नई हिक्मत निकाली। हर-चंद कि मुज्त्हिद खल्फ़ व सलफ़ इस अपने इफ़्तिरा (बोहतान, झुटा इल्ज़ाम) के अम्र में बाहम इतिफ़ाक़ नहीं रखते कि कौन सा कलाम किस क्रम तक मन्सूख़ है और वो तन्सीख़ कौन-कौन सी शराइत व ज़वाबत से महदूद है।

हाँ हजार अफ़सोस की बात है कि ये बहस लफ़्ज़ी और नुक्ता-चीनी हकीमों के लिए महज़ किमारबाज़ी (जुआ खेलना) है, पर इस खेल में जो हार जाता है ना सिर्फ़ अपनी ही जान की, बल्कि शायद लिखो-खा (लाखों, लातादाद) और जानों की हार खाता है। यहां तक कि इस भारी मुक़द्दमा के इन्फ़िसाल पर मौत और हयात-ए-अबदी मौक़ूफ़ है और बेशुमार खल्क़-उल्लाह की ज़लालत इसी ग़लती से ख़ुरूज करती है और दर-हालिका ख़ुदावन्द मसीह फ़रमाता है, “दरवाज़ा बहिश्त का मैं हूँ। (युहन्ना 10:9) और रस्ता मैं हूँ।” (युहन्ना 14:6) और हयात व क्रियामत मैं हूँ। (युहन्ना 11:25) और कुल आलम की खलासी और नजात के लिए अपनी जान का कफ़़ारा अता करता हूँ। तो वो लोग जो खल्क़-उल्लाह की राहनुमाई और मुर्शदी के दावेदार हैं उन पर फ़र्ज़ था कि उस मुनज्जी अल-आसीन की तरफ़ इशारा करें और मिन्नत से भी गुमराहों से अर्ज़ माअरूज़ करें कि उस दरवाज़ा हक़ के अंदर मौजूद हो कर जियो। बरअक्स इस के वो सिर्फ़ ठट्ठे बाज़ी और मुबाहिसा और पसोपेश करने में उम्र-ए-अजीज़ को काटते हैं और मसीह के हम-अस्र यहूद फ़रीसियों के मुवाफ़िक़ इल्म हक़ की किलीद ले गए और ख़ुदा की दरगाह में दाखिल होने वालों को दिक्क़ करते और सताते हैं।

ऐ साहिबो ये तुम्हारी हुज्जत और बहस ना पादरीयों के साथ और ना अंग्रेजों के साथ बल्कि खुदा तआला रब-उल-आलमीन के साथ है। आपसे हमारा ये सवाल नहीं है कि हमें बड़ी ईनजहानी शान और कद्र के लायक जानो ओर बुजुर्ग ओहदे दारों के शुमार में हिसाब करो या अपनी मजलिसों में सदर मुस्नद पर बैठाओ। बरहक जानो उस तकरीर को जो तौरैत में हजरत मूसा ने और इन्जील में हजरत पोलुस ने तस्लीम की कि वो कलाम नजात बख्श जिसकी बशारत अब हिन्दुस्तान में फ़ज़ल ईलाही से हुआ करती है, ना तो आस्मान पर है, ना दरिया पार है, ना हकीमों, ना जाहिदों, ना हाजियों का है, ना ऐसी बात है कि मुल्की बहस और कीना और मज़हबी ताअस्सुब और हट धर्मी का बाइस और गुंजाइश हो। पर इस अम्र में गरीब आदमजाद की मुलाकात खुदा के साथ है। उसी की दरगाह में इस अम्र का जवाब व सवाल और इस हुज्जत का फ़त्वा दिया जाता है, खुदावन्द मसीह की मुस्नद अदालत के हुज़ूर में हिसाब लिया जाएगा। अगर शायद विलायती उस्तादों की ताअलीम लेने से उज़्र और हर्ज हो तो हमसे अलैहदा (अलग) हो कर अपनी मजालिस बिरादराना में बाहम हो कर रूह नूर व हिदायत से तौफ़ीक मांग कर इस कलाम को जो खल्कत जदीद का तुख्म है, गौर से मुतालआ करो। चुनान्चे हजरत मूसा के मौज़अ मज़कूर में लिखा है, “क्योंकि वो हुक्म जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ तेरे लिए बहुत मुश्किल नहीं और ना वो दूर है। बल्कि वो कलाम तेरे बहुत नज़दीक है। वो तेरे मुँह में और तेरे दिल में है ताकि तू उस पर अमल करे।” (इस्तिस्ना 30:11-14)

अपने ही नबी की शहादत रद्द ना करो बल्कि अपने दिल में नक्श करो।

(لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَةَ وَ
الْإِنْجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ)

(सूरह अल-मायदा 68)

और फिर दूसरी सूरह के इस मज़मून पर लिहाज़ फ़रमाओ।

(وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ
وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِنْ
فَوْقِهِمْ وَ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ)

(सूरत अल-मायदा 66)

और फिर मुहम्मद ﷺ का एक साफ़ व सरीह क़ौल आपके लिए गौर व सोच के लायक़ है, **كَلَا مِي لَا يَنْسِيخُ كَلَامَ اللَّهِ** तो आप के इज़्माअ उम्मत को कहाँ से हकीकत मिल सकती है, इस इख्तियार और इक्तिदार की कि नासिख और मन्सूख की बाबत नए-नए अक़ीदों को बना कर क़ौल खुदा की कमी बेशी करें और भूके प्यासे बनी-आदम को चशमह-ए-आबेहयात से जो साफ़-शफ़फ़ाफ़ और सेहत बख़्श है, ममनू कर के रिवायत इन्सानी के गदले पानी के हौजों की तरफ़ लल्कार कर और तर्गीब देकर ना क़ातिल अजसाम बल्कि क़ातिल अर्वाह हो जाएं। जिस क़त्ल और खून से कौन ज़िश्त तर और ज़बून तर और अज़ाब जहन्नम का लायक़ तर हो सकता है। खुसूसुन बलिहाज़ इस अम्र के कि वही तुम्हारा नबी जिसके लिए आपने अम्बिया-ए-खुदा को तर्क और रद्द किया है। अज़ आनरो कि कि उन की मीयाद ख़िलाफ़त और उन के अहकाम की तामील का वक़्त मोवक़क़त (किसी खास वक़्त पर ठहराया हुआ) और मुन्तहा और गुज़श्ता है। तो आप ही ने इर्शाद किया कि जो फुर्क़ान मुझ पर नाज़िल हुआ सो कुतुब सलफ़ का मुहैमिन और मुसद्दिक़ है और वो उन्हें गोया मुस्तजमा जमी फ़ज़ाइल बताता है। चुनान्चे ये शहादत कुरआनी कुतुब मूसवी पर मिलती है। **ثَمَّ مَا عَلَى كُلِّ الْاِذَى اَحْسَنٌ** .

साहिबो जाये फ़िक्र व तामिल है कि रोज़-ए-कयामत जो हिसाब और कहर ईलाही के इज़हार का दिन होगा मुद्दा-अलैह और मुद्दई दोनों मुन्सिफ-उल-आलमीन के तख्त सफ़ैद के रूबरू हाज़िर किए जाएंगे। मुद्दई तो शरअ व कलाम-ए-खुदा होगा मुद्दा-अलैह कुल खल्क खुदा होगी। पर इस मुद्दई आजम व आला के दावा से कौन बच सकता है। इस उज़्र-ख्वाही पर तकिया कर के कि मैंने ना अपनी ख्वाहिश और यकीन पर बल्कि इज्माअ उम्मत के फ़त्वा पर भूल कर कुतुब समाविया की तिलावत और खोज छोड़ दी और हज़रत नूह के हम-अस्रों के मुवाफ़िक अपनी कशती पर सवार होना इस से बेहतर जाना कि खुदा की बनवाई हुई कशती पर चढ़ कर तूफ़ान कहर से भागों। इज्माअ उम्मत अगरचे कलाम-उल्लाह की शहादत जावेद व बाकी को मुद्दत ज़माने में महदूद करने की गरज़ से हुक्म जारी कर सके, पर तो भी कौन उस हिसाब आतिशी की आज्माईश को बर्दाश्त कर सकेगा, जो किज़ब की सब बुनियादों को उड़ा ले जाएगी।

बमूजब इस तकरीर के जो यसअयाह नबी की किताब में मर्कूम है, “पस ऐ ठट्ठा करने वालो ! जो यरूशलेम के इन बाशिंदों पर हुक्मरानी करते हो खुदावन्द का कलाम सुनो। चूँकि तुम कहा करते हो कि हमने मौत से अहद बाँधा और पाताल से पैमान कर लिया है। जब सज़ा का सेलाब आएगा तो हम तक नहीं पहुँचेगा क्योंकि हमने झूट को अपनी पनाह-गाह बनाया है और दारोग-गोई की आड़ में छिप गए हैं। इसलिए खुदावन्द खुदा यूं फ़रमाता है। देखो मैं सियोन में बुनियाद के लिए एक पत्थर रखूँगा। आजमूदाह पत्थर, मुहक्कम बुनियाद के लिए कोने के सिरे का कीमती पत्थर जो कोई ईमान लाता है कायम रहेगा। ओले झूट की पनाह-गाह को साफ़ कर देंगे। जब सज़ा

का सेलाब आएगा तो तुमको पामाल करेगा। सो अब तुम ठट्ठा ना करो, ऐसा ना हो कि तुम्हारे बंद सख्त हो जाएं।” (यसअयाह 28:14-22)

कुतुब समाविया सलफ़ की तहरीफ़ की बाबत जो एतराजात और हुज्जतें अहले खिलाफ़ के ताअस्सुब शदीद से मबऊस और शहर-ए-आलम हो गई हैं, उन के जवाब में इतनी पुख्ता और कवी दलीलें मसीही कसीसों यानी इमामों की कुतुब बहस में हवाला कलम हो गई कि सिर्फ़ मुजम्मलन और इशारतन उनका ज़िक्र मुसन्निफ़ रिसाले को दरकार है। मुफ़स्सिल बयान इस अम्र का दो रसाइल मज़कूर बाला से हकीकत-ए-हाल के हर तालिब व जोयायाँ को आसानी से मिल सकता है। और इस मसले के हक़ में भी बड़ी खातिर जमुई और तयक्कून हासिल हो जाएगा। अज़ आनरो कि इस किस्म के एतराजों का जवाब बहस और हुज्जत अक़लीया पर इतना मुन्हसिर नहीं, जितना कि सही और मुस्तनद रिवायतों पर और उमूर वाकईयह पर और ऐसे शख्सों की शहादत पर जिनसे कोई ज़्यादा मोअतबर गवाह क्रियास में नहीं आ सकता। आन्कद्र कि अगर शायद ऐसे शख्सों के कौल और गवाही पर एतिक़ाद करने से उज़्र हो तो ज़मान साबिक़ की शहादतों और सनदों का ईमान सरासर आलम से सफ़ा और महव हो जाता।

अव्वलन वो अम्र अहले मुहम्मद के ख़ास गौर व लिहाज़ के लायक़ है जो दो रसाइल मज़कूर में साबित व नुमायां हो गया कि, कुल फुर्क़ान में एक भी जुम्ला या आयत मौजूद नहीं कि जिसमें किसी किताब मुक़द्दस की तहरीफ़ का इल्ज़ाम किसी मसीही पर लगाया गया हो या ख़ास इन्जील की किसी आयत की तहरीफ़ का ज़िक्र व बयान दरपेश हो। ऐसे मुवाख़िज़ा और शिकायत से कुल अहले मसीह मुबर्रा हैं। ऐसा खलल और नुक़सान उठाने से कुल इन्जील शरीफ़ भी मुबर्रा है। इन्जील की तहरीफ़ पर कुरआन मजीद में ज़रा भी शहादत

व दाअवा नहीं, बल्कि जिन मवाजेअ में तहरीफ़ इन्जील की तकरीर बताकीद से या खुद इन्जील के जोर घटाने या अपनी शहादत का वज़न बढ़ाने और मुईद करने वास्ते महमुद ﷺ को बड़ा फ़ायदा और मदद हो सकती थी, इनमें वो साहब इस तरह के ऐब व इल्ज़ाम की बाबत बिल्कुल खामोश रहता और अदना से अदना इशारा तक का तज़्किरा नहीं करता।

सानियन जाये गौर व ताम्मुल है कि जब उम्मत यहूद के बाअज़ साकिनान मदीना पर तौरैत के मुहरिफ़ करने का इल्ज़ाम कुरआन मजीद में इतलाक़ किया जाता तो उन यहूद की तहरीफ़ के बयान में ये अम्र साफ़ मालूम और नमूदार है कि तहरीफ़ मज़कूर से वो तहरीफ़ मुराद नहीं जिसे अक्सर मुज्ताहिद और मौलवी साहिबान समझते हैं और कुतुब समाविया के रद्द और मतरूक करने का हक़ और वाजिबी बाइस बताते हैं। यानी तहरीफ़ मज़कूर से ये मुराद नहीं कि कलाम खुदा में कुछ कमी बेशी आ गई। अज़ आनरो कि अस्ल मतन में सहीफ़ा या बाब या फ़स्ल या आयत या जुम्ला का नुक़सान उम्दन व क़सदन मुरुविर (गुज़रना, चला जाना, मुन्क़ज़ी होना) ज़माने में दर्ज हो गया। दोनों अस्हाब मज़कूर ने दो ज़ेल माअरूफ़ आयतों से ये अम्र अयाँ और नुमायां किया है कि तहरीफ़ से मुराद है कलाम अल्लाह का नक्ल मवाजेअ करना और करीनह-ए-कलाम से अल्लैहदा (अलग) कर के उन के उल्टे मअनी बताना और मुख्तलिफ़ मअानी और मज़ामीन के फ़िक़ात और आयात जाबजा से चुन कर जो पैवंद के लायक़ नहीं, पैवस्ता करना और जिन-जिन शहादतों को फ़ाश व पदीद करना हक़ व लाज़िम था, उन्हें दगा और फ़ित्ना व फ़साद से मख़फ़ी (छिपी) और महजूब करना। जिससे शहादत अल्लाह की कामलीयत और कुल्लीयत में नुक़स व खलल आ जाए और कम-अक्ल, कम-इल्म जो

यान हक फ़रेब खारं। इस मअनी की हकीकत की एक दलील (सूरह फुर्कान आयत 13) से ले लीजिये :-

فِيمَا نَقَضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ لَعْنَهُمْ وَ جَعَلْنَا
 قُلُوبَهُمْ قَسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ
 مَوَاضِعِهِمْ وَ نَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ وَ
 لَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا
 مِنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَ اصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
 الْمُحْسِنِينَ

(सूर मायदा आयत 13)

मज़ीदबराँ बयान है :-

وَ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا سَمَّعُونَ لِلْكَذِبِ سَمَّعُونَ
 لِقَوْمٍ آخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ
 مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِمْ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ بِذَا
 فَخْذُوهُ

(सूरत माइदा आयत 41)

अम सलिस गौर के लायक इस मसअले में ये है जिसके बाअज़ उलमा-
 ए-मुहम्मदी लापरवाई से मुकर और काइल हैं कि हर-चंद फ़र्दन-फ़र्दन और
 जुदा-जुदा नुस्खे-जात में सहवन या कसदन अज़ राह नुक्स मज़ीद खलल आ
 सकता था और आ भी गया और ज़माने-साबिक की हर सनद में ज़रा सी
 कमी बेशी का ऐब इल्लत व खिफ़फ़त इन्सानी के शराइत ज़रूरी में से है और

बेशक नक्ली सहववों (भूल) की कुल तादाद बढ़ जाएगी। बक़द्र शुमार नुस्खे-जात के और भी हैं। क़द्र कि हर शख़्स को किताबत और तिलावत कुतुब की इजाज़त बे रोक-टोक दी जाये तो भी खुद इन्जील के अस्ल मतन में और अस्ल मआनी और मज़ामीन में इस क़द्र खलल डालना जिससे वो ग़ैर-मुस्तनद और ग़ैर सही और ग़ैर-मोअतबर हो जाये, हर सूरत से मुहाल है। अज़ां जिहत कि ज़माने ईस्वी के शुरू ही से यानी अल्वल सदी से मुतवातिर पुशत दर पुशत कलाम खुदा की दस्तयाबी की आरजू और उस की क़लम नवीसी और तिलावत का अजीब व नादिर इश्तियाक़ शहर शहर और मुल्क-मुल्क मुन्तशिर हो गया और जहां-जहां मसीही जमाअतों की रकाबत और महीमनियत में किताब शरीफ़ का कोई जुज़ मख़ज़ून और महफूज़ रहा, वहां-वहां मकतूबात इन्जीली मअ़ अस्नाद पसमांदा अम्बिया नक्ल होने के वास्ते और मुहक्किकीन की खातिर जमुई के वास्ते ढूँढे भी गए और बेशुमार नुस्खे-जात क़रीब व बईद सब अतराफ़ और अकनाफ़ रुबा मस्कून में मुतदाविल और मुरव्वज हो गए। यकीन है कि खुदा तआला जिसने बाफ़ज़ल रूहुल-कुदुस की कुदरतों और खवारिक़ आदत (खिलाफ़ आदत बातें मोअजज़े) के आफ़ताब सदाक़त की शआओ से आलम को मुनव्वर किया। उस ने ऐसी ख़ाम तदबीर और बन्दोबस्त नहीं किया कि उस नूर की बशारत और मुज्दा का निहाल (ताज़ा लगाया हुआ पोदा) खुलते हैं और उनके निकलते ही उसी दम इन्सान के जुल्म व फ़रेब से घट कर फ़ौत हो जाए और उस की अज़ली तक्दीर व मस्लिहत जो पेश अज़ बनाए आलम हिक्मत बेकियास से ईजाद हुई थी, अमल में आते ही बे-इख़्तियार अहले खिलाफ़ की ख़्वाहिश और इख़्तियार में तर्क की जाये। जिस खुदा तआला ने अपनी बर्गुज़ीदा क़ौम इस्राईल की विलादत व तिफ़िलियत ही से इतनी लुत्फ़ व पेश-बीनी से उस की रिआयत और निगहबानी कर के मिस्र के तनूर से छुड़ाया था और हेरोदेस बादशाह की बद मश्वरतों से क़ौम इस्राईल का वो उम्दा

मौलूद और कुल खल्कत का नखसत ज़ादा (पहला फल) यानी अपने कलिमे और इब्ने महबूब को खलास किया था, सो अपने वसाइल में ऐसा तंग और ला तदारुक नहीं था कि अपने लुत्फ व फ़ज़ल का इज़हार और इश्तिहार जो कलाम इन्जीली है, उसे दो एक गोशा-नशीनों की अमानत में हवाला कर दे। जिनके हक़ में अगर कोई खतरा भी बेवफ़ाई और साज़िश का ना होता, बहर-ए-हाल खदशा और खलिश बाज़ों के दिल में पैदा हो सकता और मोअतरिज़ों की शिकायतों और इशतिबाहों में कुछ सूरत इन्साफ़ और वाजबीयत की दिखाई देती। हरगिज़ हरगिज़ नहीं बल्कि क्रिस्म-क्रिस्म के अहले खिलाफ़ के रूबरू ख्वाह यहूद, ख्वाह यूनान उलमा व हुकमा, ख्वाह अवाम का अज़दहाम (भीड़, अंबोह) ख्वाह कीना-वर फ़रीकों के हरीफ़ सभों के मुक्राबिल खुल्लम-खुल्ला खुदा तआला ने अपना कलाम रोशन और मुबय्यन कश्फ़ किया। अज़ आनरो कि ना अशखास मुफ़रद बल्कि बुजुर्ग जमाअतें मुतअद्दिद उन पाक नविशतों की महीमनियत के मुतवल्ली (इन्तिज़ाम करने वाला) हो कर उन की शाहिद और बशीर हो जाएं। चुनान्चे (ज़बूर 68:11) में लिखा है, “खुदावन्द हुक्म देता है, खुशखबरी देने वालियाँ फ़ौज की फ़ौज हैं।”

और अगर शायद एक शख्स या एक जमाअत के नुस्खों में या एक उस्कुफ़ (यानी पाक जमाअतों के रक़ीब व निगहबान) की अमल-दारी के हलके और दायरे के अंदर नुस्खे-जात कलाम में कुछ खलल या कमी व बेशी पड़ जाये तो जब वो नुस्खे-जात नाक़िस व क़बीह बाक़ी एतराफ़ों और अमल दारीयों के नुस्खे-जात के साथ मुक्राबला किए जाएं, ताकि नए पुराने, ग़ैर सही और सही तरीन, वो जो जाये नुज़ूल कुतुब से दूर बईद शहरों में मिले और वो जो क़रीब शहरों में मिले, वो जो जाहिलों के हाथ से कलम बंद थे और वो जो आलिमों और खुश नवीसों के हाथ से कलम-बंद थे, ये सब जब बाहम मिलाए

जाएं तो बा क्रद्र व वुसअत इन्सानी असली सेहत में महफूज हो कर ब तौफ़ीक खुदा-ए-क्रादिर वह कुतुब मोअतबर और मुस्तनद और लायक तस्लीम के हो जाएं। ज़ेल के अबवाब में इंशा-अल्लाह इस अम्र का बयान ब मज़ीद तफ़सील व ततवील हो जाएगा। इतना यक़ीन है कि रब तआला की मर्ज़ी थी कि वो वाक़िया नादिर और सलामत बख़्श यानी शाह सुलह व नजात का ज़हूर ऐसा साफ़, रोशन और नमूदार और मफ़हूम हो जाये कि जम्हूर-उन-नास (बहुत से लोग) उस की तन्कीह और तहकीकात कर सकें। किसी मोअतरिज़ को जा-ए-शिकायत ना हो कि सनदें ज़मीन के गोश-ए-पिनहां में दराए हिजाब मस्तूर हो गईं, सिर्फ़ थोड़े ही पहुंचे हुआँ का ख़ास माल और हिस्सा मुक़य्यद हैं।

राबिअन अरस्ता-तालीस (अरस्तू) हकीम साहब ने कहा है कि :-

ना सिर्फ़ पुख़्ता नसूस ओर हुज्जत कतई से मुतकल्लिम लायक एतबार व एतिमाद जाना जाता है, व लेकिन (मगर, लेकिन) इस से भी मोअस्सर और वज़नी क़ौल का मालूम होता है कि उस का मिज़ाज ख़ैर व सादिक और सलीम दिखाई देता है। इस हाल में हाज़िरीन व सामईन मुअतकिद (अक़ीदतमंद) होना चाहते हैं और उन के दिल तयक्कुन पज़ीर होते हैं। इसी तरह की तासीर और ख़ातिर जमुई और तयक्कुन हक़ जोयों के ज़मीर में पैदा होती है। जब मसीही मुहक्किकीन का मिज़ाज और इरादा दर्याफ़्त करते और मुद्दत तवील के तजुर्बे से मालूम करते हैं कि उन के मिज़ाज में कितनी सिदक़ दिली और बेग़र्ज़ी और हक़ विरासत की मुहब्बत महज़ व सादा और हर एक अम्र में हकीकत-ए-हाल की जुस्तजू और दर्याफ़्त का इश्तियाक़ था और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि हर एक हक़-जो का तयक्कुन और ख़ातिर जमुई और भी बढ़कर हो जाती है, जब वो इन मुहक्किकीन मज़कूर की तन्कीह हक़ायक़ और क़वाइद तहकीक़ व तफ़तीश पर लिहाज़ करता और उन से ख़ूब वाक़िफ़ हो

जाता है कि कत-ए-नज़र अज़ तास्सुब वो हर सूरत की खुद-गर्ज़ी और तरफ-दारी और रिआयत से बईद और मुतनफ़िफ़र (नफरत करने वाले) हैं, बल्कि इस मिज़ाज की इतनी सख्ती और शदोमद से मुक्तज़ी हैं कि बाअज़ इनादि और मुतअस्सिब उन पर गिला और मुवाख़िज़ा करें, इस अम्र में, यूं कह कर कि तुम्हारे क्वाइद तहकीक़ इस कद्र शदीद और जबर आमेज़ हैं कि बाअज़ आयतें बऐतबार अस्नाद क़दीम की सेहत व कस्रत के महफूज़ व मन्ज़ूर होने के लायक़ हैं। आप ने अस्ल मतन से मतरूक जाना और बताया। इसी तरह मुहक्किक्कीन मसीही ने दूर व बईद के मशरिक़ व मगरिब से नए पुराने नुस्खे जात अहदे अतीक़ व जदीद जमा कर के उन्हें बाहम मुक़ाबला किया, जैसे मौलवियान और मुज्ताहिदिन मुहम्मद आप भी जानते हैं और तोअन करहन इस अम्र का मुकर होना, उन पर फ़र्ज़ व लाज़िम है और सिर्फ़ अस्ल मतन के नुस्खे जात नहीं बल्कि निहायत क़दीम ज़मानों की तफ़्सीरों और तशरीहों और तर्जुमों को जुज़ियतन व कुल्लियतन जो सन् ईस्वी की दूसरी सदी से छठी सदी तक कलाम खुदा के शौक़ व ज़ौक़ के सबब तैयार होते और मन्कूल होते चले जाते थे, उन मुहक्किक्कीन ने इतनी कोशिश और सबूरी और खर्च ज़र और मुदावमत से जमा कर लिया है, जितनी इन गोता बाज़ों की है जो अमीक़ बहर से मर्वारीदों (मोती, गौहर) को निकालते हैं और सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि जो आयात मुफ़रद उन अक्वल सदीयों की कुतुब पसमांदा में मौजूद हैं, खुसूसुन उन्हीं जो बहस और हुज्जत के मुतालिब की बाबत हवाला कलम हो गईं और इख़्तिलाफ़ राय के मूजिब व बाइस ठहरीं, बड़ी दिक्कत और खबरदारी से छान-बीन कर रोशन कर लिया। जिससे हत-उल-वसीअ ता दर्जा कमाल हर सिद्दीक़ और हक़ जोओ और मुमय्यज़ निकत को मालूम और दर्याफ़्त हो कि अस्ल मतन मोतमिद और मुस्तनद कौन है जिसकी बाबत तख़रीब व तब्दील व सहव नक्ली का कोई खदशा या इशतिबाह व अजबन् और मअक़ूलन पैदा

नहीं हो सकता। इस तहकीकात के बाद जो शक करे सिर्फ महालात का मुकतजी ठहराया जाएगा। अजां जिहत कि इश्या ओर वाकियात कदीम-उल-अय्याम के ऐसे दलाईल मांगता है, जैसे हाल की बातों के और इल्म अखलाक व ईलाहीयत में ऐसी हुज्जतें और नुसूस तलब करता है, जैसे इल्म-ए-हिंदिसयह व हेइय्यत व नुजूम और बाकी उलूम तबीआत से मुताबिकत रखते हैं। पस ये इल्म व हिकमत के खिलाफ़ क़वाइद है।

खैर साहिबो मुहक्किकीन मज़कूर की तन्कीह और तहकीकात के तरीके को इस रिसाले के मुसन्निफ़ ने खुद अपने तजुर्बे से मालूम व दर्याफ़्त किया है, यानी जाबजा और मुल्क ब मुल्क सैर व सफ़र कर के और कुतुब खानों में दखल पा के इस तफ़्तीश के नतीजों को साबित किया। पस इस तन्कीह और तहकीक के हासिलात में से एक बात यकीनी ये है कि छः सात वज़नी आयात में खुद अस्ल इन्जील की तो नहीं मगर ज़मानों में बाअज़ मुल्कों के नुस्खे-जात की तखरीब या तब्दील यानी कमी बेशी हो गई। अब मुहक्किकीन ने उन ग़ैर-मोअतबर नक़लों को बड़ी मेहनत व मशक्कत से उन सही और मुस्तनद और लायक-उल-तस्लीम नुस्खों के साथ मुकाबला कर के हकीकत-ए-हाल को सराहतन पेश-ए-नज़र रोशन और वाज़ेह किया और जिन-जिन आयतों की सनदों के वसूक (यकीन) में कुछ खलल व कसूर दाखिल हुआ था, उन पर बाद इम्तिहान के महरूम करने का फ़त्वा दे कर बाकी आयतों की वसाक़त और सनदियत ऐसी क़वी शहादतों और मज़बूत दलीलों से साबित की कि खुदा का बंदा बड़ी शुक्रगुजारी और खातिर जमुई से कह सकता है। खुदा की हम्द है कि खुद अस्ल इन्जील बे तखरीब व तब्दील मुझे दस्तयाब है और हर सूरत से कबूलीयत और एतिक़ाद और इताअत अहकाम के लायक़ है।

अगर कोई शख्स सिदक दिल या तलब दिक्कत से उन छः सात आयात मज्कूर के बाब में सवाल करे कि उनका वजन किस कद्र था तो बड़ी तसल्ली का जवाब हक़ ये है कि जब मतरूक भी हुई, तब भी दीन हक़ के अक्कीदों में ज़रा भी नुक़्स व क़सूर नहीं आता। एतिक़ादात के हर जुज्व और नुक़ते की बुनियाद काफ़ी व वाफ़ी सबूत से मज्बूत और पुख़्ता बाक़ी रहती। दरवाज़ा बहिश्त का जो इन्जील व तौरैत में बताया जाता है, ज़रा भी नहीं हिलता। रास्ता नजात अपने असली सीधे पन से ज़रा भी फ़ेरो पेचिश नहीं खाता। फिर एक मदद इस तहकीक़ात में ये बहुत भारी है कि दूसरी तीसरी सदीयों में करीब उन्हीं अक्कीदों की बाबत बहस व मुनाज़रा हुआ करता था, जो अब अहले मसीह और अहले मुहम्मद के दर्मियान मशहूर हैं और तब भी मसीही उस्क़ुफ़ और कशीश और मुअल्लिम अपने-अपने ज़माने की मुरव्वज ओर माअरूफ़ किताबों से अक्सर उन्हीं नक़लियात से दीन के अक्कीदों और सब एतिक़ादात को तस्दीक़ किया करते थे, जो अब किताबों में मौजूद हैं और जिनसे इज्माअ-मोमिनीन का ईमान और अमल मरबूत है।

अगर शायद कोई मोअतरिज़ कहे कि बिलाशुब्हा तुम्हारे मसहहीन (मुसहहे की जमा, सही करने वाला) और मुहक्किकीन की नीयत और इरादा ख़ैर व दुरुस्त और तारीफ़ के लायक़ है, पर इतनी मुद्दत-ए-मदीद के बाद उनकी मेहनतों का क्या हासिल। इतनी दूर और क़दामत की बातों की तहकीक़ में कहाँ से कोई मोअतबर मदद मिल सकती है और इतनी अमीक़ और मव्वाज बहरों में से दुर् (मोती, गौहर) हक़ीक़त के खोज निकालने की कौन-सी उम्मीद करीन-ए-क्रियास या इम्कान हो सकती है। इस एतराज़ के जवाब में मेरी अर्ज़ है कि ना सिर्फ़ उन पिछली सदीयों में मुहक्किकीन इस कद्र सिदक दिल और साबिर और साई और जमाअत मोमिनीन व राशेदीन में रौनक अफ़ज़ा रहे हैं,

बल्कि दूसरी सदी की इन्तिहा से लेकर ऐसे मुहक्किकीन की पक्की खबर और साफ़ पता मिलता है और उन की तस्नीफ़ात कुल्लियतन तो नहीं पर जुज्यतन महफूज़ और मौजूद हैं और इनकी तारीफ़ और तन्कीर सब जमाआत रसूलियह में आज तक शुरू से सुनी जाती है। मसलन अर-जिन साहब जो मिस्र के दार-उल-खलीफ़ा यानी सिकंदरिया आजम में जमाअत ईस्वी का बड़ा ओहदेदार और मअदिन इल्म व मअरिफ़त था और उस के मुरीद और ताबईन खुसूसन पमफ़लूस नाम एक मुसन्निफ़ और मुअल्लिम सही तरीन नुस्खे इन्जील व तूरीत वगैरह के बटोरने और मुक्काबला करने में जवानी से लेकर बुढापे तक मशगूल व मसरूफ़ रहे। और बेशक दूसरी सदी के अखीर में जो नुस्खे जात जाने जाते थे, तहक्कीक बड़े पुराने हों गए और जब कि अर-जिन साहब ने अपने अस के पुराने नुस्खे जात से अक्काइद हक्कीकी का वही अस्ल और तुख्म निकाला जिनके वाअज़ व बशारत के सबब अब भी इज्माअ मसीही के किस्सीस और पादरी साहिबान बाअज़ मौलवी साहिबों के क़लम व ज़बान से तम्सखर बर्दार और तअन पज़ीर हैं। तो क्या जाये ताज्जुब है कि और मसहहीन (सही) और हक़ जोयों की इतनी जुस्तजू और तफ़तीश की सख़्त मेहनतों के बाद इंशा अल्लाह हमारी बड़ी खातिर जमुई और तसल्ली और मुज्दा सलामत की बशारत में बड़ी लापरवाई पैदा होती है।

अब ज़ाहिर और वाज़ेह हो गया कि मसहहीन हक्कीकत अंदेश की कोशिश और सई से ये नतीजा हासिल हुआ कि बेश से बेश 6 या 7 वज़नी आयतें मिन-जुम्ला आयात के जो अक्काइद ईस्वी के सबूत में मुफ़ीद तो हो सकतीं, पर सरासर ज़रूरी और लाज़िमी नहीं हैं, हमने मतरूक और ग़ैर-सही मान लीं। पर तो भी कुल्लियत अक्काइद से एक शोशा या नुक्ता तक भी नहीं खो दिया और खुसूसन एक बड़ा भारी फ़ायदा इस तहक्कीक़ात से हासिल हुआ जो ग़ौर

व ताम्मुल के लायक है कि बाकी सब आयतों की सेहत और अस्लीयत और गैर-मतरुकियत उन्हें मसहहीन की मेहनतों से और तहकीक के उसी तरीका और शराइत पर इतनी ही मज़बूती से वासिक और मोअतबर और लायक तस्लीम बताई गई, जिससे उन थोड़ी आयतों का रद्द करना या लाज़िम या मुस्तजब मालूम होता है।

तो **हासिल कलाम** ये है कि जो कुछ मतरुक हो गया, उस से अकीदों की किफ़ायत दलाईल में कुछ नुक़सान नहीं आया और जो बाकी रहा तो तहकीक और तन्कीह से इतनी मज़बूत और बेतरद्दुद और ला जनबीदह बुनियादों पर मबनी ठहरा कि ता-वुसअत इन्सान कोई शैय मज़बूत तर नहीं हो सकती। दर-हालिका ना सिर्फ़ इतनी बात साफ़ व ज़ाहिर है कि दूसरी सदी के अखीर से लेकर मुहक्किकीन और मसहहीन की सिलसिला बंदी मुतवातिर है, बल्कि ये भी कि उन की तफ़्तीशों और तहकीकात के बड़े फ़वाइद और नताइज और हासिलात उन की तस्नीफ़ात में मर्कूम और मौजूद हैं। और वो गवाह ऐसे थे जिनकी उम्र के अहवाल और उन की लियाक़त और इस्तिदाद (सलाहियत) और मिज़ाज अख़लाकी और रुहानी तवारीख़-ए-कलीसिया यानी इज्माअ मुक़द्दस की कुतुब से ना अज़-राह मुबालगा बल्कि ब तमीज़ व क़द्र-दानी साफ़ मालूम हो सकते हैं। और अगर शायद कोई मुन्सिफ़ मिज़ाज और रोशन ज़मीर उनका बयान पढ़े तो लापरवाई से कहेगा कि लामुहाल जितनी अलामतें वफ़ादारी और मोअतबरी की इस आलम-ए-फ़ानी से मिल सकतीं और रास्त काज़ीयों और अदालत नशीनों के हुज़ूर मन्ज़ूर होतीं, इतनी ही उन मुहक्किकीन में बड़े कमाल से पाई जाती हैं।

इस सबब से जितने मोअतरिज़ हक़ गो और रास्त जू हैं, उन के रूबरू हमारी पूरी खातिर जमुई है, बलिहाज़ इस यकीन के कि उस ख़ास इल्म व

फ़न में जो कुतुब सलफ़ का इल्म व फ़न माअरूफ़ है, जितने दलाईल सेहत वो साकित (मज़बूती) अस्हाब तमीज़ो अदल की राय के बमूजब काफ़ी वाफ़ी ठहरते हैं, इतने ही दलाईल कुतुब इल्हामिया की हिफ़ाज़त व रिआयत की बाबत हासिल व मौजूद हैं। जैसा एक ज़ेल के बाब में ज़्यादा तफ़सील से बयान होगा, इंशा-अल्लाह। पर खुदावन्द मसीह के मुतअस्सिब और कीना-वर मुखालिफ़ जो महालात के मुक्तज़ी हैं, हरगिज़ किसी दलील से राज़ी और खातिरजमा और ख़ूब मुसद्दिक़ बातों के काइल ना होंगे। उन के हक़ में क्या ईलाज बाक़ी है। मगर ये कि खुदा तआला की अदालत और सदूर फ़तावे (हुक्म ईलाही का सादिर किया जाना) की उस बड़ी मुस्नद के हवाले किए जाएं। बमूजब इस इर्शाद के जो पोलुस रसूल के ख़त (1 कुरंथियो 4:5) में है “पस जब तक खुदावन्द ना आए वक़्त से पहले किसी बात का फैसला ना करो। वोही तारीकी की पोशीदा बातें रोशन कर देगा और दिलों के मन्सूबे जाहिर कर देगा और उस वक़्त हर एक की तारीफ़ खुदा की तरफ़ से होगी।□

बाब सीज़ दहुम

दरबाब आँ शहादत कि इज्माअ अम्मा मोमिनीन व मुज्ताहिद अंश कि खलिफ़ा व रसूल अंदबर मोअतबरी व सैहत व वसाक़त कुतुब मुक़द्दसा अज़ आमाल व अक्वाल व तस्नीफ़ात खुद दर पेश गुज़र अनीदह अंद

در باب آل شهادت که اجماع عامه مومنین و مجتهدانش که خلفاء و رسل اند بر معتبری و

صحت و وثاقت کتب مقدسه از اعمال و اقوال و تصنیفات خود در پیش گزرانیده اند

बाब गुज़श्ता के मज़्मून से मुताल्लिक़ दो और उमूर हैं जिनके मुलाहिज़ा के बग़ैर कुतुब समाविया की हिफ़ाज़त व रिआयत का हाल ख़ूबतरीन तौर पर मालूम नहीं हो सकता। उस बाब के हवासिल कलाम से साबित और रोशन हुआ कि अक्वल ज़मान से ता ज़माना-हाल बाअज़ मशहूर और काबिल और मोअतबर मुअल्लिमों ने ये भारी मुहिम अपने ज़िम्में ली कि कुतुब समाविया मंज़िला यानी तौरैत, अम्बिया, इन्जील वग़ैरह के नुस्खे-जात सही व सलीम और मुस्तनद व सक़ा सब्र और सिर्फ़ कसीर से इकट्ठा कर के और बाहम मुकाबला कर के ऐन अस्ल मतन की हकीकी सूरत दिखाएं। इस गरज़ से कि वो नक्ल मुसहहे और मुहकम आइन्दा ज़मानों के लिए एक साफ़ पुख़्ता और पेशनिहाद नमूना और मीज़ान हो जाए। ये सब मुज्ताहिद और मुअल्लिम मज़्कूर सिर्फ़ अपने मिज़ाज की सलाहीयत व रूहानियत से इज्माअ आम्मा के सितारा गान नूर-अफ़शाँ की मानिंद ना थे, बल्कि इल्म व हिक्मत व माअफ़त

से शहर-ए-आलम भी थे। लेकिन खुसूसुन ये अम्र गौर व लिहाज के लायक है कि ना सिर्फ अपनी खास राय और ख्याल व क्रियास पर गवाही दिया करते थे, बल्कि जिन-जिन जमाअतों की पेशवाई और कार व खिदमत रवाई और मुर्शदी उन को सपुर्द हुई।

उन जमाअतों के खलीफ और वकील और गोया काइम मकाम और एलची और मुतर्जिम थे। मसलन अरजिन साहब जो सिकंदरिया मिस्री का पेशवा था। ता आन्कद्र कि उस शहर के मदरसा जात शहरह-आलम के मदरसों का मुदरिस था और जेरोम साहब जो बैतूलहम यहूद में ज़ाहिद खाने का पेशवा था और बड़े रोम में भी बड़ा ओहदेदार और वहां की जमाअत ईस्वी में निहायत आलीकद्र और अजीमुशान था और वाइजीन व शारहीन में नादिर व मुम्ताज़। ये और उन की मानिंद बाक़ी असातीन इज्माअ मोमिनीन अपनी-अपनी जमाअतों के मुअल्लिम और खलीफ़ा थे और उस के मफ़हूम व जमीर के इज्हार करने से मुतवक्किल (तवक्कुल करने वाला) और मुतवल्ली (इन्तिज़ाम करने वाला) थे।

यकीन है कि खुदावन्द मसीह ने तरह-तरह के ओहदों और मन्सुबों (ओहदा) को अपनी कलीसिया यानी इज्माअ-आम्मा मोमिनीन के सपुर्द किया और उस खिदमत गुजारी के फ़राइज़ और लवाज़म (लाज़िम की जमा, ज़रूरी चीज़ें) में ये भी शामिल था कि कलाम-उल्लाह की कुतुब मंज़िला को उन के अवाइल की सेहत और अस्लीयत में महफूज़ व महरूस (जेर-ए-निगरानी) रखें। खुसूसुन ये भारी काम इज्माअ मुक़द्दस के ओहदेदारों और मन्सुबदारों के जिम्में और हवाले किया गया। यानी उस्क़ुफ़ों और क्रिस्सीसों और उस्तादों और सब अस्थाबों के जो बसबब औसाफ़ अख़लाकी और फ़ज़ाइल अक्लीया और मदरिज रुहानी कलीसिया की पेशवाई और निगहबानी के मुस्तहिक़ और मुस्तइद गिने जाते थे। तो यही अशखास कमाहकुह, (बखूबी) इस खिदमत आली और सकील

यानी रकाबत कुतुब समाविया के जिम्मेदार हो गए और जो कुछ उन्होंने ने इस बात के हक में किया, सो ना अपने फ़ायदे और नामवरी के वास्ते और ना अपनी ख्वाहिश और इख्तियार और तहरीक दिली से किया, बल्कि खुद खुदावन्द मसीह और उस की कलीसिया की खामियत और अबदीयत के तौर पर और कलीसिया के एवज़ और उस के रूबरू और उस के फ़ायदे और तामीर के लिए और उस का वजूब व हक उस से अदा व वफ़ा कराने के लिए और रूहल-कुद्दुस मौऊद की तक्वियत और तौफ़ीक के लापरवाई से उम्मीदवार हो कर जो खुदावन्द मसीह के वसीयत नामें के मुवाफ़िक आक़िबत तक उनका गोया माल मतरूक और विरसा अज़ीज़ और ला-मुतगय्यर (बदला हुआ नहीं) होने वाला था। चुनान्चे खुदावन्द मसीह का क़ौल रसूलों के आमाल की किताब के पहले बाब में मर्कूम है, “लेकिन जब रूह-उल-कुद्दुस तुम पर नाज़िल होगा तो तुम कुव्वत पाओगे और यरूशलेम और तमाम यहूद और सामरिया में बल्कि ज़मीन की इतिहा तक मेरे गवाह होंगे।” (आमाल 1:8) तो जब मुक़द्दस रसूलों की तरफ़ से कोई ख़त व मुरासला किसी ख़ास जमाअत के पास पहुंचाया गया तो वो जमाअत मुशरफ़ कुल कलीसिया के एवज़ उस ख़त की हिफ़ाज़त व रकाबत की अमानतदार और ज़मानतदार हो गई। अज़ आनरो कि फ़ील-तहक़ीक़ वो मुरासला रूहल-कुद्दुस की तरफ़ से अता व इनायत फ़रमाया गया था। पस रूह खुदा की बख़िशों और नेअमतेँ आम मनाफ़त (फ़ायदा) की बरकतें हैं, तन-ए-तन्हा की नहीं हैं। ख़्वाह शख्स हो, ख़्वाह जमाअत हो और उस ख़ास जमाअत के इसाकीफ़ (उसक़फ़ की जमा) यानी पेशवा और क्रिस्सीस इस गंज-ए-ज़र (दौलत का खज़ाना) के रक़ीब व निगहबान थे।

गरज़ जिस तरह कुल कलीसिया यानी इज्माअ-आम्मा मोमिनीन खुद खुदावन्द मसीह की तरफ़ से अमानतदार और ज़मानतदार ठहरी और हर ख़ास जमाअत दोनों यानी खुदावन्द मसीह और कुल कलीसिया से जिम्मेदार हो गई। इसी तरह इस जमाअत के जो ओहदेदार आली मन्सुब थे, अपनी तमाम

बिरादरी मसीही की महर व परवानगी से इस हक में उन के ओवजी थे और बाद खुदावन्द मसीह के उन्हीं के रूबरू उन की जवाबदेही थी। मसलन जेरोम साहब के चौथी सदी के अखीर में अपने उन खुतूत के जवाब में मौजूद हैं। 27 वीं खत में फ़रमाता है, कौल :-

▣जब मुझे मालूम हुआ कि मेरे अस्र के सब कुतुब ईलाही के तर्जुमे कबीह और नाकिस हो गए तो मैं ने बड़ी मेहनत व मशक्कत से उम्दा यूनानी नुस्खों के साथ उन्हें मुक़ाबला कर के सही किया।▣

देखो साहब मज़कूर ने जो कुछ किया, खुफ़ीयतन नहीं किया, बल्कि एलानियतन। चूँकि अपनी सब मेहनतों के हवासिल व फ़वाइद कुल कलीसिया का आम फ़ायदा जान कर रसाइल के ज़रीये से उसे अपनी इस खादमियत और उस के फल और हासिल से आश्वा किया और बड़ी-बड़ी जमाअतों यानी रोम, यरूशलेम, कार्थेज वगैरह के इसाकीफ़ से सलाह ली। चुनान्चे उस मुअल्लिम माअरूफ़ ने खुद खुदावन्द मसीह और उस के रसूलों के इस मकूला को निहायत अज़ीज़ व मन्ज़ूर किया कि कुल इज्माअ मोमिनीन एक बदन है, जिसका सर खुदावन्द मसीह है और एक दरख्त है, जिसकी जड़ और तना खुदावन्द मसीह है। पस बाद खुदावन्द मसीह के कुल कलाम-ए-खुदा की महीमनियत तमाम इज्माअ की अमानत और विलायत (किसी काम की ज़िम्मेदारी) में सौंप दी गई और अलैहदा-अलैहदा (अलग-अलग) अजज़ा उन जमाअतों के ज़िम्में हुए जो शुरू में उन के जाये दुरूद व वसूल होने से मुशरफ़ हो गई थीं। मसलन जमाअत कुरिंथिस, कुरिंथिस के नाम खत की और जमाअत रोम, रोमीयों के नाम खत की निगहबान और गोया खज़ानची ठहरी। और बेशक ये बन्दोबस्त उम्दा और वाजिबी था कि बड़ी भारी जमाअतें और बाल-इख्तसास वो जो रसूलों और उन के ताबईन के हाथ से मबनी और मामूर

हो गई थीं, उन किताबों के अस्ल मतन की सेहत और मोअतबरी की रिआयत से मुतवल्ली हो गई।

और ये अम्र कि अक्वल ज़बान की सनदें और नुस्खे-जात उन जमाअतों और उन के पेशवाओं की निगहबानी और खबरगीरी में सपुर्द हुए, रसूलों के आमाल की किताब से साफ़ व सरीह साबित है, “और वो जिन-जिन शहरों में से गुजरे थे वहां के लोगों को वो अहकाम अमल करने के लिए पहुंचाते जाते थे जो यरूशलीम के रसूलों और बुजुर्गों ने जारी किए थे पस कलीसियाएं ईमान में मज़बूत और शुमार में रोज़ बरोज़ ज़्यादा होती गई।” (आमाल 16:4,5) और बेशक ये भी उन इल्लतों और गरज़ों में से थी जिनके लिए रूहल-कुद्दुस की हज़ूरी के दवाम और कियाम का वाअदा इज्माअ आममा के बीच इनायत हो और तक़वियत व तरक्की और खातिर जमुई का बाइस था। जैसा युहन्ना रसूल ने अपने पहले खत के दूसरे बाब में फ़रमाया, “और तुम्हारा वो मसह जो उस की तरफ़ से किया गया तुम में क़ाइम रहता है और तुम उस के मुहताज नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए बल्कि जिस तरह वो मसह जो उस की तरफ़ से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है और सच्चा है और झूटा नहीं और जिस तरह उस ने तुम्हें सिखाया उसी तरह तुम उस में क़ाइम रहते हो।” (1 युहन्ना 2:27) और जाये शुक्र व हम्द है कि जो अशखास पुशत दर पुशत इल्म व अक्ल और सदाक़त व सलाहीयत के हक़ में माअरुफ़ व ममदूह थे और सबसे खुश आबाद और शरीफ़ और रौनकदार जमाअतों के पेशवा थे। उन्होंने रिआयत और मुहाफ़िज़त कुतुब मुक़द्दसा से कोई मुहिम, मुहिम तरीन ना जानी और मेहनत का फल ज़ाहिर व वाज़ेह किया। ता आंकि कोई मोअतरिज़ और बिदती फ़रेबी जाये अख़ज़ व ताअरुज़ ना पाए, बल्कि इब्ने खुदा के हज़ूर में खामोश और शिकस्ता-दिल और क़ाइल हकीकत हो कर उस के ताबईन के शुमार में हिसाब किया जाये। जो साहब औकात गुज़श्ता की मसीही कलीसिया की खबरों और रिवायतों से वाकिफ़ हैं, वो खुद जानते हैं कि उन मुहक्किकीन

ने जो इतनी सई और कोशिश से नक़लों की तसहीह की, सो अक्सर महज़ हक़ीक़त ख़्वाही और हूब सदाक़त से की, ना कि मौलवी साहिबान से मजबूर हो कर और उन के डर के मारे ये काम किया। चुनान्चे मुसन्निफ़ रिसाले ने अकबर आबाद की मजलिस बहस में ये अर्ज़ की कि ऐसे सिदक़ दिलों और हक़ीक़त अंदेशों की तक़रीरों पर ग़ौर कर के मौलवी साहिबान को ना चाहिए कि इन तक़रीरों से मूजिब लाफ़ ज़नी और ज़बान दराज़ी और तर्दीद कलाम का बाइस निकालें, बल्कि लाज़िम है कि उन की शहादत बेग़र्ज से मजज़ूब (मस्त) हो कर आफ़ताब रहमत व सलामत की तरफ़ मुतवज्जा हों और तास्सुब की बे-होशी और ग़फ़लत की नींद से जागें। जब तक रहमत का वक़्त है और क़हर का दिन तुलूअ नहीं हुआ।

और इस ख़्याल को मज़बूती और ताकीद से पकड़ना और हरगिज़ फ़रामोश ना करना चाहिए कि ख़ुदावन्द मसीह ने साफ़ ज़ाहिर फ़रमाया कि मैं ने अपनी कलीसिया यानी इज्माअ-आम्मा मोमिनीन को अपना मुहतमिम और मुख्तार-ए-कार और वली ज़वी-उल-इक़तदार इस आलम में मुक़रर किया है और ये क़ौल व क़रार भी किया कि मैं ज़माने के तमाम होने तक हर रोज़ तुम्हारे साथ हूँ और मैं साफ़ व ताज़ा रीज़श रोगन के मुवाफ़िक़ अपनी रूह की तन्वीर व तक़वियत व तक़द्दुस की तासीरों को उंडेलूंगा और ये भी कहा कि उस रूह कुद्दुस की कलीसिया के अंदर बड़ी कार्रवाई और बरक़त अफ़जाई होगी और उस कार और ख़िदमत का माख़ज़ व मदार यही होगा कि वो मेरा कलाम खातिर नशीन करेगा और याद दिलाएगा और सारी हक़ीक़त में हिदायत करेगा और तुम्हें इस क़द्र काबिलीयत और इस्तिदाद (सलाहियत) से मामूर करेगा कि हक़ीक़ी कलाम की तमीज़ और उस की हिफ़ाज़त व रिआयत करने की ताक़त हासिल होगी। मसलन मती इन्जीली ने ख़ुदावन्द मसीह के एक वज़नी मक़ूला की ख़बर (मती 18 बाब) में कलीसिया के हक़ में क़लम-बंद की

है, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कुछ तुम ज़मीन पर बाँधोगे वो आस्मान पर बंध जाएगा और जो कुछ तुम ज़मीन पर खोलोगे वो आस्मान पर खुलेगा।”
(मत्ती 18:18)

खुदावन्द मसीह ने ये वाअदा हल व अक़द करने का ब तोसित रसूलों के ज़ाहिरन कुल कलीसिया से फ़रमाया और वाजिबन इस क़ौल के मुख्तलिफ़ मज़ामीन में से एक मज़मून हक़ ये है कि एक किताब मुरत्वज को कुतुब मंज़िला समाविया के शुमार में दाख़िल करना और दूसरी को बाद तहकीक़ात के मतरूक करना, कलीसिया के ख़वास और मुरातिब से है। फिर रूहुल-कुद्दुस ने पोलुस रसूल की ज़बान से इज्माअ कुद्दुस की क्या ही उम्दा फ़ज़ीलत दिखाई। पहले तिमीथियुस के ख़त में बयान है, “कि अगर मुझे आने में देर हो तो तुझे मालूम हो जाये कि ख़ुदा के घर यानी ज़िंदा ख़ुदा की कलीसिया में जो हक़ का सुतून और बुनियाद है क्योंकि बर्ताव करना चाहिए।” (तिमीथियुस 3:15) फिर जब कि कलीसिया लाखों करोड़ों आदमीयों की है तो चाहिए कि कुल इज्माअ का इख़्तियार और इक्तदार बाअज़ मुख्तार अशखास को तफ़वीज़ हो जाएगी। चुनान्चे ख़ुदावन्द मसीह ने अपनी कलीसिया की ये तर्तीब और बन्दोबस्त किया है और अपनी मर्जी साफ़ अलामतों से दिखाई है और ख़ुसूसन इस तरह से मालूम कराई कि अगरचे हर एक हकीकी मोमिन रूहुल-कुद्दुस के फ़ज़ल व लुत्फ़ से बहरावर और हिस्सेदार ठहरा और उस की बरकात मौऊदा फ़र्दन-फ़र्दन तमाम नस्ल रुहानी पर मुशर्क और मुन्कसिम थीं, तो भी ख़ास मौरिद उस तन्वीर और तक़वियत के बाअज़ ओहदेदारों और मन्सुबदारों को उस ने अपनी कलीसिया में मबऊस किया और उसी रूह के ख़ास वस्फ़ों से मुशर्रफ़ व मौसूफ़ किया। इस नीयत से कि तमाम इज्माअ-

मोमिनीन की इल्मीयत और फ़अलियत भारी मुकद्दमों के बजा और बरपा होने के वक़्त उन्हीं के तवस्सुत से हो।

सच तो ये है कि कुदरत व इख़्तियार कुल कलीसिया के तसरूफ़ में है। पर वही अशखास मुख्तार व मुम्ताज़ और खास फ़जाइल से मौसूफ़ उस के वकील व मुतवस्सित मुकर्रर थे ताकि इज्माअ-कलीसिया की आवाज़ और फ़तवे उन्हीं की ज़बान से सुनाई दें और जब खास मुहिम्मात का इन्फ़िसाल और मसाइल व मुशिकलात का इन्हिलाल जिनसे तमाम इज्माअ की बेहतरी और तरक्की का कुछ ताल्लुक था, दरकार और लाज़िम हो। तब इज्माअ मुकद्दस की मजालिस आम्मा बादशाह ज़माने के इक़बाल से किसी मुईन वक़्त व मौक़े पर मुजतमा हो सके और ऐसा ही हुआ। चुनान्चे पाँच पहली सदीयों के अरसे में चार मजलिस आम्मा माअरूफ़ और शहर-ए-आलम हो गईं। इस किस्म की मजालिस आम्मा में चारों एतराफ़ से मसीही, मुख्तलिफ़ जमाअतों के उस्कूफ़ बरू बहर और दूर-दूर मुल्कों की सैर व सफ़र करके तशरीफ़ लाए और अदयान क़दीम की ख़बरों से मालूम और यक़ीन हैं कि रूहुल-कुद्दुस की हुज़ूरी मौऊद की बड़ी इल्तिजा और इस्तिदा भी थी और उस अर्ज़ माअरूज़ की इजाबत और क़बूलीयत की बड़ी इंतिज़ारी थी। और अगरचे अक्लियात की क़द्र और रिआयत हक्कीयाह वो मजलिस नशीन किया करते थे, तो भी बाल-इख़्तसास नक्लियात से हुज्जतें और दलीलें निकाल कर उन शरीफ़ों ने मुकद्दमात को फ़ैसल किया।

फिर एक और अम्र सराहतन वाज़ेह है कि अगरचे कौल व क़रार मसीही के बमूजब रूहुल-कुद्दुस की हुज़ूरी बराबर हर वक़्त इज्माअ-मोमिनीन में कायम व दायम रही, मगर बाज़-औकात मसलन एतिकादात के मआनी और हद्दू को मुतअय्यन करने के वक़्त या इज्माअ-आम्मा के खुश मुरत्तिब व मुनज़्जम

करने के वक़्त ता तक्वियत ईमान और तर्गीब व तहरीक मुहब्बत और हिक्मत व महारत व तमीज़ रुहानी की तरक्की के वक़्त उसी रूह खुदा का दुरूद व नुज़ूल बड़ी अफ़ज़ाइश और फ़रावानी से हुआ। जिस बात से ये दो बड़े मुनाफ़े हासिल हुए।

अव्वल, ये कि अहले कलीसिया में बड़ी खातिर जमुई और इत्मीनान रहा। इस यक़ीन से कि इस की खास हाजतों और ख़तरों और तक्लीफों के वक़्त खुदावन्द मसीह के ख़जाने फ़ज़ाइल में कुमक व मदद की बड़ी दौलत महफूज़ और मुहय्या है।

दोम, ये फ़ायदा कि उन के मिज़ाज में ग़रीबी और हया और फ़िरोतनी की हालत बढ़कर हो गई। इस शऊर अंदरूनी से कि हर सूरत से मुझे क्रियाम व दवाम सिर्फ़ खुदावन्द मसीह ही में है। इसी के क़ौल व वादे पर मेरी उम्मीद मुन्हसिर है।

उन मजालिस आम्मा मज़कूर का पहला नमूना रसूलों के आमाल के 15 वें बाब में मुफ़स्सिलन बयान होता है। जो चाहे सो इस तरह की मजालिस अइम्मा के शराइत वुज़वाबत को इस पेशनिहाद आजम की रिवायत से सीख सकेगा। और उन सब उमूर में खुदावन्द मसीह ने अपनी कलीसिया की तर्तीब व तंज़ीम के लिए कैसी उम्दा ख़बरदारी और पेश-बीनी और मुराआत से बन्दोबस्त किया। इस की यक़ीनी और पूरी ख़बर इफ़िसियों के ख़त में मिलती है, “और ये उतरने वाला वोही है जो सब आस्मानों से भी ऊपर चढ़ गया ताकि सब चीज़ों को मामूर करे। और उसी ने बाअज़ को रसूल और बाअज़ को नबी और बाअज़ को मुबशशर और बाअज़ को चरवाहा और उस्ताद बना कर दे दिया। ताकि मुक़द्दस लोग कामिल बनें और ख़िदमतगुजारी का काम किया जाये और मसीह का बदन तरक्की पाए। जब तक हम सब के सब खुदा के बेटे के ईमान और उस की पहचान में एक ना हो जाएं और कामिल इन्सान

ना बनें यानी मसीह के पूरे क्रद के अंदाज़े तक ना पुहंच जाएं।” (इफिसियों 4:10-13) बल्कि अज़राह मुहब्बत हक़ के मोअतरिफ़ हो कर उस में जो सर है यानी खुदावन्द मसीह में हर तरह से बढ़ते जाएं।

अब इन सब बयानात से मालूम हुआ कि वो इज्माअ-मोमिनीन जो जिंदा खुदा की दरगाह ईनजहानी है, हर-चंद कि वो असालतन और बातिनन खुदा के मुख्तार बंदों और नव-मौलूद फ़रज़न्दों की ऐन यगानगत और फ़राहम आवरी है, तो भी जाहिरन ऐसी शराक़त और रिफ़ाक़त है जिसमें जो लोग शामिल हैं उन पर बहुत अदाए हुकूक व वफ़ाए फ़राइज़ लाज़िम आता है और अहले जहान के मुकाबिल खुदावन्द मसीह के गवाह और एलची और वकील हैं और उस के नूर से आप मुनव्वर हो कर दुनिया की तन्वीर के लिए मुकर्रर हैं और खुदावन्द मसीह की तरफ़ से सदूर अहकाम व क़वाइद से मुशर्रफ़ हो कर उन्होंने क्रिस्म-क्रिस्म के दर्जात और मुरातिब पर मुस्तइदों को वक्फ़ व तक्दीस करने का इख़्तियार पाया है। जिनके ज़रीये से और भी ख़िदमत गुजारीयाँ पूरी हों और एक उनमें से निहायत भारी और उम्दा कुतुब मुकद्दसा की मुहाफ़िज़त है।

बयान बाला से ये अम्र जाहिर और नक्ली दलाईल से साबित हुआ कि कलाम-ए-खुदा के अस्नाद (सनदों) की मुहाफ़िज़त इज्माअ आममा के ख़ास ओहदों में से थी और उन मन्कूलात के मुवाफ़िक़ (इफिसियों 1:22,23) नादिर मज़मून की इफ़्सस के नाम ख़त के पहले बाब में हैं, “और (खुदा ने) सब कुछ उस के पांव तले कर दिया और उस को सब चीज़ों का सरदार बना कर कलीसिया को दे दिया। ये उस का बदन है और उसी की मामूरी जो हर तरह से सब का मामूर करने वाला है। जिस आयत में वफ़क़ (मुताबिक़त) व मुनासबत तमाम है, इस कौल बाला मन्कूल तिमीथियुस के नाम ख़त से “खुदा के घर यानी जिंदा खुदा की कलीसिया में जो हक़ का सतून और बुनियाद है।”

(1 तिमीथियुस 3:15) कुतुब मुकद्दसा की रिआयत और रकाबत करने के काबिल और मुस्तइद कौन इस से बढ़कर, बल्कि इस के बराबर हो सकता है जो हकीकत यानी हक कलाम खुदा का सतून और खुदावन्द मसीह की मामूरी या भरपूरी है। गोया वो खुदावन्द मसीह अपने सब औसाफ़ और फ़ज़ाइल को अपने बदन मिजाज़ी यानी कलीसिया के उजूओं पर मुन्क़सिम करता है। पस खुदा की कलीसिया के सिवाए कौन दूसरा मुहाफ़िज़ कुतुब उन और उनकी मानिंद और जमाली सिफ़तों से मौसूफ़ मिल सकता है, हरगिज़ हरगिज़ कोई नहीं।

ये बात मशहूर है कि इज्माअ-आम्मा की शाखें मुख्तलिफ़ और मुतअद्दिद हैं और ये भी उलमा-ए-दीनयात को मालूम होगा कि अक्सर कुतुब इन्जीली यानी चार इन्जीलों और आमाल रसूल और पोलुस रसूल के 13 खुतूत और मुकद्दस पतरस और युहन्ना के अक्वल खुतूत की जितनी कलीसिया की शाखें कुल आलम में नूर-अफ़शाँ हैं, सबकी सब बराबर शाहिद और बशीर शुरू ही से हो रही हैं और उन के ओहदेदार और मुज्तहिद उन की खुशखबरियों के मुनाद और वाइज़ होने से बाज़ नहीं आए। चौधवां खत पोलुस रसूल का यानी इब्रानियों के नाम खत हर-चंद कि अक्वल सदी यानी रसूलों की खास सदी में कबल अज़ इंतिकाल हज़रत युहन्ना हबीब, जारी और माअरूफ़ था और मुस्तनद जाना जाता था। तो भी मगरिबी जमाअतों में मुरव्वज और मुतदाविल (दस्त ब दस्त पहुंची हुई चीज़, मुरव्वज) ना था और उन के गिरजाओं यानी इबादत-गाहों के विर्दों के इस्तिमाली तिलावत में शामिल भी ना था। यानी कलीसिया के एक जुज्व में वो खत कम मालूम था। बसबब आंकि (इस की वजह ये है कि) इस का सरनामा बाअहले यहूद मख़सूस था और मदार मज़मून उनके मरासिम शरईयह से बहुत ताल्लुक़ रखता है। पर तो भी वो खत जम्हूर कलीसिया में यानी उस की जुनूबी और मशरिकी जमाअतों में मालूम और

मन्ज़ूर था। और यकीन है कि चौथी सदी के अखीर में इज्माअ मगरिब की मजालिस मसीहीयह ने बाद तहकीक और तफ़्तीश दलाईल उस ख़त को मोअतमिद और मुस्तनद जान कर कुतुब इल्हामिया के क़ानून मगरिबी में दर्ज और शामिल किया। चुनान्चे जेरोम साहब ख़त 129 में फ़रमाता है :-

□इब्रानियों का ख़त मन्ज़ूर करना रोमी कलीसिया का अमल व आदत क़दीमी ना था और इसी तरह मुकाशफ़ा की किताब यूनान की कलीसिया (यानी शाम व सवेर की जमाअतों में, मसलन आन्ताकिया और यरूशलेम और इस्तंबोल की जमाअतों) में मुरव्वज नहीं। पर तो भी हम इन दोनों को मन्ज़ूर करते हैं, यानी क़ानून कुतुब इल्हामिया में हिसाब कर लेते हैं। चुनान्चे हम ना मुताख़रीन, बल्कि मुत्क़द्दिमीन (पहले ज़माने के लोग) की आदत व अमल की पैरवी करते हैं।□

ये शहादत जेरोम साहब की जो अन्वार आलम और असातीन इज्माअ आम्मा में शुमार किया जाता है और जिसने अपनी उम्र कुछ तो बैतुल-मुक़द्दस और कुछ सिकंदरिया मिस्री में और कुछ रोम आजम में बसर की और मदरसों और मजलिसों और रहबान ख़ानों में उस की बड़ी शान शरफ़ और क़दरो मंजिलत थी, सो निहायत वज़नी और ग़ौर के लायक़ है, क्योंकि इस से दो बातें साफ़ साबित और मालूम होती हैं।

पहली, ये कि ज़माने सलफ़ व खल्फ़ दोनों में इन दो किताबों की शहादत जम्हूर कलीसिया के बीच मुत्तफ़िक़ और एक ज़बान हो रही थी।

दूसरी ये कि सिर्फ वस्तु के ज़मानों में जम्हूर कलीसिया के एक-एक हिस्से में इन किताबों की बाबत शक व शुब्ह दर्मियान में आया था, यानी रोम की कलीसिया में इब्रानियों के खत और यूनान की कलीसिया में मुकाशफ़ा की किताब की बाबत।

हर साहब दानिश व बीनिश पर वाज़ेह और नुमायां होगा कि इस थोड़ी ही इबारत में जेरोम साहब ने इस बहस को जो इब्रानियों के खत और मुकाशफ़ा की बाबत जारी हो गई थी, अंजाम व इख़्तताम अज़रूए इख़्तिसार किया। यकीन है कि बाअज़ ज़मानों की बाअज़ जमाअतों में जो-जो शुब्हात और शकूक इन किताबों के हक़ में दिल नशीन हो गए थे, उन्हें रद्द और रफ़ा करना मुनासिब ना समझा। ताआं वक़्त कि कवी दलील और उन के अस्नाद की सेहत और वसाक़त का सबूत ना हो। फिर इन शुब्हात को जेरोम साहब के हम-अस्र मुअल्लिमों और मुहक्किक्कों ने बेअस्ल और बे-बुनियाद ठहरा कर रद्द व बरतरफ़ किया। कौन साहब अक़ल व तमीज़ ये अम्र जाये लिहाज़ और जाये शुक्र ना समझेगा कि कुतुब मंज़िला की रकाबत और मुहाफ़िज़त ना फ़र्दन-फ़र्दन तन-ए-तन्हा मुअल्लिमों के जिम्मे और हवाले कर दी गई, बल्कि कलीसिया जम्हूर के सपुर्द की गई। जिससे ख़ुदावन्द मसीह ने अपनी हमेशा की हज़ूरी और रूहल-कुद्दुस की तन्वीर का वाअदा किया था। और इलावा बरां रसूलों और मुनादों और बाकी उस्तादों और मुअल्लिमों और ओहदेदारों को अपनी कलीसिया से इनआम बख़शा और उन खादिमों को बक़द्र मुक्त्तज़ाए (तकाज़ा करने वाला) औकात औसाफ़ और फ़जाइल मुताअद्दा से मौसूफ़ किया और उन्हें इख़्तियार और इक्त्तदार और हकूक ज़रूरी अता फ़रमाए, बमूजब इस क़ौल ख़ुदावन्द मसीह के जो इन्जील मरकुस में कलम-बंद है, “ख़बरदार जागते और दुआ करते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि वो वक़्त कब आएगा। ये उस आदमी का सा हाल है जो परदेस गया और उस ने घर से रुख़्सत होते

वक्त अपने नौकरों को इख्तियार दिया यानी हर एक को उस का काम बता दिया और दरबान को हुक्म दिया कि जागता रहे।” (मरकुस 13:33,34)

चुनान्चे हर एक सदी की कलीसिया ने अपने-अपने मुअल्लिमों और मुसन्निफों और ओहदेदार उस्कुफों को खुदावन्द मसीह के दस्त फज़ल से ले लिया, यानी इस कद्र सन्जीदगी और इस्तिदाद (सलाहियत) और मोअतबरी के शख्सों को जो उनकी खादमियत के लिए हक और दरकार थी और बर मौका चारों एतराफ़ वाली जमाअतों के वकीलों और खादिमों ज़वी-उल-इस्तक़लाल को जमा कर के और हर एक बिदती और मुखालिफ़ मसीह के किज़ब व कुफ़्र व फ़साद के कज़यों को पेश-ए-नज़र कर के और बाद मुबाहि़सा तरफ़ैन के, उन्हें मीज़ान हकीकत में तौल के, रूबरू आलम के इस मुक़द्दमा का फ़त्वा जारी किया और मजलिस आम्मा की मुहर इतिफ़ाक़ से, उस को पुख़्ता किया और मख़्तूम (महर शूदा, बंद किया हुआ) किया। हो सकता था कि बाअज़ मुफ़रदों, ख़्वाह मुसन्निफों, ख़्वाह मुअल्लिमों की राएं मुख़्तलिफ़ होतीं या खास-खास जमाअतों में शक व शुब्ह पैदा होता। और अगर शायद खुदावन्द मसीह ने उन कज़यों और इशतिबाहों के हल व फैसल करने का कोई वसीला मुकर्रर और मुतअय्यन ना किया होता, तो कुछ जाये जुंबिश व तज़लज़ुल दिलों में बाक़ी रहती। मगर फ़िल-वाक़ेअ जाये इस्तिराहत व तयक्कुन व दिलासाई जाये जुंबिश व इशतिबाह से हज़ारचंद बढ़कर है। अज़ आनरो कि कुल कलीसिया जिसने तमाम आलम में शाखदार दरख़्त की तरह अपना साया और पनाह फैलाई थी, इस मुहाफ़िज़त और रिआयत कुतुब के ओहदे पर मुहतमिम हो कर खुदावन्द मसीह और उस के हवारीन के कलिमात की मुसबत और मुसद्दिक़ और मज़हर ठहरी।

जेरोम साहब जो मुतकद्दिमीन (पहले ज़माने के लोग) को इन दो कुतुब मज़कूर की सेहत और इस्तिनाद (सनद में पेश करना, सनद लाना) व साक़त का मकर और शाहिद बताता है, सो वो बात अक्वल ज़माने के उन आसारों से जो अब मौजूद हैं, मुईद हो सकती है। मसलन कलीमन्स नामे रोम का उस्क़ुफ़ शरीफ़ तख्मीनन तीस (30) बरस पेशतर अज़ इंतिक़ाल युहन्ना रसूल, अपने खुतूत में कई आयतें इब्रानियों के ख़त से नक़ल करता है और उन मन्क़ूलात पर अकाइद दीनी की बाअज़ ताअलीमात और अख़लाकी नसीहतों को मबनी करता है और साठ बरस मुबारक युहन्ना की वफ़ात के बाद फ़्रांसीसी दो जमाअतों के क्रिस्सीस एशयाए कोचक की जमाअतों के पास अपने शहीदों की दिलेरी और जवाँमर्दी और अपने ज़ालिमों की कीनापरवरी और ख़ूरेज़ी की मुफ़स्सिल ख़बर भेजने में इत्तिफ़ाक़न मुकाशफ़ा की किताब पर साफ़ व सरीह गवाही देते हैं कि वो मुरव्वज भी थी और उस के कुतुब इल्हामी के शुमार में गिने जाने पर दोनों जमाअतें मुत्तफ़िक़-उल-राए थीं। अज़ आनरो कि उन की ख़बरों में ये बयान आता है। शहीदों की मज़बूती और बरकरारी देखकर वहूश की मानिंद अवाम व ख़वास की आतिश-ए-ग़ज़ब और ज़्यादा तेज़ी से भड़क गई, ताकि कुतुब मुक़द्दसा का कलाम पूरा हो “जो बुराई करता है वो बुराई ही करता जाये और जो नजिस है वो नजिस ही होता जाये और जो रास्तबाज़ है वो रास्तबाज़ी ही करता जाये और जो पाक है वो पाक ही होता जाये।” (मुकाशफ़ा 22:11)

इस अम्र में ग़ौर करना चाहिए कि तख्मीनन पच्चास (50) बरस ज़माने रसूलियह के बाद इन मगरिबी जमाअतों के शफ़क़त नामें में जो मशरिकी जमाअतों के पास भारी मुहिम्मात के बयान में पहुंचाया गया और अब भी यूसीबीस (Eusebius) की तवारीख़ में मौजूद है, युहन्ना के मुकाशफ़ा पर वही नाम और वही इज़ज़त व शराफ़त व क़द्र की अलामतें इतलाक़ की जाती हैं, जो वक़्त साबिक़ नबियों और औलिया के साथ मख़सूस थीं और इस ख़त के

राक़िम इस यकीन से लिखते हैं कि मुतकल्लिम की जमाअत और मुखातब की जमाअत जो कलीसिया की दो बड़ी शाखें थीं, दोनों बिला-तवक्कुफ़ व ताअरुज़ इस इकरार व शहादत में ब वफ़क़ तमाम मिलेंगी। साहिबो मसीहीयों ने कलाम-ए-ख़ुदा से क्या ही उम्दा और तसल्ली बख़्श कायदा सीखा है कि मुसन्नियों की गवाही को इसी कद्र और अंदाज़े पर वज़नी मानते हैं जिस कद्र बड़ी-बड़ी जमाअतों के मुअल्लिम माअरुफ़ और ममदूह और शहरा-ए-आलम हो कर गोया अपनी ज़बान और अपने ख़ास इख़्तियार से नहीं, पर कलीसिया की ज़बान और इख़्तियार से बोलते थे। क्योंकि वो ख़ुदावन्द मसीह की ऐसी शुन्वा और ताबेअ फ़रमान है जैसे ज़न अपने ख़ास शौहर की।

रसूलों ज़वी-उल-इल्हाम के ज़माने के बाद निस्फ़ सदी के फ़ासिले पर एक और शाहिद गिरामी और मशहूर मुकाशफ़ा युहन्ना की वसाक़त और लियाक़त पर दाल है, यानी योस्तीन शहीद (Justin Martyr) जिसमें बाअज़-बाअज़ मुन्फ़सिल जमाअतों की शहादतें मिलती हैं। चुनान्चे वो नाब्लूस से जो बैतुल-मुक़द्दस के एतराफ़ में है, एशयाए कोचक में ख़ुसूसुन इफ़सस शहर में आया और वहां से रोम आज़म की तरफ़ रवाना हो कर उस दार-उल-ख़िलाफ़त में मुद्दत तक रहा और इल्म ईलाहीयत का मुदर्रिस हो कर अपनी हिक़मत व इल्म व माअफ़्त की बड़ी नेक-नामी ले गया और बिद्वतीयों और यहूद और बुत-परस्तों पर ता दर्जा कमाल बहस में फ़त्हयाब निकला और ख़ुदा तआला के इज्माअ-आम्मा को और फ़वाइद में भी अपना एहसानमंद किया और इस में भी बिल-ख़सूस कि मुकाशफ़ा युहन्ना की तफ़सीर तैयार की और इसी निस्फ़ सदी के फ़ासिला पर सारडीस शहर के उस्कुफ़ मलेतो नाम ने मुकाशफ़ा के बयान में एक रिसाला तस्नीफ़ किया। गौर करो कि अभी तीन साफ़ गवाहियाँ इस अम्म पर हम दे चुके हैं कि एशया-ए-कोचक में यानी जिस मुल्क में रसूल

मुबारक बुढापे बल्कि मौत तक ताअलीम व तदरीस देता रहा था और अंदर बाहर चलता फिरता रहा था, उसी मुल्क में ये अम्र मशहूर और मशहूद था कि मुकाशफ़ा का मुसन्निफ़ वही युहन्ना है।

साहिबो अब हम ज़रा सा सवाल करें और अज़ राह तफ़्तीश दर्याफ़्त करें, इन मुअल्लिमों और मुसन्निफ़ों से जो दूसरी सदी के अख़ीर में यानी बाद इंतिकाल हज़रत युहन्ना के पहली सदी के अख़ीर में थे कि ख़ुदा की इज्माअ आम्मा की उस ज़माने में क्या राय और फ़त्वा था, इन दो किताबों के हक़ में यानी दरबाब मुकाशफ़ा और इब्रानियों के नाम ख़त के बारे में अहले कलीसिया क्या जानते थे? ये बात याद रहे कि ज़माना मज़कूर के मुसन्निफ़ों का ये दस्तूर है कि जम्हूर कलीसिया के फ़तवे और इन्फ़िसाल का एलानिया तन-ए-तन्हा उलमा की मुख्तलिफ़ राइयों (राय की जमा) के साथ मुक्राबला किया करते हैं और उन मसीही मुअल्लिमों की सिदक़ दिली और लापरवाई और अपने ईमान की मज़बूत बुनियाद और पुश्त-पनाह पर भरोसा और तयक्कुन रखते हैं। इस से साफ़ रोशन है कि हर एक बात की हक़ीक़त-ए-हाल को बरहना और बे-हिजाब करते हैं। और जम्हूर कलीसिया के इन्फ़िसाल मसाइल के बाद कुछ उज़्र इस से नहीं करते कि राय मुतफ़रि़क़ और खिलाफ़ फतवों को जो जुदा-जुदा मुअल्लिमों के मशहूर हो गए, आमने-सामने करें। हर-चंद कि कलीसिया आम्मा ने उन शख्सों के जईफ़ दलाईल और फ़हमीदा की कोताही के सबब और उन की हुज्जतों की नासाज़ी और नाइतिफ़ाकी से उन की तक़रीरों को बे-सबात और मन्ज़ूर ठहराया है।

पस युहन्ना रसूल के इंतिकाल के बाद दूसरी सदी ईस्वी के अख़ीर में चार शख्स बाकी मुअल्लिमों में आलीक़दर और रौनकदार और इल्म ईलाहीयत में ता वुसअत बशरीयत पुख़्ता और कामिल मशहूर थे, यानी योस्तीन शहीद

(Justin Martyr) और लियोनेस एक फ्रांसीसी शहर का उसकफ़, अरेनीयस (Irenaeus) और सिकंदरिया मिस्री का क्रिस्सीस और मुदरिस कलेमन्स और कार्थेज का क्रिस्सीस तर्तलियान (Tertullian) फ़ील-तहक्रीक ये मुअल्लिम खुद निसार और फ़रिशता मिज़ाज (75) बरस ज़माने रसूलियह के बाद और तर्तलियान एक सदी के फ़ासिले पर जिंदा कलीसिया के खादिम और उस की औलादों के मुरब्बी और खुदावन्द मसीह के गल्ले के चौपान थे। अरीनियस तो मशरिकी जमाअतों की पेशवाई करता था, मगर एशाए कोचक में युहन्ना रसूल के मुरीदों और रफ़ीक़ों से दर्स व ताअलीम पाई थी। जिनमें मशहूर और आलीक़द्र पोलीकार्प (Polycarp) उसकफ़ और शहीद था और वह युहन्ना रसूल के खास मुरीदों में से था।

अब मालूम हो कि ये मुक़द्दस और मुबारक जिसका ऐसा करीब ताल्लुक़ रसूलों के उस आखिरी पस मांदे के साथ था और उस का ज़माना रसूल के ज़माने से ऐसा थोड़ा बईद था, मुकाशफ़ा की किताब से अपने दर्स व ताअलीम की नक़ली दलीलों को इसी तरह तलब किया करता था जिस तरह बाकी कुतुब इल्हामी से। और युहन्ना रसूल को इस का मुसन्निफ़ साफ़ बताता है, बल्कि मुकाशफ़ा के जो बाईस अबवाब हैं इनमें से ग्यारह से नक़िलियात निकालता है। चुनान्चे इस आलम फ़ासिद की आइन्दा बहालियत के बयान में फरमाता है :-

□और यही वो क्रियामत है जिसे युहन्ना अपने मुकाशफ़ा में दिखाता है, “मुबारक और मुक़द्दस है वो जो पहली क्रियामत में शरीक़ है।” (मुकाशफ़ा 20:6)

इसी तरह मुक़द्दस अरेनियस अपनी किताब 4 की 25 वीं फ़स्ल में इर्शाद करता है :-

▣बल्कि युहन्ना भी खुदावन्द मसीह का शागिर्द उस की पुर जलाल कहानत और बादशाही की पेश-खबरियों में ये गवाही देता है, “फिर सोने के सात चिरागदान देखे और उन सात चिरागदानों के बीच एक शख्स आदमज़ाद सा देखा।▣ वगैरह (मुकाशफ़ा 1:12,13)

और जितनी मर्तबा वो मुकद्दस मुकाशफ़ा से मन्कूलात निकालता है, उतनी ही मर्तबा उस के मुसन्निफ़ का नाम बतकरीम व ताज़ीम लेता है कि गोया इस अम्र की बाबत उस ज़माने में कोई शुब्हा किसी के दिल में हरगिज़ ना आया था। बावजूद एक वो किताब जिसमें ये नक्लियात मौजूद हैं, उसकफ़ मज़कूर ने बहस की राह से मारक्यून की बिदत व गलत को रद्द करने के लिए तस्नीफ़ की थी और इस हाल में हर साहब दानिश को मालूम है कि इन किताबों के सिवाए जिन्हें दोनों यानी बिदती और मुस्लिमीन हक़ कलाम-ए-खुदा मानते थे, किसी किताब की गवाही इस हुज्जत में मन्ज़ूर ना होगी।

कार्थेज की कलीसिया के क्रिस्सीस तर्तलियान की गवाही से उसी किताब की सेहत और असलीयत और मोअतबरी और उस की मुसन्नफ़ी का हाल साफ़ मालूम व रोशन हो जाता है। वो मुकद्दस कायदा मज़कूर-बाला के बमूजब हर-चंद कि बिदती मारक्यून या मारसीवन (मारसी अन) की राय और हुज्जत मुख्तलिफ़ा का तज़िकरा करता तो भी उस के मुकाबिल कलीसिया का फ़त्वा साफ़ बयान करता और यूं फ़रमाता है :-

▣ऐशयाए कोचक की जमाअतें खुद युहन्ना रसूल की सिखाई हुई और तामीर की हुई हैं और उन्हीं जमाअतों के उसकफ़ की गवाही मुतसलसल और मुतवातिर से किताब

मुकाशफ़ा की मुसन्नफ़ी बड़े भारी सबूत से युहन्ना रसूल पर सादिक़ आती है।□

उसी ज़माने के बाअज़ और मशहूर मुसन्नफ़ हैं जिनके कई मक्बूबात मौजूद हैं। उनमें कलीमनस बड़ा मुफ़ीद और मोअतबर गवाह और साहब खयालात है। चुनान्चे इल्म ईलाहीयत के मदरसों में जो उस वक़्त उम्दा और अफ़ज़ल और रौनकदार था, वो मर्द उस की पेशवाई पर मुह्तमिम (एहतिमाम करने वाला) हो गया था और चूँकि ऐसा भारी ओहदेदार और साहब-ए-इख़ितयार इब्रानियों के नाम खत को पोलुस रसूल की तरफ़ हवाले करता है और मुकाशफ़ा को युहन्ना रसूल की तरफ़ तो यक़ीन क़वी और दलील क़तई इस अम्र पर हासिल हुई कि इज्माअ आममा का इन्फ़िसाल व फ़त्वा बहर-ए-हाल मशरिकी और जुनूबी जमाअतों का फ़त्वा इस मसअले के हक़ में मुद्दत से कायम और बरकरार रहा और ज़रा तफ़हूस (जुस्तजू, तलाश) से मालूम होगा कि कलीमनस के मुकुबात मौजूदा में बहुत से मन्कूलात इब्रानियों के खत से हैं और अक्सर जब उस खत के मज़ामीन से कुछ नक़ली दलील गुजरानता है तो इबारत मन्कूल के साथ मुसन्नफ़ का नाम भी पेश करके कहता है कि, रसूल यूं फ़रमाता है या “रसूल-ए-ख़ूदा□ या “पोलुस रसूल” वगैरह।

इसी तरह मुकाशफ़ा से भी वही मुदरिस और क्रिस्सीस बाअज़ आयतें नक़ल करता है और उस की मुसन्नफ़ी (लिखारी) की बाबत उस की गवाही बाक़ी मोअल्लमीन मज़कूर के साथ मिलती हैं और उस रौनकदार मदरसे की पेशवाई में जो उस का काइम मक़ाम और खलीफ़ था और जिसकी ज़्यादा इस्तिदाद (सलाहियत) बल्कि मजमा उलूम होने की तारीफ़ शहरह-ए-आलम

थी, यानी अरजिन साहब की शहादत उस खत की मोअतबरी और वसाकत और हकीकी मुसन्नफी पर निहायत भारी और मूजिब खातिर जमुई की है। वो मुअल्लिम बाअज शख्सों के इश्तिबाहात और सवालात का जिक्र कर के कि आया इब्रानियों का कहा हुआ खत खुद पोलुस की तस्नीफात में से है या उस के रफीकों में से किसी की तस्नीफ है यानी कलीमनस रोमी या लूका इन्जीली की। और कई इबारतों से साफ़ जाहिर और वाजेह कर के कि कितनी सिदक दिली और सुबूरी से हकीकत हाल की जुस्तजू करता था, बाअद-अजां अपनी तहकीक का हासिल और नतीजा जाहिर करता है और फ़रमाता है कि :-

□में एक खास रिसाले भी इस मुराद से मुहय्या और तैयार करने पर मुस्तइद हूँ कि खत इब्रानियों की मुसन्नफी (लिखारी) सिर्फ पोलुस ही के लिए साबित और मुतअय्यन करूँ।□

और इसी राय के बमूजब जाबजा बाकी तस्नीफात में ख्वाह कलीसिया-ए-मसीही की तामीर और तरक्की के वास्ते, ख्वाह मोअतरिजों की तर्दीद के लिए अकाइद दीनी का बयान व तशरीह करता है। मगर इब्रानियों के खत के मुतफ़रि़क बाबों की शहादतें नक़ल कर के पोलुस रसूल की मुसन्नफी पर ताकीद व तशदीद करता है कि गोया जम्हूर कलीसिया और बड़ी कस्रत बिद्दतीयों और मोअतरिजों की इस अम्र के इकरार व एतराफ़ पर मुतफ़ि़क हैं। और इसी खत की तफ़सीर और तशरीह में अरजिन साहब के वाअज व मुनादी की किताब मुअरि़ख यूसीबीस (Eusebius) साहब के पास मौजूद थी, जिसे साहब मज़कूर मसीही जमाअतों के हुज़ूर मुकररी दिनों में सुनाया करता था। जिस बात से दलील कवी और रासिख ना सिर्फ़ इस अम्र पर है कि वो किताब बाकी कुतुब मुक़द्दसा की बराबर मसीही जमाअतों में पढी जाती थी, बल्कि इस पर भी कि

वो इस कद्र वज़नी और सनदी भी जानी जाती थी कि वाइज़ और मुनाद उस की तहरीर और बेशकीमत मज़ामीन से अवाम व ख़वास के लिए मुफ़ीद नसीहतें निकालते थे। और मसीही कलीसिया के इस फ़तवे के मुत्तफ़िक़ एक और शहादत अरजिन साहब की इस मुराद से ज़िक्र के लायक़ है कि :-

▣दर-हालिका बाअज़ मुसन्निफ़ ख़िलाफ़ राय पर थे तो भी मुतक़द्दिमीन (पहले ज़माने के लोग) यानी जम्हूर कलीसिया-ए-सलफ़ से ये फ़त्वा तवात्तुर से चला आया कि मुसन्निफ़ इस ख़त का पोलुस रसूल ही था।▣

इन अक़ली और नक़ली दलीलों से अस्हाब दानिश व बीनिश को हमारी तक़रीर के मतलब की ज़रा फ़हम और समझ आ जाएगी कि कितना फ़र्क़ और तफ़ावुत है, जम्हूर कलीसिया के फतवों और तन-ए-तन्हा मुसन्निफ़ों के कयासों और रायों में। चुनान्चे जमाअत आम्मा कुतुब समाविया की रकाबत व मुहाफ़िज़त पर मुहतमिम और मुतफ़ूस हो गई थी। अज़आनरो कि अक्सर किताबें तवक्कुले कलीसिया के हाथ ज़िम्मे और हवाले की गई थीं, सिर्फ़ थोड़ी ही थीं जो कुल इज्माअ-आम्मा को नहीं व लेकिन या तो मशरिकी या मगरिबी एतराफ़ों की जमाअतों को सपुर्द हुईं। इन्जील के इतने-इतने अबवाब से सिर्फ़ छः ही थे जो शुरू में तो कम मशहूर और मुतदाविल हुए थे, पर चौथी सदी की कलीसिया ने बड़ी तहक़ीकात के बाद उन की सनदें काफ़ी और वाजिब-उल-तस्लीम ठहरा कर और उन के शाहिद भी मोअतबर और उन का मज़मून भी कुतुब ईलाही की कुल्लियत मज़ामीन के मुत्तफ़िक़ पा कर उस इख़्तियार के बमूजब जिसे ख़ुदावन्द मसीह से लिया था, उस ने उन को यानी पतरस रसूल का दूसरा ख़त वग़ैरह क़ानूनी किताबों की फ़हरिस्त में दाख़िल किया।

हमें इस तवालत बयान के सबब मअयूब (एब वाला) होने का डर है तो भी इस अम्र पर ज़ोर व ताकिद करना फ़र्ज़ और लाज़िम था, क्योंकि इस अम्र की हकीकत-ए-हाल से नावाक़िफ़ होने के सबब हज़ार-हा नाहक शिकायतें और एहतिमालात पैदा हुए। और अफ़सोस है कि बाअज़ मौलवी इस से काबू पाकर इन्जील शरीफ़ की किताबों का हाल बिल्कुल मुशव्विस (परेशान कर देने वाला) और मुशतबा और बे-मीज़ान व मुहक और मख़्लूत जानते हैं कि गोया कलीसिया का जहाज़ इब्तिदा से पतवार और नाख़ुदा और कुतबनुमा से बे-बहरा हो कर मव्वाज दरिया पर बड़ी लाचारी से झूटी ताअलीम की हवा जिधर उसे फेरती है, उधर फिर जाता है। चुनान्चे सब कुछ उन की दानिस्त में खाली ज़ोअम और मिज़न्ना (गुमान, ख़याल) और तोहहूम (वहम, शक) है, ज़रा भी यकीन और खातिर जमुई नहीं। हाँ बल्कि वो मुतकब्बिर ख़ुदावन्द मुबारक को जो सब बातों में कलीसिया का सर है, मुफ़्त मस्लिहत देने पर मुस्तइद हैं कि यूं या यूं करना उस की शान के लायक़-तर और मुनासिब-तर था और कि करामत की राह से ऐसा बन्दोबस्त करना चाहिए था, जिससे कुतुब रसूलियह का कोई तक़लीद करने वाला ना होने पाता।

सच तो ये है कि कुतुब समाविया की तक़लीद हो सकती है और ज़र कल्ब (दिल) ज़र-ए-ख़ालिस की सूरत थोड़ी बहुत पकड़ सकता है। पर तो भी ख़ुदा तआला ऐसा लाचार और लाइलाज और बे-वसीला नहीं कि इन्सान के जुल्म व फ़रेब से आजिज़ हो कर अपनी हिक्मत बेपायाँ और अज़ली सलामत बख़्श तदबीर को अबस और साक़ित होने दे। चुनान्चे उस तआला ने अपनी पेश-बीनी और रिआयत से एक ज़िंदा गवाह यानी इज्माअ-आम्मा ज़ाहिरन ताअयिनात किया जिसके वजूद कुल्लिया में रूहुल-कुद्दुस की हुज़ूरी अख़ीर अय्याम तक कायम व दाइम रहे और उस का नूर बुझने ना पाए। हालाँकि

बाअज़ मौके और जमाअतों में उस की आवाज़ की खामोशी और उस के नूर की धुंदलाहट वाक़ेअ हुई भी है और आइन्दा हो भी सकती है।

ऊपर बयान हो चुका है कि जिस किसी कलीसिया के पास कोई खत रसूलियह पहुंचाया गया था, उस ने जमाअत और उस हलके और इलाके के बाकी सब जमाअत वालों ने उस खत की मुहाफ़िज़त और रक्बाबत को अपना फ़र्ज़ और हक़ जाना, ना अपने खास फ़ायदे और तरक्की के लिए, बल्कि इज्माअ-आम्मा के लिए। बमूजब उस क़ौल मसीह के जो मुकाशफ़ा की किताब के बाब 2 और 3 में मुकर्रर-सइ-करर सुनाई देता है “जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है।” ये भी ऊपर बयान हो चुका है कि खुसूसुन वो खुतूत उन जमाअतों के उसक़फ़ों और किस्सीसों और मुअल्लिमों की अमानत और ज़मानत में महफूज़ रहे, जिस सबब से उसक़फ़ों के अस्मा-ए-शरीफ़ की फ़हरिस्त मुसलसल शुरू ही से बाअज़ आलीक़द्र जमाअतों में बड़ी खबरदारी और दिक्कत से सही व सलामत रखी जाती थी। और ये भी साफ़ यकीन है उन रिवायतों की गवाही से जो ज़मान रूसूल के मुकारिन ज़माने से आज तक मशहूर होती चली आई हैं और हर चाहने वाले साहब-ए-इल्म को दस्तयाब हो सकती हैं कि दूर-दूर जमाअतों और उन मुशर्रफ़ जमाअतों के दर्मियान बहुत आमद व रफ़्त हुआ करती थी, उन खुतूत रसूलियह की तादीब व ताअलीम से मामूर होने के लिए, क्योंकि कलीसिया के तमाम बदन की यगानगत और खुश इत्तिफ़ाकी के सबब और अज़ आनरू कि वो खुदावन्द मसीह में खुश मुरतिब और महफूज़ थी। वो खज़ाना जो जुज़ को मिला, सो कुल इज्माअ का भी खज़ाना था और कलाम इल्हाम का जो कुछ हिस्सा किसी खास जमाअत के हवाले में मखज़ून हो रहा। उस की निगहदाशत और हिरासत इसी तरह कल कलीसिया के ज़िम्में थी। मसलन हेगीसीपस नाम अक्वल

मुअरिख कलीसिया का इसी मुराद से बरू बहर की बहुत दराज़ मुसाफ़िरी और मेहनत कुशी में कई बरस तक मशगूल रहा कि हर जमाअत की दस्तावेज़ों ख्वाह नक्लों, ख्वाह अस्ली सनदों को बनज़र खुद देखकर खातिर जमुई और तसल्ली पाए।

अरेनियस साहब इस तरह के दलाईल बहुत क़दरो वज़न के जान कर कई भारी जमाअतों के उसक़फ़ों की फ़हरिस्त बकमाल तर्तीब और सिलसिला बन्दी से हमें तफ़वीज़ फ़रमाते हैं और कलाम हक़ीक़ी की उस निगहदाशत और मुहाफ़िज़त का जो उन के तवस्सुत से कुल कलीसिया का ओहदा और फ़र्ज़ है, पूरा बयान करते हैं और वसूक (यक़ीन) कुतुब की उस किफ़ालत पर बहुत ताकीद करते हैं। चुनान्चे ये सब बातें उमूर वाक़ई हैं, ख़्याली नहीं। मसलन उस की तीसरी किताब की तीसरी फ़स्ल में मर्कूम है :-

इसलिए वो कलाम जिसे रसूल ने (अपने खलीफ़ों को) सपुर्द किया, तमाम कलीसिया में मौजूद और हाज़िर रहता है। जो शख्स हक़ीक़त-ए-हाल की जुस्तजू की तरफ़ माइल है, उस पर मुलाहिज़ा करे। चूँकि हम अपने ही हम-अस्रों तक तशरीहन व सराहतन नामों का हिसाब दे सकते हैं, जिन्हें रसूलों ने मुतअद्दिद जमाअतों में अपने क़ाइम मक़ाम मुकर्रर किए और उन के नाम भी जो उन के खलीफ़ हो गए। पर जब कि इस हमारे सहीफ़ा में सब कलीसियाओं के उसक़फ़ों के सलासिल (सिलसिला की जमा, जंजीरीं) अस्मा का गिनना और हवाले क़लम करना मूजिब ततवील (लंबा करना) होगा। लिहाज़ा एक जमाअत को पसंद करता हूँ जिसकी शफ़ और रौनक अफ़ज़ल और सबसे क़दीम है और दो रसूलों यानी

पतरस और पोलुस मुबारक ने उस की बिना भी डाली और उसे रब्त व नज़्म किया। उन्हीं रसूलों ने जो-जो ख़बरें और ईमान के अक्राइद हमें सपुर्द किए थे, सो कुल आलम में मुन्तशिर हो गए, बज़रीया तसलसुल इसाकिफ़ जो इस ज़माना तक होते चले आए।

उन रूमी उसक़फ़ों में चौथा कलीमन्स मज़कूर को बताता है जो अक्वल सदी के अखीर से पहले इंतिक़ाल कर गया था और उस के ख़त मशहूर और मुतदाविल का तज़िक़रा करता है कि किस तरह रोमी जमाअत ने उस उसक़फ़ के ज़रीये से जमाअत कुरिंथिस के पास शफ़क़त नामा बिरादराना पहुंचाया था। जिसमें वो उन्हें उन के ज़िम्में सपुर्द की हुई ताअलीमात याद दिलाता है और उन्हें अदाए शुक्र और हम्द की तरफ़ तर्गीब देता है और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि ताकीद से उन्हें जताता और समझाता है कि तुम ज़रूर दिलो-जान से मुतवज्जा रहो, पोलुस रसूल के उस ख़त की तरफ़ जो तुम्हारे पास भेजा गया यानी अहले कुरिंथिस के पास और अब तक तुम्हारे पास मौजूद है। फिर वही मुक़द्दस पालीकार्प (Polycarp) नाम सिमर्ना के उसक़फ़ की शहादत पेश करता है जिसने बहुत अशख़ास की जो ख़ुदावन्द मसीह के हम-अस्र और बचशम ख़ुद उस के अफ़आल के नाज़रीन और हाज़िरीन और बगोश ख़ुद उस के अक्वाल के सामईन (सुनने वाले) थे, रिफ़ाक़त की थी और उस के हक़ में ये फ़रमाता है कि :-

मैंने आप भी छोटी उम्र में उसे देखा और गवाह हूँ कि उस ने वही ख़बरें सिखाई जो रसूलों से सीखीं और जिनका शाहिद व मुअल्लिम इज्माअ-आम्मा है और जिनके बग़ैर कोई हक़ीक़त नहीं है और इन्हीं बातों के एशयाए कोचक

की सारी जमाअतें और पालीकार्प (Polycarp) उसक्रफ़ के सब खलीफ़ शाहिद हैं।□

फिर ये भी सलाह देता है और सवाल करता है, मारसियोन और बाक्री बिद्वतीयों से जिनकी ग़लत तावीलों और तल्बीस (मक्कारी, लिबास पहनाना, फ़रेब) हक़ को रद्द व रफ़ाअ करने के लिए अपनी उन किताबों को तस्नीफ़ किया था कि :-

□आया ये बात फ़र्ज़ व अजब ना थी कि जिस किसी अम्म में तुम्हारे और मुस्लिमीन के दर्मियान बहस व हुज्जत पैदा होती थी, तुम्ह उन क़दीमी जमाअतों की तरफ़ रुजू ला कर जो रसूलों की मुलाक़ात और रिफ़ाक़त और वाअज़ व मुनादी से मुशर्रफ़ थीं, उन्हीं से जो कुछ हर अम्म में वाज़ेह और रोशन और मूजिब तयक्कून व तसल्ली है, सीख लिया करते। हाँ बल्कि अगर शायद रसूल कुतुब इल्हामी हमारे हवाले किए बग़ैर छोड़ गए होते, तब भी क्या ना चाहिए था कि उस नज़्म व तर्तीब व क़ाएदे की पैरवी व इताअत करते जिसे रसूलों ने उन्हें सौंपा जिन्हें जमाअतों की निगहदाश्त सौंपी गई थी।□

देखो साहिबो किस तरह हम यहां किसी एहतिमाली और मुबहम (यानी छिपे हुए) ख़बरों का ज़िक्र नहीं करते और ना हम-क़दम मारते हैं दलदलाती (कीचड़) और काँपती हुई ज़मीन पर जहां कुछ ठिकाना और जाये करार और साबित क़दमी नहीं। पर हम किताबों की मुहाफ़िज़त और बरहक़ व सही अक़ाइद दीनी की निगहदाश्त की बाबत ऐसे इन्तिज़ाम और बन्दोबस्त का बयान करते हैं, जिसे रसूलों ने उस हल व अक्द के वाअदे मज़कूर पर और

रूहुल-कुद्दुस के नुजूल पर और अपने खुदावन्द की दाइमी हुजूरी पर भरोसा और आसरा कर के मुकर्रर फ़रमाया था। पस अरेनियस साहब की इस गवाही में दो बातें खास गौर व मुलाहिज़ा के लायक हैं :-

पहली बात ये कि उसकफ़ मज़कूर दीन मसीही की सबसे उम्दा और अशरफ़ शहादत पाक मक़ूबात की नक़ली शहादत को बताता है।

दूसरी बात ये कि बाद नक़ली शहादत यानी मक़ूबात की शहादत के जमाआत रसूलियह (रसूलों की जमाअत) की वो शहादत जो जिंदा ज़बान और तमाम इतिफ़ाक़ से गुज़रानी गई, बड़ी मुराआत और इल्तिफ़ात की मुस्तहिक़ बताता है।

चुनान्चे इस किस्म की शहादत एक जमाअत की ज़बानी तक़रीर में पाबंद और मुक़य्यद नहीं, मगर उन सब जमाअतों की गवाहियाँ उस में शुमार और शामिल की गईं जो रसूलों की हुजूरी और तालीमों से मुशरफ़ हुईं। बिलाशुब्हा एक निहायत मज़बूत और पाएदार बुनियाद एतिक़ादात की उस वक़्त-ए-ज़रूरत थी, जब मारसियोन और वालेतीनोस और किस्म-किस्म के बिद्वती अक्काइद की तल्बीस (मक्कारी) और तख़रीब करने के लिए कुतुब मुक़द्दसा को घटाना बढ़ाना चाहते थे। चुनान्चे इस अम्र में मारसियोन की ग़लती और ज़लालत पर अरेनियस साहब साफ़ व सरीह शाहिद हैं और इस वजह से उसे मुल्जिम ठहराते हैं कि मारसियोन और उनका फ़िर्का कलाम-ए-ख़ुदा के टुकड़े-टुकड़े और काटने की, तरफ़ मुतवज्जा होते हैं। चुनान्चे बाअज़ उन में से उसे बिल्कुल ग़ैर-मन्ज़ूर और मतरूक करते हैं। जिज़ाज़ आंकि (सिवाए इस के) लूका की इन्जील और पोलुस रसूल के ख़ुतूत की तसगीर (छोटा करना) और तक़ती (टुकड़े-टुकड़े) करना कर के सिर्फ़ उन किताबों को बरहक़ मानते हैं जो आप ही ने बोला और मक़तूअ की हैं। पर हम जो हैं उन्हीं

चीजों से (यानी उन मक्तूबों के ज़रीये से) जो हमारे पास महरूस (महफूज, ज़ेर निगरानी) और मखज़ून (खज़ाने में रखा गया) हैं, उन्हें काबिल-ए-तर्दीद और तकज़ीब ठहराएँगे। पर बाकी सब फ़िर्के वाले इल्म दरोग के नाम ही से फूलते हुए कुतुब मुक़द्दसा को ज़ाहिरन तो मानते हैं पर तावीलों और फ़ासिद तफ़्सीलों से उनका मज़्मून उल्टा कर देते हैं। इन से और इन की मानिंद सैंकड़ों और साफ़ नक्लियात कातेअ (काटने वाला) से वाज़ेह है कि जब कलीसिया का खज़ाना बेश कद्र बहुत चोरों और डकैतों के फ़रेबी मन्सूबों से सख्त खतरे में पड़ा तो उस के मुतअय्यन निगहबान गाफ़िल ना रहे, बल्कि बड़ी चौकसी और एहतियात से चौकी पहरे पर कायम व दाइम रहे और किताबों की मुहाफ़िज़त अपनी जान की रखवाली से अहम तरीन जानते थे और जुज़-जुज़ के काटने वालों और बिगाड़ने वालों को बर सबील वफ़ादारी नज़रबंद किया करते थे और खुल्लम खुल्ला कलाम खुदा की उन्हें मन्कूलात से उन्हीं दीनी अक्कीदों का सबूत किया करते थे, जवाब हमारी मजलिसों और जमाअतों में मुरव्वज हैं और इस अम्र की शुक्रगुजारी वाजिब है कि जिस वक़्त बिद्दतीयों के मुतअद्दिद फ़िर्के आपस में मुहारिबा (लड़ाई, जंग) और मुआरिज़ा और ब-हम्द गिर मुकातिला (आपस में खूँरेज़ी करना) भी करते थे, तब कलीसिया-आम्मा की मज़बूती और बरकरारी बढ़ती चली जाती थी और हर एक उन फ़िर्कों में जिस-जिस जुज़ हकीकत का मकर है, सो इस इकरार के ज़रीये से इज्माअ-आम्मा की शहादत को तस्दीक करता है और जिस-जिस जुज़ को एक फ़िर्का रद्द या तर्क करता है, दूसरा फ़िर्का मज़बूती से अखज़ करता है और सादिक मानता है। तो जिस हकीकत खुदा पर इज्माअ-आम्मा कुल्लियतन दाल और शाहिद हैं उसी पर बिद्दती जुज़अन-जुज़अन गवाही देते हैं। और उन सब उमूर का हासिल रब तआला का जलाल कलीसिया की तरक्की निकला। चुनान्चे अरेनियस साहब उसी किताब की बारहवीं फ़स्ल में फरमाता है :-

हमारी इन्जील की गवाही की इतनी तौसीक और कवी तस्दीक है कि बिदती भी ख्वाह-मख्वाह शहादत देते हैं। अज़ आनरो कि वो हमारी जाये ख़ुरूज से चल निकले और हमारी मुस्नद और पुशती पर तकिया लगा कर हर एक हमारी किताबों से अपनी-अपनी ताअलीम को सही और मुस्तनद दिखाना चाहता है। चुनान्चे अब्यूवनी (अबूनी) जो इन्जील मती को छोड़कर सब इन्जीलों के मुन्किर हैं, किसी को नहीं मानते हैं। पर उसी अपनी खास इन्जील की नक़लियात से काबिले तक़ज़ीब व तर्दीद हैं और मॉरिसियोनी भी जो इतने जुरत रसीदा हैं कि ख़ाली लूका की इन्जील को लायक समझते हैं और उस से भी सिर्फ़ बाअज़ जज़्ओं को चुन कर बाक़ी मज़्मून को रद्दी बताते हैं। पर तो भी उन जुज़्ईयात से जो बाक़ी छोड़ी गईं, सरीहन काफ़िर ठहरते हैं। इसी तरह वालेन्टनोस के मुरीद और पैरों ख़ाली युहन्ना रसूल से अपने एतिक़ादात के दलाईल मांगते हैं। हर-चंद कि उन की खास इन्जीली तराजू पर तोलकर उन के अक़ाइद और हक़ायक़, बातिल और वाहीयात निकलते हैं।

और वही मुसन्निफ़ इसी तरह सच्चे राशिदीन और मुस्लिमीन के अक़ाइद को इज्मालन बयान करता है :-

वो कलीसिया जिसके इल्म व माअरफ़त का तुख़्म कुल आलम में बोया गया है, रसूलों और ताबईन रसूल से उस ईमान को अपने जिम्में और सुपर्दगी में लेती चली आई

जो एक ही खुदा-ए-क्रादिर-ए-मुतलक पर है और एक ही खुदावन्द यसूअ मसीह इब्ने खुदा पर। जो हमारी नजात व सलामत के लिए मुजस्सम हो गया और एक ही रूहुल-कुद्दुस पर जिस ने नबियों के जरीये से खुदा तआला के इज्माअ-आम्मा की आइन्दा रिआयत व इन्तिज़ाम व तरक़्की व तामीर का इश्तिहार और इज़हार कराया और हमारे लिए खुदावन्द मसीह की आमद व तव्वुलुद जिस्मियाह और उस के दर्द व अलम पज़ीर होने और उस के मुर्दों में से बर्खास्त होने और सूरत व हक़ीक़त जिस्मियाह में आस्मान पर सऊद करने और उस के आइन्दा ज़हूर रौनकदार और जलाली और नूरानी का, ताकि वो सब औक़ात के सिरों को आप ही में मुन्तहा करे और आदमजाद के हर बशर को अज़ सर-ए-नौ ज़िंदा करे और ग़ैर मुरई (यानी जिसका वजूद हो लेकिन दिखाई ना दे) बाप तआला की मर्ज़ी के बमूजब खुदावन्द यसूअ मसीह के रूबरू जो हमारा खुदावन्द और खुदा और नजात बख़्श बादशाह है, हर एक घुटना टेके। क्या आस्मानी क्या ख़ाकी मौजूदात और हर ज़बान उस का इक़रार करे। चुनान्चे वो सभों पर रास्ती से अदालत और हुक्म करेगा और मुरतद फ़रिश्तों को और जितने बद-अफ़आल और अहले शरारत व कुफ़्र-मिनन्नास हैं, उन को आतिश-ए-दोज़ख़ में डालेगा। इस के बरअक्स जो शख़्स उस के अहकाम वाजिब-उल-अमल जानते हैं और उस के रिश्ते मुहब्बत में कायम व दायम रहते हैं, ख़्वाह अपनी उम्र

की इब्तिदा ही से, ख्वाह बाद गुमराहियों के दिलो-जान से तौबा-कार हों, उन्हें बक्का और लुत्फ और कुर्बत (नज़दिकी) ईलाही का इनाम अता फ़रमाया जाएगा।

इस ईमान को कुल कलीसिया तमाम आलम में मुन्तशिर और मज़रू कर के इस कोशिश व वफ़ादारी और खुश इत्तिफ़ाकी से महफूज़ करती है कि गोया एक ही जान और एक ही क़ालिब हो कर एक ही घर में रहती और एक ही ज़बान से गोया हो कर उस की ताअलीम देती और क़ौम-क़ौम के मुनादों को हवाले करती है। लुगात और इबारात तो मुख्तलिफ़ हैं, पर हवाले किए हुए मआनी और मज़ामीन मुत्तफ़िक़ हैं और कुछ फ़र्क़ नहीं उन जमाअतों के अक्राइद में जो गलती और हबेरिया के मुल्कों में और अतराफ़ मशरिक़ और लीबिया और अतराफ़ वस्त में, मगर जैसा तमाम आलम एक आफ़ताब से मुनव्वर होता है इसी तरह सब तआला के एक बरहक़ कलाम के पैग़ाम और एलची गिरी से हर शख्स जो शावक और तालिब हकीक़त है, रोशन ज़मीर और दाना व बीना हो जाता है। इसी मस्लिहत आमैज शहादत से पूरी मुताबिक़त रखता था।

तर्तलियान अरेनियस का हम-अस्र जो युहन्ना रसूल के पीछे तख़मीनन एक सदी के तफ़ावुत पर कार्थेज की जमाअत की पेशवाई और क्रिस्सीस तक सफ़राज हो गया। उस मुअल्लिम के भारी कलिमात सुनो। अगर ये बात क़ाबिल इकरार है कि जो साबिक़-तर है, सो सादिक़-तर है और वही साबिक़-तर है, जो इब्तिदा से है और इब्तिदा से वही बात है जो रसूलों से है। तो इस बात का भी मकर और क़ाइल होना चाहिए कि जो कुछ जमाआत रसूलियह में हरीम और नुक्स व खलल से मुबर्रा व महफूज़ हो रहा, वही बेशक़ रसूली सनद और वाजिब-उल-तस्लीम है। देखो कैसा दूध पोलुस रसूल ने कुरिंथिस

की जमाअत को पिलाया और सख्त तंबीया और सरज़निश से किस क़ानून और काएदे की तरफ़ अहले गलतिया को रूजू कराया। उस पर भी लिहाज़ करो जो फ़िलप्पी और थिसलिनीकी और इफ़िसस की जमाअतों में पढा जाता है और दर्याफ़्त करो कि रोमीयों को जो हमारे करीब तरीन वतन है, कौन सी खुशख़बरी हवाले की गई, जिस पर वहां के मुरीदों ने गोया अपनी शहादत के खून से मुहर छपवाई और उस की तस्दीक की।

इलावा बरां युहन्ना की तामीर की हुई जमाअतों की गवाही मशहूर है, क्योंकि अगरचे मारसियोन उस रसूल के मुकाशफ़ात सनदी और मोअतबर ना जाने तो भी उन जमाअतों के उसक़फ़ों का सिलसिला मुतवातिर युहन्ना से शुरू हो कर चला आया है, जैसा चश्मे से नहरों का दुरूद (रहमत, तहसीन, आफरीन) है। और इसी तरह बाक़ी सब इन्जीलों की वसाक़त व मोअतबरी और इस्तिनाद पुख़्ता और साबित होती है। पस मेरी तक़रीर ये है कि ना सिर्फ़ जमाअत रसूलियह बल्कि जितनी-जितनी जमाअतें उन की पाक रिफ़ाक़त में वाबस्ता और पैवस्ता हो गई, सबकी सब वही लूका की इन्जील जिसे हम महफूज़ रखते हैं जिस दिन से वो अक्वलन मुरव्वज होने लगी, सही और हक़ीक़ी जानते हैं और उन्हीं जमाअतों की शहादत और क़िबाला से बाक़ी अनाजील जिन्हें हम ब-तवात्तुर मुसलसल उनके क़ानून और रविश रिवाज मामूली के बमूजब कुबूल कर रहे हैं, मुस्तनद और सक़ह और अपनी अस्ल सेहत में महफूज़ ठहरती हैं, इशारा है मती और युहन्ना की इन्जीलों से और मरकुस से। हर-चंद कि वो इन्जील जो मरकुस की कहलाती है तहक़ीक़ पतरस की तस्नीफ़ बताई जाये, जिस रसूल का मुतर्जिम मरकुस इन्जीली था और इसी तरह वो इन्जील जो लूका इन्जीली ने तालीफ़ की पोलुस की तरफ़ मन्सूब करते हैं। अज़ आनरो कि वाजबन् शेख़ इस किताब का मुसन्निफ़ मालूम होता

है जिसे मुरीदों ने मुरव्वज किया है, तो मारसियोन से ये सवाल करना हक है कि तू क्या चाहता और तेरा क्या मतलब है जो तू बाकी इन्जीलों को तर्क कर के सिर्फ इन्जील लूका को जोर से पकड़ता है। गोया कि इज्माअ-आम्मा ने बाकी किताबों को शुरू ही से मन्ज़ूर व महफूज ना किया। उन्हीं बुरहानों से इन्जीलों की तोसीक के सबूत को जमाअत मसीही बिद्वतीयों और मोअतरिजों के मुकाबिल साफ़ दिखाते हैं। चुनान्चे करनीया औकात में वो जो सादिक और हकीकी और खड़ा है, काजिब और कल्बी से मुकद्दम है और जमाअतों की शहादत और जिम्मेदारी ताअलीमात रसूलियह का मुस्नद और सहारा है। अज आनरू कि ये बात बदाहत अक़ल के मुवाफ़िक़ है कि मुदआत हकीकी कल्बी पर सबक़त ले जाएं और हकीक़त का मख़रज कौन, मगर वो जिन्हों ने अवाइल में उसे हवाले किया।

पस अगर हक़ व बातिल और हकीकी और कल्बी की तमीज़ नज़रियात और अक़ल्यात पर मौकूफ़ होती, ना एतिकादात और अमलीयात पर। तो यकीनी उम्मीद हो सकती कि मौलवी साहिबान इन क़दीमी मोअतबर मुअल्लिमों और किस्सीसों की तस्नीफ़ात को तय करके और उन हज़ार-हा वज़नी कलाम-ए-ख़ुदा की आयतों पर लिहाज़ कर के जो उन के रिसालों में चार इन्जीलों से मन्कूल हो गईं, अपनी वाही बहसों और बातिल हुज्जतों से परहेज़ कर के उस मस्लूब ख़ुदावन्द मसीह के क़दमों पर जो आलम का खालिक़ और बादशाह और मुनज्जी-उल-खातबीन और मुंसिफ़ मुईन हैं, कुर्बान हो जाते और इस विलादत सानी से बहरावर होने का सवाल करते, जिसके बदन कोई बशर ख़ुदा को हरगिज़ ना देखेगा। बहर-हाल इस अम्र के मुक़र होते कि बमुश्किल ज़मान-सलफ़ की एक भी किताब नज़र आती है जो इतनी

काफ़ी व वाफ़ी सनदों और रासिख दलीलों से सही और मोअतबर साबित की गई है।

इतना यक़ीन और मन्सूस है कि ख़्वाह हम मशरिकी जमाअतों, ख़्वाह मगरिबी, ख़्वाह जुनूबी से सवाल करें कि मती और युहन्ना और मरकुस और लूका कौन और कैसे और मसीही कलीसिया के बीच किस क़द्र और रुत्बे के हिसाब किए जाते हैं तो मशरिकी कलीसिया से योस्तीन शहीद और पपयास और जुनूबी से कलेमन्स और तर्तलियाँ और मगरिबी से हीपालेतस और अरेनियस मुत्फ़िक़ गवाही देते हैं। मसलन निस्फ़ सदी बाद अज़ इन्तकाल युहन्ना योस्तीन ने चार इन्जीलों के बयान में कहा कि :-

□यही वो चार रिवायतें रसूलों की हैं जिन्हें इबादत के वक़्त मसीही लोग अपनी मज्लिसों में ज़ाहिरन पढा करते हैं। जिस तरह कुतुब अम्बिया और औलिया मुक़द्दस की तिलावत करते हैं।□

और जिस किसी साहब की ख़्वाहिश हो तो बैक नज़र उस उम्दा मुअल्लिम की उन तस्नीफ़ात पर जो अब मौजूद हैं, लिहाज़ करे। अनक़रीब है कि वो हर एक इन्जील के हर एक बाब में से दो एक आयतें नक़ल करता और हर एक आयत का ठीक वही मज़मून बताता और सिखाता है जो अब ज़मान सलफ़ के पसमान्दा नुस्खों में, मसलन कोह-ए-सिना के कहलाए हुए नुस्खे में पाया जाता है। और जब कि ये सब आयतें यूनानी ज़बान की ख़ुशवज़ा और फ़साहत आमैज़ इबारतों में मन्कूल हैं, सिर्फ़ तीन बाक़ी इन्जीलों से नहीं बल्कि मती की इन्जील से भी। तो साबित और यक़ीन है कि बिलफ़र्ज़ मती की इन्जील का अस्ल मतन इब्रानी था पर मअन यूनानी भी, उस रसूल के जीते जागते और उस की साख़त व सनअत से मुहय्या और मौजूद था।

चुनान्चे ये बात ब-ज़न गालिब हकीकत वाकई मालूम देती है, बल्कि उस का वाक़ेअ ना होना बईद अज़ अक्ल और उस ज़माने के सब आसारों और रिवायतों की ज़िद और मुनाफ़ी (खिलाफ) है और बर-तक्दीर कि ये अम्र वाक़ेअ भी ना हुआ होता तो भी कलीसिया-ए-आम्मा ने जिसकी अमानत और इख़्तियार में अनाजील की मुहीमनी और मुहाफ़िज़त सपुर्द की गई थी, मुहर व साक़त व कबूलीयत उस के मज़्मून पर छपवाई थी। चुनान्चे ये बात यानी एक तस्नीफ़ का दोनों ज़बानों में मुहय्या होना यानी यूनानी और इब्रानी ज़बानों में मुशिकल या मुस्तहील (बदला हुआ, मुहाल) ना था और उस ज़माने में दोनों ज़बानों के बोलने वाले, ना थोड़े थे बल्कि करोड़ों अवाम और ख़वास यानी अक्सर यहूद आलिम व फ़ाज़िल व शरीफ़ भी और महाजन व साहूकार व सर्राफ़ वगैरह भी, दोनों लुगतों (ज़बानों) को बराबर सहूलत से बोलते थे और कहीं कोई रिवायत ज़िद नहीं पाई जाती। इस कलीसिया की रिवायत और एतबार और ज़अम-आम्मा से कि मती रसूल की कही हुई इन्जील खुद रसूल ही के सामने दोनों ज़बानों में मोअल्लिफ़ और हवाले कलम हो गई।

इस के बर-अक्स क्या ही बेहूदा और ताअस्सुब आमेज़ बात है जो कोई कहे कि हर-चंद वो रसूल मुख्तलिफ़ लुगत बोलने के इनाम से बतोफीक रूहुल-कुद्दुस मुस्तफ़ाद (फ़ायदा हासिल किया हुआ) हो गया तो भी उस ने अपनी ख़ास इन्जील उन दो उम्दा और मशहूर ज़बानों में कलम-बंद करने की वुसअत और इस्तिदाद (सलाहियत) नहीं पाई और ये अम्र काबिल-ए-गौर व लिहाज़ है कि ना सिर्फ़ दूसरी सदी के वस्त के मुसन्निफ़ों की कुतुब मौजूदा में बल्कि उस के शुरू ही में, मसलन मुक़द्दस शहीद अगनेशीस के ज़माने में हाँ पहली ही सदी के अखीर में मसलन कलेमन्स उसक़फ़ रोम के ख़ुतूत में मती रसूल की इन्जील यूनानी से कई मन्कूलात हैं। फिर यूसेबियस मुअर्रिख़ की रिवायतों

से यकीन है कि मत्ती रसूल के सैर व सफ़र और वाअज़ व मुनादी, कौम और लुगत इब्रानी की हदूद और अहाते के अन्दर मुक़य्यद ना थी। चुनान्चे वो रावी माअरूफ़ अपनी तवारीख़ की किताब 3 की फ़स्ल 24 में यूं फ़रमाता है :-

□मत्ती पहले ही पहल इब्रानियों को वाअज़ व मुनादी कर के जब ग़ैर लोगों के पास कूच करने वाला था, अपनी ख़ास इन्जील को वतनी ज़बान में हवाला क़लम कर के तर्क कर गया था। ताकि उस की हुजूरी फ़ी-नफ़्सही का नुक़्स व क़सूर उस दस्तावेज़ के ज़रीये से पूरा हो जाये।□

पस जब इस मौज़अ से साफ़ मालूम है कि रसूल मुबारक ग़ैर क़ौमों के बीच इन्जील की एलची-गिरी और मुनादी से मुतज़म्मिन किया गया तो ख़याल वाजिब और करीन-ए-क़ियास है कि वहां भी अपने नव-मुरीदों के लिए उस मुनादी का मज़्मून तक़रीरी यूनानी ज़बान में तहरीर कराया। देखो अस्थाब अक़ल व अदल के लिए और उन के लिए जो इस हकीक़त के काइल हैं कि अस्ल मज़्मून हर्फ़ और ज़बान से तर्ज़ीह रखता है, क्या ही उम्दा और पुख़्ता इत्मीनान और तयक्कून मत्ती रसूल की अस्ल सेहत के हक़ में इस से हासिल हो सकता है कि अट्त्वल सदी के मुअल्लमीन मसीही की तस्नीफ़ात यूनानी में जितने मन्क़ूलात इस इन्जील से तलब किए जाते हैं, तो वो चौथी और पांचवीं सदी के नुस्खों से जो अब मौजूद हैं, पूरी बराबरी और इत्तिफ़ाक़ रखते हैं। और सिर्फ़ यही नहीं पर दूसरी सदी में जो वो इन्जील मए बाकी अनाजील के सुर्यानी और लातीनी ज़बानों में तर्जुमा की गई, उन तर्जुमों से जितने आसार अब भी बक़स्रत मौजूद हैं, यानी उन में से जितनी आयात रसाइल तर्तलियान और अरेनियस और हीलारे और रसाइल मुसन्निफ़ीन सुर्यानी में साफ़ मन्क़ूल हैं, उन के मज़्मून में कुछ नुक़्स और खलल और इख़्तिलाफ़ नहीं आता। ख़वाह

उन आयतों का मतलब बईद और बैरून अज़ मुदआत बहस हो। ख्वाह उन मुदआत से हो जो बहस व मुनाज़रे में मुफ़ीद और मतलूब हों। मंशा और ग़ायत कलाम दोनों हालों में जैसा अब नज़र आता है, वैसा ही तब भी था।

बाब चहार दहम

दरबयान बाअज़ अक्साम व अन्वाअ इल्हाम रब्बानी
 कि बर मुसन्नफ़ान कुतुब मुक़द्दसा यानी रुसल व
 अन्बया बमक़तज़ाए मज़ामीन व मक़ासिद अहकाम
 वाक़वाल ईलाही नाज़िल शदनद

در بیان بعض اقسام و انواع الهام ربانی کہ بر مصنفان کتب مقدسہ یعنی رُسل و انبیاء بمقتضائے

مضامین و مقاصد احکام و اقوال الہی نازل شدن

हज़ार शुक्र-ए-खुदा तआला की हिक्मत और रिआयत गैर मुतनाही का जिसने अपनी मूतआली रज़ा व क़ज़ा के बमूजब इज्माअ-मोमिनीन के लिए एक लुत्फ़ आमेज़ और तसल्ली बख़्श बन्दोबस्त मुक़र्रर किया। जिससे उस के औसाफ़ जलाली व जमाली के तज़किरे और उस की तदबीरों और मशरतों और वाअदा वर्ईद की सही और पक्की ख़बरें और माअफ़त व फ़हमीदाता अखीर-उल-अय्याम उस इज्माअ मुक़द्दस के तसरूफ़ हिफ़ाज़त में रहीं। और इस बन्दोबस्त में दो भारी ताअयिनात और मज़ाहिर हिक्मत हैं। एक उन में मशहूर यानी ये कि नबियों और रसूलों का पैग़ाम तक़रीरी ख़ुदा के रूहुल-कुद्दुस की ऐन वही से निकला। आंतोर कि वो मुतकल्लिम क़ौल ख़ुदा के काइल थे और उन के अफ़आल नब्वीयह खास कुदरत ईलाही से वक़ूअ में आए। और दूसरी ये कि उन अक़वाल के मुखबिर और हाफ़िज़ और उन अफ़आल के रावी और अहवाल के कातिब आप भी रूहुल-कुद्दुस के इल्हाम से बहरावर थे और ये बात

मूजिब शुक्र फ़रावान है कि सब तजुर्बाकारों और जहांदीदों को मालूम है कि खवारिक आदत के हक़ में मोअतबर गवाहों की शहादत भी एहतिमाली और मुश्तबा है। अज़-बस कि बमुश्किल एक भी शेख और पीर व मुर्शिद और साहब जोहद व फ़ुक्र व रियाज़त शहरह-ए-आलम और रौनकदार हो गया। मगर उस के मुरीदों और अस्हाबों ने हज़ार-हा मोअजज़ात और खवारिक आदात बड़े मुबालगा से उस की तरफ़ हमल व मन्सूब किए, बल्कि इतने करामात और मोअजज़ात जितने हज़रत मूसा और खुदावन्द यसूअ मसीह से वकूअ और जहूर में आए। सिर्फ़ एक मोअजिज़ा खुदावन्द मसीह का मशहूर है जो सर अजाइब व ग़राइब था। जिसे शायद किसी ना किसी बशर की तरफ़ हरगिज़ मन्सूब नहीं किया कि आप ही ने अपनी जान देकर उस को फिर ले लिया तो कुछ चारा इस से नहीं कि अस्हाब ज़हन व अक्ल हर सूरत खवारिक आदत को एहतिमाली और मुबहम (यानी छिपे हुए) जानें और इस तरह की समईयात माज़िया को मन्ज़ूर ना करें। हाँ अगरचे सिलसिला मुतवातिर गवाहियों का ऐसा हो कि इस में कहीं से कुछ इन्किताअ ना हो। हाँ अगर उन की कद्रो मंजिलत ऐसी हो जैसा मुसन्निफ़ इस्तिफ़सार ने दावा किया है कि समईयात के सबूत के फ़न अज़ीमुशान में बीसियों बल्कि सैंकड़ों दाना लोग हमारे यहां ऐसे गुजरे कि उन की वसाक़त और उन के उस फ़न की महारत से उन लोगों का किताबों का लिखना ऐसा साबित है, जैसा उनका होना और ऐसा भी हो कि हज़ार-हा रिवायत मुतसला मरफूअ¹⁵ (متصله مرفوعه) सहीहा वग़ैरह हों। तब भी ऐसी समईयात पर एतिक़ाद करने से उज़्र करते हैं। इसलिए अहले दीन व

15 लफ़ज़ मरफूअ (مرفوعه) अरबी इस्म सिफ़त है जिस के माअनी [रफ़ाअ किया गया] यह लफ़ज़ जब इस्म मोअन्नस के तौर पर इस्तिमाल होता है तो इसका मतलब है [वह हदीस जिस के रावियों का सिलसिला रसूल अकरम स. तक पहुंचे। इसी तरह मसीह से मुताल्लिक रिवायात लिखने वाले रावियों का सिलसिला खुदावन्द मसीह तक पहुंचे।

ईमान के लिए खुदा तआला से ये बन्दोबस्त मुकरर व मुतअय्यन था कि अम्बिया ए खुदा कुदरत ईलाही से मोअजजात फ़अली और कौली दिखाएं और सिर्फ ये नहीं बल्कि उन मोअजजातों की तहरीरी खबरें और तज़किरे ऐसे सका गवाहों से दिए जाएं जिनमें रूह खुदा ने तहल्लल और हलूल फ़रमाया था। चुनान्चे रूह इल्हाम की तौफ़ीक़ से रसूल और इन्जील खुदावन्द मसीह के मुर्दों में से उठने और उस के बाकी मोअजजात पर शाहिद हैं। और वो अपने उस इल्हाम और तौफ़ीक़ ईलाही को आप भी मोअजजात से मुबरहिन और मुबय्यन कर सके।

अब हम ये पूछते हैं कि मुहम्मद ﷺ में कौन सी इस मुवाफ़िक़ कुदरत ईलाही थी कि अस्हाब को अपने पास बुलवा कर शयातीन को निकालने और मुर्दों को जिलाने का इख़्तियार और मक्दूर (ताक़त) आप ही से अफ़ाजात (अफ़ाजा की जमा, फ़ैज़ पहुंचाना) करे और अन्सार पर फूंक कर कह सके, रूहुल-कुद्दुस को तुम ले लो, जिसके मुहम्मद ﷺ आप भी (सुरह माइदा आयत 111) में काइल और मुअतर्रिफ़ हैं, **وَإِذْ أُوحِيَٰتُ إِلَىٰ الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنفُسِنَا** पस जब खुदावन्द मसीह के मोअजजात के शाहिद हाल और रावयान मुहम्मद ﷺ के इकरार के बमूजब मौरिद वही ठहरे और उन शाहिदों से दो खास इन्जीली और दो हवारियीन के अस्हाब थे, तो कौन साहब अदल व दानिश क़त-ए-नज़र अज़ सबूत ऐसा तसव्वुर भी कर सकता है कि मुहम्मद ﷺ के अस्हाब या ताबईन अस्हाब या अस्हाब के तबाअ ताबईन की गवाही हवारियीन वही पज़ीर की गवाही के साथ मिलाए जाने के लायक़ है।

साहिबो अगर शायद आप हवारियीन के साफ़ सही दावा और पाक नविशतों की तक़रीर और कुल इज्माअ-मोमिनीन की शहादत मुत्तफ़िक़ा को

क्राबिल और वाजिब-उल-तस्लीम नहीं जानते बहर-ए-हाल अपने नबी के कलाम को मुश्तबा ना जानो और जो खुदावन्द मसीह के अस्हाब होने के दर्जे और रुत्बे से रूहुल-कुद्दुस की वही से मुशर्रफ़ हो गए तो उस के मोअजज़ात के मोअतबर और सक्रा गवाह कौन उन से बढ़कर हो सकते थे। हर-चंद कि मुअल्लीफ़ इस्तिफ़सार जाहिलों की आँख में खाक डालने के लिए और ऐन बे-हयाई से ये बात कहने की जुरत करता है कि मुअल्लिफ़ अनाजील सब मज्हूल-उल-हाल थे, मालूम नहीं कि कब और कौन और कैसे थे। इलावा बरां में इन मोअतरिजों से ये अर्ज करता हूँ कि बर-तक्दीर कि वो मुअल्लिफ़ अनाजील और खुदावन्द मसीह के फ़अली और कौली मोअजज़ात के रावी और ज़ाकिर ना इल्हाम ईलाही से हकीकत-ए-हाल को बयान करते, बल्कि उस के बरअक्स हक़ व बातिल की तल्बीस से मुजव्विर (झूटा, दरोग-गो) और कल्बी बातें हवाले कलम करते तो कलीसिया-ए-आम्मा नबियों और हवारियों की बुनियाद पर से उठ कर और अपनी हकीक्री जड़ से उखड़ कर कौन दूसरी बिना पर कायम और मब्नी हो कर ऐसी बरकरार और साबित-कदम रही, बल्कि हर सदी और खुसूसन इस उन्नीसवीं (19) सदी में बड़ी तरक्की और तहसील ज़्यादा से रौनकदार और मुस्तफ़ीज़ हो गई। आन्कद्र कि साफ़ मालूम व रोशन है कि खुदावन्द मसीह की कलीसिया एक ऐसा दरख्त है जो क्राबिल ज़वाल और बुढापे और पज़ मर्दगी के नहीं, बल्कि उस की शाखें इस किस्म की हैं, जिनकी हज़रत दाऊद (ज़बूर 92) में तारीफ़ करता है, “जो खुदावन्द के घर में लगाए गए हैं वो हमारे खुदा की बारगाहों में सरसब्ज़ होंगे। वो बुढापे में भी बरोमन्द होंगे। वो तरो ताज़ा और सरसब्ज़ रहेंगे ताकि वाज़ेह करें कि खुदावन्द रास्त है। वही मेरी चट्टान है और उस में नारास्ती नहीं।” (ज़बूर 92:13-15)

तो ऐ साहिबो अर्ज व सवाल इस मुसन्निफ़ का ये है कि ये इज्माअ मोमिनीन की नौजवानी और रतूबत दाइमी और तरो-ताज़गी की उम्मीद व इम्कान किस वजह से और कहाँ से हो सकती थी। गैर अज़ आंका वो अस्ल बीख व बुनियाद जिस पर कलीसिया आम्मा ने मबनी हो कर मज़बूत करार पकड़ा, वही बीख (जड़) है जिस पर अम्बिया और रसूलों ने दावा किया कि वह रूह खुदा के इल्हाम से मामूर और मम्मू थे। ता आन्कद्र कि उन के अफ़आल रिसालत व नबुव्वत उसी रूह खुदा से कुदरत पज़ीर थे और उन की गवाहियाँ खुदावन्द यसूअ मसीह के मोअजज़ात पर ख्वाह तकरीरी, ख्वाह तहरीरी दोनों उसी रूह के इल्हाम से माला-माल व मोफ़ूर (वाफ़र किया गया, ब इफ़रात) थीं।

फिर इसी इल्हाम रूही तौफ़ीक़ से और रब तआला की तदाबीर और खयालात उन्हें मुफ़व्विज़ (सपुर्द करने वाला) होने के सबब हर गाह (हर जगह) कि उन रसूलों ने अहदे अतीक़ के अस्ल मक़ूबात से बाअज़ जुमलों या आयतों को नक़ल किया। बइल्लत सबूत उस वफ़क़ व मुताबिक़त के जो दोनों ओहदों को जोड़ कर मिलाती है, तो उन जुमलों और आयतों को गाह-गाह (किसी-किसी वक़्त) हफ़ताद यूनानी मुतर्जिमाँ के तर्जुमाँ के मुताबिक़ मन्कूल किया और गाह-गाह आप ही अस्हाब इल्हाम हो कर ज़मान साबिक़ के अस्हाब इल्हाम के राज़रों और रम्ज़ों से मिले हुए मज़ामीन और इदराकात मस्तूरा (पर्दा नशीन दर्याफ़्त करना) और सादिका निकाले, जैसे गैर इल्हामों को महारत और फ़िरासत आम्मा से हरगिज़ हासिल ना हो सके। बमूजब इस क़ौल पोलुस रसूल के, “और नबियों की रूहें नबियों के ताबेअ हैं।” (1 कुरंथियो 14:32) और इस के मुवाफ़िक़ एक क़ौल पतरस रसूल का भी है, इस के पहले ख़त में यूं लिखा है, “उन पर ये ज़ाहिर किया गया कि वो ना अपनी बल्कि तुम्हारी ख़िदमत के लिए ये बातें कहा करते थे जिन की ख़बर अब तुम को उन की

माअर्फत मिली जिन्हों ने रूह-उल-कुद्दुस के वसीले से जो आस्मान पर से भेजा गया तुम को खुशखबरी दी और फ़रिश्ते भी इन बातों पर गौर से नज़र करने के मुश्ताक हैं। (1 पतरस 1:12)

चुनान्चे जब अम्बिया-ए-अतीक और अम्बिया-ए-जदीद यानी हवारियीन को कलाम-ए-खुदा का तफ़वीज़ करने वाला एक ही रूह खुदा था तो ना सिर्फ़ वाजिबी गुमान है, बल्कि बाल-बदाहत अक़ल और बीसियों (बहुत ज़्यादा) नक़लियात से मालूम होता है कि औकात सलफ़ के कलिमात ईलाही ज़माने-खल्फ़ के साहिबान उलू-ल-इल्हाम (अनोखी बात जो खुदावन्द की तरफ़ से हो) को आम मुफ़स्सिरों की निस्बत निहायत कामिल-तर और आली-तर तौर पर रोशन और मुबय्यन हुए, उन के पोशीदा मअनी मफ़हूम व माअरूफ़ और उन जुमलों और आयतों को हफ़्तादी तर्जुमों से नक़ल करने में बजाय एक लफ़ज़ या हर्फ़ के दूसरा लफ़ज़ या हर्फ़ गाह-गाह दाख़िल करना उन के हक़ व इख़्तियार से बैरून ना था। इस तरह कि मअनी और मज़्मून में ज़रा भी खलल नहीं आया ताकि उन सभों को तादीब और चश्मनुमाई हो जो हर्फ़ और जाहिर मअनी को बातिन पर मुक़द्दम जानते हैं। मसलन आमोस नबी की एक आयत मशहूर में क़ौल खुदा है, “मैं तुमको दमिशक़ से भी आगे असीरी में भेजूँगा।” (आमोस 5:27) इस आयत को स्तफ़नस अक्वल शहीद ने यूं मन्कूल किया, “पस मैं तुम्हें बाबुल के परे ले जा कर बसाऊँगा।” (आमाल 7:43) दोनों बातों के मअनी बरहक़ थे। अज़-आनरो कि बनी-इस्राईल की असीरी और जिला-वतनी दराए दमिशक़ भी और दराए बाबुल भी थी, फ़र्क़ इतना है कि हज़रत स्तफ़नस उस असीरी की कैफ़ीयत हाल से वाक़िफ़ हो कर बाद अज़ वक़ूअ उमूरात मज़्मून और मन्शा और मदार कलाम तो बचाता, मगर हर्फ़ को बदलता है। तो भी उसे साहिबो ऐसा ना जानो कि खुदावन्द मसीह के मुरीद व बन्दगान हर्फ़ व लफ़ज़ की इहानत और हक़ारत करते हैं। हम इल्म-ए-

तसव्वुफ वालों की मानिंद नहीं हैं। पर उसूल एतिक्रादिया में से एक ये है कि ना हर्फ मज़्मून की पर मज़्मून हर्फ की इल्लत है। हर्फ व लफ़्ज़ कितने ही बेशक्रीमत और मंज़ूरे नज़र क्यों ना हों तो भी बनिस्बत मज़्मून के वो कमक्रद्र हैं। चुनान्चे खुदावन्द ने फ़रमाया, “ज़िंदा करने वाली तो रूह है, जिस्म से कुछ फ़ायदा नहीं। जो बातें मैं ने तुमसे कही हैं वो रूह हैं और ज़िंदगी भी हैं।” (युहन्ना 6:63)

खुदा तआला आप लोगों को अपनी रूह की तन्वीर की फ़रावानी से ममलू करे तो ये बातें आफ़ताब नीम रोज़ से ज़्यादा फ़ाश व कश्फ़ होंगी, नहीं तो ज़ाहिर परस्ती यानी हर्फ व ज़ाहिर परस्ती के जुल्म से जान ख़लास करनी निहायत मुश्किल बात है। तब आपकी फ़हम व समझ में हज़रत मूसा की वो तक़रीर आ जाएगी और ख़ातिर नशीन होगी कि इन्सान हर एक क़ौल व कलाम से, ना हर लफ़्ज़ और हर्फ़ से “बल्कि हर बात से जो खुदावन्द के मुँह से निकलती है।” (इस्तिस्ना 8:3 मती 4:4) उन्हें क़वाइद मफ़हूमा बाला के मुत्फ़िक़ एक और अम्र लायक़ गौर व तक़रीर है कि कुतुब मुक़द्दसा के मुसन्निफ़ जिस इल्हाम पर काबिज़ और कादिर थे, वो एक किस्म का नहीं बल्कि कई अन्वाज़ व अक्साम (मुख्तलिफ़ किस्में) का था। अक्साम (मुख्तलिफ़ किस्में) के फ़र्क़ से मुरातिब और दर्जात का फ़र्क़ मुराद नहीं। इल्हाम ईलाही में दर्जों और रुत्बों का फ़र्क़ दर्ज करने से उज़्र है, चूँकि पोलुस रसूल ने साफ़ इर्शाद है, “हर एक सहीफ़ा जो खुदा के इल्हाम से है ताअलीम और इल्ज़ाम और इस्लाह और रास्तबाज़ी में तर्बियत करने के लिए फ़ाइदेमन्द भी है। ताकि मर्द-ए-खुदा कामिल बने और हर एक नेक काम के लिए बिलकुल तैय्यार हो जाये।” (2 तिमीथियुस 3:16,17) अगर कोई शख़्स मुरातिब और मदारिज इल्हाम का काइल हो तो हम इस बात को मूजिब बहस शुमार नहीं करते और ना हम मुसन्निफ़ इस्तिफ़सार और उस के पैरों के साथ उन के इस दावे के हक़ में कि हमारा फुर्क़ान ब-लफ़्ज़ कलाम-ए-खुदा है, बहस करने का

कुछ ख्याल करते हैं। क्योंकि इस बहस के इन्फिसाल पर एक और बहस का इन्फिसाल (फ़ैसला होना, तै पाना, जुदा होना) मुकद्दम है और वो बहुत ज़्यादा कद्र की बहस है, आया मुहम्मद ﷺ की रिसालत अज़ जानिब खुदा-ए-बरहक और सादिक थी या नहीं। और ना हम आप लोगों से सवाल करने की फ़िक्र करते हैं कि किसी कलाम तहरीरी के कलाम-ए-खुदा होने के लिए आप कौन सी शर्तों और अलामतों को लाज़िम और ज़रूरी जानते हैं। इस अम्र में रूह खुदा के वज़ीर व मुशीर होने पर कौन आदमज़ाद दावेदार या अपने ईजाद व तर्तीब किए हुए क़वानीन का मुक़्तज़ी हो सकता है। पर इतना साफ़ व वाज़ेह है हर शख्स पर जो बनज़र खुद कलाम-ए-खुदा की वज़अ और तर्तीब व तर्कीब पर गौर व इल्तिफ़ात करे कि इल्हाम खुदा की कई सूरतों और अन्वाअ हैं और रूह की वो खास तौफ़ीक़ जो नबियों और रसूलों को अता की गई, कई सबीलों (सबील की जमा, सूरत, तदबीर) पर थी। मसलन बाअज़ वक़्त खुदा के हज़ूर ये मन्ज़ूर और पसंदीदा था कि बर सबील तवारीख़ कलीसिया के अहवाल माज़िया (गुजश्ता) या ममलकात (बादशाहत) ईनजहानी के उमूर वाक़ईयह और माजरे के समईयात (सुन की कुव्वत) जिनसे और जिस कद्र तक कलीसिया का नफ़ा या मुज़रत (नुक़सान) हो सकती थी, नबियों की माअफ़्त सुनाई और समझाई जाएं। तो उन समईयात और रिवायत को कलाम ईलाही में मुन्दर्ज करना रूह खुदा को मुनासिब और मुफ़ीद मालूम हुआ और वाजिबन् व लाज़िमन अस्हाब इल्हाम को इतनी तौफ़ीक़ इनायत और इफ़ाज़त हुई, जिससे वह मुअल्लिफ़ कुतुब इल्हामी दरबाब वाक़ियात और ताअलीमात के हर ग़लत और ख़ता से ख़्वाह क़सदन हो, ख़्वाह सहवन बच जाएं। ता आन्क़द्र कि इस उम्र में अस्ल मतन की ज़ीनहार (ज़िनहार, हरगिज़, ख़बरदार) और हिमायत पूरी हो।

फिर उस अस्ल मतन की मुहाफ़िज़त खुदावन्द मसीह ने तरीक़ा मज़कूर बाला के बमूज़ब अक्वलन इज्माअ यहूद को और बाद तर्दीद और मतरुकियत

यहूद इज्माअ-आम्मा-मोमिनीन को तफ़वीज़ फ़रमाई। इस क्रिस्म की कुतुब इल्हामिया में वो किताबें जो यशूअ और काज़ीयों (कज़ाह) की कहलाती हैं और हज़रत समुएल और सलातीन की कुतुब और वो जिसे रिवायत कहते हैं, शामिल हैं। बाअज़ उलमा-ए-यहूद और ग़ैर-यहूद ने इन किताबों को तवारिख और रिवायत नब्बियह की किताब कहा है, सिर्फ़ इसलिए नहीं कि अफ़आल वा अमाल अम्बिया और ताबईन अम्बिया के तज़किरे और बयानात मुख्तलिफ़ा उन में मुन्दर्ज और महफूज़ हुए और ना सिर्फ़ इसलिए कि बरेतबार उस ख़बर मशहूद के जो उम्मत यहूद के अवाइल से होती चली आई है। मुसन्निफ़ उन किताबों के नबी ही थे, बल्कि इसलिए रिवायत अम्बिया कहलाती हैं कि उन में खुदा की मलकूत मौऊद और उस क़ौम मुख्तार व मख़्सूस के जो अहद व मीसाक़ खुदा के वारिस व हक़दार थे, कैफ़ीयत अहवाल व वाक़ियात का बयान होता है और बाल-इख़्तसास उन्हीं अहवालों की ख़बर मिलती है जिनकी आक़िबत यक़ीनी और नतीजा और हासिल हक़ीक़ी खुदा के लुत्फ़ व फ़ज़ल आमेज़ तदबीरोन की कशफ़ और सुलह व सलामत की खुशख़बरी का हर मुल्क में इश्तिहार जारी होना था।

चुनान्चे इन किताबों से मालूम होता है कि बावजूद बुग़ज़ व बगावत यहूद के और ग़ैर-क़ौमों के बीच जो अहले ख़िलाफ़ और कीना-वर ग़नीम थे, उन की रोक-टोक और जोरो-जबर के बावजूद ना तो खुदा तआला का क़ौल टल सकता था, ना उस की अजीब दस्तकारीयां रुक सकती थीं। पर उस की क़दीमी मशरतें अपने हद व निशान मुतअय्यन तक बढ़ती-बढ़ती बालिग़ हुईं। तो रूहुल-कुद्दुस की तरफ़ से वो हिक्मत और बीनाई और तमीज़ रुहानी नबियों को नसीब हुई जिसके ज़रीये से हक़ीक़त नामों और रिवायत मुताअद्दह से सिर्फ़ इतनों को अलैहदा (अलग) कर के किताब मुक़द्दस को तालीफ़ करें जो मलकूत-

अल्लाह की रौनक व बलागत रसानी में वज़नी और बेश कद्र थीं और जिन पर उस मलकूत की तरक्की की ताखीर या तअजील (जल्दी) मुन्हसिर थी और उसी इल्हाम के हवासिल व फ़वाइद में ये फ़ायदा भी शामिल था।

सिर्फ यही नहीं कि उन रिवायत नब्वीयह में कोई हिकायत का ज़िबह व फ़ासदा दर्ज ना हुई, बल्कि सभी मुंदरिजात बरहक और एतिक़ाद और तस्लीम के लायक थे। पर ये भी कि उन बयानात में ना फुज़ूली, ना तख़फ़ीफ़ व इन्किताअ़ ज़रूरीयात, ना इख़्तिसार, ना तवालत की ज़्यादती थी बल्कि खुदा तआला की राह व रविश और नक्श-ए-कदम और उस के अफ़आल व मोअजिजात और रज़ा व क़ज़ा और मशरतों को अहले दानिश व तमीज़ के रूबरू दिखाने के वास्ते जितने-जितने वाक़ियात के बयानात काफ़ी और वाफ़ी थे, उतने-उतने वाक़ियात इन तालीफ़ात अम्बिया में मुजतमा और मुन्दर्ज हो गए। तो जो मोअजज़ात इन किताबों में मज़कूर होते हैं, ना उन्हें मुजरिद और अलहैदह जुदागाना कर के मुलाहिज़ा करना चाहिए बल्कि उन्हें उन के मुल्हिकात और मुताल्लिकात के साथ मिला कर, अहले इदराक व माअफ़्त उन पर इल्तिफ़ात करें, क्योंकि वो खुदा तआला के कश्फ़ ज़मीर व खयालात से और आदमज़ाद की नजात और कुर्बत (नज़दिकी) ईलाही में मुदाखिलत का हक़ लेने से कमाल तनासुब और तताबुक ग़ैर इन्किताअ़ रखते हैं और इसी तरह मुक़द्दस लूका की इन्जील के मुक़द्दमे से हमने ये ख़बर पाई है कि खुदावन्द मसीह के वाक़ियात अम्र के बयान में बहुत समईयात और दस्तावेज़ात तहरीरी शुरु ही में मौजूद और माअरूफ़ थीं। जिनके बाअज़ मुंदरिजात बाहम मुख्तलिफ़ा और मुतफ़रिका थे। पस कलीसिया के अक्वल-उल-अक्वलीन गवाहों से बराबर और मुतफ़िक़ ये ख़बर मुतवातिर हम तक पहुंची कि लूका इन्जीली मुबारक ने जिस वक़्त हज़रत पोलुस की हिदायत व रिफ़ाक़त से मुशरफ़ था,

जिसे दर्जा कश्फ़ व रिसालत नसीब हुआ, तो रूह हक़ से ये तन्वीर और कुव्वत इल्हामी पाई कि अहवाल व अफ़आल खुदावन्द मसीह के सब मज़हरों और दस्तावेज़ों और समईयात को ख़्वाह काज़िब हों, ख़्वाह सादिक़ जमा और बाहम मुक्राबला कर के और गोया छांट कर हर एक अम्र में हक़ बातिल से जुदा करे। ता आंकि तलबा-ए-हकीकत को इत्मीनान खातिर और तयक्कुन हासिल हो।

फिर इल्हाम रूह खुदा के कई अन्वाअ और अक़साम (मुख्तलिफ़ क्रिस्में) हज़रत युहन्ना को मर्हमत हुए। चुनान्चे उस रसूल मुहिब व हबीब ने बाअज़ बातें तो वही की राह से खुद कलिमतुल्लाह (كلمته الله) यानी खुदावन्द मसीह की ज़बानी सुनीं और उन्हें हवाले-कलम करने का हुक्म उस से पाया। मसलन मुकाशफ़ा की किताब में है, “पस जो बातें तू देखें और जो हैं और जो उन के बाद होने वाली हैं उन सबको लिख ले।” (मुकाशफ़ा 1:19) और वो रसूल मुबारक इस क़द्र शर्फ़ व शान व फ़ज़ीलत तक फ़ैज़ रसीदा था कि रूह खुदा की कुदरत से मुतलब्बस हो कर बर सबील रुयते-आलम रूहानियत और दरगाह खुदा में मुंतक़िल-उल-मुक़ाम और मुसाइद हो गया और बहिश्त का दरवाज़ा खुला हुआ देखा और उस दरवाज़े के अंदर तख़्त नशीन खुदावन्द का दीदार और मुकाशफ़ा पाया और उस के दस्त मुबारक में एक किताब मस्तूर और मख़्तूम देखी, जिसकी फ़त्ह ख़त्म पर कोई शख़्स खाकी या बहिश्ती ग़ालिब व कादिर ना था, मासिवा उस बर्ी के जो ज़ब्ह हुआ था। (मुकाशफ़ा बाब 4,5)

पस जब उसी की कुदरत व ग़लबा से वो महर खुल गई तो वो रसूल उस के हैरत-अंगेज़ मज़ामीन का शुन्वा और उस के कश्फ़ इसरार से नसीब वर हो गया। फिर उसी रसूल ने बाअज़ बातें जिस तरह हज़रत मूसा पर रसूमात और अहकाम शरईयह नाज़िल हुए, इसी तौर से बतोसित फ़रिश्तगान

सुनीं और तहरीर भी कीं। खुसूसुन तशबीहात और तसावीर की राह से इज्माअ-आम्मा मोमिनीन की आइन्दा कुशितयां और शदायद और फुतूहात और बाद तजलील व पस्त हाली के रौनक व जलाल खुदावन्द मसीह के साथ और दीगर मजाहिर आजूबा बर सबील मुकाशफा उसे नज़र आए। चुनान्चे रसूल ने रूह खुदा के क्राबू और तस्खीर में हो कर और उस की पाक कुव्वतों और तासीरों के हलूल से मौरिद इल्हाम हो कर उसी रूह की तौफ़ीक व हिदायत से अपने लफ़्ज़ों और इबारतों में उन तसावीर और अम्साल को मअ कई ताबीरों और तशरीहों के मुबय्यन किया। और इसी तौर पर पोलुस रसूल अपने कलाम इल्हामी के दो अक्साम (मुख्तलिफ़ क्रिस्में) व अन्वाअ बताता है। एक क्रिस्म के वो साफ़ व सरीह मुकाशफ़ात जिनका दीदार वज्द रुहानी की हालत में हो कर पाया था और मरतन (नीम जान) अपने खुतूत में उन पर इशारा करता और उन्हें अपनी रिसालत हकीकी की कवी तर दलीलों में शुमार करता है और लापरवाई से दावा करता है कि जितनी बातें उस कश्फ़ की कलिमात में दर्ज हुईं, सब बरहक क़ौल खुदा हैं। मसलन ग़लतीयों के ख़त में अपने वाअज़ व मुनादी के अस्ल मुतालिब के हक़ में ये निहायत भारी बातें हवाला क़लम करता है, “ऐ भाइयो ! मैं तुम्हें जताए देता हूँ कि जो खुशखबरी मैं ने सुनाई वो इन्सान की सी नहीं। क्योंकि वो मुझे इन्सान की तरफ़ से नहीं पहुंची और ना मुझे सिखाई गई बल्कि यसूअ मसीह की तरफ़ से मुझे उस का मुकाशफ़ा हुआ।” (ग़लतीयों 1:11,12)

वो कश्फ़ जिसका ज़िक्र इस आयत में आया ऐन खास वही है और खुदा तआला का कश्फ़ बाल-इख़्तसास उस पर सादिक़ आता है जिसमें इस मितआली और मुतजल्ली की ज़ात व सिफ़ात का इज़हार और उस के अहकाम व मुशावरात और उहूद व मवासीक़ और ताईनात औकात का इश्तिहार और आइन्दा उमूरात की पेश खबरीयाँ और एतिक़ादात की तक़रीर व तशरीह हवाले क़लम होती हैं। जब वो मुज्हुलात पर्दा फ़ाश होने से मालूम हो गए, तब बर

सबील इस्तिलाह कश्फ़ होता है। चूँकि ज़ातयन व फ़ाअलियन खुदावन्द मसीह जो कलिमतुल्लाह (كلمته الله) है, रब तआला का काशिफ़-उल-इसरार है तो वो वही और कश्फ़ मज़कूर उसी के तवस्सुत से हुसूल व वसूल हो जाता है। चुनान्चे पैगम्बर व रसूल इस हालत में हो कर आप तो फ़ाइल व क्राइल ना थे, पर खुदावन्द मसीह और उस की रूह की फ़ाअलियत के मुतहम्मिल (बर्दाश्त करने वाला) थे और अपनी खास आवाज़ की निस्बत खामोश हो कर उन की जबान उस अंदरूनी मुतकल्लिम के क़ौल पर फ़िदा हो गई, जिस तरह बरबत खुद तो खामोश रहता है पर मज़रूब हो कर शीरीं आवाज़ देता है, इसी तरह वो पैगम्बर हर-चंद कि बेहोश और लाइदराक व शऊर तो नहीं, तो भी अपने क्राबू से बाहर हो कर नादीदनी और नाशनीदनी और बईद अज़ क़ियास मुतालिब के मज़हर और पर्दा कश हो गए। पस अलामत इस्तिलाही उस हालत कश्फ़ की वो खास इबारत है, “और खुदावन्द ने अब्रहाम या यशूअ या मूसा से कहा” वगैरह।

और बाज़-औक़ात ये अलामत ज़ाहिरन तो मफ़कूद पर हकीकतन मौजूद होती है। अज़-बस कि खुदा-ए-तआला हमारी अलामात से मुस्तग़नी है और हमारे शराइत व ज़वाबत में मुक़य्यद नहीं। फिर उस कश्फ़ और वही की क़िस्म से मुतफ़रिक् एक कलाम इल्हामी मज़कूर बाला था, जिसका मुतकल्लिम ज़ाहिरन अपनी आवाज़ से अपनी बातें बोलता था, पर रूह खुदा की तहरीक व तन्वीर बातिनी से और उस के हलूल व तख़लल का मंज़िला हो कर कलाम तकरीरी और तहरीरी की क़ाबिलीयत और इस्तिदाद (सलाहियत) पाता था। सिर्फ़ इस इल्हाम की एक शर्त और अलामत ये थी कि हर मुतकल्लिम की तशखीस और उस के शमाइल (आदतें) और औसाफ़ की खसुसीयात मफ़कूद और ज़ाए ना होती थीं, बल्कि अपने-अपने निशानों और खोजों से पहचानी

जाती थीं। जैसा क्रियाफ़ा शनासों को जुदा-जुदा सूरतों के नुक़्श साफ़ मुतमय्यज़ होते हैं जो हम उस अक्वल हालत पर मुलाहिज़ा करें तो खुदा तआला बे तवस्सुत फ़ीनफ़िसही (दरअस्ल, अपनी ज़ात में) मुतकल्लिम और फ़ाइल मालूम होता है। पर दूसरी हालत में बतोंसित कुव्वत व फ़अलियत और खादमियत इन्सानी के अपनी मर्जी का इज़हार करता है। कश्फ़ की हालत में मुसन्नफ़ अनक़रीब जैसा कलम बदस्त मुहर्रिर, वैसा ही एक आला बे-जान की मानिंद नज़र आता है। उस दूसरी हालत में मुसन्नफ़ किताब खुद मुहर्रिर ही की सूरत पकड़ता है।

पस जब इस में रूह खुदा की तहरीक और तर्गीब और तन्वीर भी है और रसूल की तारीफ़ लफ़िज़यह और तहरीर है, तो दो फ़अलियतीन एक अम्र में मिलें और मुजतमाअ हो गईं। ज़ाहिरन वो रसूल अपनी ख़्वाहिश और ज़मीर बातिनी के ख़यालात से बोलता और लिखता है, पर हकीकतन रूहुल-कुद्दुस की तासीरों का काइल व मुतहम्मिल (बर्दाश्त करने वाला) हो कर तक़रीर व तहरीर करता है। ज़ाहिरन तो आप अपने इख़्तियार से जो ख़बरें और रिवायतें मौजूद हैं, उन से बाअज़ इंतिखाब कर लेता है और बाअज़ को छोड़ता है, हकीकतन उसी रूह के क़वी दस्त से मज्बूर या मीठी कशिशों से मज्ज़ूब (मस्त) हो कर हक़ व बातिल का ख़ूब मुतमय्यज़ होता और हर ग़लत व ख़ता से बचाया जाता है। और ये भी कहना हक़ और वाजिब है कि मौरिद कश्फ़ की हालत साफ़ और ज़ंग से ख़ालिस आईने के मुवाफ़िक़ है। जिससे नूर इलाही की सब शआएं मुन्अकिस होती हैं। दूसरी हालत की मिस्ल गवाह की मिस्ल है कि वो जिन बातों का बनज़र खुद शाहिद था, ठीक-ठीक अपनी मामूली इबारतों में बाअद-अज़ा वज़न व क़द्र पैग़ाम के हाज़िरीन व सामईन को समझा देता है, पर तो भी रकाबत और हिदायत इल्हामी से किसी सूरत में गनी और बेनियाज़

नहीं, बल्कि उस से चारा नहीं है कि वो रूह जो इस मर्द-ए-खुदा में साकिन है और उस की जान में मुतखल्लिल की गई है, उस के कलाम का मजमून व मंशा उस के बदले इन्तिखाब करे और उस की इबारतें भी खता से बाज़ रखे। चुनान्चे कुरिथिस के नाम पहले खत में पोलुस रसूल इल्हाम की इन दो जुदा किस्मों पर इशारा करके फ़रमाता है, “बाक़ीयों से मैं ही कहता हूँ ना खुदावन्द (यानी इस अम्र में मुझे खुदावन्द से जो काशिफ़-उल-इसरार है, कश्फ़ नहीं मिला। सिर्फ़ उस इल्हाम बातिनी की माअर्फ़त में मुतकल्लिम होता हूँ जिसमें खुदा की रूह इन्सान की रूह के साथ मुखालतत (मेल-जोल, इख़्तिलात) होती है।” (1 कुरंथियो 7:12) “कुँवारियों के हक़ में मेरे पास खुदावन्द का कोई हुक्म नहीं लेकिन दियानतदार होने के लिए जैसा खुदावन्द की तरफ़ से मुझ पर रहम हुआ उस के मुवाफ़िक़ अपनी राय देता हूँ।” (1 कुरंथियो 1:25) इस से साफ़ रोशन हुआ कि जिस तरह खुदा तआला के ज़हूरत और ज़ात व सिफ़ात की तजल्लियात मुतअद्दिद इतवारों और मुख्तलिफ़ सूरतों से ज़माने-साबिक़ के अम्बिया को नज़र आईं। इसी तरह ज़माने-मुताख़्खर (आख़िर) में रूह खुदा ज़वी-उल-इख़्तयार हो कर अपनी तन्वीर ईलाही को किस्म-किस्म कर के मुख्तलिफ़ सूरतों और तरीक़ों में इफ़ाज़त करता है और अपने फ़जाइल खास्सा और अज़ीमुशान जिसको जिस क़द्र चाहता है, बख़्शता है और अपनी पाक तासीरों और तहरीकों की तक्सीम में आज़ाद और बेक़ैद है। ख़्वाह वो तहरीक़ उस की मानिंद नरम और मुलाइम हो, ख़्वाह बर्क़ व रज़द और बारिश तेज़ रू के मुवाफ़िक़ ज़ोर-आवर ज़बरदस्त हो।

ऐ साहिबो इन गिरामी बातों पर सोच और ग़ौर करो जो कश्फ़ और इल्हाम के हैबतनाक राज़ों से करीब ताल्लुक़ रखती हैं, क्योंकि निहायत इबरत नुमा और काबिल-ए-इल्तिफ़ात वो क़ौल खुदा हज़रत यसअयाह की ज़बान से

है, “लेकिन वो बागी हुए और उन्होंने ने उस की रूह-कुद्दुस को ग़मगीं किया, इसलिए वो उनका दुश्मन हो गया और उन से लड़ा।” (यसअयाह 63:10)

बाब पानज़ दहुम

दरबाब बाअज़ वज़नी नक़लियात कि मुस्तलज़म
व मस्तिदल बर उलुहियत व माअबूदियत
खुदावन्द मसीह मेबाशन्द

در باب بعض وزنی نقلیات کہ مستلزم و مستدل بر الوہیت و معبودیت خداوند مسیح میباشند

जितने सवालगत एक आदमज़ाद अपने दोस्त और भाई या अपनी ही जान से कर सकता है, उन में एक भी इस सवाल से गिरामी और आलीक़द्र नहीं कि तू खुदावन्द मसीह के हक़ में क्या जानता है? वो किस का इब्ने मुबारक है? बिल-फ़र्ज़ कि वो कलाम-ए-ख़ुदा की तरह-तरह की तक़रीरों के बमूज़ब अल्लाह तआला का इब्ने वाहिद व महबूब हो तो हक़ीकी मोमिनीन और मुस्लिमीन का क्या फ़त्वा और राय होगी? बाअज़ हदीसों के हक़, मसलन उस हदीस में जिसमें उस ख़ुदावन्द मसीह की ये तख़फ़ीफ़ शान और हतक इज़ज़त दर्ज़ है, 'فَحَانَتْ الصَّلَاةُ وَ أَمَمْتُهُمْ' यानी नमाज़ का वक़्त आया तो मैंने उन पैग़म्बरों की इमामत की। करीनह-ए-कलाम से मालूम होता है कि पैग़म्बरों से मुतकल्लिम ने हज़रत मूसा और ख़ुदावन्द मसीह और इब्राहिम (अब्रहाम) से मुराद रखी। आप लोग जानते हैं कि वो सवाल मज़कूर बाला ख़ुदावन्द मसीह ने उम्मत यहूद से किया और हर-चंद कि इन का जवाब यानी इब्ने दाऊद हक़ीक़त की ज़िद ना था, बल्कि हक़ीक़त जुज़ईया उस में शामिल थी तो भी ख़ुदावन्द मसीह ने नक़लियात बालिगा से उन्हें वाक़ई क़द्र-

दानी में नाकिस और कसूरवार ठहराया। खसूसन उस दलील नकली से कि इब्नीयत दाऊदी की निस्बत जरूरतन ज्यादा आलीशान और जलाली होगी। उस “इब्न” की वो “इब्नीयत” जिसका खुदावन्द हक लकब हजरत दाऊद ने फरमाया “यहोवा ने मेरे खुदावन्द से कहा तू मेरे दहने हाथ बैठ जब तक कि मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पांव की चौकी ना कर दूं। (जबूर 110:1)

अब साहिबो यकीन करो कि खुदा तआला आप लोगों से भी बिल-फअल इसी सवाल का जवाब तलब करता है, खुदावन्द मसीह कौन है और इब्न किस का? शायद आप इस सवाल के जवाब में कहें कि इब्नीयत और उलुहियत मसीह का मुकर और काइल होना हम ऐन कुफ्र जानते हैं। अगरचे हम इस इकरार को अपने ऊपर फर्ज और लाजिम जानें। तो भी आप उस के कलिमतुल्लाह (كلمته الله) होने के काइल हैं और कलिमियत ईलाही का राज इतना ही बारीक और दकीक और इदराक अकलीया से बैरून व बाला है, जितना इब्नीयत ईलाही का राज। खुद मुहम्मद ﷺ भी खुदावन्द मसीह के बाअज ऐसे मोअजजात पर शाहिद हैं, जिनकी मुराफिकत और हमसरी (बराबरी) किसी दूसरे नबी की हकीकत-ए-हाल में पाई नहीं जाती और ना उस बेमिस्त खरक-ए-आदत और बेनजीर कुदरत की कोई जिद रिवायत मौजूद है और ना किसी सूरत की मुमानिअत गैर अज-आंकि बाअज अकल परस्त या अस्थाब तास्सुब जिनकी नशिस्त व बर्खास्त व मुखालतत दहरियों की मजालिस में होती रहती है। अपनी महज ख्वाहिश से बर सबील बे-सबात एतराज के दाअवा करते हैं कि जितना मेरा तजुर्बा ही कुछ ऐसा अम्र वकूअ में नहीं आया और गैर अज मजाहिर मामूली और महसूसात और रोज-मर्रा के वाकियात के किसी बात पर मेरा यकीन नहीं। फुर्कान में बाअज उस तरह के मोअजजात इशारतन या माअरुफन नुमायां और मुबय्यन होते हैं, मसलन इस आयत में :-

''إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ إِنِّي آتَانِي الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا وَالسَّلَامُ
 और दूसरी عَلَى يَوْمٍ وَلِدَتْ وَ يَوْمَ أُمُوتٍ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا
 आयत में उस बेनज़ीर विलादत जिस्मी की बाबत जो हज़रत मर्यम से हुई :-
 ''وَأَرْسَلْنَا عَلَيْهَا رُوحَنَا وَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا
 ''وَنَفَخْنَا فِيهَا مِن رُّوحِنَا
 और फिर सुरह नबीन में
 - رُوحِنَا -

अब इस बाब में मुसन्निफ़ रिसाले का इरादा है कि खुदा की तौफ़ीक़ से खुदावन्द मसीह की कलिमियत और इब्नीयत और उलूहियत के बाअज़ मुक़व्वी दलाईल अनाजील और कुतुब अम्बिया व रुसल से गुज़राने, लेकिन बाल-इख़्तसास ना वो दलाईल जिनका मब्दा और मंशा हैं, वो लक़ब और अस्मा जो खुदावन्द मसीह की तरफ़ मन्सूब हैं, बल्कि वो दलाईल जिनकी तस्दीक़ उन मतलिब व मकासद से होती है, जिनके भरपूर और सर-अंजाम करने के लिए खुदावन्द मसीह सूरत और हकीकत बशर में जिस्म पज़ीर हो गया और उस ख़िदमत और सनअत व फ़अलियत से जिसे वफ़ा-ए-अहद और अदाए मशीयत (ख़्वाहिश) खुदा के लिए इस ख़स्ता शिकस्ता आलम में बजा लाने आया। यानी अस्ल सवाल ये होगा कि खुदावन्द ने कौन से ऐसे आमाल व अफ़आल दिखाए और कौन सी ऐसी कुदरतों और ज़ात व सिफ़ात की ख़सुसियात पर दाअवा किया और अपनी खो-ख़सलत व सीरत में कौन सी ऐसी तफ़ज़ील और तर्जीह बाक़ी सब आदमज़ाद से ले गया कि वो ज़ात खुदा पर मुस्तलज़म और उस के इब्ने खुदा होने के दावे की मुसद्दिक़ थी। इतना यकीन है कि जो शायद क़सदन या सहवन हम उस तक़रीर और तशहहद को कलाम-ए-ख़ुदा और दीनी एतिक़ादात से काट लेंगे तो कलाम-ए-ख़ुदा बेअस्ल और बातिल और बेजान ठहरेगा। गोया वो रिश्ता-ए-ज़रीन और नूरानी जो कुतुब समाविया के

कुल जरबफ्त (एक कपड़ा जो सोने और रेशम के तारों से बूने हैं) के दर्मियान कशीदा हो गया, मफ़कूद और ज़ाए होगा और वो जो सब पेशखबरियों का मिस्ताक था और गोया उनका जामेअ-उल-आसार और राफ़अ-शुब्हात था, इस कद्र जाता रहेगा कि आइन्दा वो बेमतलब और मखबूत (सोदाई, खबती) मुशव्वश (परेशान करने वाला) हो जाएंगी। पस मेहरबानी कर के इस बात पर इल्तिफ़ात करो कि इस बाब में उन मोअजज़ों का ज़िक्र ना होगा जो नबियों और रसूलों और खुदावन्द मसीह पर मुशर्क थे। पर सिर्फ़ उनका जो कुल्लियतन या एक जिहत से मख्सूस थे। अज़-आनरो कि ना अम्बिया ने आप हरगिज़ उन पर दावा किया और ना उन के मुरीदों और पैरों से किसी ने उन फ़जाइल व तजल्लियात रब्बानी को उन पर इत्लाक़ किया।

अव्वलन काबिल-ए-गौर व ताम्मुल है कि अम्बिया-ए-सलफ़ की पेश खबरियों की सिलसिला-वारी में दो असातीर मुस्ततिर बराबर तफ़तीश होती और बढ़ती चली आती हैं कि वो दोनों आखिरश खुदावन्द मसीह में मुन्तहा होती हैं और मिलती हैं।

एक इन स्तरों में इस मंशा और मज़मून से थी कि इब्ने दाऊद अपने तख़्त मौरूसी पर जलूस फ़रमाएगा और दाऊद के खानदान के लिए बाप और मुरब्बी होगा और उस के घर की कुंजियों से कमर-बस्ता होगा।

दूसरी ये कि खुदा-ए-कादिर-ए-मुतलक़ आप नमूदार और कुल बशर के मुकाबिल मुतजल्ली होगा।

अहद-ए-अतीक़ में बहुत से इस तरह के मुक़ामात हैं जिनमें मोमिनों और आक्रिबत अंदेशों के लिए वाअदा साफ़ और रासिख अता किया गया है कि उस आखिरी दिन जो अदालत और सलामत और नजात के इख़ताम का

दिन होगा, खुदा तआला की हुजूरी इस आलम-ए-शुहूद में नमूद होगी, बल्कि उस की हुजूरी फ़ीनफ़िसही (दरअस्ल, अपनी ज़ात में) और फ़ी ज़ात इस कद्र अलानियतन और सरीहन नमूदार होगी कि बमूजब क़ौल युहन्ना रसूल के, “हर एक आँख उसे देखेगी और जिन्होंने उसे छेदा था वो भी देखेंगे।” (मुकाशफ़ा 1:7)

और क़बल अज़ां ज़करीयाह नबी का वह कलाम पूरा होगा, “क्योंकि खुदावन्द मेरा खुदा आएगा और सब कुद्दुसी तेरे साथ... और खुदावन्द सारी दुनिया का बादशाह होगा। उस रोज़ एक ही खुदावन्द होगा और उस का नाम वाहिद होगा।” (ज़करीयाह 14:5-9) तब मालूम और साबित होगा कि रब तआला मज़्लूमों और असीरों (कैदियों) और शहीदों की फ़र्याद व फ़ग़ां से गाफ़िल और फ़रामोश ना था। हर-चंद कि बड़ी देर की सुबूरी और मदद व अआनत की ताख़ीर थी, पर तहकीक़न उस क़हहार व सिद्दीक़ की दरगाह में वो सवाल गोश गुज़ार हो गया जिसकी इबारत हज़रत दाऊद और हज़रत युहन्ना से तशरीहन हवाला क़लम हो गई, “ऐ खुदा उठ ! ज़मीन की अदालत कर। क्योंकि तू ही सब क़ौमों का मालिक होगा।” (ज़बूर 82:8) “और वो (शहीदों की रूहें) बड़ी आवाज़ से चिल्लाकर बोलीं कि ऐ मालिक ! ऐ कुद्दुस बरहक़ ! तू कब तक इन्साफ़ ना करेगा और ज़मीन के रहने वालों से हमारे खून का बदला ना लेगा?” (मुकाशफ़ा 6:10)

इन सब और इन की मानिंद सैंकड़ों और मुकामात पर जो नज़र इन्साफ़ और बेताअस्सुबी से गौर करे, वो लापरवाई से इकरार करेगा कि बेशक वो बादशाह हक़ गुस्तर और आफ़ताब नूर-अफ़शाँ जो तख़्त दाऊदी को अपनी नशिस्त मितआली से रौनकदार करेगा, सो इब्ने खुदा वहीद मसीह है। अगर इस अम्र की मुसद्दिक़ और भी नक़लियात तलब करो तो यसअयाह नबी के

अबवाब 45 और 65 और मलाकी नबी के अबवाब 3 और 4 का मुतालआ कर के रूह हिक्मत व माअर्फत की तौफीक से शक ना करो कि ये राज अज़-दराए हिजाब कश्फ होगा। चुनान्चे ये राज वो रिश्ता मज़बूत व मुहकम है जिससे दोनों अहद यानी अतीक और जदीद मरबूत और बाहम पैवस्ता हैं और दोनों ओहदों के कुद्दुसी और औलिया ने इस कवी उम्मीद में अपनी औकात उम्र को बसर किया और अपनी जान को तस्लीम किया उन के रकूब व रग़बत और इंतिज़ार का मुद्दा ना कोई फ़रिश्ता, ना नबी था, मगर खुदावन्द मसीह ही की हुजूरी और ज़हूर था। बआन-हालत व सूरत व ज़ात व सिफ़ात जिनकी कैफ़ीयत और तश्खीस अम्बिया की मुत्तफ़िक गवाही से मालूम और माअरूफ़ हो गई।

अब हम ज़रा ग़ौर कर के कलाम-ए-खुदा से बाअज़ मसाइल का हल व जवाब तलब करें। खासकर ये बात ताबमक़दूर उस से दर्याफ़्त करें कि उस खुदावन्द की आमद व ज़हूर जिस्मियाह के कौन से और कैसे मुतालिब और मकासिद थे और तीन आलिमों के साथ उस के कौन से और कैसे ताल्लुकात थे जिससे उस की ज़ात व वजूद की हकीकत-ए-हाल हत-उल-वसीअ हम पर रोशन और वाज़ेह हो जाये।

पहला इन मसाइल में से ये कि खुदावन्द मसीह का कौन और कैसा ताल्लुक़ आलिम-ए-ग़ैब और उस के साकिनों से है। पस इस में उस का इख़्तियार और इक़्तदार बाल-ईस्तिक्लाल बहुत साफ़ नक़लियात और दलाईल बालिगा से साबित होता है। मसलन मुकाशफ़ा की किताब में क्या ही सरीह और नादिर तक़रीरों से अपनी उस कुदरत ईलाही पर जिसका आलिम-ए-ग़ैब ताबेअ और मुतीअ है, गवाही देता है, “जब मैं (युहन्ना) ने उसे देखा तो उस के पांव में मुर्दा सा गिर पड़ा तब उस ने अपना दहना हाथ मुझ पर रखा और कहा कि ख़ौफ़ ना कर, मैं अक्वल और आखिर हूँ, और ज़िंदा हूँ। मैं मर गया

था और देख अबद-उल-आबाद जिंदा रहूँगा और मौत और आलम अर्वाह की कुंजियां मेरे पास हैं।” (मुकाशफ़ा 1:17,18) और खुदावन्द मसीह आलम-ए-ग़ैब का साहिब-ए-इख़्तियार व तसरूफ़ तब ही दिखाई दिया जब उन दो डकैतों में से जो उस के किनारे-किनारे मस्लूब हुए थे, एक की अर्ज़ व माअरूज़ को कुबूल कर के कुदरत और मुहब्बत आमैज़ आवाज़ से वो क्रौल फ़रमाया, “मैं तुझसे सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ फिरदौस में होगा।□ (लूका 23:43) फिर बर-तक्दीर कि वो खुदावन्द सिर्फ़ ज़मीन और आलम-ए-फ़ना में कुदरत बाल-ईस्तिक्लाल और इख़्तियार मुतलक रखता, पर आसमानों में ये उस का मौरूसी और ज़ातीया हक़ ना होता तो वो दावा जो ज़ेल की आयतों से मुस्तफ़ाद है, क्या ही बातिल बेहूदा-गोई और हवाए मुबालगा होता (यानी मुकाशफ़ा के 2 और 3 अबवाब से) “जान देने तक भी वफ़ादार रह तो मैं तुझे जिंदगी का ताज दूंगा।” (मुकाशफ़ा 2:10) “जो ग़ालिब आए उसे इसी तरह सफ़ैद पोशाक पहनाई जाएगी और मैं उस का नाम किताब-ए-हयात से हरगिज़ ना काटूंगा बल्कि अपने बाप और उस के फ़रिश्तों के सामने उस के नाम का इकरार करूँगा।□ (मुकाशफ़ा 3:5) “जो ग़ालिब आए मैं उसे अपने खुदा के मुक़द्दस में एक सुतून बनाऊँगा। वो फिर कभी बाहर ना निकलेगा और मैं अपने खुदा का नाम और अपने खुदा के शहर यानी उस नए यरूशलीम का नाम जो मेरे खुदा के पास से आस्मान से उतरने वाला है और अपना नया नाम उस पर लिखूँगा।□ (मुकाशफ़ा 3:12) ये और इन की मानिंद और आयतें उस पैग़ाम संजीदा कलाम से हैं, जो हज़रत युहन्ना की माअर्फ़त एशयाए कोचक की सात जमाअतों के पास पहुंचाया गया और मसबत और मुसद्दिक़ है, खुदावन्द के उस रुत्बा आली और ज़ातीया का जिसे किसी मख़लूक और ग़ैर अज़ खुदा की तरफ़ मन्सूब करना, ऐन शिर्क और कुफ़्र है। क्योंकि वो कलिमतुल्लाह (كلمته الله) और इब्ने-अल्लाह के साथ मख़सूस और मुक़य्यद है और उस की असली व अज़ली माहीयत (असलियत) के इसरार में से है। चुनान्चे पतरस रसूल रूह हक़ के इल्हाम से अपने अटवल खत के तीसरे बाब

में इसी अम्र पर अजीब वज़न व वक्रार की गवाही देता है, “वो आस्मान पर जाकर खुदा की दहनी तरफ़ बैठा है और फ़रिश्ते और इख़्तयारात और कुदरतें उस के ताबेअ की गई हैं।” (1 पतरस 3:22)

ऐ साहिबो कौन खुदातरस और आक्रिबत अंदेश ये बातें सुन कर और उस बादशाह आलमीन की अलवियत और उस के खिलाफ़ करने के ख़ौफ़ व ख़तरे का मुहासिबा मुलाहिज़ा कर के, ये सलाह ना जानेगा कि अपने खवेश व अक्रिबा से और अहले रिश्ते व रिफ़ाकत से वो सवाल करे जो अहले यहूद भी बाद नुज़ूल रूहुल-कुद्दुस के दिलों में छेद कर आपस में करने लगे, “ऐ भाईओ हम क्या करें?□ (आमाल 2:37) जिस सवाल के जवाब में ये वाअज़ व नसीहत पतरस रसूल से मिली, “तौबा करो और तुम में से हर एक गुनाहों की मुआफ़ी के लिए यसूअ मसीह के नाम पर बपतिस्मा ले तो तुम रूह-उल-कुद्दुस इनाम में पाओगे।” (आमाल 2:38)

फिर जो ताल्लुक़ खुदावन्द मसीह का कलाम-ए-खुदा के साथ है, उस की ज़रा सी तसरीह और तशरीह चाहिए। अज़-बस कि मौलवी साहिबों का मामूली एतराज़ और मुवाख़िज़ा ये है कि जैसा हमारे मुहम्मद ﷺ पर नुज़ूल किताब हुआ, वैसा हज़रत ईसा पर ना था। हर-चंद कि कुल कुरआन में बमुश्किल एक भी गवाही फ़साहत और तौज़ीह में इस से बढ़कर मिलेगी, मसलन **‘‘أَتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورًا وَمَوْعِظَةٌ** कुछ चारा नहीं **وَلِيَحْكُمَ أَبْلُ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ’’** कि अहले मुहम्मद अपने ही नबी की ऐसी साफ़ व सरीह गवाहियों से शश व पंज में और मुतरद्दिद हो जाएं और उन तक़रीरों के टालने के लिए जो-जो हिकमतें और पेचिशें और पसोपेश बना रहे हैं, सब अहले दानिश पर रोशन और वाज़ेह हैं। मअ़ हज़ा (इलावा बरीं, साथ इस के) मुहम्मद ﷺ इस अम्र की

हकीकत-ए-हाल से वाकिफ़ ना थे और ना उन को फ़हमीदा सही और दुरुस्त इस उम्र की हासिल हुई कि कलाम-ए-ख़ुदा के साथ ख़ुदावन्द मसीह का ताल्लुक क्या ही खास और नादिर है। फ़ील-तहकीक वो ताल्लुक अफ़ब ताल्लुकात से करीब तरीन है। आन्क़द्र कि वो ख़ुदा तआला की ज़ात मुतजल्ली के उन इसरार ग़ैब में से है जिस तक अक्ल और रूह इन्सान बग़ैर नुसरत और तौफ़ीक़ रूहुल-कुद्दुस के हरगिज़ नहीं पहुंच सकती। चुनान्चे ख़ुदावन्द मसीह का हाल इस उम्र में नबियों और पैग़म्बरों के हाल से तागायत निहायत दूर व बईद है। अज़-आनरो कि वो सब रब तआला के कश्फ़ इसरार के मुख्तलिफ़ दर्जात व मुरातिब से बमूजब इस्तिदाद (सलाहियत) के मुशरफ़ हो सकते थे, पर ख़ुदावन्द मसीह अपने और अपने रसूलों की साफ़ तकरीरों के बमूजब आप ही फ़ी नफ़्स-ए-ख़ुदा की पाक ज़ात और उस के कलाम खुफ़ीया और पनहां का ऐन कश्फ़ और काशिफ़ है। तो ऐसा ख़ाम-ख़याल करना ना चाहीए कि आलम-ए-बाला से आली तआला का कलाम उन पर नाज़िल हुआ। पर सच और बरहक़ ख़बर ये है कि आप ही कलाम ईलाही अज़ल से हो कर उतरा, ना ये कि इल्म हकीकत और माअर्फ़त ईलाही से नादिर और बेमिसाल तौर पर बहरावर और सर्फ़राज़ हो गया। चुनान्चे आप ही अपनी माहीयत (असलियत) के हक़ में फ़रमाता है, [हक़ और ज़िंदगी (यानी ऐन हक़ और ऐन ज़िंदगी) में हूँ।] (युहन्ना 14:6), और फिर [कोई बेटे को नहीं जानता सिवा बाप के और कोई बाप को नहीं जानता सिवा बेटे के और उस के जिस पर बेटा उसे ज़ाहिर करना चाहे।] (मत्ती 11:27)

देखो ऐ साहिबो कैसा बेअस्ल और नाजायज़ और बे मौक़ा आपका सवाल है कि हज़रत मसीह यसूअ पर कलाम और किताब क्यों नहीं उतरी, जैसा हज़रत मूसा और दाऊद और यसअयाह वग़ैरह पर। वो जिसका नाम

कलिमतुल्लाह (كلمته الله) है और वो लक़ब उस की माहीयत (असलियत) का मुअरिफ़ और मज़हर है, उस की इब्नीयत ईलाही के मजमाअ तफ़ज़ील से उम्दा और आली-तर खुसूसीयत उस की कलिमियत है और ख़वास कलिमियत में से रब तआला का ऐन कश्फ़ इसरार होना, वहा फ़ज़ल ख़ासीयत है जो बाक़ी नबियों की निस्बत खुदावन्द मसीह यसूअ की तर्जीह और तफ़ज़ील ज़ातीया का बाइस है। हाँ बल्कि ये खुदावन्द मसीह की वो तर्जीह और तफ़ज़ील है जो अज़-अज़ल सब मख़लूक़ात और मौजूदात पर है, ख़्वाह वो ख़ाकी हो, ख़्वाह आस्मानी और उस का वो जलाल मौरूसी है, जो “मशारु इलियह है (युहन्ना 17:5) में है “और अब ऐ बाप ! तू उस जलाल से जो मैं दुनिया की पैदाइश से पेशतर तेरे साथ रखता था मुझे अपने साथ जलाली बना दे। तो खुदावन्द मसीह का ये रुत्बा ख़ास यानी कश्फ़-उल-इसरार होना, बां हैसियत रखता है कि उस की ज़ात और लक़ब कलिमतुल्लाह (كلمته الله) है, बइत्तफ़ाक उस तक़रीर के जो युहन्ना 1:18 में मिलती है, “खुदा को किसी ने कभी नहीं देखा इकलौता बेटा जो बाप की गोद में है उसी ने ज़ाहिर किया। या अगर ठीक अस्ल ज़बान का तर्जुमा कीजिए तो “उस की ज़ात की तशरीह की है। फिर खुदावन्द ने कलिमतुल्लाह (كلمته الله) होने का रुत्बा पाया, बां हैसियत कि वो इब्ने खुदा है। चुनान्चे मुकाशफ़ा की किताब के पहले बाब की पहली आयत में लिखा है, “यसूअ मसीह का मुकाशफ़ा जो उसे खुदा की तरफ़ से इसलिए हुआ कि अपने बंदों को वो बातें दिखाए जिन का जल्द होना ज़रूर है। पस बख़ूबी मालूम और साबित है कि जिस तरह खुदावन्द मसीह मुनज्जी अलासीन और शफ़ी उल-आलमीन वाहिद व तन्हा है, अब भी और हशर व नशर के दिन भी।

इसी तरह अहदे अतीक और अहदे जदीद में ये मर्तबा खुदावन्द मसीह के साथ मख़सूस है, यानी ज़ात और कौल और फ़अल में अल्लाह तआला का ऐन कश्फ़ होना और उस के जलाल और नूर महज़ूब का फ़ाश करना, तो उस

काशिफ़ अल्लाह पर बचशम खुद निगाह कर के उस का मुबय्यन करना और गवाही की राह से तकरीरी और तहरीरी खबरों का इज्हार और इश्तिहार करना, रसूलों का ओहदा मुईन था, जैसे युहन्ना रसूल ने भी कहा :-

“उस ज़िंदगी के कलाम की बाबत जो इब्तिदा से था और जिसे हमने सुना और अपनी आँखों से देखा बल्कि गौर से देखा और अपने हाथों से छुवा। ये ज़िंदगी ज़ाहिर हुई और हमने उसे देखा और उस की गवाही देते हैं और इसी हमेशा की ज़िंदगी की तुम्हें खबर देते हैं जो बाप के साथ थी और हम पर ज़ाहिर हुई। जो कुछ हमने देखा और सुना है तुम्हें भी उस की खबर देते हैं ताकि तुम भी हमारे शरीक हो और हमारी शराकत बाप के साथ और उस के बेटे यसूअ मसीह के साथ है।” (1 युहन्ना 1:1-3) ये तो जायज़ और मुम्किन था कि उस हमादानी और हिक्मत मुतल्लका को जो उस की इब्नीयत और कलिमियत के खवास में से थी, दराए हिजाब जिस्मियत पर्दापोश करे और अर्सा कलील तक अपनी मर्जी मुजर्रिद के बाइस बाअज़ वाक्रियात आइन्दा की कैफ़ीयत हाल की फ़हमीदा से बे बहरा रहे। जिस अम्र से बज़न ग़ालिब इशारा है मरकुस की इन्जील के 13 वें बाब की इस आयत माअरूफ़ में, “लेकिन उस दिन या उस घड़ी की बाबत कोई नहीं जानता, ना आस्मान के फ़रिश्ते ना बेटा मगर बाप।” (मरकुस 13:32)

अगर कोई शख्स बेटे की इस नाफ़हमी को मूजिब इश्तिबाह जाने तो चाहीए कि वो ज़रा गौर करे इस बात पर कि जब खुदावन्द मुबारक ने अपनी गौर मुतनाही शफ़क़त और मुहब्बत हम ग़रीब खताकारों की तरफ़ इतनी-इतनी बातों और तरहों से ज़ाहिर की कि बाला से पस्त और आली से अदना और गनी से आजिज़ और दौलतमंद से मुहताज हुआ और भरपूरी के बदले तही-दस्ती इख़्तियार की। तो ये एक और अम्र क्या मुशिकल या मुहाल था कि वो अपने खास रोज़ के जो हश्र का दिन है, नाक़िस इल्म का मुतहम्मिल (बर्दाश्त करने वाला) हो जाये, ना असली और अज़ली कलिमियत की हैसियत से

जिसमें किसी सूरत की किल्लत और खिफ़त की मुदाखिलत खिलाफ़-ए-क्रियास है। मगर बऐतबार उस हालत और सूरत जिस्मियाह के जिसके अहाते के अंदर उस का जलाल नूरानी मौरूसी महजूब हुआ। हाशा-लिल्लाह (खुदा ना करे, हरगिज़ नहीं) कि खुदा की मुहब्बत आमेज़ कुदरत और हिक्मत और खास उम्मत की रिआयत कादिर इस उम्र पर ना थी और इस के जाहिरी मवाक़आत पर ग़ालिब ना हो सकी। सच तो ये है कि खुदावन्द मसीह कलिमियत ईलाही की हैसियत से बहक और बसदक़ तमाम कह सकता था। उस की शहादत हमें (मत्ती 11:27) में मिलती है, “मेरे बाप की तरफ़ से सब कुछ मुझे सौंपा गया।” और फिर वो भी जो युहन्ना रसूल की इन्जील में तस्लीम है, “इसलिए कि बाप बेटे को अज़ीज़ रखता है और जितने काम खूद करता है उसे दिखाता है बल्कि उन से भी बड़े काम उसे दिखाएगा ताकि तुम ताज्जुब करो।” (युहन्ना 5:20)

पर ये गुमान भी ग़ालिब और वाजिबी है कि दर-हालिका इल्म मुतलक़ और फ़हमीदा कामिल पर इख़्तियार रखता था और ये भी अपने अज़ली तव्वुलुद का हक़ बताता था, तो भी जिस इल्म नाकिद या नाकिस से उस की कलीसिया महबूब की कुछ मुन्अफ़त हो सकती, बल्कि फ़िलहाल उस के लाहिजाब और फ़ाश होने से कुछ मुज़रत भी हो सकती थी, उस के हुसूल से अपने ही क़सद और ख़्वाहिश और अपने बाप की मर्जी और तईनात रिआयत से दस्त बर्दारी और दरेग़ फ़रमाया। लेकिन शर्त उस दरेग़ और दस्तबर्दारी की ये थी कि खुदावन्द के असली और ज़ातीया इल्म में नुक़्स व खलल का तहम्मूल किसी सूरत ना हो सके। सिर्फ़ ये ख़ुद तौहीन यानी आपको पस्त करना इस क़द्र जायज़ था कि उस दौलत और जमईयत उलूम व मआरुफ़ से जो उस ने बहस्ब तवस्सुत व वकालत अपनी कलीसिया के वास्ते ले ली थी, ये खास ख़बर यानी रोज़-ए-हश्र की ख़बर मुस्तसना और महरूम रह गई।

हासिल कलाम ये है कि खुदावन्द मसीह ने कलिमतुल्लाह (كلمته الله) हो कर बाअज़-औकात खुदा तआला की ज़ात व वजूद और खयालात ज़मीर को कश्फ़ किया और बाअज़-औकात अपने रूहुल-कुद्दुस की तौफ़ीक़ और माअर्फ़त से वो कलाम मुतअय्यन गवाहों को तस्लीम किया और हवाला कलम कराया। पस दो बड़ी भारी बातों में खुदावन्द मसीह के मुतअय्यन गवाह मुहम्मद ﷺ के गवाहों की निस्बत शर्फ़ व वज़न व रौनक के हक़ में हद से ज्यादा तर्जीह रखते थे।

अव्वल ये कि वो गवाह मसीही अस्हाब इल्हाम रूहुल-कुद्दुस के थे, जैसा ऊपर मुफ़स्सिल बयान हो चुका।

दूसरा ये कि खुद कलाम-उल्लाह से इन लोगों के फ़ज़ाइल और औसाफ़ के बयानात मिलते हैं, जिनसे बख़ूबी मालूम होता है कि वो कौन और कैसे अशखास थे।

एक तीसरा सवाल वाजिबन मोअजज़ात की बाबत पैदा होता है कि खुदावन्द मसीह ने मोअजज़ों के अम्र में कौन सी ऐसी तर्जीह और सबक़त की जो ज़ात और कुदरत ईलाही पर मुस्तलज़म थी। हर हकीक़त अंदेश पर वाज़ेह हो कि इस फ़स्ल में मोअजज़ात से मुराद वो करामात नहीं हैं जो खुदावन्द मसीह और बाकी नबियों पर मुश्तमिल हैं। ऐसी दलीलों से ज़ात ईलाही पर दाअवा की तस्दीक़ मुहक़म हरगिज़ ना हो सकेगी। पस मादर कलाम और सर बहस ये सवाल है कि आया वो कुदरत जिससे इज़हार मोअजज़ात व ख़वारक़ आदात खुदावन्द मसीह से रोज़ हुआ करता था, उस की माहीयत (असलियत) से खारिज हो कर बाहर से उस को इफ़ाज़त और इनायत हुई या अंदरून से उस की ज़ात ही की अस्ल फ़अलियत थी। इस उम्र में आप खुदावन्द की सादा और खालिस गवाही पर गौर करो। “लेकिन अगर मैं खुदा की रूह की मदद

से बदरूहों को निकालता हूँ तो खुदा की बादशाही तुम्हारे पास आ पहुंची।” (मती 12:28) इसी तरह से और इन्जीली मुसन्निफ़ीन और रसूल सिर्फ इसी बात पर ताकीद और तशदीद नहीं करते कि खुदावन्द मसीह ने शयातीन के मज़्लूमों और असीरों (कैदियों) को आज़ाद किया है, बल्कि इस बात पर कि उस ने इख्तियार वाले हुकमरानों के मुवाफ़िक बादशाहाना इर्शाद फ़र्मा कर शयातीन को ज़ेरदस्त और मुतीअ किया। जिस बात पर मुद्दई होना हर किसी शख्स का जो शहनशाह जहां ना था, सरासर बे मौका और नाजायज़ होता। सिर्फ़ खुदावन्द यसूअ मसीह की ऐन हकीकत और रुतबा ला-मुतगय्यर (बदला हुआ नहीं) था जिस अम्र पर मती अपनी इन्जील में शाहिद है, “जब शाम हुई तो उस के पास बहुत से लोगों को लाए जिन में बदरूहें थीं। उस ने रूहों को जुबान ही से कह कर निकाल दिया और सब बीमारों को अच्छा कर दिया। ताकि जो यसअयाह नबी की माअफ़त कहा गया था वो पूरा हो कि उस ने आप हमारी कमज़ोरियों ले लीं और बीमारियों उठा लीं।” (मती 8:16,17) और लूका की इन्जील की एक मशहूर मिसाल का मज़मून उस शहादत से ऐन इत्तिफ़ाक रखता है, “जब ज़ोर-आवर आदमी हथियार बाँधे हुए अपनी हवेली की रखवाली करता है तो उस का माल महफूज़ रहता है। लेकिन जब उस से कोई ज़ोर-आवर हमला करके उस पर ग़ालिब आता है तो उस के सब हथियार जिन पर उस का भरोसा था छीन लेता और उस का माल लूट कर बांट देता है।” (लूका 11:21,22)

करीन-ए-कलाम से साफ़ व सरीह है कि वो हथियारबंद इब्लीस है और वो पहलवान ज़ोरावर तर वही पहलवान है जिससे मुखातब हो कर रूहुल-कुदुस ने बज़बान दाऊद फ़रमाया था, “ऐ ज़बरदस्त ! तू अपनी तलवार को जो तेरी हशमत व शौकत है अपनी कमर से हमाइल कर।” (ज़बूर 45:3) यानी

खुदावन्द यसूअ मसीह है। चुनान्चे मौज़अ मज़कूर में कातिबान व फ़रीसियान यहूद और खुदावन्द मसीह के दर्मियान सर बहस यही था कि खुदावन्द मसीह किस की इमदाद और इक़तिदार से शयातीन को निकालता है। ऐ साहिबो इन साफ़ दलीलों से जो खुदावन्द मसीह की कुदरत और किब्रीयत ईलाही पर मुस्तलज़म हैं, कौन मोअतरिज़ साहब-ए-इंसाफ़ हैरान और सरासीमा ना होगा। कौन मुक़िर ना होगा कि दीन ईस्वी के अक्काइद का सबूत निहायत क़वी और मुहकम और ग़ालिब है। पर ऐ साहिबो फ़ल्ह और ग़लबा और नुसरत ले जाने से क्या पर्वा और क्या तसल्ली। रब तआला की ऐन हक़ीक़त की बाबत ये हुज्जत और बहस है कि तुम्हारी ही जानें और तुम्हारे ख़वेश व अक़िबा की जानें कुल आलमीन के ख़ज़ानों के आगे बेश क़द्र और गिराँ-बहा जान कर खुदावन्द मसीह ने अपने ही ख़ून के दामों से ख़रीद लीं। इन खुदावन्द मसीह की ख़रीदी हुई जानों को आप जोखों में क्यों डालते हैं। इन जानों में से अगर एक भी जान इस रिसाले के ज़रीये से उस ज़ालिम की क़ैद और असीरी से आज़ाद हो कर नूर हक़ीक़त खुदा में दाख़िल होगी तो मेरा अज़्र और मूजिब शुक्र-ए-खुदा की दरगाह में क्या ही बुजुर्ग़ होगा। काश हम सभों की आरज़ू मंदी और इंतिज़ारी ऐसी ही होती, जैसी लुथर साहब की थी। जिस वक़्त उस ने अस्हाब ख़िलाफ़ के साथ दीन की बड़ी सख़्त कुशती बाज़ी में अपनी जान का बड़ा ख़ौफ़ व ख़तरा खाकर यूँ फ़रमाया :-

□मार्टिन लूथर तो मर जाये, मगर खुदावन्द मसीह जीता रहे। जब तक वो जीता मैं जीता रहता हूँ, जो शायद वो मरता तो मेरे जीते रहने से क्या हासिल।□

एक और अम्र में खुदावन्द मसीह के मोअजजात नबियों और रसूलों के मोअजजात से इतनी तर्जीह और तकदीम रखते थे, जितनी खुदा की दस्तकारियों को इन्सान की दस्तकारियों की निस्बत हो। यानी इस अम्र में कि ना सिर्फ आप ही ने उनगशत ईलाही से अजीब कुदरतें जाहिर और नमूदार कीं, बल्कि ये हक़ और इख्तियार भी रखता था कि औरों को भी इस ताक़त और काबिलीयत से मौसूफ़ और मुशरफ़ करे। चुनान्चे हमने कई मर्तबा अस्हाब अनाजील से साफ़ व सही ख़बर इस बात की पाई है कि ना सिर्फ आप ही मोअजजात करने बल्कि औरों से कराने पर भी कादिर था। मसलन मत्ती की इन्जील में ये ख़बर है, ¶फिर उस ने अपने बारह शागिर्दों को पास बुलाकर उन को नापाक रूहों पर इख्तियार बख़शा कि उन को निकालें और हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी को दूर करें।” (मत्ती 10:1) और बाअद-अजां कि वो फ़ैज़रसानी बारह रसूलों पर हुई थी। सत्तर और शागिर्दों को बुलाकर और मुनादों के ओहदों पर तइयनात कर के उन्हें अपने फ़ैज़ की फ़रावानी से अस्हाब मोअजिज़ा होने का हक़ अता फ़रमाया और ये भी कहा, “जिस शहर में दाखिल हो। वहां के बीमारों को अच्छा करो और उन से कहो कि खुदा की बादशाही तुम्हारे नज़्दीक आ पहुंची है।” (लूका 10:8,9) “देखो मैं ने तुम को इख्तियार दिया कि साँपों और बिच्छूओं को कुचलो और दुश्मन की सारी कुदरत पर ग़ालिब आओ और तुम को हरगिज़ किसी चीज़ से ज़रर ना पहुंचेगा।¶ (लूका 10:19)

सब मोअतरिज़ों से मेरा सवाल ये है कि इन मोअजज़ों के करने और कराने की कुदरत खुदावन्द मसीह के साथ मख़सूस और मुकय्यद थी या किसी दूसरे शख्स के साथ भी मुशर्क थी। इस अम्र में बेताअस्सुबों और हकीकत जो यूं कि सिर्फ एक जवाब हो सकता है कि इस ऐन कुदरत ईलाही के ज़हूर

और सदूर में खुदावन्द मसीह बेनज़ीर और बेमिसाल था। और फिर हम पूछते हैं कि इस बात में उस के बेनज़ीर होने का क्या सबब था? इस सवाल के जवाब में खुदावन्द मसीह आप बड़ी सराहत से फ़रमाते हैं, “क्योंकि जिस तरह बाप मुर्दों को उठाता और ज़िंदा करता है उसी तरह बेटा भी जिन्हें चाहता है ज़िंदा करता है, क्योंकि जिस तरह बाप अपने आप में ज़िंदगी रखता है उसी तरह उस ने बेटे को भी ये बख़्शा कि अपने आप में ज़िंदगी रखे।” (युहन्ना 5:21,26) और इसी इन्जील में खुदावन्द फ़रमाते हैं कि, “क्रियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ, जो मुझ पर ईमान लाता है गो वो मर जाये तो भी ज़िंदा रहेगा।” (युहन्ना 11:25) तो जब कि खुदावन्द हयात की क़य्युमियत (क़य्यूम, क़ायम रहने वाला) बर्इना अपने में रखता है, बऐतबार उस इब्नीयत के कि अज़ाज़ल ता-अबद बे तग़य्युर रहती है, तो अफ़आल एजाज़ी की कुव्वत और लियाक़त इस तरह रसूलों को मर्हमत फ़रमाता है कि गोया चशमा हयात से शिफ़ा बख़्श नहरों को रवां कर के मौत की सल्तनत को घटाता है और फ़ैज़ फ़ज़ल व महब्बत ईलाही की सल्तनत को बढ़ाता है। तआन्क़द्र कि ना सिर्फ़ अपने रसूलों को बल्कि उन के मुरीदों और ताबर्इन को भी इस कुदरत एजाज़ नुमा को अता फ़रमाता है। चुनान्चे ज़रा भी सोच व ग़ौर कर के मालूम होगा और बदाहत अक़लीया से वाज़ेह कि किन-किन शख्सों से मुखातब हो कर खुदावन्द ने मुख्तलिफ़ ज़बानों के बोलने और शयातीन के निकालने और मोअजज़ात के दिखाने की लियाक़त और इस्तिदाद (सलाहियत) का वाअदा किया। यानी ना हर पुश्त के सारे इज्माअ-मोमिनीन को ता आक़िबत बल्कि खुसूसुन उन्हीं को वाअदा नसीब है जो खुद खुदावन्द मसीह के भेजे हुए रसूल और कलीसिया की बिना डालने की ख़िदमत पर मुवक्किल हुए। पर जिन्हें खुदावन्द मसीह ने तो नहीं, बल्कि उस के रसूलों ने कलीसिया की ओहदेदारी पर वक्फ़ व तक्दीस किया और बशीरों और मुनादों की ख़िदमत पर सफ़राज़

किया, उन के मुरीदों के वास्ते कोई ऐसा कौल व करार खुदावन्द की ज़बान मुबारक से नहीं निकला। आइन्दा जो बशारत व मुनादी के काम पर भेजे गए हर-चंद कि खुदावन्द मसीह ने अपनी रूह-कुद्दुस की माअफ़त उन्हें औसाफ़ और इस्तिदाद (सलाहियत) ज़रूरी से आरास्ता पैरास्ता किया, पर जाहिरन उनका भेजने वाला खुद खुदावन्द मसीह ना था, बल्कि अज़ राह वकालत उस के इज्माअ-मोमिनीन अपने पेशवाओं के तवस्सुत से भेजने वाले थे। बमूजब कौल पोलुस रसूल के, “अगर हमारे भाईयों की बाबत पूछा जाये तो वो कलीसियाओं के कासिद और मसीह का जलाल हैं।” (2 कुरंथियो 8:23) फिर उस कय्युमीयत हयात के साथ कुव्वत खल्कत भी बईना मुल्हिक और मुकारिन है, तो मोअजज़ात का ख्वाह करना ख्वाह कराना क्या मुहाल और मुशिकल था उस के लिए जो आप ही ऐन-हयात था और अपने अस्ल वजूद में खालक़ीयत और राज़क्रियत की सिफ़ात रखता था। इस अम्र पर बहुत सी नक़ली दलीलों को गुज़ारने की क्या ज़रूरत, दर हालिका मौलवी साहब आप इकरार करेंगे कि ये सिफ़तें बकमाल तसरीह व तर्करर अनाजील और खुतूत मुकद्दस में खुदावन्द मसीह की तरफ़ इतलाक़ की जाती हैं, मसअला कुलस्सियों के खत में साफ़ मशहूद है, “क्योंकि उसी में सब चीज़ें पैदा की गईं, आस्मान की हों या ज़मीन की, देखी हों या अनदेखी, तख़्त हों या रियासतें या हुकूमतें या इख़्तयारात। सब चीज़ें उसी के वसीले से और उसी के वास्ते पैदा हुई हैं, और वो सब चीज़ों से पहले है और उसी में सब चीज़ें काइम रहती हैं।” (कुलस्सियों 1:16,17) और जैसा आलम की आफ़रीनश अक्वल वैसी ही खल्कत सानी और जदीद जो नव-पैदाइश भी कहलाती है और तरह-तरह की और इस्तिलाहात से माअरूफ़ है, वो भी खुदावन्द मसीह की तरफ़ मुजरदन मन्सूब है, जैसा कुरिंथिस की कलीसिया के नाम दूसरे खत में मर्कूम है, “इसलिए अगर कोई मसीह में है

तो वो नया मख्लूक है। पुरानी चीज़ें जाती रहीं, देखो वो नई हो गई। (2 कुरंथियो 5:17)

और अगर किसी साहब की ख्वाहिश हो कि वह तसरीह तमाम मालूम करे कि कौन-सी और कैसी वो पुरानी इन्सानियत की मौत और नेस्ती है जो खुदावन्द मसीह की सलीब की मुक़व्वी तासीरों से होती है और कैसी वो नई इन्सानियत की पैदाइश है जो खुदावन्द मसीह की क्रियामत की कुदरत वाली फ़अलियत से हासिल होती है। तो वो पौलुस रसूल के रोमीयों की कलीसिया के नाम खत के बाब 6 में उस का पूरा और मुफ़स्सिल बयान पढ़े। पस ज़रूर रूह खुदा की तौफ़ीक़ से बहुत तसल्ली और फ़हमीदा और दिलजमई उस भारी मसअले की बाबत नसीब होगी और मूजिब शुक्र व हम्द होगा और ज़्यादा ये भी है कि हर तालिब हक़ उस नव पैदाइश और खल्कत जदीद का तजुर्बाकार हो सकता है। चुनान्चे रसूल मज़कूर बड़ी दिल सोज़ी से ये दावत और नसीहत रब-उल-आलमीन की तरफ़ से हर आदमज़ाद को पहुँचाता है, “और नई इन्सानियत को पहन लिया है जो माअर्फ़त हासिल करने के लिए अपने खालिक की सूरत पर नई बनती जाती है। वहां ना यूनानी रहा ना यहूदी, ना खतना ना नामख़्तूनी, ना वहशी ना सकूती, ना गुलाम ना आज़ाद, सिर्फ़ मसीह सब कुछ और सब में है।” (कुलस्सियो 3:10,11) और देखो कि युहन्ना रसूल अपने पहले खत के आखिरी बाब में अपनी सारी ताअलीमात को इस अस्ल ताअलीम में मुन्तहा बताकर फ़रमाता है, “हम जानते हैं कि हम खुदा से हैं और सारी दुनिया उस शरीर के क़ब्ज़े में पड़ी हुई है। और ये भी जानते हैं कि खुदा का बेटा आ गया है और उस ने हमें समझ बख़शी है ताकि उस को जो हक़ीक़ी है जानें और हम उस में जो हक़ीक़ी है यानी उस के बेटे यसूअ मसीह में हैं। हक़ीक़ी खुदा और हमेशा की ज़िंदगी यही है।” (1 युहन्ना 5:19,20) और इसी

ताअलीम पर मुन्हसिर वो दलील है जिससे रसूल इब्रानियों के खत में खुदावन्द मसीह की कहानत की इस्तिदामत (ख्वाहिश) और कमालियत की तस्दीक करता है। चुनान्चे उस हुज्जत का अस्ल मज़्मून ये है कि वो कहानत मसीही और जितने फ़वाइद और फ़ज़ाइल उस से हासिल होते हैं यानी उस का कफ़ारा होना और बदर्जा कमाल दुखीयों के साथ हम्दर्द होना और अज़राह इमामत खल्क-ए-खुदा की दुआओं और सवालों को पहुंचाना और शफ़ाअत व सिफ़ारिश करना सब उस की हयात बाकी और लाज़वाल और मुम्तनअ-उल-इन्हलाल होने पर मौकूफ़ हैं। यानी इस अम्र पर कि अल्लाह तआला का इब्ने वाहिद व महबूब अज़-अज़ल ता अबद लाजीम-उल-वजूद है, ना इब्तदा-ए-अय्याम, ना इन्तिहाए हयात रखता है। चुनान्चे (इब्रानियों 7:5) और आइन्दा आयतों में इस राज़ की मिसाल व शुब्ह जो बादशाह क़दीम मलिक सिदक में दिखाई दी, सराहतन बयान होती है।

फिर एक और अम्र पर गौरो-फ़िक्र करना चाहिए कि वो खुदावन्द मसीह के साथ सरासर मख्सूस था, बल्कि उस के मोअजज़ात का सर और गायत निहायत था और वो खुदावन्द का मोअजिज़ा इस क़द्र बेमिसाल और बेनज़ीर था कि कोई फ़रिशता भी मअ-हज़ा (इलावा बरीं साथ इस के) कि अक़ब-उल-मुक़र्रीबीन होता और कोई नबी भी हर-चंद कि बफ़र्ज मुहाल खातिम-उन-नबीय्यीन होता, इतनी ज़ुरत ना करता कि ऐसी नादिर खरक-ए-आदत पर दावा करता, यानी खुदावन्द मसीह अपने वजूद इन्सानि की निस्बत मौत का मुतहम्मिल (बर्दाश्त करने वाला) हो कर अपनी कुदरत ईलाही से फिर मुर्दों में से जी उठा। इस अम्र की बाबत खुदावन्द मसीह ही की साफ़ तकरीर सुनो, जिसे युहन्ना रसूल ने खुदावन्द मसीह की ज़बान से कुबूल कर के हवाला कलम किया है, “बाप मुझसे इसलिए मुहब्बत रखता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूं। कोई उसे मुझसे छीनता नहीं बल्कि मैं उसे

आप ही देता हूँ। मुझे उस के देने का भी इख्तियार है और उसे फिर लेने का भी इख्तियार है। ये हुक्म मेरे बाप से मुझे मिला।” (युहन्ना 10:17,18) और मुकामात मुतअदह में रुसल मुकद्दस ताकीद और ताईद तमाम से इस बात पर शाहिद हैं कि हर-चंद खुदावन्द बहस्ब जाहिरी और खारिजी सूरत के मुहक्किर और खवार और खताकारों में महसूब और मुलजम था, तो भी फ़िल-हक्कीकत बइख्तियार व कुदरत शाहाना मस्लूब होते वक़्त भी लवाज़िम कहानत को अदा व वफ़ा फ़रमाता था। लेकिन उन नक़लियात में से बिल-फ़अल दो ही इस अम्र की तस्दीक पर काफ़ी व वाफ़ी होंगे। पहली इब्रानियों के खत से मुंतख़ब है “चुनान्चे ऐसा ही सरदार काहिन हमारे लाइक भी था जो पाक और बेरिया और बेदाग़ हो और गुनाहगारों से जुदा और आस्मानों से बुलंद किया गया हो। और उन सरदार काहिनों की मानिंद उस का मुहताज ना हो कि हर रोज़ पहले अपने गुनाहों और फिर उम्मत के गुनाहों के वास्ते कुर्बानियां चढ़ाए क्योंकि इसे वो एक ही बार कर गुज़रा जिस वक़्त अपने आपको कुर्बान किया।” (इब्रानियों 7:26,27) और उस के मुवाफ़िक़ एक और भारी कलिमा कुलस्सियों के खत में मर्कूम है, “और हुक्मों की वो दस्तावेज़ मिटा डाली जो हमारे नाम पर और हमारे खिलाफ़ थी और उस को सलीब पर कीलों से जड़ कर सामने से हटा दिया। उस ने हुक्मों और इख्तियारों को अपने ऊपर से उतार कर उनका बरमला तमाशा बनाया और सलीब के सबब से उन पर फ़त्हयाबी का शादियाना बजाया।” (कुलस्सियों 2:14,15)

सच तो ये है कि और बहुत से मवाज़ेअ हैं जिनमें खुदावन्द मसीह के मुर्दों में से मबऊस होने की कुदरत खुद खुदावन्द मसीह की तरफ़ नहीं, बल्कि रब-उल-आलमीन यानी खुदा बाप की तरफ़ और उस की रूह कुद्दुस की तरफ़ मन्सूब है और फ़ील-तहक्कीक ये बात खुदा तआला की पाक वहदानियत के इसरार ग़ैब में से है और उन तअय्यिनात और तफ़ाज़ील में से है जो उस पाक ज़ात के उमुक़ में मख़फ़ी (छिपी) हैं, जिनका राज़ और रमज़ युहन्ना

रसूल की मुख्तलिफ़ आयतों में मशारु इलयह है, मसलन “यसूअ ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूँ कि बेटा आपसे कुछ नहीं कर सकता सिवा उस के जो बाप को करते देखता है क्योंकि जिन कामों को वो करता है उन्हें बेटा भी इसी तरह करता है।” (युहन्ना 5:19) ये उस नादिर और बेमिसाल इब्नीयत के हुक्क और लवाज़मात से है, जिसकी ना इब्तिदा थी ना इन्तिहा होगी और जिसके रूबरू इन्सान की अक़ल नज़रिया जब बारीक-बीनी और फ़िरासत में भी सबक़त ले जाये, तब भी हैरान और ख़ामोश और आजिज़ खड़ी रहती है। हाँ बल्कि अपनी कोताहबीनी और जहालत के शऊर से शर्म के मारे मुँह ख़ाक-आलूदा कर के अपने आपको मकरूह जानती है तो बिला-शक वो शख़्स निहायत तास्सुब और ग़ायत नादानी का मुल्ज़िम होगा जो उस दरोग और बातिल तक़रीर को मन्ज़ूर करे, जिसे बाअज़ मौलवी साहिबों ने दीन बरहक़ को मअयूब (एब वाला) और मज़मूम ठहराने के लिए कमाल लाफ़ ज़नी और इफ़्तिखार से गुज़राना है कि तस्लीस का अक़ीदा अक़ाइद ईस्वी का अस्ल मब्दा और मंशा और मख़रज है। हालाँकि वो दीन की ऐन इन्तिहा है और उस के उसूल अक्वल से ताअलीम फ़रुईयह और ज़रूरी नतीजों की राह से मुश्तक़ है और तहक़ीक़ तस्लीस पाक व मबारक की ताअलीम दीन बरहक़ के अबजद के दर्स में नहीं आती, पर उस के इसरारों की ग़ायत है। बाद अज़ आंकि कोई साहिब-ए-ईमान कुल्लियतन ख़ुदा तआला की उन तजावीज़ और तदाबीर से वाक़िफ़ और आश्ना हो जाएगी जो आलम ज़ाद की सेहत व लामत के लिए मुतअय्यन व मयस्सर हुई हैं और उन की वुसअत व तवालत व अलवियत का कुछ शऊर हक़ीक़ी नसीब हो जाए, तब इसरार ग़ैब ईलाही के उस क़ल्ब (दिल) व बातिन और गोया क़अर (गहराई) दरिया में जो तस्लीस फ़ील-तौहीद कहलाता है, बशर्त सफ़ाई और पाक दिली के मुदाख़िलत करने की उम्मीद पर कादिर होगा।

एक और भारी मसअला का भी जवाब इज्माली चाहिए कि खुदावन्द मसीह की खिदमत और ओहदे की क्या और कैसी निस्बत व ताल्लुक है, इस आलम-ए-फ़ानी की हालत मौजूद की तसहीह और इस्लाह के साथ। यानी उस के नुक़सों और कुसूरों के पूरा करने और उस के दुखों और हाजतों के रफ़अ करने का किस क़द्र जिम्मेदार है और किस क़द्र उस के बोझों के तहम्मूल पर क़ादिर है। इस सवाल का जवाब खुदावन्द मसीह और उस के रसूलों ने बहुत साफ़ दिया है और इस अम्र में तआंक़द्र खुदावन्द मसीह ने इख़्तियार और इक़््तदार मुतलक़ का दाअवा किया कि वो सरासर उलुहियत और माअबूदियत पर मुस्तलज़म है। चाहे शैतान की हीलाबाज़ी और ज़ुल्म और वस्वसों का ज़िक्र हो, चाहे उस कुशती का जो नफ़स व गुनाह और इस आलमे फ़ानी के लज़ाइज़ व नफ़ाइस व इशरत व शहवत के साथ करनी होती है, चाहे फ़िक्र व तर्दिद और दर्द व अलम का ज़िक्र हो, चाहे उस ईज़ा और लअन व तअन व मज़ाह का जो अस्हाब ख़िलाफ़ व बुग़ज़ से है, चाहे उस आख़िरी दुश्मन का जो मौत है, ज़िक्र हो। वो उन सभी की तख़फ़ीफ़ और तश्फ़ी या पूरी ख़लासी और रिहाई का क़ौल व क़रार देता है। ना हर शख़्स को जो सिर्फ़ उस के नाम का लेने वाला और कलाम का पढ़ने वाला और मुनादी करने वाला है, बल्कि हर क़ौम के हर शख़्स को जो खुदा तआला की मर्ज़ी पर अपनी ख़्वाहिश और मर्ज़ी को कुर्बान करता और उस के फ़ज़ल के वो ख़ास और ओहदा ज़हूर जो उस के इब्ने वहीद में हैं, बदल व जान मन्ज़ूर करता है और वह अपने चश्मा हयात से हर सूरत की मौत को नेस्त करने का वाअदा भी बख़शता है। मसलन (यसअयाह 55:1) में खुदावन्द क्या ही ख़ालिस सरीह बातों में इस दुनिया के सब प्यासों और हाजतमंदों से मुखातब हो कर पूरी आसूदगी और फ़ैज़-रसी और दौलत फ़ज़ाइल व नफ़ाइस रुहानी के तयक्कुन से दिलों को निहाल करता है और खुदावन्द मसीह उसी बाब का अस्ल मज़मून अपनी तरफ़ मन्सूब कर के युहन्ना रसूल की इन्जील में यूं फ़रमाता है, “अगर कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पिए।” (युहन्ना 7:37) और दूसरी आयत में इस वाअदे की वुसअत

और गुंजाइश और भी ज़्यादा बढ़ाकर फ़रमाता है, “जो मुझ पर ईमान लाएगा उस के अंदर से जैसा कि किताब-ए-मुक़द्दस में आया है ज़िंदगी के पानी की नदियाँ जारी होंगी।” (युहन्ना 7:38) और इन आयतों में बहुत सी मुवाफ़िक़त और मसलियत है, इस मशहूर आयत से जिससे लाखों करोड़ों लोगों ने इस आलम के शदाइद और तक़लीफ़ों और तल्ख़ियों और तरद्दुओं और जुँबिशों के बीच पूरी तसल्ली और तस्कीन पाई है, “ऐ मेहनत उठाने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो सब मेरे पास आओ, मैं तुम को आराम दूंगा।” (मत्ती 11:28) और मुजम्मलन हम वाजिबन कह सकते हैं कि आदम जादों के साथ जितनी-जितनी निस्बतों और ताल्लुकात पर खुदावन्द मसीह आप दावा करता है या रसूलों ने उन्हें उस की तरफ़ महमूल किया है, उन सब ताल्लुकात से उस की अज़ली कलिमियत और कुदरत रब्बानी लाज़िम आती है, मसलन उस वज़नी और दिलचस्प कौल से जो युहन्ना की इन्जील में मर्कूम है, “क्योंकि खुदा की रोटी वो है जो आस्मान से उतर कर दुनिया को ज़िंदगी बख़्शती है।” (युहन्ना 6:33) और मुत्तफ़िक़ इस मज्मून से (इब्रानियों 2:14,15) आयतें हैं “पस जिस सूरत में कि लड़के खून और गोशत में शरीक हैं तो वो खूद भी उन की तरह उन में शरीक हुआ ताकि मौत के वसीले से उस को जिसे मौत पर कुदरत हासिल थी यानी इब्लीस को तबाह कर दे। और जो उम्र भर मौत के डर से गुलामी में गिरफ़्तार रहे उन्हें छुड़ा ले। पस जिसकी कुदरत और फ़अलियत और तक़वियत और तहम्मूल पर सब आदम का मआश व मुआद के लिए भरोसा और तवक्को मुन्हसिर है, कौन शख्स उस की ज़ात ईलाही से इन्हिराफ़ (ना-फ़र्मांनी) और इन्कार कर के खुदा के ग़ज़ब से अमन व अमान में रह सके। चूँकि शर् व शद्द की जितनी नाबूदी और खैर व खूब की जितनी फ़य्याज़ी खुदावन्द मसीह की तरफ़ से हमें दस्तयाब होती है, सब खुदा की मर्ज़ी और महज़ फ़ज़ल और उस की मशरत और क़ज़ा व क़द्र की तरफ़ इतलाक़ की जाती हैं, तो वाही हूज्जतें और मुबाहसात ऐसी बालिगा दलीलों और मुहकम मुक़व्वी तक़रूरों के मुक़ाबिल किस क़द्र और किस वज़न के हैं। क्या आप

जानते हैं कि ऐसे सुबुक और खफीफ तार अन्कबूत (मकड़ी) उस कहहार जवी-उल-इंतिकाम के गज़ब के दरयाए मट्वाज से पनाह दे सकते हैं जो खुदा तआला ऐसा सही और सलीम खौफ आपके दिलों में डाले कि आप खुदावन्द मसीह की बरहक और कामिल उलुहियत और खुदावन्द यसूअ मसीह की पूरी इन्सानियत के मेल-मिलाप के राज पर लिहाज़ कर के कि एक से दूसरे में जरा भी खलल और नुक़स नहीं आता। खूब इस उम्र को समझ लें कि उन दो जातों के ओज़ान और खवास अज़ अज़लता अबद ना मख्लूत व मुतफ़रि़क रहते हैं। मअहज़ा वह ऐसे करीब रिश्ते राबते से बाहम वाबस्ता और चस्पीदा हैं (जिस दिन से वो कलिमा मुजस्सम हो कर हमारे आलम मख्लूक के बीच साकिन हो गया) कि उन की जुदाई व फिराक़ या अमल या कसद बमुश्किल क्रियास में आ सकता है।

ये मसअला भी बाइस हुज्जत व बहस हो जाता है कि खुदावन्द मसीह का ताल्लुक़ गुनाह की बख़िश और अताए खता के साथ और उस के जोर व जफ़ा पर ग़लबा और क़ाबू देने के साथ कौन और किस क़द्र का है। इन्जीलों से मालूम होता है कि यहूदीयों ने गुनाह का बख़शना और अता फ़रमाना मुतल्लिक़न खुदा का कारख़ाना जाना और कि गैर अज़ खुदा हर शख़्स कि इस इख़्तियार अली-उल-इत्लाक़ पर दावेदार था, उन की दानिस्त में ऐन काफ़िर था और वो इन्जीली भी आप इस अम्र के मुकर और मोअतरिफ़ थे और तमाम खल्क़-ए-खुदा उस इकरार पर सरासर मुतफ़ि़क़ होगी कि गुनाह की बख़िश खुदा के साथ मख़सूस है और जिस तरह गुजश्ता और माज़िया गुनाह की बख़िश, इसी तरह हाल व इस्तिक़बाल के गुनाह का दबा डालना और जड़ से उखाड़ना महज़ खुदा की फ़अलियत मुजरि़द और सनअत ला शरीक़ है। पर तो भी इन्जीली मुसन्निफ़िन और सब रसूल वो दावा खुदावन्द मसीह का बरहक़ और मोअतमि़द और सादि़क़, बल्कि मूजिब शुक्र व हम्द

जानते और बताते थे, जो वो बारहा फ़रमाता था कि मैं ख़ता को अता करने पर कादिर हूँ और ये मेरा हक़ बे रद्द व बदल है और उस की शिकस्त व तसखीर और उस को मग़लूब करना मेरे काबू और इख़्तियार में है।

कुतुब इन्जीली के जितने मुअल्लिफ़ हैं सभों ने दीन और ईमान की यही बुनियाद डाली। आन्क़द्र कि अगर कोई शख्स सच्चे ईमान और हकीकी इबादत की कोई और बुनियाद डालनी चाहे तो कलाम-ए-ख़ुदा के बमूजब उस की बे-हूदगी और हिमाक़त उस मेअमार की मानिंद है जो कहे कि घर की तामीर ना बुनियाद डालने से, बल्कि छत बनाने से शुरू करनी वाजिब है। बेशुमार शहादतें इस ताअलीम पर हैं जिन्हें तफ़सील-वार नक़ल करना मूजिब तवालत होगा। सिर्फ़ दो एक का बतौर नमूना जात के नक़ल करना, सलाह है। युहन्ना रसूल अपने पहले ख़त में यूँ फ़रमाता है, “अगर कोई गुनाह करे तो बाप के पास हमारा एक मददगार मौजूद है यानी यसूअ मसीह रास्तबाज़, और वो ही हमारे गुनाहों का कफ़़ारा है और ना सिर्फ़ हमारे ही गुनाहों का बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का भी।” (1 युहन्ना 2:1,2)

उसी रूहल-कुदुस के इल्हाम से पोलुस रसूल के इब्रानियों के नाम ख़त में ये क़ौल हवाला क़लम है, “मगर अब ज़मानों के आख़िर में एक बार ज़ाहिर हुआ ताकि अपने आपको कुर्बान करने से गुनाह को मिटा दे।” (इब्रानियों 9:26) और पतरस रसूल ने रूह के इल्हाम से ये क़ौल ईलाही हमें सुनाया है कि, “इसलिए कि मसीह ने भी यानी रास्तबाज़ ने नारास्तों के लिए गुनाहों के बाइस एक-बार दुख उठाया ताकि हमको ख़ुदा के पास पुहंचाए। वो जिस्म के ऐतबार से तो मारा गया लेकिन रूह के ऐतबार से जिंदा किया गया।” (1 पतरस 3:18) अफ़सोस है कि मौलवी साहिबान अपने बहुत मुक़्तदियाँ अज़-अहले मुहम्मद समेत ख़ुदावन्द के ज़बिहे और कुर्बान होने की उस ख़ास सूरत और तरीके पर बिलानागा तम्सखर और ठिठोलीयां करते हैं, पर तो भी नबियों और रसूलों की और आप ख़ुदावन्द की ये साफ़ मुत्तफ़िक़ गवाही उन के टालने

से नहीं टलती कि खुदा की क़ज़ा व क़दर और मशीयत किसी दूसरी तरह से अमल में नहीं आ सकती थी। चुनान्चे उस की मर्जी थी कि उस का कलमा-ए-रब्बानी जो उस का इब्ने वहीद है, ग़ायत जलाल से निहायत ख़वारी व ज़िल्लत तक पस्त हो जाए। हाँ तख़्त मालिकियत से अबदीयत और गुलामी की ख़ाक-नशीनी तक झुक कर और मुहताजों में मुहताज हो कर उन्हें जो आपसे आप खुदा तआला के करीब नहीं आ सकते थे, अपने साथ पैवंद कर के उस ख़ाक व गुबार से तख़्त जलाल को सर्फ़राज़ करे। इसलिए खुदावन्द मसीह ने अपने ही जिस्म इन्सानी के साथ अपनी कलिमियत अज़ली और नूरानी वाबस्ता कर के उस काहिन कामिल और मजमुअ-अल-फ़ज़ाइल और गुनाह से मुबर्रा का नमूना दिखाया। जिसकी मुशाबहत ख़ाम व नाकिस हज़रत हारून और उस के ख़लीफ़ों में ज़ाहिर होती चली आई थी और उस में वो बर्रा बेऐब व बेदाग़ और साफ़ व सफ़ेद नज़र आया, जिसकी तौरैत मूसवी के ज़बाइह की गुज़रानने वाली ख़ल्क ज़मान दर ज़मान इंतिज़ारी करती थी और जिसको अपने हर एक ज़बीहा में बर सबील पेश ख़बरी के हाज़िरीन के रूबरू दिखाया करती थी।

फिर ग़ौर के लायक़ एक और अम्र है जिसका ज़िक्र व बयान फ़स्ल बाला में दरपेश आया था और वो रसूलों की मशहूर ताअलीमात में से है कि जिस तरह खुदा की अच्चल ख़ल्कत की इब्तिदा मसीह था कि गोया सब आलमों की मख़्लूक़ात के अयान उसी में मौजूद थे और उस के ज़रीये से आलम-ए-शुहूद में आ गए, इसी तरह ख़ल्कत जदीद और विलादत सानी उसी में और उस के ज़रीये से वक़ूअ में आई और इस हयात रुहानी का बचाने वाला और बढ़ाने वाला वही है। अज़-आनरो कि पुरानी इन्सानियत को अपनी ही मौत में शामिल करता और अपने ही ज़ब्ह और मक्त्ल होने में उस की हर सूरत की बातिनी और ज़ाहिरी शरारत और नफ़्स-ए-अम्मारा को उस की बुरी रग़बतों समेत मक्त्ल व मग़लूब करता और अपनी बर्खास्त और क्रियामत

अज़ मुर्दगान में भी उन्हें आन्कद्र रफ़ीक़ व शरीक़ कर देता है कि उन की हयात बासला ताज़ा व जदीद बन कर ख़ालिक़ की पाक सूरत में अज सर-ए-नव-मख़लूक़ हो जाती है, जिससे ये राज़ निकला कि ख़ुदावन्द मसीह अज़ीज़ सब हकीक़ी मोमिनों का वारिस होता है और आप भी उन की मीरास है और यकीनन जिसने ये मीरास पाई है, निहायत बेशकीमत खज़ाने का मालिक है, क्योंकि ख़ुदावन्द मसीह अपने सब दिली दोस्तों और पैरों को जो अहले कुदुसियत और ईमान हैं अपने ही दुख-दर्द के सवाब और अपने आमाल व फ़ज़ाइल में और आख़िरश अपनी जान व जलाल में शामिल कर लेता है।

साहिबो अगर ज़रा सा ताअम्मुल और सोच करोगे और हकीक़त-ए-हाल पर बनज़र तमीज़ व इन्साफ़ देख कर फ़त्वा दोगे तो इकरार करोगे कि ये नेअमतेँ और कुव्वतेँ जिनकी माअर्फ़त वो शख्स जो अभी शैतान का ऐन सैद व शिकार था, उस के क़ाबू और क़ब्ज़े से छोटा और उस की क़ैद तोड़कर और सख्त जो पैर तले कुचल कर ख़ुदा की ख़िदमत और अबदीयत के लिए आज़ाद निकला है। अज़ आनरो कि ख़ुदावन्द मसीह की मौत माज़िया और हयात हाल और आइन्दा जलाल की उम्मीद क़वी में शामिल हो कर गुनाह की निस्बत मरा है, पर ख़ुदा की निस्बत जिंदा है। ये सब ज़रूर ख़ुदावन्द मसीह की रबुनियत और मज़बूदियत पर दाल और मुस्तलज़म हैं।

एक और ज़रूरी सवाल इन मसअलों के शुमार में दर्ज करना चाहिए कि ख़ुदावन्द मसीह का ताल्लुक़ कुल आलम की आक़िबत से, बल्कि हमारी तुम्हारी आक़िबत के साथ क्या होगा। पहली सनदों और दलीलों से मालूम हुआ कि आलम नफ़सानियात से आलम रूहानियत में लाना और गुनाह के मक़तूलों और शैतान के मज़्लूमों को जिंदा और वारिस बहिश्त बल्कि वारिस ख़ुदा करना, सिर्फ़ ख़ुदावन्द मसीह का काम है, किसी दूसरे की इस ख़िदमत में ज़रा भी शिक़त नहीं। इसी फ़िलहाल की क्रियामत के हक़ में ख़ुदावन्द मसीह

ने आयत मज़कूर बाला में फ़रमाया था, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो वक़्त आता है बल्कि अभी है कि मुर्दे ख़ुदा के बेटे की आवाज़ सुनेंगे और जो सुनेंगे वो जिएँगे।” (युहन्ना 5:25) इस आयत में जाहिरन अक्वल मौत और अक्वल क्रियामत का ज़िक्र है। फिर उन आयतों में जो इसी बाब में आयत मज़कूर के मुकारिन हैं, दूसरी हयात और दूसरी मौत से इशारा है और ख़ुदावन्द मसीह का करीब और ज़रूरी ताल्लुक उस आक्रिबत के साथ नुमायां व मुबय्यन होता है, “इस से ताज्जुब ना करो क्योंकि वो वक़्त आता है कि जितने क़ब्रों में हैं उस की आवाज़ सुनेंगे। और निकलेंगे जिन्हों ने नेकी की है ज़िंदगी की क्रियामत के वास्ते और जिन्हों ने बदी की है सज़ा की क्रियामत के वास्ते।” (युहन्ना 5:28,29) और अगर कोई शख्स इस बात में शक व शुब्ह कर के सवाल करे कि आया इस ताल्लुक के अहाते में कुल आलम के सब अक्वाम और क़बाइल और मज़ाहिब शामिल होते हैं या शायद एक खास उम्मत और अस्ल नस्ल? तो जवाब इस सवाल का और हकीकत-ए-हाल की हज़्जत-ए-बालिगा युहन्ना रसूल के इन्जीली बयान में मन्कूल है, “चुनांचे तू ने उसे (यानी इब्ने ख़ुदा को) हर बशर पर इख़्तियार दिया है ताकि जिन्हें तू ने उसे बख़शा है उन सबको हमेशा की ज़िंदगी दे।” (युहन्ना 17:2) और इन्जील मती में यूं मर्कूम है :- “जब इब्न-ए-आदम अपने जलाल में आएगा और सब पाक फ़रिश्ते उस के साथ आएँगे तब वो अपने जलाल के तख़्त पर बैठेगा। और सब कौमें उस के सामने जमा की जाएँगी और वो एक को दूसरे से जुदा करेगा जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरीयों से जुदा करता है।” (मती 25:31,32) और मुकाशफ़ा की किताब के 20 वें बाब की आखिरी आयतों में उसी मुस्नद मसीही की निहायत हैबतनाक ख़बर बयान की जाती है, “फिर मैं ने एक बड़ा सफ़ैद तख़्त और उस को जो उस पर बैठा हुआ था देखा जिस के सामने से ज़मीन और आस्मान भाग गए और उन्हें कहीं जगह ना मिली। फिर मैं ने छोटे बड़े सब मुर्दों को ख़ुदा के तख़्त के सामने खड़े हुए देखा और किताबें खोली गईं। फिर एक और किताब खोली गई यानी किताब-ए-हयात और जिस तरह उन

किताबों में लिखा हुआ था उन के अमाल के मुताबिक मुर्दों का इंसाफ़ किया गया। और समुंद्र ने अपने अंदर के मुर्दों को दे दिया और मौत और आलम-अर्वाह ने अपने अंदर के मुर्दों को दे दिया और उन में से हर एक के अमाल के मुवाफ़िक़ उस का इंसाफ़ किया गया। फिर मौत और आलम-अर्वाह आग की झील में डाले गए। ये आग की झील दूसरी मौत है। और जिस किसी का नाम किताब-ए-हयात में लिखा हुआ ना मिला वो आग की झील में डाला गया।” (मुकाशफ़ा 20:11-15)

ऐ साहिबो ये साफ़ व सरीह शहादतें क्या वफ़क़ व तताबुक रखती हैं, आप लोगों के नबी साहब की बाअज़ रिवायतों और हदीसों से, मसलन उस हदीस से जिसमें ये मज़मून दर्ज है :-

”وَأُولَا حِرَّةٌ الثَّالِثَةُ لِيَوْمٍ يَرْعَبُ إِلَى الْخَلْقِ كُلِّهِمْ
 वगैरह। حَتَّىٰ إِبْرَاهِيمَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ ۝”

जिसकी एक शारह ने ये शरह की है कि, “तीसरा सवाल क्रियामत के दिन के वास्ते रख छोड़ा कि जब तमाम पैग़म्बर ख़ौफ़नाक होंगे और किसी के वास्ते कुछ ना कह सकेंगे, तब हमारे हज़रत शफ़ाअत पर मुस्तइद होंगे।□ मालूम हुआ कि क्रियामत में पैग़म्बर लोग भी हज़रत से अपने वास्ते कुछ सई सिफ़ारिश चाहेंगे। यहां तक कि इब्राहिम से पैग़म्बर भी दामन मुहम्मद ﷺ पकड़ेंगे। और मज़कूर बाला शहादतें क्या ही इतिफ़ाक़ रखती हैं, उस क्रिस्से मेअराज मुहम्मदी से भी यानी उस हदीस से जिसमें मुहम्मद ﷺ के उस सऊद मज़ऊम और हफ़्त समावात में सैर करने की रिवायत मिलती है :-

”ثُمَّ صَعَدَ بِي حَتَّىٰ أَلَى السَّمَاءِ الثَّانِيَةِ فَاسْتَفْتَحَ
 वगैरह। إِذَا يَحْيَىٰ وَعَيْسَىٰ فَسَلَّمْتُ فَرْدًا

देखो साहिबो वो ख़ुदावन्द जो ख़ुदा बाप की मर्जी और अपनी अस्ली कलिमियत और इब्नीयत की हकीकत से ज़मीन और आस्मान का मालिक

और खालिक और मुंसिफ़-उल-आलमीन है किस कद्र अपने तख्त जलाल से उतार दिया गया और माअबूद-आलमीन होने की जगह करीब है कि ताबेअ आबिद मुहम्मद ﷺ हो जाये। अफ़सोस हजार अफ़सोस कि आप लोगों के रावी और शारहीन पर वो क़ौल मसीही बईनह आइद होता है, जो मरकुस की इन्जील में यूं मन्कूल है, “तुम खुदा के कलाम को अपनी रिवायत से जो तुम ने जारी की है बातिल कर देते हो। और ऐसे बुहतेरे काम करते हो, और ये बेफ़ाइदा मेरी परस्तिश करते हैं क्योंकि इंसानी अहकाम की ताअलीम देते हैं।” (मरकुस 7:13,7) फिर ज़रा ग़ौर करो उन औसाफ़ और दिल-सोज़ तकरीरों पर जो इब्रानियों के खत और ग़ैर मुक़ामों में शफ़ाअत मसीही के हक़ में मर्कूम हैं कि वो शफ़ाअत ता-अबद कुल मोमिनीन के लिए तादर्जा कमाल मक्बूल और मन्ज़ूर है, मसलन खत मज़कूर में क्या ही करीम व नईम कलाम नज़र आता है, “इसी लिए जो उस के वसीले से खुदा के पास आते हैं वो उन्हें पूरी-पूरी नजात दे सकता है क्योंकि वो उन की शफ़ाअत के लिए हमेशा जिंदा है।” (इब्रानियों 7:25) और फिर इसी बाब की 24,23 वीं आयात वग़ैरह में है कि, “और चूँकि मौत के सबब से क्राइम ना रह सकते थे इसलिए वो तो बहुत से काहिन मुकर्रर हुए। मगर चूँकि ये अबद तक क्राइम रहने वाला है इसलिए उस की कहानत लाज़वाल है।, पस आओ हम फ़ज़ल के तख्त के पास दिलेरी से चलें ताकि हम पर रहम हो और वो फ़ज़ल हासिल करें जो ज़रूरत के वक़्त हमारी मदद करे।” (इब्रानियों 4:16) तो जब इन और इन की मानिंद और आयतों से साफ़ मालूम हुआ कि खुदावन्द मसीह यानी इमामत व शफ़ाअत दाइम कायम ता-अबद सभी खल्क-ए-खुदा के लिए है तो ये मज़मून क्या ही कमाल जिद है, उस हदीस की जिसमें कैफ़ीयत मेअराज की बाबत ये रिवायत तस्लीम होती है :-

رَأَيْتُنِي فِي جَمَاعَةٍ مِّنَ الْأَنْبِيَاءِ - وَأَذَا عَيْسَى
ابْنُ مَرْيَمَ قَائِمٌ فَحَآئِتِ الصَّلَاةُ فَأَحْمَتُهُمْ

तर्जुमा : “नागाह ईसा बिन मर्यम को देखा कि खड़ा नमाज़ पढ़ता है। फिर नमाज़ का वक़्त आया सो मैं ने पैग़म्बरों की इमामत की।”

इन्जील के अक्वाल बाला के मुत्तफ़िक़ और भी सैकड़ों नक़लियात आक्रिबत अंदेशों की खातिर जमुई के लिए हवाला कलम हो गई, मसलन रोमीयों के नाम ख़त के (रोमीयों 2:12-16) आयतों से और कुरंथियो के ख़त (1 कुरंथियो 4:5) से इस अम्र की सरीह ख़बर दी जाती है कि दार-उल-खिलाफ़त और मुस्नद इन्साफ़ की मालिकियत और मुख्तारी खुदावन्द मसीह को सपुर्द हो गई और जिसकी नशिस्त और सूरत नूरानी उस सफ़ैद तख़्त पर जाहिर व नमूदार होगी और जिसके रूबरू सब मुर्दे क्या छोटे क्या बड़े, खड़े किए जाएंगे, सो खुदावन्द मसीह है। पर कौन ऐसा कोताह बीन और इल्म व अदल से बे-बहरा है कि इन दो क्रियामतों की कुदरत और इख्तियार को ग़ैर अज़ खुदा किसी दूसरे की तरफ़ मन्सूब करे, ख़्वाह उस क्रियामत अक्वल का ज़िक्र हो जो इस उम्र चंद रोज़ा के वक़्त होती है। दर-हालिका रूह इन्सान की हालत जलालत व फ़साद और ज़िल्लत व ज़बूनी से ख़लास हो कर और दरगाह-ए-ख़ुदा में दर्जा-ए-फ़र्जन्दियत से मुशरफ़ हो कर सूरत ख़ुदा पर अज सर-ए-नौ मसनू और मख़्लूक होती है। ख़्वाह क्रियामत सानी का ज़िक्र हो जो खुदावन्द मसीह की दूसरी आमद व ज़हूर के वक़्त बर्पा होगी, जब मोमिनीन का ख़ाकी और ज़लील बदन उस कुदरत की तासीर के मुताबिक़ जिससे वो सबको अपने ताबेअ कर सकता है, उस के नूरानी जलाली बदन के वफ़क़ व मुशाबहत में मुतबद्दल होगा। क्या वो आदमज़ाद और फ़रिशतों के रुत्बे से ज़ात और वजूद में आला और अफ़ज़ल ना होगा। जिसकी मुस्नद अदालत के हुज़ूर में हम सबको ज़रूर हाज़िर होना होगा या उस का जलाल और किब्रीयत सब मख़्लूकात की ज़ात और मंजिलत और मुक़ाम से बढ़कर ना होगा। जिसने बग़ैर तकब्बुर और तफ़ख़्खर के आक्रिबत के सब मुहिम तरीन उमूर व

वाकियात का सरअंजाम और इन्तिजाम अपनी तरफ मन्सूब कर के वो कौल फरमाया जो मती की इन्जील में मर्कूम है, “पस जैसे कड़वे दाने जमा किए जाते और आग में जलाए जाते हैं वैसे ही दुनिया के आखिर में होगा। इब्न-ए-आदम अपने फरिश्तों को भेजेगा और वो सब ठोकर खिलाने वाली चीजों और बदकारों को उस की बादशाही में से जमा करेंगे। और उन को आग की भट्टी में डाल देंगे। वहां रोना और दाँत पीसना होगा। उस वक़्त रास्तबाज़ अपने बाप की बादशाही में आफ़ताब की मानिंद चमकेंगे। जिस के कान हों वो सुन ले।” (मती 13:40-43)

क्राबिल-ए-गौर ये अम्र भी है जो मुकाशफ़ा की किताब और दानीयल नबी की किताब के आखिरी अबवाब से रोशन और वाज़ेह है कि कैसी और कितनी कुशतियों और जंग व जिदालों में से इज्माअ-आम्मा हकीकी जो खुदा की खल्क नव-मख्लूक है, अपने सब दुश्मनों पर ग़ालिब व फ़त्हयाब निकलेगा। खुसूसन उस अजदहे के पंजे से जो शैतान है और उस हैवान से जिसको अजदहे ने अपनी कुदरत और इख्तियार सपुर्द और तफ़वीज़ और तवकील (वकील करना) किया है और जिससे मुराद हैं इस दुनिया की वो सल्तनतें जो बेदीन व बेदियानत और बे-खुदा हैं। और उस कसबी के फ़न व फ़रेब से जो हैवान पर सवार हुई अपनी जादूगरी के पियालों से सब कौमों को नशे से बेहोश करती है। जिससे मुराद है वो गिरोह जो अज़रूए दगाबाज़ी और खियानत के इज्माअ-मोमिनीन और अक्राइद हक़ से हट गया और खुदा की निस्बत जानिया की तरह फ़िस्क़ व फ़जोर में ग़र्क़ हो गया। और झूटे नबी की हीला बाज़ीयों से भी जो हैवान का वकील और मुतर्जिम है, इन सभी के जोरू जफ़ा और कबीह हिक़मतों से रिहाई पाकर कमाल सफ़ाई के पैराहन से मुतलब्बस हो कर वो कलीसिया खुदावन्द मसीह की सल्तनत की खूबीयों और फ़ज़ीलतों की हम

वारिस होगी। आंतोर कि दुल्हन अपने दुल्हे की हशमत और रौनक और दबदबा की शरीक और रफीक होती है।

चुनान्चे मज्कूर बाला आयतों से साफ़ मालूम और साबित हुआ कि उस सल्तनत का आफ़ताब ख्वारी और कुदरत और ज़िल्लत के घने-घने बादलों से फूट निकल कर तुलूअ होगा, मसलन यसअयाह नबी ने फ़रमाया, “इसलिए मैं उसे बुजुर्गों के साथ हिस्सा दूंगा और वो लूट का माल ज़ोर-आवरों के साथ बांट लेगा क्योंकि उस ने अपनी जान मौत के लिए उंडेल दी और वो ख़ताकारों के साथ शुमार किया गया तो भी उस ने बहुतों के गुनाह उठा लिए और ख़ताकारों की शफ़ाअत की।” (यसअयाह 53:12) ये गवाही बरहक़ है और अहवाल जहान और खल्क-ए-ख़ुदा के तजुर्बे से नित नए सबूत पाती रहती है और ख़ुदावन्द मसीह की ख़ुदावंदी और सल्तनत का जो लोग इन्कार करते हैं, वो सिर्फ़ इतना ही फ़ायदा हासिल करते हैं कि उस सल्तनत से आप ही महरूम हो जाते हैं। चूँकि उस दुख और दर्दों रंज में शिर्कत और रिफ़ाक़त रखने की जगह जो सल्तनत की तरफ़ चलने वालों की मुतअय्यन राह है, वो उस की सूरत फ़िरोतन और आजिज़ पर ठोकर खाते हैं, जिसकी बाबत ख़ुदावन्द मसीह ने कहा, “मुबारक है वो जो मेरे सबब से ठोकर ना खाए।” (मती 11:6) और वो ठट्ठा भी मारते हैं और लानत के मुतहम्मिल (बर्दाशत करने वाले) को मलऊन जान कर यहूद के मज़ाह और तमस्सखर की तक़लीद करते हैं और पीने की आर पर लात मारते¹⁶ हैं।

16 पीने की आर पर लात मारना एक यूनानी कहावत है जिस का मतलब है [बेसूद मज़ाहमत करना] पेना तेज़ या धार शय को कहते हैं, किसी औज़ार को तेज़ करने को [पेनाना] या [पेना] करना कहा जाता है।

हासिल कलाम : ये है कि खुदावन्द मसीह की उस सल्तनत से जो फिलहाल और फिल-वाक़ेअ जारी होती है, मुराद है वो नई खल्कत जिसकी सरायत मुल्क ब मुल्क और क़ल्ब (दिल) ब क़ल्ब (दिल) फैलती जाती है और बहुत ही सख्त, सरकश दिलों और बागी मुफसिदों के तल्ख और शदीद मिज़ाजों को उस मुनज्जी-उल-आसीन के नरम जोई तले दबाती है। अज़ आनरो कि खुदा के फ़ज़ल को मन्ज़ूर कर के और उस के अहदो मीसाक़ के अहाते अन्दर आके वो उस की मर्ज़ी और खिदमत पर सदक़े और कुर्बान हो जाते हैं। और इख़तताम व तक्मील उस खल्कत जदीद की वो बादशाही उमूम और ग़ैर-महदूद होगी, जिसका दिल-सोज़ और फ़र्हत आमेज़ बयान मुकाशफ़ा की किताब में मिलता है, “और जब सातवें फ़रिशते ने नरसिंगा फूँका तो आस्मान पर बड़ी आवाज़ें इस मज़्मून की पैदा हुईं कि दुनिया की बादशाही हमारे खुदावन्द और उस के मसीह की हो गई और वो अबद-उल-आबाद बादशाही करेगा। और चौबीसों बुजुर्गों ने जो खुदा के सामने अपने-अपने तख़्त पर बैठे थे मुंह के बल गिर कर खुदा को सज्दा किया, और ये कहा कि :-

ऐ खुदावन्द खुदा ! क़ादिर-ए-मुत्तलिक़ ! जो है, और जो था, और जो आने वाला है। हम तेरा शुक्र करते हैं क्योंकि तूने अपनी बड़ी कुदरत को हाथ में लेकर बादशाही की। और क़ौमों को गुस्सा आया और तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ और वो वक़्त आ पुहंचा है कि मुर्दों का इंसफ़ किया जाये और तेरे बंदों नबियों और मुक़द्दसों और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं अज़ दिया जाए और ज़मीन के तबाह करने वालों को तबाह किया जाये।” (मुकाशफ़ा 11:15-18) और फिर इसी सहीफ़े के (मुकाशफ़ा 17:14) में उसी इख़तताम जलाली का ये ज़िक़्र है, “वो बर्रे से लड़ेंगे और बर्रा उन पर ग़ालिब आएगा क्योंकि वो खुदावन्दों का खुदावन्द और बादशाहों का बादशाह है और जो बुलाए हुए और बरगुजीदा और वफ़ादार उस के साथ हैं वो भी ग़ालिब आएँगे।” (मुकाशफ़ा 17:14) आमीन !

तम्मत